भूमिका ।

पद्यम्

नानाशास्त्रविचारसारमिहयत्तत्वेसमावेशितं ।
तद्दृष्ट्वाविबुधाः शरावनिहितंरथानंमणीनामिव ॥
तुष्यन्तुप्रतिमह्यमानम हिमोच्छेदं सुवर्णात्मकम् ।
ज्योतिर्वित्कुलमुख्यमंडन महादेवेनसज्जातके ॥ १ ॥
पुनरुक्तयुजाश्समांकिताः प्रायः पद्धतयश्चजातकाः
इहतन्नहिपश्यतामहो रैवाशांकरिनिर्मितोकदाचित् ॥२॥

प्रिय पाठकों । सिद्धात संहिता होरासंज्ञक त्रिस्कंधात्मक सर्वमान्य वेदचक्षु ज्योतिश्शास्त्रका होरास्कंध जिसको फलित शास्त्रकहतेहै वहबड़ा दुर्ज्ञेय और अपारहै जबतक इसअपार शास्त्रके अनेक ग्रंथोके पर्य्यालोचन द्वारा फलनिर्णय नहीकियाजाय तबतक यथायोग्य फल विचारहोना असंभव है ।

अनेक ग्रंथोद्वारा समुचितफल निर्णय करना बड़े असाधारण परिश्रमका कामहै । अतएव ऐसे कार्यकेलिये अनेक जातकग्रंथोक्त संपूर्णफलका विचार सुगमतासेशिघ्र होसके ऐसे एकपरमोपयोगी ग्रंथका होना परमावश्यक जानकर हमारे पूज्यपाद पिताजी श्रीश्रामन्म-हादेवजी दैवज्ञवर्य महानुभाव महाशयने पाराशरीहोरा, लोमशसंहिता जैमिनीसूत्र, शंभुहोराप्रकाश, बृहज्जातक, मनुष्यजातक, भावकुतूहल तकालङ्कार, जातकाभरण, सर्वार्थचिंतामणी, भावचिंतामणी, होरा रत्नशुकजातक, शुकफाक्कका, जातकपारिजात, जातकमुकुर, जातक दिल्राज, मानसागरी, लग्नचंद्रिका, आदि जितने प्राचीन तथा अर्वाचीन फलितशास्त्रके उपलब्धग्रंथहै उनअनेकग्रंथोका सारलेकर एक "जातकतत्व" श्लोकरा तात्पर्य चार चार छ छ अक्षरोमे खींचकर अतिउत्तम ग्रंथवार्तिक रूपबनायाहै । इसके पढ़नेसे फलित संबंधी कोईभी अन्यपुस्तक देखनेकी अपेक्षा नही पड़सक्तीहै ।

१५०

इसी कारण इसने इतनाआदरपायाहै कि काशीकी पाठशालाओ मे तथा भारतके अनेक विज्ञ विद्वानोकेयहा यहग्रंथ मुख्यपाठ्य पुस्तक समझ पढा पढाया जाता है। और बडोदा महाराज्यमेभी फलितकी परीक्षा देनेवालोके लिये मुख्य परिक्षाकी पुस्तक मानीगईहै।

इसके मुख्य पाचतत्व (भाग) है जिसमे प्रथम संज्ञातत्व २ दुसरा मूर्तिका तत्व ३ तीसरा प्रकीर्णतत्व ४ चौथा स्त्री जातकतत्व ५ पाचमा दशातत्व है इनमें जो जो विषय वर्णित है उनकी नामावलि अनुक्रमणिकामे प्रदर्शित कीगईहै।

यहग्रंथ काशीमे कईवार छपजानेपरभी इसकी प्रतिये हाथोंहाथ बिकजानेके कारण अबभी प्रति मिलतीनहीऔरमाँगपरमाँग आरहीहै. अतएव अबकीवार सर्व साधारण जनोंके उपयोगार्थ कईयेक नवीन विषय और अनुभव की हुई फलदेखने की कुंजिये तथा प्रत्येक योगो पर योगोके नाम और योगोको यथाक्रम एकत्र करके अन्यान्य अनेक योगो सहित सरल हिंदि भाषाटीकासे सुसज्जितकर आपलोगोंकी सेवामे समर्पण करनेका सहास किया है।

आशाहै इस यथा मति लिखीहुइ टीकामे जहा कही त्रुटी प्रमाद या भूल होगई हो विद्वज्जन क्षमाकरके परिशोधनकरलेंहै और दोषो की ओर ध्याननही देतहुवे गुणकी ओरहीध्यानदे मेरपरिश्रमको सफल करेंगे यहीसविनय निवेदनहै।

भवदीय

पाठक श्रीनिवास महादेवजी शर्मा ज्योतिषरत्न

अध्यक्ष श्रीभुवनेश्वरी प्रिंटिंग प्रेस,

रतलाम.



जातकतत्व विषयानुक्रमणिका ।

अथसहज विवेकः

इतिचतुर्थविवेकसमाप्त ।

इतिपंचमविवेकः

इतिसप्तमविवेकः ।

श्रीभुवनेश्वरी प्रिंटिंगप्रेस, मे छपीहुई पुस्तके विक्रयार्थ तयार है.



❀ लघुपूजाऽनुष्ठान पद्धति ❀

पूजा तथा अनुष्ठान संबधी ऐसीपुस्तक आजतक कही भी छपीनही इस १ पुस्तक के पढनेसे हरेक बालक पूजा और कर्मकांड मे निपुण होजाताहै और पूजा अनुष्ठान संबधी कामके लिये दुसरी कोई पुस्तक पढनेकी जरूरत नही रहतीहै पुस्तक परमोपयोगी पास रखने योग्य है मुल्य ।=)

❀ ग्रह आणि ग्रहाचा परिणाम मराठी ❀

इसमे ग्रहक्यापदार्थहै और ग्रहोका असर मनुष्या दिकपर क्यो और क्योकरहोता है वगेरा ५ विषय के प्रश्नोके उत्तर अति उत्तम प्रकारसे लिखेगये है जिसके पढनेस सर्व साधारण भी फलित के नमानने वाले नास्तिको को उत्तर देके परास्तकरसक्तेहै पुस्तक अवश्य देखने योग्य है जल्दीकरो पुस्तके बहुत कमरहगई है मूल्य ।।)

परिक्षा विचार ।

मै इस साल परिक्षामे पास होउगा के नही इसप्रश्न का उत्तर सोप पत्तिक शास्त्रानुसार जाननाहो तो इसपुस्तकको अवश्य देखिये विचार हिन्दी भाषा मे किया गया कीमत =।।) मात्र

नाडीमानाविवाहपटल.

इसम विवाहमहुर्त विषय विवेचन के ६० श्लोकहै येप्रत्येक श्लोक अक २ पन्के बराबरकेहै इसलिये इनसाठही श्लोकोका १ पाठ पूरा हुवाके १ घडी याने २४मिनिटहोजाते है अत इसग्रंथके द्वारा विवाह मुहूर्त का निर्णय और सरास टी घडीकी पहचानये दोनुकाम एक साथ होसकेहै पुस्तक बडेकामकी देखनयोग्यहै मूल्य –।।) मात्र

अध्यक्ष श्रीभुवनेश्वरी प्रिंटिंग प्रेस-
ज्योतिषकार्यालय–रतलाम.

❀ श्रीभुवनेश्वरीविजयते ❀

भाषाटिकासहित.

जातकतत्व प्रारम्भः ।

साम्बंसदाशिवं विष्णुं गणेशंच गुरुंतथा ।
नत्वाजातक तत्वस्य भाषा टीकां करोम्यहं ॥ १ ॥

टीकाकार ग्रन्थादिमे निम्रविघातार्थ स्वेष्टदेवको प्रणामरूप मंगलाचरण करताहै, साम्बसदाशिव एवं विष्णुभगवान और गणेशजी तथा निजगुरु पूज्यपादमहादेवजी महाराज को नमस्कार करके मे श्रीनिवास शर्मा जातकतत्व की भाषाटीका करताहू ॥ १ ॥

श्रीगुरुगणेशाम्बा चरणान्नत्वाप्राचीनार्वाचीन होरात ।
न्त्रसारमुद्धृत्य महादेवोजातक तत्वं कुरुते ॥ १ ॥

टीका-श्रीगुरु गणेश और जगदम्बाके चरणोको नमस्कार करके प्राचीन और नवीन फलितशास्त्र के ग्रन्थोका सारलेके महादेव शर्मा जातकतत्व ग्रंथ करते है ॥ १ ॥ इस प्रकार निर्विघ्नसे ग्रंथ परिसमाप्त्यर्थ ग्रंथ कार स्वेष्टदेव और निजगुरु गणेशको नमस्कार करके ग्रंथारम्भ करते है ॥

मस्तकमुखोरो हृदुदरकटिबस्तिलिङ्गोरुजानुजङ्घांघ्रि
मेषादित 'कालाङ्गम् ॥ २ ॥

टीका-राशियो के अंग विभाग-मस्तक १ मुख २ स्तनमध्य ३ हृदय ४ उदर ५ कटि ६ बस्ति [नाभीके नीचेका भाग " पेडू "] ७ लिंग ८ जंघा ९ घुटना १० पिंडली ११ पाँव [पैर] १२ इनस्थानोमे क्रमसे मेष राशीको आदिले बाराहि राशी कालपुरुष के अंग मे जानना । राशी चक्र

के विभाग म जिस राशीका जिस स्थान पर अमल कहाहै जैसे मेषका मस्तकपर सिंहका पेटपर इत्यादि उनसर्व १२ वाराहिस्थाना मे से जिस विभाग की राशी दीर्घहो वह अंग लंबा ह्रस्वराशी हो तो ह्रस्व अथवा जिस राशी को पापग्रह पीडित करते हो वह राशी जिसस्थानपर अमल रखती होगा उस अगमे कष्ट आनना जैसे कर्क या सिंह पर पापग्रह है इनको पापग्रह देखते है इनका स्वामि पापग्रह से युक्तदृष्टहै तो पेटमे या हृदयमे पीडा कहना एवं सर्व अंगोका विचार काल पुरुषके अंगविभागसे जानना ॥ २ ॥

म. शु बु, च, र, बु, शु, म, गु, श, शगवो मेषादीशा ॥३॥

टीका-मंगल १ शुक्र२बुध ३चंद्र ४ रवि५ बुध ६ शुक्र ७ मंगल ८ गुरु ९ शनि १० शनि ११ गुरु १२ मेषादिराशियो के क्रमसे स्वामी कहे है ॥ ३॥ इस सूत्रमे ग्रंथकर्तान नामैकदेशनामनिदेशन्याय से १२ राशियो के स्वामियो क नाम एक २ अक्षरमे कहहै ॥ ३ ॥

क्रूरसौम्यौ नृस्त्रियौ चरस्थिरद्विस्वभावाश्चमेषादेः ॥४॥
सिंहादिचतुष्कयुग्मकुंभाः शीर्षोदया मीन उभयोदय. शे-
षापृष्ठोदयाः ॥ ५ ॥

टीका-राशियोकि क्रूरादिसंज्ञा=क्रूर और सौम्य, पुरुष स्त्री, चरस्थिर और द्विस्वभाव, इस क्रमसे मेषादि१२राशिया कि सज्ञाजानना ॥ ४॥ सिंह ५ कन्या ६ तूल ७ वृश्चिक ८ मिथुन ३ और कुंभ ११ शीर्षोदय राशी मीन १२ उभयोदय और मेष १ वृषभ २ कर्क ४ धन मकर १० पृष्ठोदय राशी जानना ॥ ५ ॥

विमिथुनशीर्षोदया दिने शेषारात्रौ बलिनः ॥ ६ ॥

टीका मिथुनविना शीर्षोदय ५ । ६ । ७ । ८ । ११ राशि दिनमे बलवान और शेष पृष्ठोदय उभयोदय १ । २ । ३ । ४ । ९ । १० । १२. राशि रात्रो मे बलवान जानना ॥ ६ ॥

राशीयोंकी संज्ञाका चक्र.

मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धन	मकर	कुंभ	मीन
क्रूर	सौम्य	क्रूर	सौम्य	क्रूर	सौम्य	क्रूर	सौम्य	क्रूर	सौम्य	क्रूर	सौम्य
पुरुष	स्त्री	पुरुष	स्त्री	पुरुष	स्त्री	पुरुष	स्त्री	पुरुष	स्त्री	पुरुष	स्त्री
चर	स्थिर	द्विस्व.	चर	स्थिर	द्विस्व	चर	स्थिर	द्विस्व.	चर	स्थिर	द्विस्व.
पृष्ठो.	पृष्ठो.	शीर्षो.	पृष्ठो.	शीर्षो	शीर्षो.	शीर्षो.	शीर्षो.	पृष्ठो.	पृष्ठो.	शीर्षो	उभयो.
रात्री	रात्री	रात्री	रात्री	दिन	दिन	दिन	दिन	रात्री	रात्री	दिन	रात्री

देह धनं सोत्थमात्रात्मजारि स्त्रीमृति धर्म कर्म लाभव्ययालग्नाद्भावाः ॥ ७ ॥ *शीघ्र.*

टिका—देह १ धन २ सोत्थ (भ्रातृ) ३ मात्र (माता) ४ आत्मज (पुत्र) ५ अरि (शत्रु) ६ स्त्री ७ मृति ८ धर्म ९ कर्म १० लाभ ११ व्यय १२ लग्नको आदिले क्रमसे बाराहि भावोके नाम जनना ॥ ७ ॥

ग्रह होरा द्रेष्काण नवांश द्वादशांश त्रिंशांशाः षड्वर्गाः॥८॥

टिका—षड्वर्ग—ग्रह १ होरा २ द्रेष्काण ३ नवांश ४ द्वादशांश ५ और त्रिंशांश ६ इनको षड्वर्ग कहते है ॥ ८ ॥

समेचंद्रार्कयो विषमेव्यत्ययेनहोरा ॥ ९ ॥

स्वेपुनवर्क्षेशा द्रेष्काणपाः ॥ १० ॥

चरेभस्वस्मात्स्थिरे नवमभाद्विस्वभावे पञ्चमभान्नवांशाः ११

स्वभाद्द्वादशांशाः ॥ १२ ॥

समेशुक्रेज्ञज्यार्कि कुजानां पंचाष्टष्ट शरेपत्रस्त्रिंशांशा विषमेन्यथा ॥ १३ ॥

टी०—१ ग्रह—*राशियो के स्वामि ऊपर कहे उस प्रमाणे लिखना १

नोट—* स्पष्टग्रहों के आधीनहीं समस्त दशवर्गादि गणित और फलितहै और सांप्रतम ग्रहलाघवादि ग्रंथ अतएव प्रत्यक्षप्रतीतिकारक है एतदर्थ केवल उक्त ग्रंथ आदि ग्रंथोंसे दृक् तुल्य स्पष्टग्रहभवादि साधन प्रथम करना तदुपरि दशवर्गादि और फलविचार करना

२ होरा–समराशी मे १५ अंशतक चंद्र और १५ से ३० अंशतक रवीकीहोरा जानना विषम राशीमे इससे उलट अर्थात् १५ अंशतक रवीकी १५ से ३० अंशतक चंद्र की होरा जानना ॥ ९ ॥

३ द्रेष्काण–राशीके प्रथम द्रेष्काण (०से १० अंशतक) मे उसी राशीका स्वामि दूसरे द्रेष्काण (१० से २० अंशतक)में अपनी राशीसे पांचमी राशीका स्वामि तीसरे द्रेष्काण (२० से ३० अंशकत) में अपनी राशी सें नवमी राशीका स्वामि द्रेष्काण का स्वामि होताहै १०

४ नवांश—चरराशी मे अपनी राशीसेंहि स्थिरराशी मे अपनी राशीसे जो नवमीराशी हो उसकों आदिले द्विस्वभाव राशीमें अपनी राशीसे जो पांचवी राशी हो उसको आदिले नवांश के स्वामी जानना राशीके नवमें भागको नवांश कहते है. एक नवमांश ३।२० (तीनअंश वीसकला) का होता है ॥ ११ ॥

५ द्वादशांश–द्वादशांश के स्वामी अपनी राशीसे ही जानना. एक द्वादशांश ढाई अंशका होता है ॥ १२ ॥

६ त्रिंशांश–समराशी मे शुक्र बुध गुरु शनि मंगल ५। ७। ८।–५। ५ इन अंशोंके क्रमसे त्रिंशांश के स्वामी–कहे है विषम राशी मे व्युत्क्रम [उलटे] अर्थात् ५। ५। ८। ७। ५ इन अंशों के क्रम से मंगल शनि गुरु बुध शुक्र त्रिंशांश के स्वामी जानना ॥ १३ ॥

षड्वर्गा एव सप्तमांशसहिताः सप्तवर्गाः १४

विषमे स्वस्मात्समे सप्तमात्सप्तमांशः १५

सप्तवर्ग चक्र। उपरोक्त षड्वर्गों मे सप्तमांश मिलाने से सप्त वर्ग होतेहै ॥१४॥ ७ सप्तमांश–विषम राशीमे अपनी राशी से ही और सम राशीमे अपनि राशीसे जो सातमी राशी होय उससें गिननेंसे जो राशी आवे उसका स्वामी सप्तमांशका स्वामी होता है। एक सप्तमांश ४ अंश १७ कलाका होता है ॥ १५ ॥

सप्तवर्गा दशांश षोडशांशषष्टयंशयुता दशवर्गाः १६

दशवर्ग— सप्तवर्ग मे दशांश षोडशांश और षष्ट्यंश ये तीनवर्ग

और भी मिलादेन से दशवर्ग होते है ॥ १६ ॥

ओजेस्वस्मात्समे नवमाद्दशमांशः ॥ १७ ॥

चरेजाद्याः स्थिरेसिंहाद्या द्विस्वभावे चापाद्याः षोडशांशाः १८ ॥

स्वभात्पष्टयंशः ॥ १९ ॥

टीका–दशांश षोडशांश और षष्ठयंश लाने कि विधि–विषम राशी में अपनि राशी से ही समराशी में अपनी राशीसे जो ९ नवमी राशीहो उमसे दशमांश के स्वामी समझना (एक दशमांश ३ तीन अंश का होता है) ॥ १८ ॥

टीका–चर राशी मे मेष राशीको आदिले स्थिर राशीमे सिंह राशीको आदिले द्विस्वभाव राशी मे धन राशी को आदिले यह षोडशांश के जितनी संख्या के विभाग मे होवे उतनी संख्या पर्यंत गिनने से जो

द्व्यादिरवो च्चाऽधिमित्रवर्गः पारिजातोत्तम गोपुर सिंहासन पा रावतदेवलोक देवलोकैरावतवैशेषिकमंत्रः क्रमात ॥ २० ॥

टीका–पारिजातादि वर्ग सज्ञा लानेकीविधि–उपरोक्तनीसे दशवर्ग साधन करना और उसमें निजग स्व उच्च अधिमित्र ग्रहके वर्ग होंवे उन वर्गोंकि संख्या का योग करना वह योग यदि २ होवतो वहग्रह पारिजात २ वर्ग भेद है एवं ३ उत्तम ४ गोपुर ५ सिंहासन ६ पारावत ७ देवलोक ८ देवलोक ९ ऐरावत १० वैशेषिकाश वर्गसंज्ञा जानना उदाहरण॥ जैसे सूर्यके दशवर्गमें स्व = उच्च १ अधिमित्र ग्रहका वर्ग ३ है इनका योग ६ हुवा तो सूर्य ६ लङ्क पारावतसंज्ञ कवर्गमें है एवं हि सर्वत्र जानना॥२०॥

१ द्वयंशेशास्त्वयुग्मघोर १ राक्षस २ देव ३ कुबेर ४ रक्षोगण ५ किन्नर ६ भ्रष्ट ७ कुलघ्न ८ विषा ९ अग्नि १० माया ११ प्रेतपुरीष १२ वरुणे १३ इंद्र १४ कला १५ अहि १६ चंद्र १७ चंद्र १८ मृदु १९ मृदु २० पद्म २१ विष्णु २२ वागीश २३ दिगम्बर २४ देवा २५ आर्द्र २६ कलिनाश २७ क्षितीश २८ कमलाकर २९ मंदात्मज ३० मृत्यु ३१ काल ३२ दावाग्नि ३३ घोर ३४ यमकंटक ३५ सुधा ३६ अमृत ३७ पूर्णेंदु ३८ विष-दिग्ध ३९ कुलनाश ४० मुख्य ४१ वंशक्षयो ४२ उत्पात ४३ कालरूप ४४ सौम्य ४५ मृदु ४६ शीतल ४७ दंष्ट्राकराले ४८ इन्दुमुख ४९ प्रवीण ५० क लाग्नि ५१ दंडायुध ५२ निर्मल ५३ शुभा ५४ अशुभा ५५ तिशीतल ५६ सुधा ५७ पयोधि ५८ भ्र-

मणे ५९ दुरेखा ६० युग्मेतु व्यत्ययः ॥ २१ ॥

टी० विषमराशीमेषष्ठ्यंशे शेष क्रमसे घोर १ राक्षस २ इत्यादि क्रमसे जानना और समराशी मे उलटे जानना। अर्थात् विषम राशीका गृह जितनी संख्याके षष्ठ्यंश विभागमें होवे उतनीही संख्या पर्यंत क्रमसे घोर १ राक्षसादि गिननेसे षष्ठ्यंश होवेगा. और समराशीमे उतनेही षष्ठ्यंश विभाग पर्यंत उलटा इंदुरेखा १ भ्रमणादि २ क्रमसे गिननेसे षष्ठ्यंश शेष होताहै ॥ २१ ॥

षष्ठ्यंश चक्रम् ।

घोर १-६० राक्षस २-५९ देव ३-५८ कुबेर ४-५७ रक्षोगण ५-५६ किन्नर ६-५५ भ्रष्ट ७-५४ कुलघ्न ८-५३ विष ९-५२ अग्नि १०-५१ माया ११-५० प्रेतपुरीष १२-४९ वरुण १३-४८ इंद्र १४-४७ कला १५-४६ अहि १६-४५ चंद्र १७-४४ चंद्र १८-४३ मृदु १९-४२ मृदु २०-४१ पद्म २१-४० विष्णु २२-३९ वागीश २३-३८ दिगम्बर २४-३७ देव २५-३६ अर्द्ध २६-३५ कलिनाश २७-३४ क्षितीश २८=३३ कमलाकर २९-३२ मंदात्मज ३०-३१ मृत्यु ३१-३० काल ३२-२९ दावाग्नि ३३-२८ घोर ३४-२७ यमकंटक ३५-२६ सुधा ३६-२५ अमृत ३७-२४ पूर्णेंदु ३८-२३ विषदिग्ध ३९-२२ कुलनाश ४०-२१ मुख्य ४१-२० वंशक्षय ४२-१९ उत्पात ४३-१८ कालरूप ४४-१७ सौम्य ४५-१६ मृदु ४६-१५ शीतल ४७-१४ दंष्ट्राकराल ४८-१३ इंदुमुख ४९-१२ प्रवीण ५०-११ कालाग्नि ५१-१० दंडायुध ५२-९ निर्मल ५३-८ शुभ ५४-७ अशुभ ५५-६ अतिशीतल ५६-५ सुधा ५७-४ पयोधि ५८-३ भ्रमण ५९-२ इंदुरेखा ६०-१.

इन ६० मे.२६ क्रूरांश १ मध्यम ३३ देव भाग के श्रेष्ठ (शुभ) फलदेने वालेहै ॥

लग्नाम्बुस्तदशमानि केंद्राणि ॥ २२ ॥

टीका—लग्न १ चतुर्थ ४ सप्तम ७ और दशम १० (१—४—७—१०) इन चार स्थानोंकी केंद्र संज्ञाहै ॥ २२ ॥

स्वायाष्टमात्मजाः पणफराः ॥ २३ ॥

टीका—दूसरा २ ग्यारवां ११ आठवां ८ पांचवां ५ (२—५—८—११) इनचारस्थानोंकि फणफर संज्ञाहै ॥ २४ ॥

स्यरि धर्मान्त्या आपोक्लिमाः ॥ २४ ॥

टीका—तिसरा ३ छठा ६ नवमा ९ बारवा १२ (३—६—९—१२) इनचार स्थानोंकि आपो क्लिम संज्ञाहै ॥ २४ ॥

त्र्याय स्वारयाः उपचयाः ॥ २५ ॥

टीका—तीसरा ३ छठा ६ दसमा १० ग्यारवां ११ स्थानकीउपचय संज्ञाहै २५

धर्मात्मजौ त्रिकोणौ ॥ २६ ॥

टीका— नवम ९ और पंचम ५ स्थानकी त्रिकोण संज्ञाहै ॥ २६ ॥

तुर्याष्टमौ चतुरस्रौ ॥ २७ ॥

टीका—चोथे और आठमे स्थान को चतुरस्र कहते हैं ॥ २७ ॥

स्वास्तौ मारकौ ॥ २८ ॥

टीका—दुसरा २ और सातमा ७ येदोनो स्थान मारक संज्ञकहै ॥२८॥

स्वान्त्यौ नेत्र संज्ञौ ॥ २९ ॥

टीका—दूसरा २ बारवां १२ स्थान नेत्र संज्ञकहै ॥ २९ ॥

षष्टाष्टमांत्याश्चिकादुष्टाश्च ॥ ३० ॥

टीका—छठा ६ आठमा ८ बारवा १२ इन ३ तीन स्थानोंको त्रिक-स्थानकहते है और दुष्टस्थानभी कहतेहै. ॥ ३० ॥

कर्कालिझपान्त्य भागा ऋक्षसंधयः ॥ ३१ ॥

टीका कर्क ४ वृश्चिक ८ मीन १२ राशीयोंका अंत्य भाग (२९ अंश.) ऋक्ष संधी कहाता है ॥ ३१ ॥

सिंहादि चतुष्कं दीर्घं कुंभादि चतुष्कं ह्रस्वं शेषाःसमाः ३२

टीका—सिंह ५ कन्या तुल ७ वृश्चिक ८ राशी दीर्घ संज्ञक और कुंभ ११ मीन १२ मेष १ वृषभ २ राशी ह्रस्व (छोटी) शेष मिथुन ३ कर्क ४ धन ९ मकर १० राशी सम संज्ञकहै (नहिदीर्घ और नहि ह्रस्व अर्थात् दोनोके मध्यकी) ॥ ३२ ॥

अर्को १ जीवः २ कुज ३ श्चंद्रज्ञौ ४ गुरु ५ मंदारौ ६ शुक्र ७ शनिः ८ सूर्यज्यौ ९ ज्ञार्कज्य-मन्दा १० जीवः ११ शनि १२ रितिक्रमात्तन्वादि कारकाः ॥ ३३ ॥

टीका—लग्नादि बाराहिभावो के स्थिर कारक ॥ लग्नका १ रवि। धन भावका २ गुरु। सहजका ३ मंगल। चतुर्थका ४ चंद्र बुध। पंचम ५ का गुरु। रिपु ६ का शनि मंगल। सप्तम ७ का शुक्र। अष्टम का ८ शनि। नवम ९ का रवि गुरु। दसम १० का बुध सूर्य गुरु शनि। लाभका ११ गुरु। व्यय १२ भावका शनि। भाव कारक जानना ॥ ३३ ॥

कर्के घटेणझषालितुलाः सजलाः शेषाशुष्काः ॥ ३४ ॥

टीका—कर्क ४ कुंभ ११ मकर १० मीन १२ वृश्चिक ८ तुल ७ राशि सजल (जलराशी) है शेष मेष १ वृषभ २ मिथुन ३ सिंह ५ कन्या ६ धन ९ शुष्क राशी है ॥ ३४ ॥

क्षीणे न्द्वर्क यमारराहुशिखिनः पापा स्तन्मात्र युतो-बुधश्च ॥ ३५ ॥

टीका—क्षीणचंद्र* सूर्य शनि मंगल राहु केतु ये पापग्रह है और बुध पापग्रह से युक्त होवे तो वह भी पाप होता है। पाश्चात्य विद्वानगण हर्शल नेपच्युन को भी पापमानते है इनके अतिरिक्त शेष ग्रह [पूर्ण चंद्रमा शुभयुत बुध गुरु शुक्र] शुभ ग्रह जानना ॥ ३५ ॥

मंदज्ञौ क्लीबौ चंद्राच्छौ स्त्रियौ शेषानराः ॥ ३६ ॥

टीका— शनि बुध नपुंसक चंद्र शुक्र स्त्री सूर्य मंगल गुरु पुरुष संज्ञक ग्रहजानना ॥ ३६ ॥

---

* कृष्णपक्ष की अष्टमी से शुक्लपक्ष की अष्टमी तक क्षीणचंद्र उसके बाद पूर्ण चंद्र होता है.

चंद्रार्कज्याः सात्विका ज्ञाच्छौ राजसौ शेषा स्तामसाः ३७

टीका–चंद्र सूर्य गुरु सात्विक (सतोगुणी) बुध शुक्र राजस (रजोगुणी) मंगल शनि राहु केतु तामस (तमोगुणी) ग्रहजानना ॥ ३७ ॥

मेषगो मृग कन्या कर्कान्त्य तुलाः सूर्याद्युच्च भानि तत्सप्तमानि नीचभानि दशमतृतीयाष्टाविंश पंचदश पंचम सप्त विंश विंशांशा अर्का दीनांपरमोच्चनीचभागाः ॥ ३८ ॥

टीका–मेष १ (सू) वृषभ २ (चं) मकर १० [मं] कन्या ६ [बु.] कर्क ४ [गु.] मीन १२ (शु) तुल ७ (श) येराशी क्रमसे सूर्यादि ग्रहोंकि उच्च राशी कहीहै इनसे सातमी २ राशी [तुल] (सू) वृश्चिक (चं) कर्क (मं) मीन (बु) मकर (गु) कन्या [शु] मेष [शनि] सूर्यादिग्रहो किनीच राशि जानना और इनही राशीयोके क्रमसे. १० । ३ । २८ । १५ । ५ । २७ । २० । ये अंश परमोच्च और परम नीच ये अंश जानना ॥ ३८ ॥

सिंहगोजांगनाचापतुलघटाः सूर्यादिनां मूलत्रिकोण-भानि ॥ ३९ ॥

टीका–सिंह ५ (सू.) वृषभ २ [चं.] मेष १ (मं) कन्या ६ (बुध) धन ९ [गु] तुल ७ (शु.) कुंभ ११ (श.) सूर्यादि गृहोंकि क्रमसे मूलत्रिकोण राशी कहीहै । परंतु सूर्यकी स्वराशी भी सिंहहै और मूलत्रिकोणभी सिंहहै ऐसेहि बुधकी स्वराशी उच्चराशी और मूलत्रिकोण राशी भी कन्या राशी ही कहीहै इनका विचार अंश विभाग से ग्रंथातरो मे विशेष स्पष्टी करणसे कहाहै उसके अनुसार चक्रादियांहै उससे स्व. उच्च. मूलत्रिकोण राशी जानना ॥ ३९ ॥

स्वनवांशाकाराशयो वर्गोत्तमाः ॥ ४० ॥

टीका–ग्रह जिसराशीका हो उसीराशीका नवांशमेभी हो तो वह वर्गोत्तम संज्ञक होताहै ॥ ४० ॥

स्व. उच्च. नीच. मूलत्रिकोण राशि चक्रं.

रवी	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु	
५	४	१ ८	३ ६	९ १२	२ ७	१० ११			स्वराशी.
मेष १०	वृषभ ३	मकर २८	कन्या १५	कर्क ५	मीन २७	तुला २०	वृषभ	वृश्चि .	उच्चराशी परमोच्चअंश
तुला १०	वृश्चि. ३	कर्क २८	मीन १५	मकर ५	कन्या २७	मेष २०	वृश्चि.	वृषभ	नीचराशिपरम नीचांश
सिंह ५	वृषभ २	मेष १	कन्या ६	धन ९	तुल ७	कुंभ ११	कुंभ ११	सिंह ७	मूल त्रिकोण राशी
मू२० स्व१०	उ. ३ मू२७	मू१२ स्व१८	उ. १५ मू ५ स्व१०	मू१० स्व२०	मू१५ स्व१५	मू२० स्व१०	मित्र भेमष.	मित्र भतुल	उच्चमूल त्रीकोण स्व राशि के अंश

पिंगलनेत्रो रक्तश्याम वर्णः पित्तप्रकृतिः समगात्रः प्रतापीः अल्परोमवागर्कः ॥ ४१ ॥

टीका-ग्रहोंके स्वरूप ॥ जोग्रह बलवान् हो उसके अनुरूप गुण आकारादि स्वरूप जन्मतथा प्रश्न में कहेजातेहै ॥
सूर्य=पिंगल नेत्र, (नेत्रकांति पिली) रक्तश्यामरंग, पित्तप्रकृति, सम शरीर, प्रतापी, अल्पकेश कमबोलनेवाला सूर्य हैं ॥ ४१ ॥

शुक्रःकृशो वर्तुलाङ्गो मेधावी मृदुवाक् शुभदृग्विवेकी वात कफात्मा चंद्रः ॥ ४२ ॥

टीका-चंद्र=श्वेतरंग, दुर्बल, गोलाकारशरीर, बुद्धिवान्, मधुरभाषी, शुभदृष्टि, विचारवान्, वातकफ, प्रकृतियुक्त चंद्र है ॥ ४२ ॥

दुष्टदृक्तरुणः कृशमध्यो रक्तसिताङ्गः पैत्तिकश्चंचलधी रुदार प्रताप्यारः ॥ ४३ ॥

टीका-भौम-दुष्टदृष्टि (खराबनजर) वाला, तरुण (जवान) अ-

वस्था, पतलीकमर लाल और श्वेतरंग का शरीर (गौर) पित्तप्रकृति चंचलबुद्धी, उदार स्वभाव प्रतापि, भौम है ॥ ४३ ॥

गद्गदवाग्घास्यशीलः सुधीर्दूर्वाश्यामाङ्गस्त्रिधातुः पुंश्च लोज्ञः ॥ ४४ ॥

टीका-बुध-गद्गदवचन बोलनेवाला हास्यशील (हसनेवाला) श्रेष्ट बुद्धि, दूर्वा के रंगसमान श्यामरंग का अंग. वातपित्तकफ प्रकृति, व्यभिचारी बुध है ॥ ४४ ॥

स्थूलोगौराङ्गः कफात्मापिङ्गाक्ष मूर्द्धन्यकचाभियुक्तो विद्वान् गुरुः ॥ ४५ ॥

टीका-गुरु पुष्टशरीर गौररंग कफ प्रकृति पीलीनेत्रकांति और पीलेहि मस्तक के केशोसे युक्त विद्वान् गुरु है ॥ ४५ ॥

सुखीबली दर्शनीयवपुः सुलोचनः कृष्णकुटिल केशः कामीवातकफात्मा श्यामः शुक्रः ॥ ४६ ॥

टीका-शुक्र-सुखी बलवान् दिखनेटे शरीरवाला सुहावने नेत्र काले और टेढे (घुघुरवाले) केश अधिककामी, वात कफ प्रकृति श्यामरंग के शरीरवाला शुक्र है ॥ ४६ ॥

क्रियास्वपटुः कातराक्षः कृष्णःकृशदीर्घाङ्गो बृहद्दन्तो-रूक्षतनूरुहो वातात्मा कठिनवाग् निन्द्योमन्दः ॥४७॥

टीका-शनि-सर्वकामो कि क्रिया मे अचतुर डरावने नेत्रोवाला कालारंग, दुर्बल, दीर्घदेह बड़े दांतोवाला रूखाशरीर और केश वात-प्रकृति कठोरशब्द बोलनेवाला तथा निंद्यकर्म करनेवाला शनिहै॥४७॥

अस्थिरक्तमज्जात्वग्वसाशुक्रस्नायूनिसूर्यादीनांधातवः ॥ ४८ ॥

टीका-सूर्यादिग्रहो कि धातु। सूर्यअस्थि (हड्डी) का चंद्र रुधिरका भौम मज्जा (भीतरकी पतलीचमड़ी) का बुध चमडी का गुरु

चर्मोंका. शुक्र वीर्यका. शनि नसोंका. अधिपति है. इनको ग्रहोंकिधातु कहते है । जो ग्रह अष्टम मे है वा मृत्यु कारक है उसके धातुके कोप से अंगमे रोगादिपीड़ा तथा मरण भी होता है ॥ ४८ ॥

सूर्यस्यमन्दाच्छौरिपू ज्ञःसमः शेषाः सुहृदः॥४९॥
चंद्रस्यज्ञार्कौ सुहृदौ शेषाः समाः ॥५०॥
भौमस्य शुक्रार्कि समौ ज्ञोरिः शेषाः सुहृदः ॥५१॥
ज्ञस्येन्दुः शत्रुः शुक्रार्कौ मित्रे शेषाः समाः ॥५२॥
जीवस्य ज्ञाच्छावरी समोर्कजः शेषा मित्राणि ॥५३॥
शुक्रस्य ज्ञार्कजौ मित्रे कुजेज्यौ समौ शेषावरी ॥५४॥
मन्दस्य ज्ञाच्छौ सुहृदौ जीवः समः शेषाःशत्रवः ॥५५॥

टीका—नैसर्ग मैत्रिचक्र । सूर्य के—शनि शुक्र शत्रु बुधसम चंद्रभौम गुरु मित्र है ॥ ४९ ॥ चंद्रके—बुधसूर्यमित्र शेष, (मंगल गुरु शुक्र शनि) सम है ॥ ५० ॥ मंगलके—शुक्र शनि सम बुध शत्रु शेष (रवि चंद्र-गुरु) मित्र है ॥ ५१ ॥ बुधके—चंद्रशत्रु शुक्र सूर्य मित्र शेष (मंगल गुरु शनि) समहै ॥ ५२ ॥ गुरुके—बुध शुक्र शत्रु शनि सम शेष (रवि चंद्र मंगल) मित्र है ॥ ५३ ॥ शुक्रके—बुधशनि मित्र मंगल गुरु सम शेष [रविचंद्र भौम]शत्रु है ॥ ५४ ॥ शनि के बुध शुक्र मित्र गुरुसम शेष रविचंद्र मंगल शत्रु है ॥ ५५ ॥

अन्योन्यस्य पार्श्वत्रयगास्तत्काले मित्राणिशेषाः शत्रवः५६

टीका—तात्कालिकमें त्रिसाधन ॥ जिस ग्रहसे जो ग्रह अपने समीप के तीन तीन स्थानमे अर्थात् २ । ३ । ४ और १२ । ११ । १० होवे वह उस ग्रहका तात्कालिक मित्र जानना । और शेष स्थान ५ । ६ । ७ ८ । ९ मे हो वह उस ग्रहका शत्रु जानना ॥ ५७ ॥

उभयथामित्राण्य धिमित्राणि शत्रवस्त्वधिशत्रवो मित्रश त्रवः समा मित्रसमा मित्राणि शत्रुसमाः शत्रवः ॥५७॥

नैसर्गिकमैत्रि चक्रम्.

र	चं	मं	बु	गु	शु	श	
चं मं गु	बु सू	र चं गु	शु सू	र चं मं	बु श	बु शु	मित्र.
बु	मं गु शु श	शु श	मं गु श	श	मं गु	गु	सम.
श शु	•	बु	चं	बु शु	र चं	र चं मं	शत्रु.

टीका–पंचधामैत्रिचक्र साधन। उपरोक्त नैसर्गीक और तात्कालिक मैत्रिसाधन करके देखना उनदोनो मैत्रिमें जो ग्रह मित्रका होवे वह अधिमित्र (मित्र मित्र अधिमित्र) दोनो मैत्रिमें जो ग्रह शत्रु होवे वह अधिशत्रु (शत्रु शत्रु अधिशत्रु) एक मैत्रिमेमित्र और दुसरीमे शत्रुहोवे तो समहोता है (मित्रशत्रु-सम) ऐसेहि मित्र और समहोवे तो मित्र (सममित्र-मित्र) सम और शत्रु होवे तो (समशत्रु-शत्रु) शत्रु होता है ॥ ५७ ॥

तृतीयदशमौ नवमपंचमौ चतुर्थाष्टमौ सप्तमंपादवृद्धितो ग्रहाः पश्यन्ति ॥ ५८ ॥

टीका–तीसरे ३ दशमे १० एकपाद। नवमे पांचवें ५ द्विपाद। चोथे ४ आठवे ८ त्रिपाद और सातमें ७ स्थानमे ग्रह पूर्ण दृष्टी से देखते है ॥ ५८ ॥

तृतीय दशमौ शनि स्त्रिकोणं गुरु श्चतुरस्रं भौमश्च विशेषतः पूर्ण पश्यति ॥ ५९ ॥

टीका–ग्रहो कि विशेष दृष्टि। तीसरे ३ दशमे १० शनि। नवमे ९ पांचवे ५ गुरु। चोथे ४ आठवे ८स्थानमे मंगळ विशेष करके पूर्ण दृष्टि

से देखते है अर्थात् सर्वग्रहो कि पूर्ण दृष्टि ७ सप्तमस्थान की कही है मो सातमे तो ये शनि गुरु भौम पूर्ण दृष्टी से देखतेहि है विशेष कर [३ । १०] [९ । ५] [४ । ८] इन स्थानो मे भी पूर्ण दृष्टी से देखते है यह इन ३ ग्रहो कि विशेष दृष्टी कही है ॥ ६० ॥

दिनेवारारंभादस्तकालो निश्यस्ततो वारप्रवेश कालांतः स्ववारखंडेनहतोष्ट भक्तो लब्धं गुलिकेष्टकालः ॥६०॥

टीका-गुलिक साधनो पयोगि गुलिकेष्टकाल साधन की रीति । दिन के समयका जन्म होवेतो वार प्रवेश कालके आरंभ समय से सूर्यास्त कालपर्यंत की घट्यादिकको और रात्रिका जन्महोवे तो सूर्यास्त समय से वार प्रवेशकाल पर्यंत जितनी घट्यादिक होवे उनको अपने वर्तमान वार के खंडेसे अर्थात् आगेके सूत्र ६२ मे वारो के दिन रात्रि के खंडे कहे है उनमे से जो वार अपना हो उसका दिनका जन्म हो तो दिनके खंड से और रात्रिका हो तो जो रात्रिका खंडा होवे उससे गुणन करना आठका भागदेना लब्ध आवे वही गुलिकका इष्ट काल होताहै ॥ ६० ॥ वार प्रवेश काल मुहूर्त चितामणी मे कहाहै उसकी रीती यहहै कि ॥ श्लोक-पादोनरेखा परपूर्व योजन पलैर्युतोना स्थितिथयोदिनार्द्धतः । ऊनाधिकास्तद्विवरो द्भवैपले ऊर्द्धं तथा धो दिनपप्रवेशनं ॥ जिस ग्राम का वार प्रवेश काल देखना हो उस ग्राम मे जिस ग्राम की मध्यरेखा लगती हो उस मध्यरेखा और अपने ग्राम के बीचके जितने पश्चिम अथवा पूर्वयोजन का अंतरहोवे उतनीही संख्या मे से चतुर्थांस घटाना शेष रहे उतने ही पलोंको पंदरा घटीमें रेखा से पश्चिम मे ग्राम होतो मिलाना और पूर्व मे अपना ग्राम होतो घटाना शेष रहे वह उस ग्रामका वार प्रवेश कालका ध्रुव होता है । इसध्रुवसे जिस दिनका वार प्रवेशकाल देखना हो उसी दिन के दिनार्द्ध के साथ अंतर करना शेष जितनी पले बचे उतनही पल दिनार्द्ध से ध्रुव अल्प होवे तो दिन चढे और दिनार्द्ध से ध्रुव जादा होवे तो उतनी ही पल रात्रि शेष रहते वार प्रवेश होता है ॥ इस प्रकार वार प्रवेश काल लाना यदि दिनचढे वार प्रवेश हुवा होवे तो जितने पल दिनचढे हुए उतनी ही पल दिनमान मे से

घटादेना एवं रात्रिशेषरहते वारप्रवेश हुआ होतो जितने पल शेष रात्रि रहते प्रवेशहुआ उतनेहि पल दिनमानमें अधिक मिलादेना सो वार प्रवेशकाल से सूर्यास्तकाल पर्यंतका काल होता है। ऐसे हि सूर्यास्तकाल से वार प्रवेश पर्यंत के कालको जानना। उदाहरण। जैसे किसी का जन्म सम्वत् १९५२ कार्तिककृष्ण ६ भौमवार को इष्ट ३१। ३ सू ६। १० पर रात्रिका जन्म है इसलिये सूर्यास्त से बुधवारके प्रवेश का कालपर्यंत समय निश्चय करने के लिये बुधवार का प्रवेशज्ञान प्रथम किया रतलाम और मध्यरेषा उज्जयनी के बीच के अंतरकी योजन संख्या ६ है इसमें से इसी संख्या का चतुर्थांश. १। ३० घटाया ४। ३० शेष रहे यह पल रेखा से पश्चिम मे रतलाम होने से १५ घटी मे यत्न की १५। ४। ३० यह रतलाम का वार प्रवेश ध्रुवक हुवा इसके और बुधवार के दिन के दिनार्द्ध १४। २। ० के अंतरकिया १। २। ३० शेष सच्यादि अंतर रहा इतदिन दिनार्द्ध से ध्रुव अधिक है इसलिये १ घड़ी २ पल ३० विपल रात्रिरहते बुधवार प्रवेशहुआ अतएव मंगलवार के सूर्यास्त समय २८। ५ से सूर्योदय पर्यंत रात्रिमान ३१। ५५ है इस मे से वारप्रवेशकाल १। २। ३० घटाया शेष ३०। ५२। ३० यह सूर्यास्त से वार प्रवेश कालान्त-समय हुआ इसको मंगलवार के रात्र का जन्म है सबब मंगलवार के रात्री के खंड १ जो भागे सूत्र ६२ मे कहा है उस १ से गुणन किय ३०। ५२ ३० हुवे इस के ८ का भागदिया लब्ध ३। ५१। ३३ यह गुलिक का इष्टकाल हुआ इस इष्टपर लग्नस्पष्ट की रीति से स्पष्ट लग्न लाये. ७। २ यह गुलिक लग्न स्पष्ट हुआ ॥ ६१ ॥

तत्काल लग्नतुल्यो गुलिकः ॥ ६१ ॥

दिनेर्कोद्रात्रौ ज्ञात्रगाङ्क पंचाग्धिनिनेत्रेंदुमिता गुलिक संज्ञाः ॥ ६२ ॥

टीका-आयेहुए गुलिकेष्ट पर लग्न की रीति से जो लग्न साधा वह गुलिक होजाता है ॥ ६२ ॥

दिनमे सूर्यसें रात्रिमें बुधसे ७।६।५।४।३।२।१ क्रमसें गुलिक के खंडे जानना ॥ ६२ ॥

र	चं	मं	बु	गु	शु	श	
७	६	५	४	३	२	१	दिनमें गुलिक खंडा।
३	२	१	७	६	५	४	रात्रिमें गु० खं०

अन्योन्यदृष्टौ एकतरदृष्टौ अन्योन्यस्थानस्थितावेक त्रस्थितौ वा संबंधोवगंतव्यः ॥ ६३ ॥

टीका-संबंध=ग्रह आपसमे परस्पर देखते होवे उस्को प्रथम दृष्टि संबंध जानना। एक ग्रहदेखताहोवे दूसरा उसको नहीदेखता होवे परंतु जो देखता है उसकी राशी मे गयाहो तो उस्को एकतर दृष्टि संबंध २ रा० जानना। दोनो परस्पर स्थान मे स्थित होवे अर्थात् एककी राशीमें दूसरा और दूसरे की राशी मे पहला होवे उस्को अन्योन्य स्थान सम्बंध ३ राजानना। दोनो ग्रह एकस्थानमे स्थितहोवे उस्को एकत्र स्थित सम्बंध ४ था जानना। ऐसे चारप्रकार के सम्बंध होते है॥ ६३ ॥

मंदार्काराः शुष्का श्चंद्राच्छौ सजलौ जलर्क्षगौज्ञेज्यौच ६४

टीका-शनी सूर्य मंगल शुष्क और चंद्र शुक्र सजल ग्रह जानना बुध गुरु जलराशीमे जायतो सजल शुष्कराशीमे स्थितहोवे तो शुष्कजानना॥ ६४ ॥

सर्व ग्रहेभ्योधिकांशादिरात्मकारक स्ततःक्रमेण न्यूनांशा अमात्य भ्रातृ मातृ पितृ पुत्र-ज्ञाति दारा कारकाः ६५

टीका-सूर्योदि राहु पर्यंत सर्व ग्रहोमे मे जोग्रह अधिक अंशादिक का हो वही आत्मकारक होताहै फेर उससे न्यूनन्यून अंशादिकके ग्रह क्रमसे अमात्य भ्रातृ मातृ पितृ पुत्र ज्ञातिदारा, कारक जानना ॥६५॥

अंशशब्देनात्मकारकनवांशः ॥ ६६ ॥

टीका-इसग्रंथमे जहां अंश शब्दआवे वहां आत्मकारक ग्रहके नवांश लग्नकी कुंडली जानना इसीको कारकांश कुंडली कहतेहैं ॥६६॥

ओजर्क्षे क्रमाद्बाल कुमार युवा वृद्धामृताख्या अवस्थाः समर्क्षे व्यत्ययः ॥ ६७ ॥

टीका–विषम राशीमे क्रमसे छछ अंशोके विभागसे बाल १ कुमार २ युवा ३ वृद्धा ४ मृता ५ अवस्था जानना और समराशीमे विपरीत जानना अर्थात् छ अंशको ग्रहहोवेतो मृता १ छसे १२ तक वृद्धा २ बारासे १८तक युवा ३ अठारासे २४ अंशतक कुमार २४ चोवीससे ३० अंशपर्यंत बाल ५ अवस्था जानना ॥ ६७ ॥

द्वादशांशादंशषट्केस्थितःपूर्णफलदः ॥ ६८ ॥

टीका–ग्रह जिस राशीमे होवे उस राशीके बारा अंशको आदिले ६ छअंशके भीतर स्थित हो (अर्थात् १२ । १३ । १४ । १५ । १६ । १७ १८ अंशका हो) तो वह पूर्ण फल देता है ॥ ६८ ॥

बलंषड्बलमित्युक्तम् ॥ ६९ ॥

टीका–इस ग्रंथमे जहा बल शब्द आवे वहा केशवीका षड्बल समझना ॥ ६९ ॥

वक्रग उच्चगोवा महाबली ॥ ७० ॥

टीका–जोग्रह वक्रगती होवे या अपनी उच्चराशीमे स्थितहोवे वह महाबलवान समझना ॥ ७० ॥

स्वर्क्षतुङ्ग मूलत्रिकोणगा नानिष्ट फलदाः ॥ ७१ ॥

टीका–स्वराशी उच्चराशी मूलत्रिकोणराशीमे जो ग्रहस्थितहोते है वे नेष्टफलनहीदेते है (अष्टहीफलदेतेहै) ॥ ७१ ॥

गुरुपूर्ण दृष्टोग्रहो नानिष्टफलदः ॥७२ ॥

टीका–जिसग्रहको गुरु पूर्णदृष्टीसेदेखताहोवेवह नेष्टफलनही देताहै॥७२

ग्रहर्क्षसंख्या ग्रहसंख्या हता पुनः ग्रहांशसंख्या हता इष्टजन्म नक्षत्रलग्न संख्याभिर्युतार्कनष्टा शेषावस्थाः ॥ ७३ ॥

शयनो १ पवेशन २ नेत्रपाणी ३ प्रकाश ४ गमना ५ ऽ गमन ६ सभा ७ गम ८ भोजन ९ नृत्यलिप्सा १०

कौतुक ११ निद्रा १२ अवस्थाः ॥ ७४ ॥

टीका–जिसनक्षत्र का ग्रहहोवे उसनक्षत्र की संख्या वो ग्रहकी संख्यासे (सूर्यहोतो १ से चंद्रहोतो २ से इसक्रम से संख्याग्रह की होतीहै) गुणन करना फेर उसको ग्रह जितने अंशका होवे उतनीही अंशसंख्यासे गुणन करना और उसमे इष्टघटी जन्मनक्षत्र की संख्या और जन्म के लग्न की संख्या मिलना १२ बारहका भागदेना शेष १ बचेतो शयन २ उपवेशन ३ नेत्रपाणी ४ प्रकाश ५ गमन ६ आगमन ७ सभा ८ गम ९ भोजन १० नृत्यलिप्सा ११ कौतुक १२ निद्रा अवस्था जानना ७३–७४ उदाहरण। सूर्य ६। १२। २२ यह स्वातिनक्षत्र के द्वितीयचरणमेंहै अश्विन्यादि क्रमसे स्वातिनक्षत्र १५ पंदरहवाहै इसलिये ग्रहर्क्षसंख्या १५ हुई इसको ग्रहसंख्या १ से गुणनकिये १५ हुए फेर सूर्य १२ अंश काहै इसकारण ग्रहांश संख्या १२ बारासे गुणनकिये १८० आये इसमे जन्म समय की इष्टघटी ३९ और मिथुन लग्न के ३ जन्म नक्षत्र पुनर्वसुके ७ मिलानेसे आयाहुआ योग ४९ मिलाया २२९ हुए इसमे १२ बाराका भागदिया शेष १ बचाअतएव सूर्य शयना अवस्थामे है ऐसेहि सर्वग्रहोंकि अवस्था जानना ॥ ७४ ॥

स्वोच्च गोदीप्तःस्वभगः स्वस्थो हितभगो हास्ययुक्तः शुभ वर्गगः शांतः स्फुरद्रश्मिः शक्तो मूढोलुप्तोनीचगोदीनः पाप शत्रुभगः पीडितः ॥ ७५ ॥

टीका–अपनी उच्चराशी मे जो ग्रह स्थितहोवे वह दीप्त १ जानना। औरजो स्वराशी का हो वह स्वस्थ २ मित्रराशी मे स्थितहो वह हास्ययुक्त ३ एवं शुभग्रहो के वर्ग मे (अर्थात् दशवर्ग मे जिस ग्रहमे अधिक शुभ ग्रहकावर्ग) हो शांत ४ और जोबलवान हो वहशक्त ५ अस्तका हो वहलुप्त ६ नीचराशीमे स्थितहो वहदीन ७ औरपाप ग्रहकी अथवा अपने शत्रुग्रह कीराशी मे स्थितहो वहग्रह पीडितसंज्ञक ८ जानना ॥ ७५ ॥

इति महादेवकृत जातकतत्वे संज्ञातत्वं प्रथमम् ॥ १ ॥

इतिश्री गणकवर्य श्रीमन्महादेवकृत जातकतत्वाख्यजातक ग्रंथेतत्सूनु श्रीनिवास रचित तत्वप्रदर्शिनि भाषाटीकायां संज्ञातत्वं प्रथमम् ॥ १ ॥

॥ अथ सूतिका तत्वम् ॥

अब सूतिका [प्रसुति समयका] विचार वर्णन करते है ।

(पिताके परोक्ष जन्मयोग)

चंद्रेणादृष्टेऽङ्गेपितुः परोक्षं जन्म ॥ १ ॥

स्थिरर्केऽष्टमांकायांत्ये चंद्रेण चादृष्टेंगे स्वदेशस्थापितुः परोक्षं जन्म ॥ २ ॥

चरेर्केतु प्राग्वज्जातस्यापितरि विदेशं गतेजन्म ॥ ३ ॥

मन्देङ्गे वास्तेभोमे पितुः परोक्षं जन्म ॥ ४ ॥

ज्ञाच्छांतरे चंद्रे पितुः परोक्षं जन्म ॥ ५ ॥

टीका–पिताके परोक्षमे बालकका जन्मयोग–चन्द्रमालग्नको नहि देखता होतो पिताके परोक्ष मे जन्म जानना ॥ १॥ स्थिराशी । २। ५। ८। ११। का सूर्य । आठमे ८ नवमे ९ ग्यारवे ११ बारवे ।१२। स्थानमे स्थित होवे. और चन्द्रमा लग्नको नहि देखता होतो पित स्वदेश मे रहते हुवे भि पिताके परोक्ष मे जन्म होवे [जन्म समयमे पिता घरके बाहर कही होवे] ॥२॥ चरराशि [मेष तुल मकर कर्क] का सूर्य ८। ९। ११। १२। स्थान मे स्थित होवे और चन्द्रमा लग्न को नहि देखता होतो पिता विदेश मे गयाथा और पीछे से जन्म हुआ ॥ ३ ॥ शनि लग्न मे होवे अथवा सातम स्थान में मंगल होवे तो पिताके परोक्षमे जन्म जानना [इससूत्र मे दो योग कहेहै १ शनी लग्न मे होतो २ रा मंगल सात मे होतो] ॥ ४ ॥ बुध और शुक्रके बीच मे चन्द्रमा स्थित होवेतो पिताके परोक्ष मे जन्म जानना ॥ ५॥

सर्प वेष्टित योग.

भौमत्र्यंशेचन्द्रे पापलग्ने शुभाःस्वायगाःसर्पवेष्ठितो जातः ॥ ६ ॥

टीका–मंगलकी राशी १। ८। के द्रेष्काणमे चन्द्र होवे और पापग्रह की राशी [१–५–८–१०–११–] का लग्न होवे सर्व शुभ ग्रह दुसरे २

ग्यारमे ११ स्थानमे जायतो सर्प वेष्टित जन्म होता है सर्प वेष्टित का तात्पर्य–सर्पाकार नशोंसे वा तदाकार नालसे भीहै ॥६॥ औरभी सर्वार्थमे सर्पवेष्टितके योगकहे हैं वे प्रसंगसे बताते हैं। यदि अष्टमेश लग्नमें राहु सहित होवैतो बालक सर्प वेष्टित होवे १ अथवा केंद्रमे राहु और गुलिकसे लग्नेश्वर युतहोवे २ अथवा लग्नेश अष्टमेशकेंद्रमे युतहो ३ तथा लग्न मे पापग्रहका द्रेष्काणहोतो बालक सर्प वेष्टित होवे४ और लग्नमे सर्प वा अंडज द्रेष्काण होवें ५ तथा द्रेष्काण सत्स्वामियुक्तहो और शुभदृष्टिरहितहोतो सर्पवेष्टित जन्महोवे।६।

वृषाजसिंहगे मन्दे वा भौमे भांशतुल्यवयये नालवेष्टितः॥७॥

टीका–मेष वृष सिंह राशीके लग्नमे शनिअथवा मंगल स्थित होतो उस राशि और नवांशके राशि विभागके समान अंगमे बालक नालवेष्टित होताहै अर्थात् वह राशि वा उसका नवांश कालपुरुषके अंगमे जिसस्थान में होवे उस स्थानमे नाला लिपटा हुवा होता है ॥ ७॥

यमल जन्म योग

चतुष्पदेऽर्के शेषेषुसबलेषु द्व्यङ्गगेषु यमलजन्मः ॥८॥

टीका–चतुष्पदराशि (मेष वृष सिंह मकर पूर्वार्द्ध धनका उत्तरार्द्ध) का सूर्य होवे और शेषग्रह बलवान होकर द्विस्वभाव राशिके लग्न मे स्थित होवेतो यमल जन्म–(जोडलेजन्म) होवे ८ ग्रंथांतरोंमे लिखा है कि आधानलग्नका स्वामी और तृतीय स्थानका स्वामी लग्नमे होतो यमल (दो बालक) उत्पन्न होवेगे। अथवा आधान लग्नेश तृतीयेशसे युक्त होकर तीसरे स्थानमे होतोभी वही फल जानना [दो बालक होवेंगे]॥ ८॥

जन्म समये पिता बंधनयोग–

सूर्यात्त्रिकोणास्तगौ मन्दारौपापभगौ जन्मनि पिताबद्धः॥९।

टीका–सूर्यसे ९।५।७। नवमे पांचवे अथवा सातवे स्थानमें शनि मंगल दोनोही पापग्रहकी राशि मे एकत्र स्थित होवेतो जन्म समयमें पिता बंधाहुआ कहना ॥ ९॥

नौकामध्ये जन्मयोग–

पूर्णेन्दौ कर्के स्वलग्ने जीवेतुर्ये नौकां जन्म ॥ १० ॥

टीका–पूर्णचन्द्रमा कर्कराशीका होवे और बुध लग्नमें गुरु चतुर्थस्थानमें स्थित होतो नावमें जन्म होता है॥ १० ॥

जलासन्न जन्मयोग

जलभेंगेऽस्तेपूर्णेन्दौ जलासन्ने जन्म ॥ ११ ॥

जलभगावंगचन्द्रौजलासन्ने जन्मः ॥ १२ ॥

जलभगे चन्द्रे खाम्बुस्थे जलासन्ने जन्म ॥ १३ ॥

टीका–जलराशी [४ । ११ । १० । १२ । ८ । ७ ।] का लग्न होवे और सातमें स्थानमें पूर्ण चन्द्रमा स्थित होवेतो जलके निकट स्थानमें जन्म होता है॥ ११ ॥ जल राशीके लग्न और चन्द्रमा दोनो होवेतो जलके समीप जन्म होवे ॥ १२ ॥ जलराशीका चन्द्रमा दशम १० अथवा चतुर्थ ४ स्थानमें स्थित होवे तो जलके समीपमें जन्म जानना ॥ १३ ॥

कारागारे जन्मयोग

चन्द्रेङ्गे मंदेन्त्ये पापदृष्टे कारागारेजन्मः ॥१४॥

टीका–लग्नमें चन्द्रमा और बारहवे स्थानमें शनि पापग्रहसे दृष्टहोवेतो जेलखानेमें जन्म कहना ॥ १४॥

[गर्तमें जन्मयोग]

कर्कालयंगेर्कजे चन्द्रदृष्टे गर्तेजन्मः ॥ १५ ॥

टीका–कर्क अथवा वृश्चिक राशीके लग्नमें शनि स्थित होवे और उसको चन्द्रमा देखता होवेतो गर्त [खड्डे] मे जन्म होता है॥ १५॥

[क्रीडालय देवालय और रेतीकी जमीनमें जन्मयोग]

जलभे मंदेङ्गे ज्ञदृष्टे क्रीडालये र्कदृष्टेदेवालये चन्द्रदृष्टेसशर्करावन्यां जन्म ॥ १६ ॥

टीका–जलराशी [४। १०। ११। १२। ८। ७।] का शनि लग्नमें होवे और उसको बुधदेखता होतो क्रीडालय (आनदकी जगह) म जन्म होवे सूर्य देखता होवेतो देवालयमें और चन्द्रदेखताहोवेतो रेती बिछी हुई जमीन में जन्म कहना॥ १६ ॥

श्मशान, रमणीयग्रह, अग्निशाला, राजमंदिर,
शिल्पालयमें, जन्म योग ।

नृलग्नेमन्देकुजदृष्टे श्मशाने सितेन्दुदृष्टेरमणीयगृहे गुरुदृष्टे ग्निशालायां रविदृष्टे नरेन्द्रामरालयगोकलान्यतमे ज्ञदृष्टे शिल्पालये जन्मः ॥ १७ ॥

टीका-नर राशी (१। ३। ५। ७। ९। ११।) के लग्नमे शनी स्थित होवे और उस्को मंगल देखताहोतो श्मशानमे जन्म जानना । शुक्र चन्द्र देखते होवेतो रमणीय स्थानमे जन्म होव। गुरु देखता हावेतो अग्निशाला अथवा रसोई घरमे जन्म कहना । सूर्य देखता होवेतो राजमहलमें तथा देवालयमें तथा गौशालामे अन्म होवे । और बुध जो देखता होवेतो शिल्पालय (कलाभवन सिलावटी सुथारी कुहारी सुनारी चित्रकारी काम जिसमकानमें होतेहोवे उसमकान)मे जन्मजानना ॥१७॥

माताछोडदे और दीर्घायु होवे ।

मन्दाराभ्यांपञ्चमेस्तेङ्के चन्द्रे मात्रात्यज्यते गुरुदृष्टेतु चन्द्रे दीर्घायुः ॥ १८ ॥

टीका-शनि मंगलसे । ५ । ७ । ९ । पांचवे सातवे तथा नवमे स्थानमे चन्द्रमा होवेतो माताउस बालकको छोडदेवे यदि उस चन्द्रको गुरु देखाता होवेतो माता छोडदेव तोभी दीर्घायु होताहै ॥ १८ ॥

माता त्याग करे और मरजाने के योग.

पापदृष्टेचन्द्रेगे ऽस्ते भौमे मातृत्यक्तो विनश्यति ॥ १९ ॥

पापदृष्टेङ्गे चन्द्रे मंदारौलाभे मातृत्यक्तो विनश्यति ॥ २० ॥

टीका-पापग्रहसे देखाहुआ चन्द्रमा लग्नमे होवे और सातमे मंगल होवेतो माताके छोड देनेसे मरजाता है ॥ १९ ॥ पापग्रहसे देखा हुआ चन्द्रमा लग्न मे होवे शनि मंगल दोनो ग्यारवे स्थानमे स्थित होवेतो माताकेत्यागकर देनेसे मरजाता है ॥ २० ॥

पित्र मात्र संबंधी ग्रहमे जन्म योग

मातापितृग्रहयोर्योबली तत्संबंधीगृहे जन्मः ॥ २१ ॥

टीका–माता पिता ग्रहमस जोग्रह बलवान होवे उसके सबंधी घरमे जन्म जानना अर्थात् माताग्रह बलवान होवेतो माता सबंधी नाना मामा मासी के घरमे जन्म होवे और पितृग्रहबलवान होतो पितृ संबंधी पिता काका आदिके घरमे जन्म होता है ॥ बृहज्जातकमे "दिवार्क शुक्रौ पितृ मातृ सज्ञितौ शनैश्चरेन्दू निशितद्विपर्यात् । पितृव्य मातृष्वसृ सज्ञितौचतला वयौज युग्मर्क्ष गतौ तयो शुभौ" । अर्थात् दिनमे जन्म होवे उसजीवके सूर्यपिता और शुक्रमाता सज्ञक ग्रह होता है एव रात्र मे जन्म होवे उसके शनैश्चर पितृ सज्ञक और चन्द्रमा मातृ सज्ञक होताहै येही उलट अर्थात् दिनमे जन्म होवे उसके शनैश्चर पितृव्य (काका) और चन्द्रमा मातृष्वसृ (मासी) सज्ञक और रातमेजन्म हो तो सूर्य काका और शुक्र मातृष्वसृ (मासी) सज्ञक जानना । इसप्रकार पितृ मातृ सज्ञक ग्रह कहेहै इनहीके बलके अनुसार जन्म स्थान कहना ॥ २१ ॥

वृक्षनदी प्राकारादिमे जन्म योग ।

सौम्याः सर्वे नीचगा वृक्षनदी प्रकारादिषु जन्म ॥२२॥

टीका–सर्व शुभग्रह नीचराशीमे गये होवेतो वृक्षके नीचे तथा नदीमे वा किलेके भीतर अथवा कोइ प्राकार (परकोट) के भीतर जन्म होता है ॥ २२ ॥

मार्गमे जन्म योग

नीचेगपुशुभेपुचंद्रेङ्गे ग्रहमात्राद्दष्ट दध्यांजन्म ॥ २३ ॥

टीका–शुभग्रह नीचराशिमे स्थित होवे और लग्नमे गयेहुवे चद्रको कोईभी ग्रह देखता नही होवेतो मार्गमे जानना ॥ २३ ॥

अधकारे जन्म योग

चंद्रे तुर्ये वा मंदयुतदृष्टे वा जलभांशेन्धकार जन्म ॥२४॥

टीका–इस सूत्रमे तीनयोगहै । १ चंद्रमा चोथेस्थानमे स्थित होवे तो अधकारमे जन्म होवे २ अथवा चंद्रमा शनीसे युक्त दृष्टहोवेतो अधकारमे जन्महो अथवा चद्रमा जलराशी [४ । १० । ११ । १२ । ८ । ७ । मे तथा जलराशीके नवमांशमे होवेतो अंधकार (अधेरे मे) जन्म होताहै ॥ २४ ॥

बहुदीप गृहे जन्म योग

सबलेर्के भौमदृष्टे बहुदीपगृहे जन्मः ॥ २५ ॥

टीका-बलवान सूर्यको मंगल देखता होवेतो बहुत दीपकवाले घरमे जन्म कहना ॥ २५ ॥

तैल, वर्ति, दीपज्ञान योग

चन्द्रात्तैल ज्ञानम् ॥ २६ ॥

लग्नाद्दीपवर्ति ज्ञानं ॥ २७ ॥

चरेर्केचर स्थिरेर्के स्थिरो द्विस्वभावे खंडवद्दीपः ॥२८॥

टीका-सूतिका घरमे-दीपकमें तैल चन्द्रके अनुरूप [क्षीण , पूर्ण, सपाप, जैसा चंद्रहो वैसा अल्प अधिक मध्यम] जानना ॥ २६ ॥ और ऐसेहि लग्नके अनुरूपवत्ती कहना ॥ २७ ॥ जन्मसमयमे चर राशीका सूर्य होवेतो चंचलदीप(हातमें चलता फिरता होगा) स्थिर राशीका सूर्य होतो स्थिरदीप (एकस्थानमे रखा हुवा) और द्विस्वभाव राशीका सूर्य होतो खंडवदीप(देहलीमे रखाहुवा दीपक) जानना ॥२८॥

मस्तकसे वा पावसे जन्म ज्ञान ।

शीर्षोदयांशेगे र्द्धतः प्रसव उभयोदयांशेहस्ततो न्यथापादतः ॥ २९ ॥

टीका-जन्म लग्नमे शीर्षोदय राशी (३ । ५ । ६ । ७ । ८ । ११) नवांशहो तो मस्तककी तरफसे जन्म कहना । उभयोदय राशी (१२) का नवांशहो तो हातसे जन्म अर्थात् प्रथम हस्त निकला होगा और पृष्ठोदय राशी का नवांश होवेतो पांवकी औरसे जन्म जानना २९

कष्ट योग-

लग्नचंद्रान्यतरतो बंध्वस्तगेपुक्रूरेपुमातुः कष्टम् ॥ ३० ॥

टीका-लग्न तथा चंद्रमासे चोथे सातमे स्थानमे क्रूरग्रहहोवेतो माताको विशेष कष्टहुआ जानाना (क्रूरग्रह-सू मं. श. रा.) ॥ ३० ॥

सूतिका गृह द्वारज्ञानं ।

केंद्रगस्य वा बलिनो ग्रहस्य दिशिगृहद्वारम् ॥ ३१ ॥

टीका–केंद्र । १ । ४ । ७ । १० । स्थानमें जोग्रह स्थितहोवे तथा जोग्रह सर्वग्रहोसे अधिकबलीहोवे उसकी दिशामें सूतिकागृहका द्वार जानना ॥ ३१ ॥ ग्रहोंकिदिशा बृहज्जातक मे इसप्रकार कही है " प्रागाद्यारविशुक्र लोहित तमः शौरेन्दु वित् सूरयः " अर्थात पूर्वका स्वामी रवि १ अग्निका शुक्र २ दक्षिणका मंगल ३ नैऋतकाराहु ४ पश्चिमका शनि ५ वायव्यका चंद्र ६ उत्तरका बुध ७ ईशानका गुरु ८ स्वामि जानना ॥ ३१ ॥

गृहज्ञान. ।

काष्टादयं नवं दग्धं चित्रं दृढं रम्यंजीर्णं क्रमादर्कादिषुयो बली तदनुसारी गृहम् ॥ ३२ ॥

टीका–जन्म समयमें सूर्यादि ग्रहोमेंसे जोग्रह अधिक बलीहोवे तदनुसार बालकका जन्म गृह (मकान) जानना. । यदि सूर्य बलवान होवेतो काष्ठगृह ऐसेहि चंद्रबलवान होतो नयामकान मंगल० जला हुवा० बुध० चित्र विचित्र गुरु मजबूत. शुक्र० सुंदर शनि० पुराना [जीर्ण] मकान जन्म का कहना ॥ ३२ ॥

गृहके किसभागमे जन्म हुआ.

वृषाजयो रुदये गृहस्य पूर्वभागे युग्मस्याग्नेयां कर्के सिंहयोर्याम्ये कन्यायां नैऋते तुलावृश्चिकयोः पश्चिमेधनुषो वायौ मंदभयो रुत्तरे झषस्येशान्यां जन्म ॥ ३३ ॥

एवं शय्या ज्ञानम् ॥ ३४ ॥

टीका–जन्म समयमे मेष वा वृषभ लग्न होतो घरके पूर्वभागमे और मिथुन होतो घरकेअग्निकोणमे कर्क सिंह राशिका लग्न होतो घरके दक्षिण भागमे कन्या लग्न होतो घरके नैऋत कोणमे तुल वृश्चिक लग्न होतो घरके पश्चिम भागमे धनराशीका लग्न होतो घरके वायु कोणमे मकर कुंभ लग्न होतो घरके उत्तर भागमे मीनराशीका लग्न होतो घरके ईशान भागमे जन्म कहना ॥ ३३ ॥ इसीप्रकार शय्या (सूतिका का पलंग) का विचार जानना ॥ ३४ ॥

शय्या सिर वा पाद विचारः ।

लग्नदिशि शय्याशिर स्त्रिषडंकान्त्येषुपादाः ॥ ३५ ॥

यत्र पाप स्तत्रो त्वाटः ॥ ३६ ॥

टीका-उपरोक्त लग्नकी दिशाके तरफ पलंग का शिर (शिराध्या) कहना अर्थात् मेष वृष लग्न में पूर्वकी तरफ मिथुन में आग्नि कोणमें ।४।५। कर्क सिंह में दक्षिणमें इसी प्रकार बाराहि लग्न में जानना और लग्न से ३। ६।९। १२। तीसरा छठा नवा बारवां स्थान पलंग के पाये जानना ॥ ३५ ॥ इन स्थानो मे से जिस स्थानमें पाप ग्रह युक्त होवे यहि पलंग का पाया फटाहुया समझना ॥ ३६ ॥

उपसूति का ज्ञान।

लग्न चन्द्रान्तरगग्रह संख्या उपसूतिका उदगर्द्धेभ्यन्तर गा दक्षिणार्द्धे बाह्याः ॥ ३७ ॥

टीका-लग्न और चन्द्रके बीचमें जितने ग्रह स्थितहोवे उतनीही संख्या उपसूतिका जानना ग्रह उत्तरार्द्ध [लग्नसे सप्तमभावपर्यंत] मे होवेतो भीतर (सूतिका के समीप में) और दक्षिणार्द्ध (सप्तम से लग्न पर्यंत) मे होवेतो बाहर कहना ॥ ३७ ॥

वक्रोच्चसंस्थे त्रिगुणाः स्वर्क्ष त्र्यंशनवांशेस्थिते द्विगुणा नीचास्तगैरर्द्धमिता उपसूतिकाः ॥ ३८ ॥

मीनाजांङ्केद्वे गोघटाङ्के चतस्र कर्कहयांगेपंच शेषे तिस्रउपसूतिका ॥ ३९ ॥

टीका-लग्न चंद्रके बीचमे जितने ग्रह स्थितहो उतनी उपसूतिका कहीहै उसमेभि यदि बक्र राशिका अथवा उच्च राशिका ग्रह स्थित होवेतो उनकी संख्या की तीन गुनी उपसुतिका कहना और स्वराशी स्वद्रेष्काण स्वनवांशके ग्रह होतो उनकी संख्यासे द्विगुण संख्या उप सूतिका जानना ॥ ऐसेहि जितनेग्रह नीचराशी के अस्तके होवे उत नी संख्या कि आधि उपसूति का समझना ॥ ३८ ॥ तथा मीन मेष लग्न में जन्म होतो दो २ वृष कुंभ लग्न होतो ४ चार कर्क सिंह होतो पांच ५ शेष ३। ६। ७। ८। ९। १०। लग्न होतो ३ उप सूतिका जान ॥ ९ ॥ इनमें भी सर्वार्थमें लिखाहै कि चन्द्र बुध

गुरु शुक्रादि शुभ ग्रह होतो सुन्दर सौभाग्यवती और शनि राहु केतु योग होतो विधवा कृष्ण वर्णा कृष्ण वस्त्रा उपसूतिका जानना ॥

बहुरुदितयोगः ॥

गोजाश्वि युग्म सिंहांगे बहुरुदितो जातोन्यथान॥ ४०॥

टीका—वृषभ मेष धन मिथुन सिंह राशिका लग्न होतो जन्म समय मे बालक बहुत रोया और शेष लग्न मे होतो रुदन नहीं किया जानना ॥ ४० ॥

निर्जने प्रसव योगः ॥

अंगे चंद्रे ग्रहमात्रादृष्टे निर्जने प्रसवः ॥ ४१ ॥

टीका—लग्नमे चंद्रमा स्थितहोवे और उसको कोईभी ग्रहनही देखता होवेतो निर्जन (शून्य) स्थान में जन्म कहना ॥ ४१ ॥

सुख तथा कष्टसे प्रसव योग ॥

खांबुगे शुभेषु सुखेन प्रसव स्त्रिकोणास्तगेषु पापेषु कष्टतः ॥ ४२ ॥

टीका—दशमें १०और ४ चौथे स्थानमें शुभग्रह स्थित होवेतोसुखसेप्रस हुवा और त्रिकोण ९।५। सप्तम ७ मस्थानमें पापग्रह स्थितहोवेतो कष्टेसेप्रसवहुवाकहना ॥ ४२ ॥

जन्मसे पूर्वे पितृ मरण योगः ॥

तुर्येसेवा मन्दारार्क योगे जन्मतःप्राक्पितृ मरणं ॥४३॥

टीका— चतुर्थे ४ अथवा १० दशम स्थानमें शनि मंगल सूर्य इनती- नों ग्रहोका योग होवेतो जन्म के पहले पिता मरण कहना ॥ ४३ ॥

माताके साथ बालक का मृत्यु योग ।

लग्न षष्टास्ताष्टमगाः पापामात्रासह बालस्य मृतिः ।४४

ग्रस्ते चंद्रेसमंदे लग्नाष्टमेभौमे मात्रासह बालस्यमृतिः।४५

ग्रस्ते केंमंदज्ञा न्यतमयुते रंधाङ्गे कुजे मात्रासहबाल स्यमृतिः ४६ ॥

टीका—लग्न मे छटे सातमे आठमे स्थान मे सर्व पापग्रह स्थितहोवे तो माता के साथ मे बालक की मृत्यु होव ॥ ४४ ॥
ग्रहण दिनका चंद्रमा शनिसे युक्त होव और लग्नमे अथवा आठमे भौम होव तो माताके साथ बालक की मृत्यु होव ॥ ४५ ॥
ग्रहण समय का रवि, शनि अथवा बुध से युक्त होवे और लग्नमे तथा आठमे मंगलहोवे तो माता के साथ बालक को मृत्यु होव॥४६॥

महाकष्ट योग.

भौमभेकारिमंदेन्दुदृष्टेष्टमेचेज्ये बालस्य महाकष्टम् ॥४७॥

टीका—मंगल की १ । ८ राशी के सूर्य मंगल शनि होवे और चंद्र, देखता होवे ८ आठमे स्थानमे गुरु स्थित हो तो बालक को महाकष्ट होताहै ॥ ४७ ॥

सद्यमृत्यु होनेके योग.

व्ययारि पापयुतौ बालमृतिः ॥ ४८ ॥
लग्नेशेमार्केनीचगेरन्ध्रे बालस्य सद्योमृतिः ॥ ४९ ॥
राहौ केन्द्रेपापनान्ययुतदृष्टे बाल ० ॥ ५० ॥
नगेर्केगेमन्दे दृष्टेभौमे बाल० ॥ ५१ ॥
मंदारभेखेर्के पापैर्दृष्टे बाल० ॥ ५२ ॥
षडाष्टमेचंद्रे पापैर्दृष्टेबाल० ॥ ५३ ॥
चरमांशेचंद्रे शुभैरदृष्टे कोणपापा बा० ॥५४॥
मन्दार्केन्द्वाराव्ययांकाङ्काष्टमगास्तबलागुरुदृष्टाबाल० ५५।
कोणांत्यास्तांगेषुपापयुतश्चन्द्रो बलिशुभायुतदृष्टोबा।०५६।
चंद्रेशेस्तेपापाबा० ॥ ५७ ॥
मन्दाद्रन्ध्रे बलिनः पापाबाल० ॥ ५८ ॥
क्षीणेन्दारात्केन्द्राष्टमगाः पापाबाल० ॥ ५९ ॥

कर्कालयंगे खलाःपूर्वार्द्धे सौम्याःपरार्द्धे वा लग्नास्ताष्टांत्ये-
सपापेंदौशुभादृष्टे शुभायुतेपुकेंद्रेपुबाल० ॥६०॥
त्रिकेसौम्याःकेंद्रकोणेपापा लग्नेर्केबाल० ॥ ६१ ॥
चन्द्रापयुतेपु सर्वकेंद्रेपुबा० ॥ ६२ ॥
लग्नास्तगौपापौ चंद्रो मिश्रदृष्टोबाल० ॥ ६३ ॥
क्षीणेंदावंत्ये पापेपुलग्नाष्टमगेपु केंद्रेतरगेपु शुभेपुबाल० ६४
पापांतरेचंद्रे रंध्राम्बुसप्तमगे बाल० ॥ ६५ ॥
संध्यायांभांत्यगाः पापाइन्दुहोरायां बाल० ॥ ६६ ॥
रंध्रास्तगौपापैपापमात्र दृष्टौबाल० ॥ ६७ ॥
लग्नान्तराष्टाङ्केकभाच्चंद्रारार्कमन्दा बाल० ॥ ६८ ॥
पष्ठयां तातस्य मौमार्कान्वितेमृतिः० ॥ ६९ ॥
पष्ठाष्टमगेचंद्रे पापवर्गस्थे तुर्येऽहोशिशुमरणं ॥ ७० ॥

टीका–बारमे और ६ छठे स्थानमे पापग्रह यक्तहोवे तो बालककी सद्य मृत्यु कहना ॥ ४८ ॥ लग्न का स्वामी सूर्ययुक्त होवे और नीचराशी मे स्थित होकर आठमे स्थान मे जाय तो बालक की सद्य मृत्यु कहना ॥ ४९ ॥ राहु केंद्र १।४।७।१०। में स्थितहोवे और पाप ग्रह मात्र से युक्त तथा दृष्टहोवे तो बालक की सद्य मृत्यु होतिहै ॥५०॥ सातमे सूर्य लग्नमे शनि आठ में मंगल होवे तो बालक की शीघ्र मृत्यु होतिहै ॥ ५१ ॥ शनि तथा मंगल की १०।११।१।८ राशिका सूर्य १० दशम स्थान मे स्थितहोवे और पापग्रहो से दृष्टहो तो बालक की शीघ्र मृत्यु होतिहै ॥ ५२ ॥ चंद्रमा छठे आठ मे स्थान मे पापग्रहो से दृष्टहोवे तो बालक की शीघ्रमृत्यु जानना ॥ ५३ ॥ राशी के अंत्य अंश (२९ अंश) मे स्थित चंद्रमा शुभ ग्रहो से दृष्ट नही होवे और ९।५ नवमे पांचमे स्थान मे दो से अधिक पाप ग्रह युक्त होवे तो बालक की शीघ्र मृत्यु कहना ॥५४॥ शनि सूर्य चंद्र मंगल

ये ग्रह बलवान होकर क्रमसें १२।९।१।८। बारमे नवमें लग्न मे आठमे स्थान मे जाय और गुरु इनको नही देखता होवे तो बालक की शीघ्र मृत्यु कहना ॥ ५५ ॥ नवमे पांचमे बारमे सातमे ९ । ५ १२ । ७ तथा लग्न मे पापग्रह युक्त चंद्रमा स्थितहोवे और बलवान शुभग्रह से युक्त तथा दृष्ट नही होवे तो बालक की शीघ्र मृत्यु कहना ॥ ५६ ॥ लग्नमें चंद्रमा और सातमे २ । ३ पापग्रह होवे तो बालक की शीघ्र मृत्यु जानना ॥ ५७ ॥ शनी से ८ आठ मे स्थान मे बलवान ३ पाप ग्रहगये होवे तो बालक की शीघ्र मृत्यु जानना ॥ ५८ ॥ क्षीण चंद्रमा लग्न मे स्थित होवे केंद्र १ । ४ । ७ । १० और अष्टम स्थान मे पापग्रह युक्त होवे तो बालक की शीघ्र मृत्यु होतिहै ॥ ५९ ॥ कर्क और वृश्चिक राशि के लग्नमे जन्म होवे पुर्वार्द्ध (लग्नसे सप्तम भावपर्यंत) में पापग्रह स्थितहोवे और उत्तरार्द्ध (सप्तमसे लग्न पर्यंत) में शुभग्रह स्थित होवे तो बालक की शीघ्र मृत्यु होवे, अथवा लग्न सप्तम अष्टम और बारमें स्थानमें पापग्रह युक्त चंद्रमा स्थितहोके शुभग्रहो से दृष्ट-नही होवे और केंद्रस्थान में शुभग्रह युतनही होवे तो बालक की शीघ्र मृत्यु होतिहै ॥६०॥ त्रिक स्थान ६।८।१२ मे शुभग्रह, केंद्र १।४।७।१० कोण (९।५) स्थानमे पापग्रह और लग्न मे सूर्य स्थित होवे तो बालक की जल्दी मृत्यु जानना ॥६१॥ चारोहि केंद्र १।४।७।१० स्थानमे पाप ग्रह और चंद्रमा स्थितहोवे तो बालक की शीघ्र मृत्यु होवे ॥ ६२॥

लग्न और सप्तम स्थानमे दो पापग्रह स्थितहोवे और चंद्रमा मिश्रग्रह (शुभ पाप दोनु) सें दृष्टहोवे तो बालक की शीघ्र मृत्यु होवे ॥ ६३ ॥ बारमे स्थानमे क्षीणचंद्रमा, लग्न १ और अष्टम ८ स्थान में पापग्रह, और केंद्रस्थान के शिवाय अन्य पणफर तथा आपो क्लिम स्थान में शुभग्रह स्थित होवे तो बालक की शीघ्र मृत्यु जानना ॥ ६४ ॥ पापग्रहो के बीचमें चंद्रमा ८ । ४ । ७ भाव में गयाहोवे तो बालककी शीघ्र मृत्यु होवे ॥ ६५ ॥ संध्या समय मे जन्म होवे और राशी के अंत्य अंशमे अर्थात् २९ में अंशमे पाप ग्रह गयेहुये चंद्रकी होरा मे स्थित होवे तो बालक की शीघ्र मृत्यु होतिहै ॥ ६६ ॥ आठमे और सातमे स्थानमें पापग्रह स्थित होवे और पापग्रह मात्र देखते होवे तो बलक की शीघ्र मृत्यु जानना ॥ ६७ ॥

चंद्र १ मंगल १२ सूर्य ८ शनि ९ स्थानमे क्रमसे गयेहोवे तो बालक की शीघ्र मृत्यु कहना ॥ ६८ ॥
छठके दिन जन्म होवे मंगल और सूर्य लग्नमे स्थितहोवे तो बालक की शीघ मृत्यु होतिह ॥ ६९ ॥
छठे आठ मे स्थान मे चंद्रमा पापवर्ग मे गया हुवा स्थितहोवे और चोथ स्थान में राहुहो तो बालक का शीघ्र मरण होवे ॥ ७० ॥

दश ग्यारा सोला दिन मे मृत्यु योग

चंद्रा दस्ते भौमार्कौ दशाहे शिशु मरणं ॥ ७१ ॥
मंद भगे जीवेष्टभे पापै ईष्टे एकादशाहे शिशुमरणं ॥ ७२ ॥
मन्दे ङ्गे पापमात्र दृष्टे षोडशाहे शिशु मरणं ॥ ७३ ॥

टीका-चंद्रमा से सातमे स्थानमे मंगल और सूर्य दोनो स्थितहोवे तो दशमे दिन बालक की मृत्यु होवे ॥७१॥ शनी कीराशि १०।११ का गुरु ८ अष्टम स्थान मे स्थितहोवे और पापग्रहा से होवे तो ११ ग्यारे में दिन बालक की मृ यु जानना ॥७२॥ शनि लग्न में होवे सर्व पापग्रह देखते होवेतो १६ सोलमे दिन बालककी मृत्युजानना ॥७३॥

लग्नांशे शे षष्ठे षष्ठभतुल्य दिनेशिशु मरणं ॥७४॥

टीका-जन्मलग्न जिस राशीके नवमांश मे हो उसका स्वामी छठे स्थान मे गयाहावे तो छठे स्थान मे जो राशि होवे उतने दिन मे बालक मरता है ॥ ७४ ॥

अेक मास मे शिशु मरण योग.

षष्ठाष्टमगाः सौम्या वक्रग पापदृष्टा मासे शिशुमरणं ॥७५॥
सपापे ङ्गे शे यूने मासे शिशुमरणं ॥ ७६ ॥
कुजेंगे जीवेंत्ये शुभेषष्ठे मासे शिशुमरणं ॥ ७७ ॥
सपापे जन्मेशे रंध्रे मासेशिशुमरणं ॥ ७८ ॥
लग्नेशेस्ते खलनिजिते मासे शिशुमरणं ॥ ७९ ॥
मंदार्कारां रंध्रे वा षष्ठे मासे शिशुमरणं॥ ८० ॥

टीका–छठे आठने स्थान मे शुभ ग्रहगये होवे वक्रगती मे गये हुवे पापग्रह देखते होवे तो १ मासमे बालक की मृत्यु कहना ॥ ७५ ॥

पापग्रह से युक्त लग्न का स्वामी ७ सातमे स्थानमे स्थितहोवे तो १ एकमास मे बालक को मृत्युहोवे ॥ ७६ ॥

लग्न मे भौम बारमे स्थान मे गुरु, आर शुभ ग्रह छठे स्थान बैठे होवे तो १ अेकमास में बालक की मृत्यु जानना ॥ ७७ ॥

जन्म राशी का स्वामी पाप ग्रह से युक्त होकर ८ आठ मे स्थान मे गयाहोवे तो १ मास मे बालक का मृत्यु जानना ॥ ७८ ॥

लग्न का स्वामी ७ सातमे स्थान मे पापग्रह से पराजित (हारा) हुवा होवे तो १ मासकी आयु जानना ॥ ७९ ॥

शनी सूर्य मंगल ८ आठ मे अथवा छठे स्थान मे जाय तो बालक की १ एकमास की आयु कहना ॥ ८० ॥

तीन पक्ष से अेकवर्ष पर्यंत की आयु के योग.

ग्रहणेङ्गेशे ऽबले सपापे पक्षत्रयं वा मासत्रयंजीवति ॥ ८१ ॥

रंध्रेङ्गेशे पापयुत दृष्टे तुर्यमासायुः ॥ ८२ ॥

सर्वे आपोक्लिमगा विबलाः षण्मासायुः ॥ ८३ ॥

पापर्क्षे सुते इन्द्वर्कारा: षण्मासायुः ॥ ८४ ॥

टीका–लग्न का स्वामी ग्रहण समयका होवे और निर्बली होकर पापग्रह से युक्त होवे तो पक्षत्रय (देढ महिना) अथवा तीन महिना बालक जीवित रहेगा ॥ ८१ ॥

लग्नका स्वामी ८ आठ मे स्थान मे पापग्रह से युक्त दृष्टहोवे तो ४ चार मास की आयुबालक की जानना ॥ ८२ ॥

शुभ तथा पाप सर्व ग्रह आपोक्लिम (३।६।९।१२) स्थान मे जाय और निर्बली होवे तो बालक की ६ छेमास की आयु कहना ॥ ८३ ॥

पापग्रह की राशी (१।८।५।१०।११) मेगये हुवे चंद्र सूर्य मंगल पंचमस्थान में स्थितहोवे तो ६ छे महिने की आयु जानना ॥ ८४

धनांत्यगा वा व्ययारिगा वा रंध्रारिगा वा ९मांकगा॰

षष्ठेऽष्टमे वा मासि मृतिः ॥ ८५ ॥

लग्नद्रेष्काणेशे षष्ठे भतुल्ये मासि मृतिः ॥ ८६ ॥

टीका-दुसरे और बारमे स्थान मे १ अथवा १२ बारमे और छठे स्थान मे २ वा अष्टमे और छठे स्थानमे ३ अथवा ८ आठमे और नवमे स्थानमे ४ सर्व पापग्रह स्थितहोवे तो छठे तथा ८ आठ मे महिने मे मृत्यु कहना ॥ इस सूत्रमे चारयोगकहेहै इनमे से कोईभी योग हो तो ६ तथा ८ महिने मे बालक की मृत्यु जानना ॥ ८५ ॥

लग्न द्रेष्काण का स्वामी ६ छठे स्थान मे स्थितहोवे तो छठे स्थान मे जो राशी होवे उतनेहि संख्या के मासमे बालक की मृत्यु जानना ॥ ८६ ॥

अेक वर्ष से २४ वर्ष पर्यंतके आयु योग.

षष्ठाष्टमगयोः पाप दृष्टयोः पापयो र्वर्षांतरे मृतिः ॥ ८७ ॥

चंद्रज्ञौ केंद्रे मूढमंदारदृष्टौ वर्षांतरेमृतिः ॥ ८८ ॥

लग्नपात्चंद्रेशेऽष्टमे पापमात्रदृष्टे वर्षद्वयायुः ॥ ८९ ॥

केंद्राष्टषष्ठेरक्रगेग्रहेकुजभे सबलारदृष्टे वर्षत्रयायुः ॥ ९० ॥

टीका-पापग्रह से देखे हुवे पापग्रह छटे आठमे स्थान मे गयेहोवे तो एक वर्षके बाद बालक की मृत्यु जानना ॥ ८७ ॥

चंद्रबुध दोनो केंद्रमे स्थितहोवे और अस्तके शनि मंगल उनको देखते होवे तो बालक की एक वर्ष के पश्चात् मृत्यु जानना ॥ ८८ ॥

लग्न के स्वामी से चंद्रमा की राशी का स्वामी ८ आठवेस्थान मे स्थितहोवे और पापग्रह मात्र देखते होवे तो २ दो वर्ष की आयु जानना ॥ ८९ ॥

केंद्र और छठे आठमे १।४।७।१०।६।८ स्थान मे व क्रगतिस्थ ग्रहमेष अथवा वृश्चिक राशीका आय और उसको बलवान मंगल देखता होवे तो ३ तीन वर्ष कीआयु जानना ॥ ९० ॥

सोऽर्थे पापांशगौ पापदृष्टौ पुष्पवंतौ वर्ष त्रयायुः ॥ ९० ॥

भौमभेष्टमेजीवे मन्देन्द्वर्क दृष्टे भृग्वदृष्टे वर्षत्रयायुः ॥ ९१ ॥

पष्टाष्टमे कर्कगेज्ञे चंद्रदृष्टे तुर्येब्दे मृतिः ॥ ९३ ॥

टीका–पापग्रह के नवमांशमे गये हुवेसूर्य चंद्रमा तीसरे स्थानमे तहोवे और पापग्रह उनको देखते होवे तो ३ वर्षकी आयुजानना ९१ ॥

मेष वृश्चिक शराशी का गुरु आठमे स्थान मे जाय और उस्कोशनि सूर्य देखते होवे शुक्र की दृष्टि नहिहोवेतो ३ वर्षकि आयु जानना ९२ ॥

छठे आठमे स्थान मे कर्कराशी का बुधहोवे और चंद्रमा उस्को तताहोवे तो ४ वर्ष की आयु जानना ॥ ९३ ॥

सेंदुर्केज्यौ वा सेंदुर्काक्यारा वा समन्देन्दुच्छाराः पञ्चमाब्दे मृतिः ॥ ९४ ॥

लग्नेराहौ पापमात्रदृष्ट युते पञ्चमाब्देमृतिः ॥ ९५ ॥

सुर्येन्दूभेत्रिकेशुक्रे पापदृष्टे पष्टेब्दे मृतिः ॥ ९६ ॥

लग्नेर्कमन्दाराः क्षीणेन्दावस्ते पष्ठे सप्तमेवाब्देमृतिः ९७ ॥

क्षणिंदावास्ते लग्नेमंदाराच्छा गुर्वदृष्टाः सप्तमेब्देमृ० ९८॥

पष्टाष्टमगाः सौम्याः कोणेपापा अष्टमेब्दे मृतिः ॥ ९९ ॥

क्षीणेंदावस्तेशुक्रभे लग्नेमंदारार्कागुर्वदृष्टासप्तमेब्देमृति १००

त्रिकेचंद्रर्काकियोगे नवमाद्दे मृतिः ॥ १०१ ॥

टीका–चंद्रमा सूर्य गुरु स युत होवे १ अथवा चंद्रमा सें सूर्य शनि ल युक्त होवे २ अथवा शनि सें चंद्र शुक्र मंगल युक्त होवे ३ तो ५ च वर्ष की आयु जानना । इस सूत्रमे ३ योग है इनमेसे कोईभी होवे ५ वर्ष की आयु कहना ॥ ९४ ॥

लग्न में राहु सर्व पाप ग्रहों से दृष्ट होवे तो पांच वर्ष की आयु ानना ॥ ९५ ॥

कर्क अथवा सिंह राशी का शुक्र त्रिक स्थान (६।८।१२) मे स्थित होवे और पाप ग्रहो से दृष्टहोवे तो छठे वर्ष मे मृत्यु जानना ॥ ९६ ॥

लग्न में सूर्य शनि मंगल स्थितहोवे और क्षीण चंद्रमा ७ सात मे स्थान मे होवे तो छठे अथवा सात मे वर्ष मे मृत्यु होवे ॥ ९७ ॥

सातमे स्थानमे क्षीण चंद्रमा लग्न मे शनि मंगल शुक्र स्थित होवे और इनको गुरु नहि देखता हो तो सातमे वर्ष मे मृत्यु जानना ॥९८॥

छठे आठ मे स्थानम सौम्य ग्रह (चं. बु गु शु) और ९।५ स्थानमे पाप ग्रह जावे तो आठमे वर्ष मे मृत्यु जानना ॥ ९९ ॥

तुल तथा वृषभ राशी का क्षीण चंद्रमा सप्तम स्थानमे होवे और लग्न मे शनि मंगल सूर्य होवे इनको गुरु नही देखता होवेतो ७ सात वर्ष की आयुजानना ॥ १०० ॥

त्रिक ६।८।१२ स्थान में चंद्र सूर्य शनिका योग होवे तो ९ नव मे वर्ष मृत्यु जानना ॥ १०१ ॥

झभगा इन्दुकौरा गुर्वदृष्टा नवमाब्देमृतिः ॥१०२॥

यूनेचंद्रे ष्टमेशेङ्गे मंददृष्टे नवमाब्देमृतिः ॥१०३॥

चंद्राङ्गेशावस्ते वा त्रिके भतुल्याब्देमृतिः ॥१०४॥

जन्मेशाद्रंध्रगौशुक्रार्कौ वा लग्नेशेषष्ठे भतुल्याब्देमृतिः १०५

चंद्राङ्गेशौ मंदार्कयुतौ द्वादशाब्देमृतिः ॥१०६॥

जीवेभौमभे भौमेजीवभे वा सूर्येमंदभे मंदेसूर्यभे द्वादशाब्दे मृतिः ॥१०७॥

क्रमान्मेषादिगो विधुरष्टम नवम त्रयोविंश द्वा विंश पञ्चम प्रथमचतुर्थत्रयोविंशाष्टादश विं शैकविंशदशमलवस्थो लग्नं क्रमिताब्देमृतिदः ॥१०८॥

टीका–झषकौराशी ३।६ के चंद्र सूर्य मंगल होवे और गुरु की द्रष्टी उनपर नहीं होवे तो नववर्ष की उमरमे मृत्यु होवे. ॥ १०२ ॥

चंद्रमा सातमे होवे और ८ आठमे स्थान का स्वामी लग्न मे

स्थित हो कर शनी से दृष्ट होवे तो नव वर्ष की उमर जानना ॥ १०३ ॥

चंद्रमा और लग्न का स्वामी सातमे स्थानमे स्थितहोवे अथवा त्रिक स्थान ६। ८। १२ मे आयतो उस स्थान मे जोराशी हो उतने ही संख्या वर्षमे मृत्यु जानना ॥ १०४ ॥

जन्मराशी के स्वामीसे आठमे स्थानमे शुक्र और सूर्य दोनु आय १ अथवा लग्न का स्वामी छटे स्थान मे गयाहो तो उस स्थानमे जो राशि हो उतने हि वर्ष की मृत्यु जानना ॥ १०५ ॥

चंद्र और लग्न की राशी केस्वामि शनि सूर्यसे युक्त होवेतो बार१२ मे वर्ष मे मृत्यु जानना ॥ १०६ ॥

गुरु, मंगल की (१।८) राशि का होवे, और मंगल, गुरु की (९।१२) राशि का होवे १अथवा सूर्य, शनि की १०।११ राशि का और शनि, सूर्य की ५ राशि का होवे तो १२ बार मे वर्ष मे मृत्युजानना ॥ १०७ ॥

जन्म समय मे चंद्रमा मेषके ८ वृषभके ९ मिथुनके २३ कर्कके २२ सिंहके ५ कन्याके १ तुलके ४ वृश्चिक के २३ धनके १८ मकरके २० कुंभके २१ मीनके १० अंश का होवेतो अंश के संख्या के बराबर वर्ष मे मृत्यु जानना ॥ जैसा के किसी के जन्म समय मे चंद्रमा धनके १८ अंश काहे तो १८ अठार मे वर्ष मे मृत्यु कहना इसी प्रकार सब राशि यो मे समझना ॥ १०८ ॥

सर्व रिष्ट योगोके भंगयोग।

राशीषष्टाष्टमगश्चन्द्रः शुक्ले सर्वारिष्टहरः ॥१०९॥

सौम्य भांशगाः सौम्याः सर्वारिष्टहरः ॥११०॥

भेशेकेंद्रे वा सौम्येकेंद्रे सर्वारिष्टहरः ॥१११॥

शीर्षोदयगास्सर्वे सर्वा० ॥११२॥

षष्ठाष्टमगे कृष्णचंद्रे दिवा पापदृष्टे सर्वा० ॥११३॥

स्वोच्चसुहृत्क्षेचंद्रे सर्वारिष्टहरः ॥११४॥

चंद्रात्सेजीवो व्यये ज्ञाच्छो लाभे खलाःस० ॥११५॥

कर्कजेइन्दो केंद्रे सदृष्टे सर्वारिष्टहरः ॥११६॥

ककोजवृषेङ्गे राहौ सर्वा० ॥११७॥
केंद्रे तदग्रेच सर्वे खेटाः स० ॥११८॥
शुभभे पूर्णेन्दौ सर्वा० ॥११९॥
षष्ठाष्टमे चंद्रे शुभवर्गगे स० ॥१२०॥
इन्दङ्गौ सर्व ग्रह दृष्टौ सर्वा० ॥१२१॥
शुभांशे केंद्र कोणे शुक्र दृष्टे चंद्रे सर्वा० ॥१२२॥
बलिशुभः केंद्रगो लाभेसूर्यः सर्वा० ॥१२३॥
सबलेङ्गपे शुभमात्र दृष्टे सर्वा० ॥१२४॥
जीवेस्वभोच्चगे केंद्रे सर्वा० ॥१२५॥
पापाः शुभ वर्गगाः शुभ मात्र दृष्टास० ॥१२६॥
व्यायारिगो राहुः शुभमात्रदृष्टयुतः स० ॥१२७॥
सर्वे बलिनो वा नृराशिगा वामित्रभगा वाशुभभगा वा शुभवर्गगाः सर्वारिष्टहरः ॥ १२८ ॥

टीका- ॥ शुक्लपक्ष मे रात्रिसमय मे जन्म होवे और छटे आठ मे स्थान मे चंद्रमा स्थितहोवे तो सर्व रिष्टयोग का नाशकरता है १०९

शुभग्रह कि राशि और नवमांश (२।७।९।१२।३।६।४) मे शुभग्रह गये होवे तो सर्वारिष्टनाश करते है ११०

जन्म राशी का स्वामी केंद्र १।४।७।१० मे स्थितहोवे अथवा शुभ ग्रह केद्रमे होवे तो सर्वारिष्टनाश करते है १११

सर्वग्रह शीर्षोदय राशी ३।५।६।७।८।११ मे गये होवे तो सर्वारिष्ट नाश करते है ११२

कृष्णपक्ष में दिन का जन्म होवे और ६।८ छटे आठमे स्थान मे चंद्रमा दृपाप ग्रहसें दृष्ट होवे तो सर्वारिष्ट नाश करता है ११३

चंद्रमा अपनि स्वराशि (४) उच्च राशी (२) तथामित्र ग्रहकी

राशी मे स्थितहोवे तो सर्वारिष्ट नाशकरता है ११४

चंद्रमासे दशमे स्थान मे गुरु, बारमे स्थान मे बुध शुक्र और ग्यार मे स्थान मे पापग्रह स्थितहोवे तो सर्वारिष्टकानाश करते है ११५

कर्कतथा मेष राशि का चंद्रमा केंद्रमे स्थितहोवे और शुभ ग्रहसे दृष्टहोवे तो सर्वारिष्ट नाश करता है ११६

कर्कमेष तथा वृषभ राशी के लग्नमे राहु स्थितहोवे तोसर्वा० ११७

केंद्र १।४।७।१० और पणफर २।५।८।११ स्थान मे सर्व ग्रह स्थितहोवे तो सर्वारिष्ट नाशकरते है ११८

पूर्ण चंद्रमा शुभग्रह की राशी का होवे तो सर्वा० ११९

शुभग्रह के वर्ग में गया हुवा चंद्रमा छठे आठमे स्थान मे स्थित होवे तो सर्वा रिष्टकानाश करता है १२०

चंद्र और जन्म लग्न कों सर्व ग्रह देखते होवे तो सर्वा ०१२१

शुभग्रह की राशि के नवांशमे गयाहुवा चंद्रमा केंद्र कोण १।४।७।१०।९।५ स्थान मे स्थितहोवे और शुक्र उसको देखता होवे तो सर्वा रिष्टनाश करता है १२२

बलवान् शुभग्रह केंद्र १।४।७।१० मे स्थितहोवे और ११ ग्यारमे स्थान मे सूर्य होवे तो सर्वा० १२३

लग्नका स्वामी बलवान् होवे सर्व शुभग्रह से दृष्ट होवे तो सर्वा रिष्ट० ॥ १२४ ॥

केंद्र १।४।७।१० स्थानमें स्वराशी ९।१२ तथा अपनि उच्चराशी ४ मे गयाहुवा गुरुस्थित होवे तो सर्वा रिष्टनाश होवे ॥ १२५ ॥

पापग्रह शुभग्रहो के वर्ग मे गयेहोवे और शुभग्रह मात्र से दृष्ट होवे तो सर्वा रिष्टनाश होवे ॥ १२६ ॥

तीसरे ग्यारमें छठे ३।११।६ स्थानमे गयाहुवा राहु शुभ ग्रहों से युक्त तथा दृष्टहोवे तो सर्वा० ॥ १२७ ॥

सर्व [शुभ पाप] ग्रह बलवान होवे १ अथवा सर्व ग्रह नरराशी [१।३।५।७।९।११] में गयेहोवे २ अथवा सर्व ग्रह अपने मित्रग्रह कि राशी मे स्थित होवे ३ अथवा शुभग्रह की राशी मे स्थितहोवे ४ अथवा सर्वग्रह शुभग्रह के वर्गमे गयेहोवे ५ तो सर्वारिष्ट नाशहोवे । इस सूत्र में ५ पांच योग कहे है इनमे से कोई भी १ योग हो तो सर्वारिष्टहर योग जानना ॥ १२८ ॥ इति सर्वारिष्टहर योगाः ॥

जारज योग

षष्ठाष्टमेशौ चन्द्रारयुतौ तुर्यगो जारजः ॥ १२९ ॥
षष्ठद्विशौ पापयुतौ जारजः ॥ १३० ॥
षष्ठद्विशयोर्मन्दयोगे शूद्रजो ज्ञयोगेवैश्यजोऽ र्कयोगेक्षत्रजो
जीवशुक्रान्यतरयोगे ब्राह्मणजः ॥ १३१ ॥
अंशेपापमात्र संबंधे जारजः ॥ १३२ ॥
केंद्रसोत्थेश योगे जारजः ॥ १३३ ॥
द्वित्रिपंचारीशा लग्नगा जारजः ॥ १३४ ॥
पापेक्षे शुभेयूने स्मन्दे जारजः ॥ १३५ ॥
चंद्रेक्षे सुतेशुक्रे सोत्थेभौमे जारजः ॥ १३६ ॥
लग्नेर्के सुखेराहौ पितृव्यजः ॥ १३७ ॥
लग्ने राग्हारौ पुष्पवंतौयूने नीचजः ॥ १३८ ॥
शून्येषुकेन्द्रेषु जारजः ॥ १३९ ॥
सर्वेद्विषष्ठाष्टांत्येषु जारजः ॥ १४० ॥
जीववर्गहीनेंगे जारजः ॥ १४१ ॥
खेक्षेतुर्येसपापचंद्रे चन्द्रलग्नौ गुर्वदृष्टौ जारजः ॥ १४२ ॥
पुष्पवंता वेकभगौ गुर्वदृष्टौ जारजः ॥ १४३ ॥
लग्नाम्बुपष्टधर्मप योगे जारजः ॥ १४४ ॥
धर्मेसुखेचपापे क्षपेऽबले जारजः ॥ १४५ ॥
सुखेपापान्तरे लग्नपेऽबले पापदृष्टे जारजः ॥ १४६ ॥
दारेशेधनेसपापे भौम दृष्टे जारजः ॥ १४७ ॥

चंद्रमंदयोगे जारजः ॥ १४८ ॥

टीका–छठे आठमे स्थानके स्वामी चंद्र मंगलसे युक्त होकर चतुर्थ स्थानमे स्थित होवे तो जारज (व्यभिचारसे उत्पन्न) कहना ॥ १२९॥

छठे और नवम स्थानके स्वामी पापग्रहो से युक्त होवे तो जारज कहना ॥ १३० ॥

छठे और नवम स्थान के स्वामि शनि से युक्त होवे तो शूद्र से उत्पन्न कहना एव बुध से युक्त होवे तो वैश्य से, सूर्य से युक्त होवे तो क्षत्री से, गुरु से अथवा शुक्रसे युक्त होवे तो ब्राह्मण क वीर्य से उत्पन्न जानना ॥ १३१ ॥

कारकांश लग्नमे पापग्रह मांनकी संबंध होवेतो जारज ० ॥१३२॥

केंद्र १।४।७। १० स्थान के स्वामी स तृतीय स्थान के स्वामिका योग होवे तो जारज कहना ॥ १३३ ॥

दूसरा २ तीसरा ३ पाचवा ५ और छटा ६ स्थानके स्वामी लग्न मे स्थित होवे तो जारज कहना । स्मरणरहे ये चारोग्रह लग्न मे है वे तो योग जानना नहींतो योग नहि होता है ॥ १३४ ॥

लग्न मे पाप ग्रह ७ सप्तम स्थानमे शुभग्रह आर १० दशम स्थान मे शनि स्थित होव तो जारज होताहै ॥ १३५ ॥

लग्न मे चंद्रमा पचम स्थानमे शुक्र और तीसरे स्थानमे भौम स्थितहोव तो जारज जानना ॥ १३६ ॥

लग्न मे सूर्य, चतुर्थ स्थान मे राहु स्थितहोव तो पितृव्य [काके] से उत्पन्न हुवा कहना ॥ १३७ ॥

लग्नमे राहुमंगल और सप्तम स्थान मे सूर्य चंद्रमा स्थितहोवे तो नीच से उत्पन्न कहना ॥ १३८ ॥

केंद्र १।४।७। १० स्थान मे कोईभी ग्रह नहीं होवे तो जारज कहना ॥ १३९ ॥

सर्व ग्रह २। ६।८। १२ दूसरे छठे आठमे बाहरवे स्थान मे स्थित होवे तो जारज कहना ॥ १४० ॥

लग्नमे गुरु का वर्ग नहि होवे तो जारज कहना ॥ १४१ ॥

दशमे लग्नमे तथा चोथे स्थानमें पापग्रह से युक्त चंद्रमा स्थित होवे और लग्न, चद्र, को गुरु नहि देखता होवे तो जार० ॥ १४२ ॥

सूर्य चंद्र दोनो एक राशी मे स्थितहोवे और इनको गुरु नही देखता होवे तो जारज कहना ॥ १४३ ॥

लग्न १ चतुर्थ ४ षष्ठ ६ और ९ नवम के स्वामीयो का योग होवे तो जारज कहना ये चारो एक राशि मे जितने नजीक अंशमे होवे उतनाहि योग बलवान जानना ॥ १४४ ॥

नवम ९ और ४ चतुर्थ स्थानम पापग्रह स्थितहोवे और लग्नेश्वर निर्बली होवे तो जारज कहना ॥ १४५ ॥

चतुर्थ स्थान पाप ग्रहो के बीचमे होवे लग्नपति निर्बली होवे पापग्रह से दृष्ट होयतो जारज० ॥ १४६ ॥

सप्तमभावकास्वामी धन २ स्थानमे पापग्रह से युक्त होवे और भौम से दृष्ट होवे तो जारज० ॥ १४७ ॥

चंद्र शनिका योग होवे तो जारज होताहै ॥ १४८ ॥

जारज योग के भंग योग.

लग्नपेक्षे वा लग्नदृष्टरि जारजयोग भङ्गः ॥ १४९ ॥

लग्नेजीव युतदृष्टे जारजयोग भङ्गः ॥ १५० ॥

लग्नचंद्रान्यतरो जीवभवर्गान्यतरगो जारजयोग भङ्गः १५१

टीका– लग्नेश लग्नमें युक्तहोवे अथवा लग्न को देखताहोवे तो जारज योग का भंग जानना ॥ १४९ ॥

लग्नमे गुरु युक्तहो तथा लग्न को गुरु देखताहोवे तो जारज योगका भंग जानना ॥ १५० ॥

लग्न तथा चंद्रमा गुरु की राशि का अथवा गुरु के दशवर्ग मे होवे तोजारज योगका भंग जानना अर्थात् इनयोगो मे से कोई १ योगभी होवेतो उपरोक्त जारज योग नही जानना ॥ १५१ ॥

चिन्ह का विचार

यदवयवे कुजार्कौ तत्रारक्तचिन्हम् ॥१५२॥

राव्हर्केजौयत्र तत्र शामचिन्हम् ॥१५३॥

लग्नगाश्चंद्राराच्छाः शिरसिचिन्हम् ॥१५४॥

शुक्रेङ्गे रंध्राहो मस्तके वा वाम कर्णे चिन्हम् १५५

आरेङ्गे कोणेमंदे लिंगेगुदसमीपे वा चिन्हम् ॥१५६॥

ज्ञेज्यौरंध्रे कोणेशुक्रे सुसेड्डेमंदे जठरे चि० ॥१५७॥
राव्हच्छौतुर्ये मंदेकुजेवाङ्गे वामपादे चि० ॥१५८॥
यस्य राजयोगो भंग रहितस्तस्य करचरणान्यतरत्र राज चिन्हम् ॥१५९॥
चंद्रार्कौ यदङ्गगौ तदङ्गे चिन्हम् ॥१६०॥

टीका– काल पुरुष के शरीर विभाग के विचार से शरीर के जिस अवयवस्थान में सूर्य भौम युक्तहोवे उस स्थानमे लालरंगका चिन्ह जानना ॥ जैसे किसिके लग्न से ४ चतुर्थ स्थानमे कर्क राशी मे सूर्य मंगल स्थितहै तो यहस्थान कालपुरुपके हृदयकाहै इसलिये इस कुंडलीवाले के हृदयके समीप लालरंग का मश वगेराका चिन्ह कहना एवं सर्व स्थाना का विचार जानना ॥ १५२ ॥

राहु शनि जिस स्थानमे होवे उस अंगपर श्याम चिन्ह जानना १५३
लग्नमे चंद्र भौम शुक्र युक्त होवेतो मस्तकपर चिन्ह जानना १५४
लग्नमे शुक्र और ८ अष्टम स्थानमे राहु युक्त होवे तो मस्तकपर अथवा वाम कर्णपर चिन्ह जानना ॥ १५५ ॥

लग्नमे मंगल और नवम पंचम ९।५ स्थानमे शनि युक्त होवे तो लिंगपर अथवा गुदा के समीप मे चिन्ह जानना ॥ १५६ ॥

अष्टम स्थानमे बुध गुरु त्रिकोण स्थान (९।५) मे शुक्र और चौथे तथा लग्नमे शनी युक्त होव तो पेटपर चिन्ह जानना ॥ १५७ ॥

चतुर्थ स्थान मे राहु शुक्र और शनि अथवा मंगल लग्नमे स्थित होवे तो बाये पांव मे चिन्ह जानना ॥ १५८ ॥

जिसके भंग रहित राजयोग पूर्ण होवे उसके हात अथवा पांवों मे राज चिन्ह जानना ॥ १५९ ॥

चंद्र, रवि, जिस अंगमें युक्त होवे उस अंगमे चिन्ह कहना ॥१६०॥

शुभ जन्म के योग.

वर्गोतमेङ्गे वा चंद्रेशुभं जन्म ॥ १६१ ॥
सूर्याद्धने सद्ग्रहे शुभंजन्म ॥ १६२ ॥

एकस्मिन्नपि केंद्रे ग्रह युते शुभं० ॥ १६३ ॥

आत्मकारके सब ले शुभंजन्म ॥ १६४ ॥

टीका– लग्न वर्गोत्तम नवांश मे होवे अथवा चंद्रमा वर्गोत्तमांशमे होवे तो जन्म शुभ जानना ॥ १६१ ॥

सूर्य से दूसरे स्थान मे शुभग्रह स्थित होवे तो शुभ जन्म जानना १६२

अकभी केंद्र स्थानमे ग्रह यत होवे तो शुभ जन्म कहना ॥१६३॥

आत्म कारक ग्रह बलवान होवे तो शुभ जन्म कहना ॥ १६४ ॥

शरीर की आकृति लक्षण वर्ण विचार

लग्न नन्दांशपतुल्याकारो वा वीर्याधिक ग्रह तुल्यतनुः १६५

चंद्राक्रांतनवांशप वर्णः ॥ १६६ ॥

टीका–लग्न मे जिस ग्रह की राशी का नवमांश होवे उसग्रह के स्वरूप (संज्ञा तं० सूत्र ४२ से ४८ मे कहे हैं) के समान शरीर का आकार अथवा जोग्रह अधिक बलवान् होवे उसग्रह के स्वरूप के समान शरीर का आकार लक्षण कहना ॥ १६५ ॥

चंद्रमा जिस राशीके नवमांशमे होवे उसके स्वामी के वर्ण के समान शरीर का गौर श्यामादि वर्ण जानना ॥ १६६ ॥

सत्वादिगुणप्रकृती का विचार.

सूर्योयस्यत्रिंशांशे, तद्गुणभाक् ॥ १६७ ॥

टीका– सूर्य जिस ग्रह के त्रिंशांशमे होवे उसग्रह का जो सत्वरज तमादि गुणहोवे वैसाही शरीर का गुण जानना ॥ १६७ ॥

इति श्रीमहादेवकृत जातकतत्वे प्रसूतिका तत्वंद्वितीयम् ॥ २ ॥

इतिश्री गणकवर्य्य श्रमन्महादेव कृत जातक तत्वाख्य जातकग्रंथे तत्सूनु श्रीनिवास रचित तत्वप्रदर्शिनी भाषाटीकायां प्रसूतिका तत्वं द्वितीयम् ॥ २ ॥

अथ प्रकीर्ण तत्वारम्भः ।

आलिङ्गनाय संवृत्तौ भवोदेवौ मिथोभिया ।
विश्लेषस्यैकतांयातौ भूयास्तांमङ्गलायनः ॥ १ ॥

टीका-अथ प्रकीर्णतत्वका आरम्भ करते समय ग्रंथकर्ता मंगलाचरण करते है । आलिंगन के लिये प्रवृत्तहुऐ शिवपार्वती परस्पर विश्लेष (जुदे) होने के भय से अेकरूप जिन्होंने (अर्द्धनारीश्वर) धारण किया है वे साम्बसदाशिव हमारे मंगल के लिये होवो ॥ १ ॥

तत्रादौ भवानां विचारः।

योभावःस्वस्वामि शुभैर्युक्तोदृष्टो वा तस्यवृद्धिः पापैर्हानि र्मिश्रैर्मिश्रम् ॥ १ ॥

नीचारिस्थोग्रहो भावनाशकः ॥ २ ॥

स्वसुहृत्तुङ्गस्थोभाववृद्धिकरः ॥ ३ ॥

यद्भावात्रिके पापास्तद्भावनाशः ॥ ४ ॥

यद्भावेशस्त्रिके त्रिकेशो वा यद्भावेतद्भावनाशः ॥ ५ ॥

यद्भावीयकेंद्रार्थकोणस्थानानि शुभपतियुतानि तद्भावपुष्टिः पापयुतानिचेद्धानिर्मिश्रयुतानि मिश्रम् ॥ ६ ॥

यद्भावेशोरिनीचास्तगः शुभैरयुतेक्षितश्चेत्तद्भावनाशः ॥७॥

यद्यद्भावीयरंध्रेश सूर्यशनि गुलिकेश गुलिकांशेशानांमध्ये योधिकबली तत्पाके मूर्तिवित्तादिनाशः ॥ ८ ॥

टीका- प्रथम द्वादशभावों का शुभाशुभ फल विचार के साधारण नियम कहते है । जोभाव अपने स्वामी और शुभग्रहो से युक्त अथवा दृष्टहोवे उस भावकी वृद्धि और पापग्रहो से युक्त वा दृष्टहोवे उस-भाव की हानी तथा शुभ पाप मिले हुवे (मिश्र) ग्रहों से युक्त दृष्ट होवे उसका मिश्रफल जानना ॥ १ ॥

नीचराशी का तथा शत्रु राशी का ग्रह जिसभाव मे स्थितहोव वह ग्रह उस भवका नाश करता है ॥ २ ॥

स्वराशि का तथा मित्र और उच्चराशी का ग्रह जिसभाव मे स्थित होवे वहग्रह उसभाव की वृद्धि करता है ॥ ३ ॥

जिस भावस ६।८।१२ छठ आठवे बारवे स्थान मे पापग्रह गयेहोव उसभाव की हानी जानना ॥ ४ ॥

जिस भावका स्वामी ६ । ८ । १२ मे स्थित होव अथवा जिसभाव मे त्रिक स्थान (६ । ८ । १२) का स्वामि युक्तहोव उस भावका नाश कहना ॥ ५ ॥

जिस भावस १ ।४ । ७।१० ।२।९।५ स्थान शुभ ग्रह से और अपने स्वामी से युक्त होवे उसभाव की वृद्धि (उत्तम फल) कहना और पापग्रह स युक्त होवे ता उसभावकी हानी तथा मिश्र (शुभपाप) ग्रहस युक्त होव तो मिश्र (मध्यम) फल कहना ॥ ६ ॥

जिस भावका स्वामीशत्रु ग्रहकी राशीका अथवा नीच राशीका तथा अस्त का होव और वह शुभग्रहो से युक्त तथा दृष्टनहिहोवे तो उस भावका नाश होता है ॥ ७ ॥

जिस जिस भावसे ८ अष्टम स्थानका स्वामी, और सूर्य, शनि, गुलिक की राशीका स्वामी, और गुलिक के नवांशका स्वामी, इनपाचो मे से जो अधिक बलवान् होव उसकी दशामे उस उस देह धनादि भाव का नाश जानना । अर्थात लग्न से ८ स्थान क स्वामी से विचार किया होतो देहका नाश कहना धनभावस ८ के स्वामी से होतो धनका एसहि प्रत्येक भाव के फलका नाश कहना ॥ ८ ॥

अथाग विचार

स्वांशेङ्गेशेशुभयुते वाशुभदृष्टे देहसौख्यं ॥ ९ ॥

अङ्गेशोंगे देह सौख्यं ॥ १० ॥

सपापेङ्गेशेनिके देहसौख्यंन ॥ ११ ॥

लग्नेपापा लग्नशेच हीनवीर्ये देहसौख्यन्न ॥ १२ ॥

देहकार्श्ययोगाः ।

शनिचंद्रौमेषे देहकार्श्यं ॥ १३ ॥

अन्त्येहेलाव केंद्रगेवक्रे देहकार्श्यं ॥ १४ ॥

लग्नेशाधिष्ठित मेशास्त्रिके देहकार्श्यम् ॥ १५ ॥

शुष्कांगे शुष्कग्रहे देहकार्श्यं ॥ १६ ॥

शुष्कयुतेंगेशे देहकार्श्यम् ॥ १७ ॥

शुष्कग्रहसँङ्गेशे देहकार्श्यम् ॥ १८ ॥

लग्नेशांशेशे शुष्केदेहकार्श्यम् ॥ १९ ॥

शुष्काङ्गैःपापैःदेहकार्श्यम् ॥ २० ॥

टिका–अथ शरीरका विचार कहते है । लग्नका स्वामी स्वनवांशम होवे शुभग्रह से युक्तहोवे अथवा शुभग्रहो से दृष्टहोवे तो देहका सुख होव ॥ ९ ॥

लग्नका स्वामी लग्नमे होवे तो देह सुख जानना ॥ १० ॥

पापग्रह से युक्त लग्नेश्वर ६–८–१२ में स्थान मे जावतो देह सुख नही होवे ॥ ११ ॥

लग्नमें २–३ पापग्रह होवे और लग्नका स्वामी हीनवली होवे तो देह सुख नही होवे ॥ १२ ॥

देहकार्श्ययोग कहते है ।

मेष राशी मे शनि चंद्र युक्त होवे तो देह दुर्बल कहना ॥ १३ ॥

बारमे स्थानमे सूर्य, और केद्र १।४।७।१० स्थानमे भौम होवे तो देह कार्श्य (कृश) जानना ॥ १४ ॥

लग्नेश्वर जिसराशी मे स्थितहोवे उस राशी का स्वामी त्रिक (६–८–१२) स्थानमे स्थितहोवेतो देह कृश (पतली) होवे ॥ १५ ॥

शुष्क राशी १।२।३।५।६।९ के लग्नमे शुष्कग्रह [रवि मंगल शनि–बुध गुरु.] स्थितहोवें तो देह कार्श्य (पतलीदेह) होवे ॥ १६ ॥

लग्नेश्वर शुष्कग्रह [रविमंगल शनि औरशुष्कराशी मे गयेहुवे बुध गुरु] से युक्तहोवे तो देह कार्श्य [पतली देह] जानना ॥१७॥

लग्नेश्वर शुष्क ग्रह की राशीका होवेतो देह कार्श्य [दुर्बलदेह] जानना ॥ १८ ॥

लग्नपति के नवांशका स्वामी शुष्कग्रह (र. म. श बु.) होवे तो दुर्बल देह होताहै ॥ १९ ॥

शुष्कराशी [१-२-३-५-६-९] के लग्नमे २-३ पापग्रह युक्त होवे तो (दुर्बला) देह मनुष्य होता है ॥ २० ॥

देह पुष्टियोग ।

राशीशे सांङ्गनाथे देहपुष्टिः ॥ २१ ॥

तोयर्क्षेङ्गेशेशुभान्विते वा जलखगदृष्टे देहपुष्टिः ॥ २२ ॥

शुभर्क्षेङ्गे जलर्क्षेङ्गांशेशे देहपुष्टिः ॥ २३ ॥

लग्नेशुभर्क्षे पापदृग्वर्जिते देह० ॥ २४ ॥

लग्नेगुरुयुते वा गुरुदृष्टे देह० ॥ २५ ॥

जलर्क्षेङ्गे शुभैर्युते वा दृष्टे देह० ॥ २६ ॥

मिथुनांशे देह० ॥ २७ ॥

लग्नगे सबले सत्त्वचरे देह० ॥ २८ ॥

टीका-जन्मराशी का स्वामी लग्नेश्वर से युक्त होवे तो पुष्ट शरीरवाला होताहै ॥ २१ ॥

लग्नका स्वामि जलराशी ४।११।१०।१२।८ मे स्थितहोवे शुभ ग्रह [चं बु. गु शु] से युक्तहोवे अथवा जलग्रह (च शु बु गु) से दृष्टहोवे तो पुष्टदेहवाला होताहै ॥ २२ ॥

शुभग्रह की राशी [४ । ३ । ६ । ९ । १२ । २ । ७] का लग्न होवे और लग्न के नवमांश का स्वामी जलराशि का होवे तो पुष्टदेह वालाहोताहै ॥ २३ ॥

शुभ राशीका लग्न पापग्रहो से अदृष्टहोवे तो पुष्टदेह जानना ॥२४॥

जन्मलग्न मे गुरुयुत होवे अथवा लग्नको गुरु देखताहोवे तो देह जानना ॥ २५ ॥

जलराशी ४ । ७ । ८ । १० । ११ । १२ का लग्न शुभग्रहो से युक्त अथवा दृष्टहोवे तो पुष्ट देह होता है ॥ २६ ॥

कारकांश कुंडलीमे मिथुन लग्न होवे तो पुष्टदेह होताहै ॥ २७ ॥

जन्मलग्न मे बलवान शुभग्रह स्थितहोवे तो पुष्टदेह होताहै ॥ २८ ॥

लग्नादिराशयः शिरः प्रभृतिकालाङ्गेपुकल्प्याः ॥ २९॥

यत्राङ्गे दीर्घराशि दीर्घभपश्च तद्दीर्घम् व्यस्तेन्हस्वंमिश्रेमिश्रं ग्रहानाक्रांतराशिश्चेद्राशिवत् ॥ ३० ॥

दीर्घदेह योग ।

बुधात्सप्तमेभौमे दीर्घदेहः ॥ ३१ ॥

लग्नपेदीर्घभे दीर्घदेहः ॥ ३२ ॥

देह और देहके कोन २ अवयव ह्रस्व दीर्घ है उनका विचार ।

टीका-जैसे मेषादि द्वादश राशि मस्तकादिपादपर्यंत कालपुरुषमे कल्पना की है तैसेहि जन्म लग्नकी राशि को आदिले १२ बाराहि राशि मस्तक से पादपर्यंत कालपुरुष के अंगमे कल्पना करना। उदाहरणके लिये कल्पना कीजिये जैसे किसीका जन्मलग्न ५ सिंह राशि हैतो ५ सिंहमस्तक ६ कन्या मुख ७ तुल उर ८ वृश्चिक हृदय ९ धन उदर १० मकर कटि ११ कुंभवस्ति १२ मीनलिंग १ मेष उरु २ वृष जानु ३ मिथुन जंघा ४ कर्क अंघ्रि (पांव) स्थान हुआ इसीप्रकार प्रत्येक लग्नसे अंगकी कल्पना करना ॥ २९ ॥

इन उपरोक्त मस्तकादि पादपर्यंत अंगस्थान मे से जिसअंगमे दीर्घ राशि ५।६।७।८ और दीर्घ राशीकास्वामी (सू. बु. शु. मं.) स्थित होवे वह अंगदीर्घ जानना और औरजिसअंगस्थानमे ह्रस्वराशि ११।- १२ । १ । २ और ह्रस्वराशि का स्वामी स्थितहोवे वह अंग ह्रस्व जानना एवंमिश्र राशि ३।४।९।१० और मिश्र राशि केस्वामि जिसस्थान मे स्थितहोवे उसअंगको सम अर्थात् नही दीर्घ और नही न्हस्व जानना। ग्रह जिसराशि में जाय उसीराशी के समान ग्रहको न्हस्व दीर्घ मिश्र समझना ॥ ३० ॥

बुधसे सातमे स्थानमे भौम स्थितहोवे तो दीर्घदेह होताहै ॥३१॥

लग्नकी राशिका स्वामि दीर्घराशि ५। ६। ७। ८ का होतो दीर्घ देह होताहै ॥ ३२ ॥

॥ वामन योग. ॥

मंदात्तुर्येचंद्रेराश्याद्यभागे वा ल्पतरराश्यंत्यभागेवामनः ३३

लग्नेशेल्पतरभे शुभदृग्घीने वामनः ॥ ३४ ॥

पृष्टोदयगेचंद्रेतुर्येशनिदृष्टेचाजेङ्गेशेवामनः ॥ ३५ ॥

सिंहेऽर्कान्छौखेमृगेचंद्रेवामनः ॥ ३६ ॥

आयंत्येशेचंद्रेमंददृष्टेसौम्याऽदृष्टेवामनः ॥ ३७ ॥

लग्नेशेल्पर्क्षेलग्नदर्शिनि वामनः ॥ ३८ ॥

वामन योग कहतेहैं ।

टीका–शनिसे चौथे स्थानमे चंद्रमा राशिके प्रथम भागमे स्थित होवे अथवा न्हस्व राशि के अत्यभाग म [२९] अंशमे होवेतो वामन (ठिगना) होता है ॥ ३३ ॥

लग्नश न्हस्व राशिमे स्थित होव और उसको शुभग्रह नहि देखते-होव तो वामन हाताहै ॥ ३४ ॥

पृष्टोदयराशी (१।२।४।९।१० का चंद्रमा चोथ स्थानमे शनि से दृष्टहावे और लग्नेश मेप राशी का होतो वामन होताहै ॥ ३५ ॥

सूर्य शुक्र सिंहराशीमे स्थितहोवे और दसमे स्थान मे मकरराशी का चंद्रमा होतो वामन होताहै ॥ ३६ ॥

लग्नतथा व्यय १२ स्थान का स्वामीचंद्रमा, शनीसे दृष्टहोवे और शुभग्रहोंसे अदृष्टहोवे तो वामन होताहै ॥ ३७ ॥

लग्न का स्वामि ह्रस्वराशी मे स्थित होवे अथवा लग्नको देखता होवे तो वामन होताहै ॥ ३८ ॥

विकलाग योग ।

केंद्रस्थाः क्रूरा विकलाङ्गः ॥ ३९ ॥

केंद्रगौ पुष्पवंतो विकलाङ्गः ॥ ४० ॥

लग्नेशुक्रेमंददृष्टे श्रोणिभागे वैकल्यम् ॥ ४१ ॥

तुयशुक्रे मंदाराज्ञान्यतमयुतेजविकरचरणकट्यन्यतमेवै-
कल्यम् ॥ ४२ ॥

चंद्रेखेभौमेस्ते मंदेवेशिगे विकलाङ्गः ॥ ४३ ॥

सुतांकेभौमे क्रूरैर्दृष्टे हीनाङ्गः ॥ ४४ ॥

मंदेर्थे खेचंद्रे ज्ञेस्ते विकलाङ्गः ॥ ४५ ॥

नीचगाः शुक्रेन्दुमंदाः कुम्भेर्के विकलाङ्गः ॥ ४६ ॥

टीका-केंद्रस्थान (१।४।७।१०) मे क्रूरग्रहस्थितहोवेतो विकलांग (विकलशरीरवाला) होताहै ॥ ३९ ॥

केंद्रस्थान १।४।७।१० मे सूर्य चंद्रमा होवे तो विकलशरीर होताहै ॥ ४० ॥

लग्नमे गयाहुवा शुक्र शनि से दृष्टहोवे तो कटि भागमे विकलता होतीहै ॥ ४१ ॥

चौथे स्थानमें शुक्र, होवे और शनि, भौम, अथवा बुध इनतीनो मे से किसीसेभी गुरु युत होवे तो हाथ, पांव, कटि, स्थानमे से किसि अेकस्थानमे विकलता होतीहै ॥ ४२ ॥

चद्रमा १० दशमे भौम ७ सातवे शनिवेशिस्थान [सूर्य से दूसरे] मे होवेतो विकलांग होताहै ॥ ४३ ॥

पांचमे तथा नवमे मंगल होवे और क्रूरग्रहो से दृष्टहोवे तो हीनांग होताहै ॥ ४४ ॥

शनि २ दूसरे चंद्रमा १० दशमे बुध ७ सातवे स्थानमे स्थितहोवे तो विकलांग होता है ॥ ४५ ॥

शुक्र चंद्र और शनि नीच राशी मे स्थित होवे और कुंभराशी का सूर्य होवेतो विकलांग होता है ॥ ४६ ॥

रक्तपित्तरोग योगः

नीचेभौमे रक्तपित्तकोपः ॥ ४७ ॥

टीका-जन्म समयमें भौम नीचराशिका होवेतो रक्तपित्त रोगका कोप होता है। अर्थात नाक, मुख, तथा मलद्वार की तरफसे रुधिर पड़ाकरता है ॥ ४७ ॥

देहदुर्गंधयोग.

मंदर्क्षेशुक्रेदेहदौर्गंध्यम् ॥ ४८ ॥

षष्ठेशज्ञर्क्षे वा नक्रे देहदौर्गंध्यम् ॥ ४९ ॥

ज्ञर्क्षेशुक्रे ज्ञयुते केंद्रे देहदौर्गंध्यम् ॥ ५० ॥

मेषगेचंद्रेङ्गे देहदौर्गंध्यम् ॥ ५१ ॥

टीका–शनि की राशी १०। ११ का शुक्र होवे तो देहमें दुर्गंध होतीहै ॥ ४८ ॥

छठे स्थान का स्वामी बुध की राशि. ३।६ का होवे अथवा मकर राशी का होवे तो देहमे दुर्गंध होतीहै ॥ ४९ ॥

बुधकी राशी ३।६ मे गयाहुवाशुक्र बुधसेयुक्तहोवे और केंद्र १।४।७।१० स्थानमें स्थितहोवे तो देहमें दुर्गंध होतीहै ॥ ५० ॥

मेषराशी का चंद्रमा जन्म लग्नमें स्थितहोवे तो देहमे दुर्गंध होतीहै ॥ ५१ ॥

लकड़ी के साहारेचलने का योग.

लग्नेशेंत्ये पापयुतदृष्टे यष्ट्याचलति ॥ ५२ ॥

टीका–लग्नका स्वामी १२ बारवें स्थानमें पापग्रह से युक्त तथा दृष्टहोवे तो लकड़ी के साहारे से चलनेवालाहोताहै ॥ ५२ ॥

विलज्जयोग.

चंद्रज्ञौभौमदृष्टौ विलज्जः ॥ ५३ ॥

क्षीणेंदौसारेत्रिके विलज्जः ॥ ५४ ॥

ज्ञाच्छावङ्गे भौमेस्ते विलज्जः ॥ ५५ ॥

जीवेङ्गे भौमदृष्टे विलज्जः ॥ ५६ ॥

टीका–चंद्र और बुध दोनुग्रह भौम से दृष्टहोवे तो विलज्ज होताहै ५३

क्षीणचंद्रमा मंगल से युक्त होकर त्रिक ६।८।१२ स्थानमे जावे तो विलज्ज होताहै ॥ ५४ ॥

बुध शुक्रलग्नमे और सातमें स्थानमे भौमहोवेतो विलज्जहोताहै ५५

लग्नमें गुरु भौम से दृष्टहोवे तो विलज्ज होतहै ॥ ५६ ॥

सलज्जयोग.

चंद्रारौद्यूने गुरुदृष्टौ सलज्जः ॥ ५७ ॥

टीका– सातमे स्थानमे चंद्र मंगल गुरु से दृष्टहोवे तो सलज्ज हो-ता है ॥ ५७ ॥

कपटीयोगाः

ज्ञारयोगे कपटी ॥ ५८ ॥

पापान्वितेज्ञे बलाढ्येज्ञे कपटी ॥ ५९ ॥

सोत्थेकुजे शुभदृग्हीने कपटी ॥ ६० ॥

सुखेशे वा भाग्येशे षष्ठे कपटी ॥ ६१ ॥

मेषेज्ञे कपटी ॥ ६२ ॥

पापयुते वा पापदृष्टेसुखे कपटी ॥ ६३ ॥

पापांतरे तुर्ये कपटी ॥ ६४ ॥

कर्मपे वा रंध्रपे सुखे कपटी ॥ ६५ ॥

राहुमंदारयोगे हृत्कपटी ॥ ६७ ॥

शनि मंगल और राहु इन तीनोमे से १ अेकभी ग्रह चतुर्थ स्थान मे होतो हृत्कपटी होताहै ॥ ६६ ॥

राहु शनि और मंगल इन तिनोग्रहोका योग(युति) होवतो हृत्कपटी होताहै ॥ ६७ ॥

निष्कपटीयोग.

सुखे स्वर्क्षोच्चगे शुभे निष्कपटी ॥ ६८ ॥
सुखेशे बलाढ्ये निष्कपटी ॥ ६९ ॥
तुर्यशुभर्क्षे मित्रान्वित दृष्टे निष्कपटी ॥७० ॥
हृदयेशे गोपुरावंशे निष्कपटी ॥ ७१ ॥
पाताले मृदंशादियुते निष्कपटी ॥ ७२ ॥
लग्नशेंबुगे शुभयुतोक्षिते निष्कपटी ॥ ७३ ॥
लग्नेशे बलाढ्ये निष्कपटी ॥ ७४ ॥
लग्नपे पारावतांशे निष्कपटी ॥ ७५ ॥
लग्नेगुरौ शुक्रदृष्टे निष्कपटी ॥ ७६॥
इन्दुर्कौतुर्ये क्षणमात्रंकपटी उर्ध्व निष्कपटी ॥ ७७ ॥
तुर्यतमसी पापयुतदृष्टे बहिः शुद्धोंतः कपटी ॥ ७८ ॥
तुर्ये बहुपापयुतदृष्टेपूर्ववत् ॥ ७९ ॥

टीका–स्वराशि तथा उच्चराशि मे गया हुवा शुभग्रह चोथेस्थान मे स्थितहोवेतो निष्कपटी होताहै ॥ ६८ ॥

चोथस्थान कास्वामी बलवान् हो तो निष्कपटी हेताहै ॥ ६९ ॥

चोथेस्थान मे शुभग्रहकीराशि २।७।३।६।४।९।१२ अपने स्वामी के मित्रग्रहसे युत तथा दृष्ट होतो निष्कपटी होताहै ॥ ७० ॥

चोथेस्थानका स्वामि गोपुरादि अंशमे हो तो निष्कपटी होताहै ७१

चतुर्थभाव मृदंशादिक मेहावे तो निष्कपटी होताहै ॥ ७२ ॥

लग्नेश्वर चतुर्थ स्थानमे जवे शुभ ग्रहसेयुक्त तथा दृष्टहोवतो निष्कपटी होताहै ॥ ७३ ॥

लग्नेश्वर बलवान् होवेतो निष्कपटी होताहै ॥ ७४ ॥

लग्न का स्वामि पारावतादि अंशमे होवेतो निष्कपटी होताहै ७५

शुक्र से दृष्ट गुरु लग्नमे स्थित होवेतो निष्कपटी होताहै ॥ ७६ ॥

चंद्रसूर्य का योग चोथे भाव मे होवे तो क्षणमात्र कपटीरहै पश्चात् निष्कपटी होताहै ॥ ७७ ॥

पापग्रह से युक्त तथा दृष्ट राहु चोथे स्थानमे, स्थितहोवे तो बाहर तो निष्कपटी (शुद्ध) और अंतःकरणमें कपटी होताहै ॥ ७८ ॥

चोथेस्थानमे बहुत पापग्रह युक्तहो तथा ४ स्थानको देखते होवेतो बाहार से निष्कपटी और अंतःकरणमें कपटी होताहै ॥ ७९ ॥

शूरयोगः

रात्रौ बल्यारेंगे खे वा शूरः ॥ ८० ॥

भौमेस्ते बलवान् शूरश्च ॥ ८१ ॥

टीका–बलवान मंगल, लग्नमे अथवा १० दशमे भावमे जावे और रात्रिसमय का जन्महो तो शूरवीर होताहै ॥ ८० ॥

सातवे स्थानमे मंगल स्थितहोवेतो बलवान और शूर होताहै ॥८१॥

दूसरे ग्रंथोमें लिखाहै तथा अनुभव से देखनेमे आयाहै कि जिसके जन्म लग्नसे तीसरे ३ छठे ६ ग्यारवें ११ स्थानमे भौम शनि रवि राहु स्थित होतेहै वह शूरवीर उद्योगी साहसी हिमतवान् पराक्रमी होताहै।

कातरयोग.

निर्बलारेणांगे दृष्टे कातरः ॥ ८२ ॥

रात्रौशनौ दशमे कातरः ॥ ८३ ॥

स्वर्क्षगभौमदृष्टेंगे कातरः ॥ ८४ ॥

अंशाद्विक्रमेपापेशूरःशुभेकातरः ॥ ८५ ॥

टीका–जन्मलग्नको निर्बली मंगल देखताहो तो कातर (डरपोक) होताहै॥ ८२ ॥

रात्रि समय मे जन्महो शनि दशमेस्थानमे स्थितहोतो कातर (डरपोक) होताहै ॥ ८३ ॥

स्वराशि १।८ का मंगल लग्नको देखता होतो कातर होताहै ८४

कारकांसश लग्नसे ३ तीसरे स्थानमे पापग्रह स्थितहोतो शूरहोताहै और शुभग्रह स्थितहो तो कातर होता है ॥ ८५ ॥

क्रोधियोगः

दिवाबल्यारे खेगे क्रोधी ॥ ८६ ॥

लग्ने अस्ते वा निर्बलारे शनिदृष्टे क्रोधी ॥ ८७ ॥

लग्नेभौमे क्रोधी ॥ ८८ ॥

द्यूनेबलवति भौमे क्रोधी ॥ ८९ ॥

त्रिकोणेल्पवीर्ये राशिपे क्रोधी ॥ ९० ॥

अन्त्याष्टमेङ्गेशे क्रोधी ॥ ९१ ॥

धनेशे गुलिकान्विते क्रोधी ॥ ९२ ॥

टीका– दिनकाजन्म होवे और बल वाले मंगल १० दश मे अथवा १ लग्न मे स्थितहो तो क्रोधी होताहै ॥ ८६ ॥

लग्नमे अथवा सात वे स्थानमे निर्बली मंगल होवे शनि देखता होतो क्रोधीहोताहै ॥ ८७ ॥

लग्नमे मगल होतो क्रोधी० ॥ ८८ ॥

सातम स्थानेम वलवान मंगल होवेतो क्रोधी होताहै ॥ ८९ ॥

जन्म राशिका स्वामी निर्बली होके त्रिकोणस्थान (९।५) मे स्थित होतो क्रोधी० ॥ ९० ॥

लग्न कास्वामि बारवे तथा आठमे स्थानमे जावेतो क्रोधी० ॥ ९१ ॥

धन २ स्थान का स्वामि गुलिकसे युक्तहो तो क्रोधी होताहै ॥ ९२ ॥

कलहप्रिययोग

केतु युते सोत्थे कलह प्रियः ॥ ९३ ॥

टीका– तीसरेस्थान मे केतु युक्तहोतो कलह प्रिय होताहै ॥ ९३ ॥

क्षमावानयोग

कर्कालिझषर्के भौमदृष्टे क्षमावान् ॥ ९४ ॥

तुर्येशेऽङ्गे वा लग्नेशे तुर्ये क्षमावान् ॥ ९५ ॥

सबलेतुर्ये क्षमावान् ॥ ९६ ॥

शुभेतुर्ये क्षमावान् ॥ ९७ ॥

टीक- कर्क वृश्चिक मीनराशि मे गयाहुवा सूर्य भौमसे, दृष्टहोयेतो क्षमावान् होताहै ॥ ९४ ॥

चोथस्थान का स्वामि लग्नमे अथवा लग्न का स्वामि चोथेस्थान मे जावेतो क्षमावान् होताहै ॥ ९५ ॥

चोथास्थान बलवान हो (स्वामि से तथा गुरुबुध सेयुक्त दृष्ट होवे) तो क्षमावान् होताहै ॥ ९६ ॥

शुभग्रह चोथस्थान मे स्थित होवेतो क्षमावान् होताहै ॥ ९७ ॥

हास्यासक्त योग

शनिग्रहे ज्ञारो हास्यासक्तः ॥ ९८ ॥

ज्ञेऽङ्गेचास्तेजीवे हास्यासक्तः ॥ ९९ ॥

ज्ञांशेगे हास्यासक्तः ॥ १०० ॥

टीका–बुध मंगल कायोगमकर अथवा कुंभराशी मे होवेतो हास्या सक्त(हसी खुसी मे रहनेवाला) होताहै ॥ ९८ ॥

लग्नमे बुध और सात मे गुरु स्थित होवेतो हास्या० ॥ ९९ ॥

बुधकी राशि ३।६ का नवांश लग्नमें होवेतो हास्या सक्त होताहै १००

द्रोहीयोग.

सोत्येभौमे ज्ञचंद्र दृष्टे द्रोही ॥ १०१ ॥

लग्नेशेऽङ्गे षष्ठे द्रोही ॥ १०२ ॥

लग्नेशे निर्बले द्रोही ॥ १०३ ॥

टीका–तीसरेस्थानमें मंगल होवे और उसको बुध चंद्र देखते होतो द्रोही होताहै १०१

लग्नका स्वामीबुध छठे स्थानमे जावे तो द्रोही होताहै ॥ १०२ ॥
लग्नका स्वामी निर्बली होवे तो द्रोही होताहै ॥ १०३ ॥

गुरु द्रोही योग

राव्हर्कजौधर्मेंशाद्गुरुद्रोही ॥ १०४ ॥

टीका–कारकांश लग्नसे नवम स्थानमें राहुशनि स्थितहोवेतो गुरुद्रोही होताहै ॥ १०४ ॥

चौरयोग.

अंशेकेतौ चौरः ॥ १०५ ॥

अंशेगुलिके चौरः ॥ १०६ ॥

तृतीयेशेंत्ये चौरः ॥ १०७ ॥

सुखेशेषष्ठे चौरः ॥ १०८ ॥

धनेरंध्रेशे चौरः ॥ १०९ ॥

रिपुगौ सबलौ ज्ञारौचौरः ॥ ११० ॥

ज्ञारौलग्ने चौरः ॥ १११ ॥

टीका–कारकांश कुंडली के लग्नमे केतु स्थितहोतो चौर होताहै १०५
कारकांश लग्नमें गुलिक युक्तहोतो चौर होताहै ॥ १०६ ॥
तीसरे स्थानका स्वामी बारवे स्थानमेंजावे तो चौर होताहै ॥१०७॥
चौथेस्थानका स्वामी छठेस्थानमे होवे तो चौर होताहै ॥ १०८ ॥
आठवे ८स्थानका स्वामी धनस्थानमे होवे तो चौर होताहै ॥१०९॥
बलवान् बुध मंगल छठे ६ स्थानमे जावे तो चौर होताहै ॥११०॥
बुध मंगलका योग लग्नमे होवे तो चौर होताहै ॥ १११ ॥

व्यसनीयोग.

मृगेजीवेङ्के अहिफेनव्यसनी ॥ ११२ ॥

व्ययेशेनीचे व्यसनी ॥ ११३ ॥

अंगपेनीचेत्रारिक्षेत्रे व्यसनी ॥ ११४ ॥

व्ययेपापेव्यसनी ॥ ११५ ॥

लग्नपे निर्बले व्यसनी ॥ ११६ ॥

लग्नपेसारे व्यसनी ॥ ११७ ॥

अंगेपापदृष्ट्याधिक्ये व्यसनी ॥ ११८ ॥

टीका– लग्न मे मकर राशि का गुरु होवेतो अफीमखानेका व्यसनी होताहै ॥ ११२ ॥

बारवे (१२) स्थानका स्वामी नीचराशि का होवेतो व्यसनी अर्थात् अफीम गांजा भंग चरस शराब तमाखु पान वगेरा कईयक व्यसनोमे से कोई भी जातका व्यसन करने वालाहोताहै ॥ ११३ ॥

लग्न का स्वामि नीचराशि से स्थितहोवे अथवा अपने शत्रुग्रह की राशिमे होवेतो व्यसनी होताहै ॥ ११४ ॥

बारवे स्थानमे पापग्रह जावेतो व्यसनी होताहै ॥ ११५ ॥

लग्न का स्वामि निर्बली होवेतो व्यसनी होताहै ॥ ११६ ॥

लग्न का स्वामि मंगल से युक्त होवेतो व्यसनी होताहै ॥ ११७ ॥

लग्नपर पापग्रहो कि दृष्टि अधिक होवेतो व्यसनीहोताहै ॥ ११८ ॥

निर्व्यसनीयोग

सबलेङ्गेशे निर्व्यसी ॥ ११९ ॥

लग्नेशे लग्ने वा व्यये शुभसम्बन्धे निर्व्य० ॥ १२० ॥

धर्मेशुभे निर्व्यसनी ॥ १२१ ॥

लग्नपे केंद्रे निर्व्यसनी ॥ १२२ ॥

टीका–लग्न का स्वामि बलवान् होवेतोनिर्व्यसनी होताहै ॥ ११९ ॥

लग्नेश्वर लग्न मे जावे अथवा बारवा स्थान शुभग्रहो से सम्बंध करताहोवे तो निर्व्यसनि होताहै ॥ १२० ॥

नवम स्थानमें शुभग्रह स्थितहोवेतो निर्व्यसनी होताहै ॥ १२१ ॥

लग्नका स्वामि केन्द्र १।४।७।१० मे स्थित होवेतो निर्व्यसनी होता है ॥ १२२ ॥

गोपालयोग

अंशात्खे जीवार्कमात्रदृष्टे गोपालः ॥ १२३ ॥

टीका– कारकांश लग्न से १० दशमस्थान को गुरु सूर्य के शिवाय और कोई ग्रह नहिंदेखते होवे (अर्थात् गुरु सूर्य ही देखतेहो) तो गोपाल न करनेवाला होताहै ॥ १२३ ॥

अविश्वासीयोग

अशांद्धर्मे जीवार्कावविश्वासी ॥ १२४ ॥

टीका– कार कांश लग्न से नवमे स्थानमे गुरुसूर्य स्थितहोवे तो अविश्वासि (किसीपर भरोसा नही रखनेवाला) होता है ॥ २४ ॥

कामीयोग.

उच्चगे वा नीचगे वा सिंहपूर्वार्द्धे शुक्रोत्रिकेकामी ॥ १२५ ॥

स्वांशे शुक्रे कामी ॥ १२६ ॥

पापदृष्टे शुक्रे कामी ॥ १२७ ॥

युग्मे स्वर्क्षे वा शुक्रे कामी ॥ १२८ ॥

स्वांगसुतेयुधनेशे कामी ॥ १२९ ॥

टीका–उच्चराशी (१२)काशुक्र ६।८।१२ जावे १ अथवानीच राशी (६) का शुक्र ६।८।१२ मे जावे २ वा सिंहराशि के पूर्वार्द्ध (१५ अंशके-भीतर) मे गयाहुवाशुक्र त्रिकस्थान (६।८।१२) मे स्थितहोवे ३ तो कामी होताहै इस सूत्रमे ३ योग कहेहै ॥ १२५ ॥

स्वनवांश का शुक्रहोवे तो कामी होताहै ॥ १२६ ॥

शुक्रको पापग्रह देखते होवे तो कामी होताहै ॥ १२७ ॥

मिथुनराशि मे अथवा स्वराशि २।७ मे शुक्रस्थित होवे तो कामी होताहै ॥ १२८ ॥

धन (२) स्थानका स्वामी दसमे १० लग्नमे १ तथा पांच ५ वे स्थानमे स्थितहावे तो कामी होताहै ॥ १२९ ॥

अतिकामीयोग

शुक्रेस्तेतिकामुकः ॥ १३० ॥

भौमाच्छ्युतो जीवेचारीशे कामाधिक्यं ॥ १३१ ॥

टीका-सात मे स्थानमे शुक्र होवेतो अति कामी होताहै ॥ १३० ॥

मंगलशुक्रकायोग कोईभस्थानमे होवे और छठेस्थान कास्वामी गुरुहोवे तो अतिकामी होताहै इसयोगका संभव कर्क तथा तुललग्न मे जन्म पाने वाले को ही होताहै ॥ १३१ ॥

अल्पकाम वा अल्पवीर्य योग

शनिर्धनुर्वृषेलग्ने ऽल्पकामः ॥ १३२ ॥२॥

विषमोदयगेशुक्रेल्पवीर्यः ॥ १३३ ॥ ३॥

तुर्ये चंद्रशनि अल्पवीर्यः ॥ १३४ ॥ ४॥

शुक्रेस्तेगेशदृष्टेऽल्पवीर्यः ॥ १३५ ॥ ५॥

शुक्रर्क्षेचंद्रेल्पवीर्यः ॥ १३६ ॥ ६॥

टीका-धन अथवा वृषभ राशिके लग्नमे शनि स्थित होवेतो अल्प कामी होता है ॥ १३२ ॥

विषम राशी (१।३।५।७।९।११) के लग्नमे शुक्रहोवे तो अल्प वीर्य होता हे ॥ १३३ ॥

चंद्र और शनि चोथे स्थानमे युक्तहोवे तो अल्प वीर्य होताहै १३४

सातमे स्थानमे गये हुवे शुक्र कों लग्न का स्वामी देखताहोवे तो अल्प वीर्य होता है ॥ १३५ ॥

शुक्र की राशी २। ७ का चंद्रमा होवे तो अल्प वीर्य होता है ॥ १३६ ॥

नपुंसक योग

मंदाच्छौखेरंध्रे वा शुभदृष्टिराहित्येपण्ढः ॥ १३७ ॥

षष्टांत्येजलर्क्षेमंदेशुभदृग्घीनेपण्ढः ॥ १३८ ॥

चंद्रार्कौवामंदज्ञौवाभौमार्कौ युग्मौजर्क्षगा वन्योन्यं पश्यतः पण्ढः ॥ १३९ ॥

ओजर्क्षगे समर्क्षगभौमेक्षिते पंण्ढः ॥ १४० ॥

चंद्रज्ञौ युग्मोजर्क्षगौ भौमेक्षितौ पंढः ॥ १४१ ॥
पुंभांशगासितेन्द्वंगानि पंढः ॥ १४२ ॥
मंदाच्छौखे पंढः ॥ १४३ ॥
शुक्रात्षट्टेष्टमेमन्दे पंढोवातादृशः ॥ १४४ ॥
अंशेकेतौ मंदज्ञदृष्टेपंढोवातादृशः ॥ १४५ ॥
मंदाच्छौ शुभदृग्धी नौरन्ध्रगौ पण्ढो वा तादृशः ॥ १४६ ॥
षष्ठांत्येनौचगेमंदेपंढो वा तादृशः ॥ १४७ ॥

टीका–शनि और शुक्र ये दोनों दशमे अथवा आठवे स्थान मे स्थित होव और शुभग्रहोसे अदृष्टहोव तो नपुंसकहोता है ॥ १३७ ॥

जलराशि मे गयाहुवा शनि छठे अथवा बारवे स्थान मे होवे और उसपर शुभग्रह की दृष्टिनहि होवेतो नपुंसकहोताहै ॥ १३८ ॥

चंद्र रवि अथवा शनि बुध अथवा मंगल रवि येग्रह क्रमसे सम और विषमराशि मे स्थितहोके परस्पर देखते होवेतो नपुंसकहोताहै अर्थात् चंद्रसमराशिका रवि विषमराशिकाहोवे अथवा शनिसमराशिका और बुधविषमराशिका होवे अथवा मंगल समराशिका और रवि विषमराशिका होवे और ये प्रत्येक परस्पर पूर्णदृष्टिसे देखतेहोवतो इन तीनो योग मे से अेकभी योगमे जन्महोनेसे नपुंसक होताहै ॥१३९॥

विषमराशि का लग्न समराशि २।४।६।८।१०।१२ मे गयहुवे भौम से दृष्टहोव तो नपुंसक होताहै ॥ १४० ॥

समराशि का चंद्रऔर विषमराशि का बुधहोवे इनदोनोको मंगल देखताहोवे तो नपुंसक होताहै ॥ १४१ ॥

शुक्रचंद्र और लग्न येतीनो पुरुषराशि १।३।५।७।९।११ के नवांश मे होवेतो नपुंसक होताहै ॥ १४२ ॥

शनि और शुक्र येदोनो दशमे होवेतो नपुंसक होताहै॥ १४३ ॥

शुक्र से छठे आठवे स्थान मे शनी होवे तो नपुंसक अथवा नपुंसक के समान होताहै ॥ १४४ ॥

कारकांश लग्नमे केतुहोय और वह शनि बुधसेदृष्ट होवे तो नपुंसक वा नपुंसक के समान होताहै ॥ १४५ ॥

शनिशुक्र आठमे स्थानमे स्थित होवे और इनदोनोंको शुभग्रह नहीं देखते होवे तो नपुंसक वा नपुंसक के समान होताहै ॥ १४६ ॥

नीचराशिमे स्थित शनि छठे तथा बारवे स्थान मे होवे तो षंढ अथवा षंढ के समान होताहै ॥ १४७ ॥

वीर्यच्युति योग

राहौशुक्रेर्कजेवोच्चगेकर्केकेमेषेचंद्रेवीर्यच्युतिः॥ १४८॥

लग्नेचंद्रे गुर्वर्कजौसुते वीर्यच्युतिः॥ १४९ ॥

कन्योदये मंदज्ञद्रष्टे मन्दर्क्षेशुक्रे वीर्यच्युतिः॥ १५० ॥

टीका-राहू शुक्र अथवा शनि अपनी उच्चराशिमे होवे और कर्कराशि का सूर्य मेषकाचंद्रमा होवेतो वीर्यश्राव होतारहताहै ॥ १४८ ॥

लग्नमे चद्रमा और गुरुशनि पांचवे स्थानमे स्थित होवे तो वीर्यच्युति (विर्यश्राव) होतारहता है ॥ १४९ ॥

कन्याराशि के लग्नको शनिबुध देखते होवे और शनिकि राशि १०।११ काशुक्रहोवे तो वीर्यच्युतिहोतीहै ॥ १५० ॥

यह योगजिसका होताहै उसके पेशाबमें वास्वप्नमें वा स्त्रीकदर्शन स्पर्श मात्रसेहिवीर्यश्रावहोजायाकरताहै

उन्मादयोग

ईज्येङ्के कुजेस्ते उन्मादी ॥ १५१ ॥

लग्नेशेना मदत्रिकोणे कुजे उन्मादी ॥ १५२ ॥

मन्देङ्के व्ययेर्के कोणेचंद्रे वा भौमे उन्मादी ॥ १५३ ॥

मूढेनीचेपष्टे सोत्थेशे पापद्रष्टे गरलज उन्मादः॥ १५४ ॥

भौमेस्ते जीवेङ्के उन्मादी ॥ १५५ ॥

क्षीणेंद्वर्कजावंत्ये उन्मादी ॥ १५६ ॥

मंदार्थेशौ सपापौ वातज उन्माद ॥ १५७ ॥

धनेशार्कजौसूर्ययुतौ राजकोपजउन्मादः ॥ १५८ ॥

यमार्थेशौ भौमयुतौ पित्तज उन्मादः ॥ १५९ ॥

चंद्रार्कौकोणाङ्गगौकेंद्रेजीवेयमारक्षणवारेउन्मादः॥१६०॥

इन्द्वर्कजौलग्ने ज्ञदृष्टौ विन्हलः ॥ १६१ ॥

टीका-लग्नमे गुरु और सातमे मंगलहोवेतो उन्मादि (विक्षिप्त) होताहै ॥ १५१ ॥

लग्नमे शनि सातवे अथवा नवमे पांचवे मंगलहोवे तो उन्मादि होताहै ॥ १५२ ॥

लग्नमे शनि, बारवे सूर्य, नवमे पांचवे चंद्र, अथवा मंगल स्थितहोवे तो उन्मादी होताहै ॥ १५३ ॥

तीसरे स्थानका स्वामी अस्तका, अथवा नीचराशीका छठे स्थान मे होवे और पापग्रह से दृष्टहोवे तो जहरखानेसे उन्माद होताहै ॥ १५४ ॥

सातमे मंगल और लग्नमे गुरु होवेतो उन्मादी होताहै ॥ १५५ ॥

क्षीणचंद्र और शनि येदोनुबारवे स्थानमेहोवे तो उन्माद होताहै॥१५६॥

शनि और धनस्थानका स्वामि ये दोनो पापग्रहसे युक्तहोवे तो वायुसे उन्माद होताहै ॥ १५७ ॥

धनेश और शनि ये दोनो सूर्य से युक्तहोवेतो राजकोपसे उन्माद होता है ॥ १५८ ॥

शनि और धनस्थान का स्वामि ये दोनो मंगल से युक्तहोवे तो पित्तजन्य उन्माद होताहै ॥ १५९ ॥

चंद्र और सूर्य दोनो नवमे पांचवे अथवा लग्नमे होवे और केंद्र १।४।७।१० मेगुरु होवे जन्मसमय मे शनि अथवा मंगल की कालहोराहोवे वा शनि मंगलवार कोदिन जन्म होवे तो उन्माद होताहै ॥ १६० ॥

चंद्र शनि लग्नमे होवे और बुध इनको देखताहोवे तो विन्हल (भ्रमिष्ट) होताहै ॥ १६१ ॥

शीघ्रवार्धक्य चिन्होदय योग

धनेकेतौ शीघ्रवार्धक्यचिन्होदयः ॥ १६२ ॥

टीका-धनस्थानमे केतु होवेतो शीघ्रवृद्धावस्था के चिन्ह उदय होजातहै ॥ १६२ ॥

प्रकृति वृद्ध योग

राव्हर्कजार्केज्या लग्नगा प्रकृति वृद्धः ॥ १६३ ॥

टीका-राहु शनि सूर्य गुरू ये चारो लग्न मे होवे तो प्रकृति वृद्ध (स्वाभाविकवृद्ध) होताहै ॥ १६३ ॥

नातिवृद्धनयुवा योग

चंद्राच्छौलग्ने नातिवृद्धो नयुवा ॥ १६४ ॥

टीका-चंद्र शुक्र लग्नमे होवेतो नतोअधिक वृद्ध और नअति जवानही (मध्या वस्थाका) होताहै ॥ १६४ ॥

वृद्धभी तरुण के समान रहनेका योग.

सबलेभौमेलाभे वृद्धोपितरुणायते ॥ १६५ ॥

टीका-बलवान मंगल लाभ ११ भावमें होवेतो वृद्धावस्थाहोवेनेभी तरुणके समान रहताहै ॥ १६५ ॥

रसायन व्यसनी योग.

खे सुखेशे रसायनव्यसनी ॥ १६६ ॥

सुखेशे विबले रसायनव्यसनी ॥ १६७ ॥

टीका-चौथे स्थानका स्वामि १० दशमे स्थानमे होवेतो धातु उपधातु की रसायन बनाना तथा उसका सेवन करने मे विशेष प्रीतिरखनेवाला होताहै ॥ १६६ ॥

चौथे स्थानका स्वामि निर्बली होवेतो धातु उपधातु की रसायन बनाना तथा उसका सेवन करनेमे विशेष प्रीतिरखनेवाला होताहै १६७

बहुभुक्योग.

सपापे अर्थेशे बहुभुक् ॥ १६८ ॥

सपापेर्थे क्रूरषष्ठ्यंशे बहुभुक् ॥ १६९ ॥

टीका-धन २ स्थानका स्वामि पापग्रहसे युक्तहोवे तो बहुत भोजन करनेवाला होताहै ॥ १६८ ॥

धन २ स्थान पापग्रहसे युतहोवे और क्रूरषष्ठ्यंशमे होवेतो अधिक भोजन करने वाला होताहै ॥ १६९ ॥

सुखभुक योग.

सशुभे धनेशे सुखभुक् ॥ १७० ॥

धनेशुभे पापदृग्हीने सुखभुक् ॥ १७१ ॥

धनेशुभदृष्ट्याधिक्ये सुखभुक् ॥ १७२ ॥

धनेशे बलवति सुखभुक् ॥ १७३ ॥

वैशेषिकांशेऽर्थेशे वा गुरुदृष्टे सुखभुक् ॥ १७४ ॥

टीका-धनशशुभग्रहसे युतहोवेतोसुखसे भोजन करनेवाला होताहै १७०
धन २ स्थानमे शुभग्रह होवे और धनस्थान को पापग्रह नहि देखते
हो व तो सुखसे भोजन करने वाला होताहै ॥ १७१ ॥

धन २ स्थानपर शुभग्रह की अधिक दृष्टि होवेतो सुखसे भोजन करने
वाला होताहै ॥ १७२ ॥

धन २ स्थान का स्वामि बलवान होवेतो सुखसे भोजन करने वाला
होताहै ॥ १७३ ॥

धनश वैशेषिकांश (संज्ञाध्यायमेंशुत्र २१ मे कहाहै) मे होवे अथवा
धनश को गुरु देखताहोवेतो सुखसे भोजन करनेवाला होताहै ॥१७४॥

श्राद्धान्न भोजनकर्तायोग

धनेशे मंदे नीचगे गुलिक युते सततं श्राद्धभुक् ॥ १७५ ॥

टीका-धन २ स्थान का स्वामि शनि नीचराशि मे होवे और गुलिकसे
युक्त होवे तो निरंतर श्राद्धान्न भोजन करनेवाला होताहै ॥ १७५ ॥

अल्पभुक्योग

धनेशे शुभे वा स्वोच्चे शुभदृष्टेऽल्पाशी ॥ १७६ ॥

टीका-धन २ स्थान का स्वामि शुभग्रह होवे १ अथवा अपनी उच्चराशि
का होवे और शुभ ग्रह से दृष्ट होवे २ तोअल्पभोजनकरनेवाला
होताहै ॥ १७६ ॥

शीघ्र भुक् योग

सबलेऽर्थेशे सशुभे शीघ्रभुक् ॥ १७७ ॥

धनेशे चरभे शीघ्रभुक् ॥ १७८ ॥

धनेशुभर्क्षे शुभदृष्टे शीघ्रभुक् ॥ १७९ ॥

टीका-धन २ स्थानका स्वामि बलवान होवे और शुभग्रह से युत होवे
तो शीघ्र भोजन करनेवाला होताहै ॥ १७७ ॥

धन २ स्थानका स्वामि चर राशि १।४।७।१० काहोवेतो जल्दि भोज

न करने वाला होता है ॥ १७८ ॥

धन २ स्थान का स्वामि शुभग्रह की राशि का होवे और शुभग्रह उसको देखतेहोवे तो जल्दी भोजन करनेवाला होताहै ॥ १७९ ॥

चिरभुक् योग

कोशेपापर्क्षे पापयुतदृष्टे चिरभुक् ॥ १८० ॥

धनेशे स्थिरर्क्षे चिरभुक् ॥ १८१ ॥

टीका-धनभावमे पापग्रह की राशिहोवे और पापग्रह युक्त तथा देखते होवेतो देरतक भोजन करनेवाला होताहै ॥ १८० ॥
धनस्थानकास्वामी स्थिर २।५।८।११ राशिका होवेतो देरतक भोजन करने वाला होता है ॥ १८१ ॥

कदन्नभुक योग

गुलिकारयोगे कदन्नभुक् ॥ १८२ ॥

टीका-गुलिक और मंगल का योग होवेतो दुष्टान्न (खराबअन्न) भोजन करने वाला होताहै ॥ १८२ ॥

भोजनशूर

लग्नेजीवे भोजनशूरः ॥ १८३ ॥

टीका-लग्नमेगुरुहोवे तो भोजनमेशूर (भोजन करने मे बहादुर) होताहै ॥ १८३ ॥

धीरयोग

भ्रातृपेबलिनिकेंद्रकोणगे सौम्यदृष्टवैशेषिकांशे धीरः १८४

विक्रमेशे शुभर्क्षांशे शुभदृष्टयुते धीरः ॥ १८५ ॥

विक्रमार्केश योगे धीरः ॥ १८६ ॥

सोत्थेशेन्दुयोगेधीरः ॥ १८७ ॥

टीका-तीसरे स्थान का स्वामि बलवान होकर केंद्र कोण १।४।७।१०।९।५ स्थानमे होवे शुभग्रह से दृष्टहोवे वैशेषिकांशमे होवे तो धीर (धैर्यवान्) होताहै ॥ १८४ ॥

तीसरे स्थानका स्वामि शुभग्रह की राशि और शुभग्रहके नवमां

शर्मे होवे शुभग्रहसे युतदृष्ट होवे तो धीर होताहै ॥ १८५ ॥
तीसरे ३ और १२ बारमे स्थान के स्वामि का योग होवेतो धीर होताहै ॥ १८६ ॥
तीसरे ३ स्थान के स्वामि से चंद्र का योग होवे तो धीर होताहै ॥ १८७ ॥

पिशुनयोग

सुतेंगेशेपिशुनः ॥ १८८ ॥
पापेङ्गेशेपिशुनः ॥ १८९ ॥
पापदृष्टचाधिकेङ्गे पिशुनः ॥ १९० ॥

टीका-लग्नका स्वामि ५ पाचवे होवेतो चुगलखोर होताहै ॥१८८॥
लग्नका स्वामि पापग्रह होवेतो चुगलखोर होताहै ॥१८९॥
लग्नपर पापग्रहो कि दृष्टि अधिक होवेतो चुगलखोर होताहै १९०

चाण्डालयोग.

पापदृष्टेजीवे सतमसी चाण्डालता ॥ १९१ ॥
नीचभांशेजीवे चाण्डालता ॥१९२॥

टीका-गुरु, राहुसेयुक्तहोवे और उसको पापग्रह देखता होवेतो चाण्डाल प्रकृति होताहै ॥१९१॥
नीचराशि और नीच नवांशमे गुरुहोवेतो चाण्डाल प्रकृति होताहै १९२

पिशाचजन्मयोग

ग्रस्तेचंद्रेङ्गे पापाः कोणे पिशाचजनिः ॥ १९३ ॥

टीका-ग्रहणसमय का चंद्रमा लग्नमे होवे और ९।५ नवमे पांचवे स्थान मे पापग्रह जाय तो पिशाच प्रकृतिवाला जन्मताहै ॥ १९३ ॥

शिल्पियोग

चंद्रेमंदे ज्ञयुते शिल्पी ॥ १९४ ॥
सबलेज्ञे केंद्रे शिल्पि ॥ १९५ ॥
ईज्यज्ञयोगे शिल्पि ॥ १९६ ॥

टीका-केंद्र १।४।७।१० मे शनि, बुधसेयुक्तहोवेतो शिल्पकार्य करनेवाला होताहै ॥ १९४ ॥

बलवान बुध १।४।७।१० मे स्थानमे होवेतो शिल्पज्ञ होताहै १९५

गुरु और बुधका योग होवेतो शिल्प जाननेवाला होताहै ॥१९६॥

सुथारसिलावट केतथाकलावेगेरे हुनर केकामको शिल्प विद्याकहेतहै

क्षारादिपदार्थ प्रिययोग

ज्ञेज्येषष्टे उपदंशप्रियः ॥१९७॥

टीका-छठेस्थानमे बुध बृहस्पति होवेतो अच्छे क्षार पदार्थोकोप्रिय माननेवाला होताहै ॥ १९७ ॥

सर्वार्थचिंतामणीमेंदूसरेयोगभीकहेहै छठेबुधशुभग्रहसेदृष्ट होवे और षष्ठेशशुभ युक्तहोवे परंतु पापग्रहोके मध्यमे स्थितहोवेतो अच्छे क्षार पादार्थोको प्रियमाननेवालाहोताहै १ छठे गुरु अथवा बुधकी राशीमृद्वंशादिकमे होतो क्षारवस्तुप्रियमाननेवालाहोताहै २

मधुरादिपदार्थप्रिययोग.

षष्ठेशेजीवे शुक्रेवा मधुरादिप्रियः ॥ १९८ ॥

सशुभेज्ञे मधुरप्रियः ॥ १९९ ॥

टीका-छटेस्थानका स्वामि गुरु अथवा शुक्र होवेतो मधुरादि (मीठे-आदि) पदार्थ प्रियमाननेवाला होताहै ॥ १९८ ॥

बुध शुभग्रहसेयुक्त होवेतो मीठा पदार्थ प्रियमानने वाला होताहै१९९

ग्रंथांतरमेंकहाहैकि षष्ठेशगुरु वा शुक्र गोपुरादिअंशकमेहोवेतो मीठा आदिपदार्थ प्रियमाने अथवा शुभग्रह से युत शुक्र छठेस्थानमे स्थित होवे २ वा शुभके नवांशमे शुक्रहोवे और शुभग्रहोसेदृष्टहोवेतो ३ वा शुक्र बलवानहोवे बुधसे युतहोवे और पारावतादि शुभनवांशमे स्थित होवेतो नित्य मीठापदार्थका भोजन करनेवाला होताहै ४

मधुरे अरुचि, अम्लपदार्थेच रुचियोग.

सपापज्ञे मधुरेऽरुचि ॥ २०० ॥

टीका-पापग्रह सेयुक्तबुध होवेतो मीठेपदार्थपर अरुचिवालाहोताहै२००

ग्रंथांतरमें कहाहै कि बुध पापग्रहसे दृष्टहोवेतो मीठेपदार्थपर अरुचि

रखनेवाला होताहै १ बुध सहित शुक्र छठे भावम होवेतो वह मनुष्य खट्टा पदार्थ खानेवाला होताहै २ छठेस्थानमे शुक्र मंगलसे युक्त होवेतो १ अथवा छठेस्थानमे शुक्रहोवे और उसको मंगल देखताहोवेतो २ अथवा छठगये हुवे शुक्रकोसूर्य देखताहोवेतो ३ वहमनुष्य खट्टापदार्थ (दहि इमलि निंबु कढी आदि खट्टेपदार्थ) खानेवाला होताहै

नीचकर्मा, नीचपथग, म्लेच्छ योग.

लग्नेर्केजग्यंशे केंद्रगचंद्रदृष्टे नीचकर्मा ॥२०१॥

द्यूनेर्केलग्नेमन्दे पुण्येसोत्थे भौमे श्रेष्टवर्णोपिनीचपथगः२०२

मंदार्कावेकर्क्षगौग्यंशे नवांशे त्रिंशांशे वा नीचयोषानुषंङ्गा

न्म्लेच्छोभवति ॥ २०३ ॥

टीका–लग्नमे शनिका द्रेष्काणहोवे और १।४।७।१० मे स्थानमे गया हुवा चंद्र देखताहोवेतो नीचकर्म करनेवाला होताहै ॥२०१

सातमे सूर्य लग्नमेशनि और ९।३ नवमे तथा तीसरे स्थानमे मंगल स्थितहानेतो उत्तम वर्णकाहो तथापि नीचमार्गमे चलनेवाला होताहै २०२

शनि और सूर्य दोनो एकराशिमे होवे १ अथवा एकराशिक द्रेष्काणमे २ वा एकराशिके नवांशमे ३ वा अेकराशिके त्रिंशांशमे ४ होवेतो नीच जातिकी स्त्रीके संगसे म्लेच्छ होजाताहै ॥ २०३ ॥ टीप–इससूत्रम चारयोग कहेहै इन चारयोगमसे जिसके दो योगसे जितने अधिक होने उतनाहि ये योग बलवान जानना केवल शनि सूर्य दोनो अेक राशि के होजाने से ये योग नहि मिलगा

ज्ञातिपीडायाग

षष्टाङ्गेशौ लग्नगौ ज्ञातिपीडा ॥ २०४ ॥

लग्नेशेपष्ठे षष्ठेशदृष्टे ज्ञातिपीडा ॥ २०५ ॥

शुक्रेज्यौलग्नेषष्टेशयुतौ शन्यारतमोदृष्टौ ज्ञातिपीडा २०६

टीका–लग्नेशऔरछठेस्थानकास्वामि ये दोनो लग्नमे होवेतो ज्ञातिसे पीडाहोतिहै ॥ २०४॥

लग्नेश छठे स्थानमेहोवे और उसको छठे स्थानका स्वामि देखता हो ज्ञातिसे पीडाहोतीहै ॥ २०५ ॥

षष्ठेशसे युक्त शुक्र गुरु लग्नमे स्थितहोवे और इनको शनि मंगल राहु देखतेहोवे तो ज्ञातिसे पीडाहोतीहै ॥ २०६ ॥

जातिच्युतियोग.

लग्नेशाद्वा लग्नात्त्रिकगैःपापैर्जातिच्युतिः ॥२०७॥

ज्ञेन्द्वर्कजा नीचारिभागगा जातिच्युतिः ॥२०८॥

टीका-लग्नसे अथवा लग्नेशसे ६।८।१२ स्थानमे पापग्रह स्थित होवेतो जातिबाहर होताहै ॥ २०७ ॥

बुध, चंद्र, शनि, ये तीनो नीच तथा शत्रु राशिके नवमांशमे होवेतो जातिबाहर होताहै ॥ २०८ ॥

जातिपोष्ययोग.

इन्द्वर्कजौ मित्रर्क्षे जातिपोष्यः ॥ २०९ ॥

टीका-चंद्रशनिमित्रराशिकेहोवेतोजातिकोपोषणकरनेवाला होताहै ॥ २०९ ॥

कौतुकियोग.

लाभेशेङ्गे कौतुकि ॥ २१० ॥

लाभेशेशुभे वा सबले कौतुकी ॥ २११ ॥

लाभेशुभे कौतुकि ॥ २१२ ॥

टीका-लाभ ११ स्थानका स्वामि लग्नमेहोवेतो कौतुकिहोताहै २१०

लाभस्थानकास्वामिशुभग्रहहोवे वाबलवानहोवेतो कौतुकि (खिलाडी) होताहै ॥ २११ ॥

ग्यारमें स्थानमे शुभग्रह स्थितहोवेतो कौतुकि होताहै ॥२१२॥

आलसियोग.

ईज्यमन्दयोगे अलसः ॥ २१३ ॥

लग्नेशे मंदान्विते अलसः ॥ २१४ ॥

लग्नेशे निर्बल अलसः ॥ २१५ ॥

लग्नेशापदृष्टयाधिक्ये अलसः ॥ २१६ ॥

टीका—गुरु शनिका योग होवेतो आलसी होताहै ॥ २१३ ॥
लग्नेश्वर शनीसे युत होवेतो आलसी होताहै ॥ २१४ ॥
लग्नेश्वर निर्बली होवेतो आलसी होताहै ॥ २१५ ॥
लग्नपर पापग्रहोंकि दृष्टि अधिकहोवेतो आलसी होताहै ॥२१६॥

कृषिकर्तायोग

अंशाद्धर्मे जीवे कृषिकर्ता ॥ २१७ ॥
अंशादरिगौ पापौ कृषिकर्ता ॥ २१८ ॥

टीका—कारकांशलग्नसें नवमेस्थानमें गुरु होवेतो खेतिकरनेवाला होताहै ॥ २१७ ॥
कारकांश लग्नसे छठे स्थानमें २ दो पापग्रह स्थितहोवेतो खेति करने वाला होताहै ॥ २१८ ॥

खल्वाटयोग

धनुषि वृषेङ्गे क्रूरैर्दृष्टेखल्वाटः ॥ २१९ ॥
सपापे पापर्क्षङ्गे खल्वाटः ॥ २२० ॥
कर्केचंद्रे भौमदृष्टे सिंहचापाल्यंगनालग्ने खल्वाट २२१

टीका—क्रूरग्रहोंसे दृष्ट धन तथा वृषभ लग्नहोवेतो खल्वाट(गंजा) होताहै ॥ २१९ ॥
पापग्रहकि राशिका लग्नपापग्रहसे युक्तहोवेतो खल्वाट होताहै २२०
कर्कराशिमगयाहुवा चंद्रमा मंगलसे दृष्टहोवे और ५।९।८।६ राशि का लग्नहोवेतो खल्वाट होताहै ॥ २२१ ॥

शोभननेत्रयोग

नेत्रेशुभे नेत्रेशेचशुभान्वितेङ्गेशयुतेशोभननेत्रः २२२

टीका—नेत्रस्थान २।१२ मे शुभग्रहहोवे, नेत्रस्थानकास्वामि शुभग्रहसे और लग्नेशसे युक्तहोवेतो अच्छेनेत्रवाला होताहै ॥ २२२ ॥

बुद्बुदलोचन योग

इन्दर्कौलग्ने मिश्रदृष्टेबुद्बुदलोचनः ॥ २२३ ॥

टीका—चंद्र और सूर्य लग्नमेंस्थितहोके मिश्र (शुभपाप) ग्रहसे दृष्टहोवेतो बुद्बुदलोचन (चीपडेनेत्रका) होताहै ॥ २२३ ॥

मिलिताक्षयोग

धने वा व्ययेपापे मिलिताक्षः ॥ २२४ ॥

टीका–दूसरे अथवा बारवे स्थानमे पापग्रह होवेतो मिलिताक्ष होताहै ॥ २२४ ॥

विकलनयनयोग.

सक्रूरार्कोन्त्ये वात्रिकोणे विकलनयन ॥ २२५ ॥

टीका–क्रूरग्रहसेयुत सूर्य बारवेस्थानमे अथवा ९।५ वेस्थानमे होवे तो विकलनेत्र होताहै ॥ २२५ ॥

मंदलोचनयोग.

धनेवाव्येशुक्रे पापयुते काणो वा मंदलोचनः ॥२२६॥

टीका–दूसरे अथवा बारवे स्थानमे शुक्र पापग्रहसे युक्तहोवेतो काणा [अकचक्षु] अथवा मंददृष्टिवाला होताहै ॥ २२६ ॥

वक्रनेत्रयोग.

पुष्पवंतावमदृष्टौ वक्रर्क्षगौ व त्रिके वक्रनेत्रः ॥२२७॥

चंद्रारावेकभागेऽक्षणोश्चिन्हम् ॥ २२८ ॥

टीका–सूर्य और चंद्रमा ये दोना वक्रीग्रहकी राशिमे स्थित होवे और पापग्रह से दृष्टहावे १ अथवा ६।८।१२ स्थानमेस्थितहोवे तो वक्र नेत्र (टेढेनेत्र) होतेहै ॥ २२७ ॥

चंद्र, और मगल दोना अेक नवांशमे (बहुतसमीप २ अंशके, अेकराशिमे) होवतो नेत्रमे चिन्हहोताहै ॥ २२८ ॥

नेत्ररोगीयोग.

षष्ठेशेवक्रगर्क्षेऽक्षिरोगी ॥ २२९ ॥

ज्ञारर्क्षेलग्नपे ज्ञारदृष्टेऽक्षिरोगी ॥ २३० ॥

रंध्रगेशौषष्ठे सव्यनेत्रेरोगः ॥ २३१ ॥

षष्ठेष्टमेशुक्रे दक्षिणनेत्रेरोगः ॥ २३२ ॥

धनेशशुभेक्षिते लग्नेशे पापयुते सरोगनेत्रः ॥ २३३ ॥

मंदारगुलिकयुते नेत्रेशे नेत्ररोगः ॥ २३४ ॥
नेत्रेपापा यमदृष्टा नेत्रे रोगहतंभवेत् ॥ २३५ ॥
नेत्रेशांशेशेपापर्क्षे रोगहतनेत्रः ॥ २३६ ॥
लग्नाष्टमेशुक्रे क्रूरदृष्टेश्रुपातान्नेत्रपीडा ॥ २३७ ॥
लग्नेभौमेशयने नयनेगदः ॥ २३८ ॥
स्वेशशुक्रयोगे नेत्ररोगी ॥ २३९ ॥
शुक्रात्त्रिकेनेत्रेशे नेत्ररोगी ॥ २४० ॥
त्रिकोणेसूर्येपापदृष्टे निस्तेजोनेत्रः ॥ २४१ ॥

टीका–वक्रगतिग्रह की राशिमे छठेस्थानका स्वामि होवतो नेत्ररोग होताहै ॥ २२९ ॥

लग्नका स्वामि बुध (३ । ६) अथवा मंगलकी (१ । ८) राशिका होवे और बुध मंगल उसको देखते होवेतो नेत्ररोगी होताहै ॥२३०॥

लग्न और अष्टमस्थानके स्वामि ये दोनो छठेस्थानमे होवेतो सव्य (बाये) नेत्रमे रोगहोता है ॥ २३१ ॥

छठे आठमे स्थानमे शुक्रहोवेतो दक्षिणनेत्रमे रोगहोताहै ॥२३२॥

धनेश शुभग्रहसे दृष्टहोवे और लग्नश पापग्रहसेयुतहोवेतो सरोग नेत्रहोताहै ॥ २३३ ॥

दूसरे और बारवेस्थानके स्वामि शनि मंगल और गुलिकसे ... तो नेत्रमेरोग होताहै ॥ २३४ ॥

दूसर बारवे स्थानमे पापग्रहहोवे और उनको शनि देखताहोवेतो रोगसे नेत्र पीडित होतेहै ॥ २३५ ॥

नेत्रस्थान (२।१२) के स्वामिका नवांशका स्वामि पापग्रहकि राशिका होवेतो रोगसे नेत्रपीडित होतेहै ॥ २३६ ॥

लग्नमे तथा आठमे शुक्रहोवे क्रूरग्रहसे दृष्टहोवेतो अश्रुपातसे पीडाहोतीहै ॥ २३७ ॥

शयनावस्थामे गयाहुवा मंगल लग्नमे होवेतो नेत्रमे पीडाहोतीहै २३८

धनेश और शुक्र का योग होवेतो नेत्ररोगी होता है ॥ २३९ ॥
शुक्रसे ६।८।१२ नेत्रस्थान का स्वामि होवेतो नेत्ररोगी होता है ॥२४०॥
पापग्रह से दृष्ट सर्य ९।५ नवमे पांचमे स्थानमे होवेतो निस्तेज नेत्रहोतेहै ॥ २४१ ॥

अंध योग

लग्नेशे सार्कशुक्रे त्रिके जन्मांध ॥ २४२ ॥
सूर्ये राहुग्रस्तंगे मन्दारौ त्रिकोणे जन्मांध ॥ २४३ ॥
नेत्रांगेशौ भान्वच्छयुतौ त्रिके जन्मांधः ॥ २४४ ॥
त्रिकेचंद्रारयोगे पातादन्धः ॥ २४५ ॥
सेज्येंदौ त्रिके सेकादंन्धः ॥ २४६ ॥
चंद्राच्छौत्रिके कामांन्धः ॥ २४७ ॥
ज्ञेन्दुत्रिके शास्त्रान्धः ॥ २४८ ॥
इन्द्वर्कौ सोरथे वा केंद्रेन्धः ॥ २४९ ॥
पापर्क्षे भौमे केंद्रेन्धः ॥ २५० ॥
यमर्क्षस्ते सूर्येन्धः ॥ २५१ ॥
सौम्यात्रिके क्रूरैर्दृष्टा अन्धः ॥ २५२ ॥
कुजेंग कुंभेन्धः ॥ २५२ ॥
शुक्रांगेशयुतौ स्वांत्येशौ त्रिकस्थावन्धः ॥ २५४ ॥
शुक्रपापाभ्यांयुक्त श्चन्द्रोधनेन्धः ॥ २५५ ॥
सुतांबुगौ पापौ अन्धः ॥ २५६ ॥
चंद्रेत्रिके पापदृष्टेन्धः ॥ २५७ ॥
चंद्रार्कौव्ययेशुभदृग्वीनौ अन्धः ॥ २५८ ॥
सिंहेर्कजेंगे वा शुक्रेन्धः ॥ २५९ ॥

यमेन्दर्काः क्रमादंत्यार्थाष्टमगा नेत्रहीनः ॥ २६० ॥
यथा तथा षष्ठाष्टांत्यधनस्था श्चंद्राकारयमा वलीग्रह
दोषजानेत्रहीनता ॥ २६१ ॥
लग्नाच्छुक्राद्वासुतेराहु रसूर्यदृष्टच्छेन्नेत्रनाशः २६२
मंदेतुर्ये पापैर्दृष्टे नष्टदृष्टिः ॥ २६३ ॥

टीका–लग्नेश्वरसूर्य शुक्रसे युक्तहोकर ६।८।१२ स्थानमे होवेतो जन्मांध होताहै ॥ २४२ ॥

लग्नमे अ० ण समय का सूर्य होने और शनि मंगल ९।५ मेस्थानमे होवेतो जन्मांधहोताहै ॥ २४३ ॥

नेत्र २।१२ स्थानका स्वामी और लग्नेश ये दोनो सूर्य शुक्र से युक्त हो के ६।८।१२ स्थानमे जावेतो जन्मांध होताहै ॥ २४४ ॥

चंद्र मंगल का योग ६।८।१२ मे स्थानमे होवेतो पतन (गिरजाने) से अंधाहोता है ॥ २४५ ॥

गुरुसे युक्त चंद्रमा ६।८।१२ मे स्थानमे होवेतो सेक्रकरने से अंधा होताहै ॥ २४६ ॥

चंद्र और शुक्र दोना ६।८।१२ स्थानमे होवेतो कामांध होताहै २४७

बुध चंद्रमा ६।८।१२ मे स्थानमे होवेतो शास्त्रांध होताहै ॥ २४८ ॥

चंद्र और सूर्य दोनो ३ तीसरे स्थानमे अथवा १।४।७।१० मे स्थानमे होवेतो अंधाहोताहै ॥ २४९ ॥

पापग्रह कि राशी मे गयाहुवा मंगल १।४।७।१० मेस्थानमे होवेतो अंधाहोताहै ॥ २५० ॥

शनि कि राशी १०।११ का सूर्य ७ सातमे स्थानमे होवेतो अंधा होताहै ॥ २५१ ॥

शुभग्रह ६।८।१२ मे स्थानमे गयेहोवे और उनको क्रूरग्रह देखते होव तो अंधा होताहै ॥ २५२ ॥

कुंभराशि का मंगल लग्नमे होवतो अंधाहोताहै ॥ २५३ ॥

शुक्र और लग्नका स्वामि ये दोनो २।१२ दूसरे और बारमे स्थानके स्वामि से युक्त होके ६।८।१२ स्थानमे जावेतो अंधाहोताहै ॥ २५४ ॥

शुक्र और पापग्रहोंसे युक्त चंद्रमा धनस्थानमें स्थितहोवेतो अंधा होताहै ॥ २५५ ॥

पांचवें और चोथे ४ इनदोनोंस्थानोंमें पापग्रह स्थितहोवेतो अंधाहोताहै ॥ २५६ ॥

पापग्रह से दृष्ट चंद्रमा ६।८।१२ मे स्थानमें स्थित होवेतो अंधा होताहै ॥ २५७ ॥

चंद्र और सूर्य येदोनों बारमे स्थानमे स्थितहोवें और इनको शुभग्रह नहींदेखतेहोवेतो अंधाहोताहै ॥ २५८ ॥

सिंहराशिकाशीन अथवा शुक्र लग्नमे होवेतो अंधाहोताहै ॥२५९॥

शनि चंद्र सूर्य, ये तीनों क्रमसे १२।२।८ स्थानमें स्थितहोवे अर्थात् शनि १२ बारमे चंद्रमा २ दूसरे सूर्य ८ आठमे स्थानमे होवेतो नेत्रहीनहोताहै ॥ २६० ॥

छठे स्थानमें चंद्र अष्टम स्थानमे रवि बारवें स्थान में मंगल और धन स्थान मे शनि इस प्रकार यथाक्रम तथा बिन क्रम कोईभी स्थानमें इनग्रहोंमसे कोईभी ग्रह स्थित होवेतो इनमसे जोग्रह अधिक बलवान होवे उसी ग्रहके वातपित्त कफादि दोषसे नेत्रनाश होते है ॥ २६१ ॥

लग्नसेअथवाशुक्रसे पाचवेंस्थानमेंराहु सूर्यसे दृष्टहोवेतो नेत्रनाश होतेहै ॥ २६२ ॥

चोथे स्थानमें शनि पापग्रहोंसे दृष्टहोतो नष्टदृष्टी होताहै॥ २६३ ॥

निशांधयोग

सेंदुः शुक्रस्त्रिकस्थो निशांधः ॥ २६४ ॥

शुक्रेंदुयुतेनेत्रेशेऽङ्गे निशांधोनतुस्वोच्चशुभैर्युते॥ २६५ ॥

टीका—चंद्रसेयुक्त शुक्र ६।८।१२ मे स्थानमहोवे तो निशांध (रात्रिमेंअंधा) होताहै ॥ २६४ ॥

नेत्रस्थान २।१२केस्वामी शुक्रचंद्रसेयुक्त होके लग्नमेंस्थितहोवे तो निशांध (रातके समय अंधा) होताहै परंतु ये ग्रह स्वराशी उच्चराशी के तथा शुभग्रह से युक्त नहिंहोवेतो येयोग जानना. ॥ २६५ ॥

नेत्रनाशयोग

लग्नार्येशौत्रिकेक्षिनाशः ॥ २६६ ॥

होताहै अतएव एस अंकहरेयागम पापग्रहोकायोग तथा दृष्टियोग होवतो याग बलवान होत है

इसीप्रकार पिता १० भाइ ३ माता ४ पुत्र ५ स्त्री ७ काका १२ भ्रात स्त्री ९ पुत्रस्त्री ११ काकाकिस्त्री ६ मामा ६ मामाकीस्त्री १२ भुवा १२ फुफा ६ मासी ६ मासा १२ साला ९ सालेनपना १ सालाकीदी ३ दादि १ दादा ७ पुत्रकपना ९ इत्यादि स्थानके स्वामियाभिस जिस २ स्थान कास्वामी रवि शुक्रस युक्तहोक ६।८।१२ स्थानमे जावे और मगल शनि राहुदृशेल नपुसुन आदि पापगहास युक्त दृष्टहावे तो उस २ का भयत्व प्राप्त हावगा एसाबुद्धिमानपंडितोने विचारकरके कहना ॥ उदाहरण जैस १० दशम स्थान ने पिताका स्थानहै इसदसमभावस २।१२।६।८ भाव और इन स्थानक स्वामि पापगह से युक्त दृष्टहाव और दशमे भावकास्वामी रवि शुक्र ■ युक्त हाव पापग्रहोसे दृष्ट होवेतो पिता भयाहाताहै

इसीप्रकार प्रत्यक उपरोक्त भावके स्वामी से प्रत्यक भावका विचार करके कहना.

बधिरयाग

मंदात्तुर्येसौम्ये षष्ठेशेत्रिके बधिरः ॥ २७९ ॥

सरिपु पूर्णेदशुक्रौ बधिरः ॥ २८० ॥

रात्रौज्ञे षष्टे सेशुक्रे बधिरः ॥ २८१ ॥

मित्रेत्र्ये ज्ञयुते वामकर्णे श्रुतिन्यूनता ॥ २८२ ॥

ज्ञषष्ठेशौ क्रूरदृष्टौ बधिरः ॥ २८३ ॥

पापास्त्र्यायत्रिकोणे सौम्यैनेक्षिता बाधिर्यकराः ॥ २८४ ॥

षष्ठेशात्रिके मंददृष्टे बधिरः ॥ २८५ ॥

टीका–शनिसे चौथे स्थानमे बुधहावे और छठ भावका स्वामी ६।८।१२ भावम हावेतो बहराहोताहै ॥ २७९ ॥

पूर्णचंद्रमा और शुक्र यदाने अपन शत्रुगहसे युतहावे तोबहराहोताहै इसयागमभी पापगहका दृष्टखन हिहै तथापिवास्तविक विचार ■ इनपर

पापग्रहोकीदृष्टि तथा पापग्रहोका योगहोवेतो अवश्य बहराहोताहै २८०

राशिसमयका जन्महोवे लग्नसे छठेस्थानमेंबुध और दशवें भावमे शुक्रहोवेतो बहराहोताहै ॥ २८१ ॥

बारमेभावमेशुक्र बुधसेयुतहोवेतो वामकर्णसे कम सुननेवाला होताहै ॥२८२॥

बुध और छठेभावका स्वामी इन दोनोको क्रूरग्रह देखते होवे तो बहरा होताहै ॥ २८३ ॥

तीसरे ग्यारवे नवमे पांचवे भावमें पापग्रह जावे और उनको शुभग्रह नहिदेखतेंहोवेतो बेहरा होताहै ॥२८४॥

छठे भावका स्वामि ६ । ८ । १२ मे स्थानमे होवे और उसको शनि देखता होवे तो बहरा होताहै ॥२८५॥

कर्णच्छेदयोग

हंसार्किचंद्राखिसुतास्तधर्मगाःसौम्याऽदृष्टयुताकर्णच्छेदः—

॥२८६॥ चंद्रादस्तेमंदे शुक्रार्कौलग्ने कर्णच्छेदः २८७

नीचेभृगौफणियुते कर्णच्छेदः ॥ २८८ ॥

टीका-सूर्य शनि चंद्रमा ३।५।७।९ में स्थान मे स्थितहोवे और शुभ ग्रहोसे दृष्टया युत नहिहोवे तो कर्णच्छेद होताहै (कानकटताहै) २८६

चंद्रमासेसातमे स्थानमे शनिहोवे और शुक्रसूर्य लग्नमे होवेतो कर्णच्छेदहोताहै (कानकटताहै) ॥ २८७ ॥

नीचराशि [६]काशुक्र राहुसे युतहोवे तो कर्णच्छेद होताहै ॥ २८८॥

सर्वार्थमे इनके अतिरिक्त २ दोयोग यह कहेहै कि शनैश्चर मंगल सहित होवे और धनेश लग्नमें होवे १ तथा षष्ठेश और धनेश ये दोनो लग्न मेंहोवे और शनि मंगल १२ बारमे भावमे स्थितहोवे २ तो कानकटे वा फुटजावे—एसेही विचार पित्रादीभावो काभीकरना, पित्रादिभाव और भावेश एवं उनउन भावोके कारकग्रहोंके साथ उपर्युक्त बधिर तथा कर्णच्छेदादि योग होवे अथवा आगे नाशाछेदादि और भीजो जोयोग कहेजावेगे वे योग होवेतो पित्रादिको का बधिर, तथा कर्ण विच्छेदादि समस्त योगोका फलकहना ।

नाशाछेदयोग

शुक्रेषष्ठे कुजेङ्गे नासाच्छेदः ॥ २८९ ॥

टीका–छठेस्थानमेशुक्र और लग्नमेंमंगल होवे तो नासाछेद होताहै ॥ २८९ ॥

मुखदुर्गंधयोग

इंद्वच्छौ मेषगौ लग्नेषष्ठेशे मुखदौर्गंध्यं ॥ २९० ॥

कर्काजगेशुक्रे मुखदौर्गंध्यम् ॥ २९१ ॥

लग्नेइंदौ षष्ठेशेज्ञे मुखदौर्गंध्यम् ॥ २९२ ॥

टीका–चंद्र और शुक्र मेषराशिमे होवे औरलग्नमे वाय छठेबुधहोवे तो मुखमेदुर्गंध (बदबु) आतीहै ॥ २९० ॥

कर्कवामेषराशिका शुक्रहोवतो मुखमे दुर्गंध आतीहै ॥ २९१ ॥

लग्नमे चंद्रमाहोवे और छट स्थनका स्वामि बुधहोवे तो मुखमे दुर्गंध आतीहै ॥ २९२ ॥

मूकयोग

कर्कालिझषेज्ञे सूर्याधस्थचंद्रदृष्टे मूकः ॥ २९३ ॥

ज्ञारिशौ लग्नगौ मूकः ॥ २९४ ॥

जीवारीशावंगे मूकः ॥ २९५ ॥

धनेशेज्यौत्रिके मूकः ॥ २९६ ॥

टीका–कर्क वृश्चिक तथा मीन इननि शब्द राशिमे गयेहुव बुध को सूर्य केनीचे गयाहुवा (अमावास्याका) चंद्रमा देखता होवता मूक (गुंगा) होताहै २९३

बुध और छठे स्थानका स्वामि येदोनो लग्नमे स्थितहोवेतो मूक (गुंगा)होताहै ॥ २९४ ॥

गुरु और षष्ठेश लग्नमे युक्तहोनेतो मूक (गुंगा) होताहै ॥ २९५ ॥

धनश और गुरुयेदोनो ६।८।१२ मे स्थानमे होवेता मूक (गुगा) होताहै ॥ २९६ ॥– इसी तरहसे पिता माता भाई भोजाई स्त्री मामा काका शाला उगेरा का विचार जिस २ भावसे किया जाताहै उन २ भाव

के स्वामी गुरुसे युक्त होकेद्व।८।१२ जावेतो जिसर स्थानका स्वामि होवे, उसी २ को गुंगापन होनेका कहना. शंभुहोराप्रकाशमे लिखाहै कर्क, वृश्चिक और मीनराशी मेपापी ग्रहस्थितहोवे राशीकेअंतमे वा वृषराशी मे चंद्रमा स्थितहोवे और पापग्रहोसे दृष्टहोवेतो मूक होताहै और शुभ ग्रहोसे दृष्टहोवेतो चिरकालके पश्चात् बोलनेवाला होताहै. अर्थात् पांच वर्ष के उपरांत बोलताहै. १. क्रूरग्रह संधिमे गयेहोवे कोई शुभग्रह नही देखतेहोवे अथवा चंद्रमापापग्रहोसे युक्त होवेतोजडके समान गुंगाहोताहै.

गुंगस्वर योग

कर्कालिझषगेङ्के चंद्रदृष्टे सुखेसूर्ये षष्ठेपापदृष्टे गुंगस्वरः ॥ २९७ ॥ शुक्लेन्द्वारावङ्गे गुंगस्वरः ॥ २९८ ॥

टीका—कर्कवृश्चिकतथामीनराशिमेगयाहुवाबुध चंद्रसेदृष्टहोवे, चोथे-स्थानमे सूर्य होवे और छठेस्थानकोपापग्रह देखतेहोवे तो गुंगस्वर [समजनेमे नहीआवे वैसा नाकमे गडबड गडबड बोलनेवाला]होताहै ॥ २९७ ॥

शुक्लपक्षमे जन्महोवे और चंद्रमंगल का योग लग्नमे होवेतो गुंगस्वर (गुंगा स्वरवाला) होताहै ॥ २९८ ॥

इनउपरोक्तयोगोंसे मूकहोताहै येग्रंथ कारो का मत सत्य है परंतु मूकमनुष्योकि कुंडलिये देखनेसे मूकत्वकिंवा वाणीमें दोष उत्पन्न होनेकेविशेष कारण, जोजो अनुभव से दृष्टिगत होतेहै वे इसमुजिब है

(१) द्वितीय स्थान में पापग्रह युक्तहोवे और उसस्थान का स्वामि नीचराशिका किंवा अस्तंगत होके पापग्रहोसे दूषित (युक्तदृष्ट) होवे और रवि बुध का सिंहराशिमेयोग कोईभीस्थानमे होवे तो निश्चय करके मूक (गुंगा) होताहै

(२) सिंहराशिमें रवि बुध अकेला जिसकेहोतेहै उसकी वाणी मे निश्चय पूर्वक दोषहोताहै बहुधाजोलोक बोलतेसमय अटकतेहै, उनकी कुंडली मे ये योग होताहै।

अति बोलनेवाले बोलते समय अटकनेवाले मुख टेढा वांका करकेबोलनेवाले बोलनेमे आंखमिचकानेवाले वगेरा बोलनेके असंख्यभेदहै

उनकी कुंडली में भी विशेषकर द्वितीय स्थान के ग्रह काही प्रभाव दृष्टि पडताहै

प्रहसित मुख

चंद्रार्कौ मीनस्थौप्रहसितमुखः ॥ २९९ ॥

धनेशे स्वोच्चगे केंद्रे प्रहसितमुखः ॥ ३०० ॥

कोशेशे सौम्ययुते केंद्रे सुमुखः ॥ ३०१ ॥

टीका–मीनराशिमे चंद्रसूर्य युतहोवेतो प्रहसीत मुख होताहै २९९ धनेश अपनी स्वराशि तथा उच्चराशि का होके केंद्र (१।४।७।१० मे स्थित होवेतो प्रहसित मुख होताहै ॥ ३०० ॥

धन(२)स्थान का स्वामि शुभग्रह से युक्त होकर १।४।७।१० स्थान मे स्थित होवेतो सुमुख होताहै ॥ ३०१ ॥

दुर्मुख योग

धने पापे धनेशेपापयुते नीचारिगे दुर्मुखः ॥ ३०२ ॥

टीका–धन स्थान में पापग्रहहोवे और धनेशपापग्रहसे युक्तहोके नीच अथवा शत्रुराशि का होवेतो दुर्मुख होताहै ॥ ३०२ ॥

दीर्घमुख योग

धनेपापे दीर्घमुखः ॥ ३०३ ॥

टीका–धन स्थान मे पापग्रह होवेतो दीर्घमुख (लंबेमुखवाला) होताहै ॥ ३०३ ॥

वाग्मीयोग

यामित्रेमंदे चंद्रेखे वाग्मी ॥ ३०४ ॥

मंदाच्छीविते मंदभेर्के वाग्मी ॥ ३०५ ॥

दिवासिंहज्ञे वाग्मी ॥ ३०६ ॥

रात्रौकर्कज्ञे वाग्मी ॥ ३०७ ॥

धनेशेसौम्ययुतेकेंद्रकोणेनास्तेचेशुभेक्षितेपुंग्रहयोगेवाग्मी३०८

धनेशेपारावतांशे केंद्रे वाग्मी ॥ ३०९ ॥

सौम्यैशेजीवे वाग्मी ॥ ३१० ॥

वागी शांशपे उच्चे गोपुरे वा वाग्मी ॥३११॥

सशुभेजीवे वर्गोत्तमे वाग्मी ॥ ३१२ ॥

धनेशेपारावतांशे जीवयुते वाग्मी ॥ ३१३ ॥

टीका–सातमेशनि दशमेचंद्रमा होवेतो अतिवक्ता (अच्छाबोलनेवाला, व्याख्यानदाता, पुराणवक्ता, शास्त्रानुसार अत्यंत बोलनेवाला) होताहै ॥ ३०४ ॥

धनस्थानमे शनि शुक्र जावे और शनि की राशि १० । ११ का सूर्य होवेतो अतिवक्ता होताहै ॥ ३०५ ॥

दिनके समय जन्महोवे और सिंह राशीका बुधहोवे तो अच्छावक्ता होताहै ॥ ३०६ ॥

रात्रिसमय मे जन्महोवे और कर्कका बुधहोवेतो अच्छावक्ता होताहै ३०७

धनस्थानका स्वामि बुधसे युक्तहोवे और १।४।७।१०।९।५ स्थानमे जावे अथवा धनस्थानकास्वामि अपनिस्वराशी उच्चराशीकाहो शुभग्रह देखतेहोवे पुरुषग्रहसे युक्तहोवे तो अच्छावक्ताहोताहै ॥ ३०८ ॥

धनभावकास्वामि पारावतांशमेहोवे १।४।७। १० स्थानमे जावेतो अच्छावक्ता होताहै ॥ ३०९ ॥

बुधकी राशीके नवांशमे गुरुहोवेतो अच्छावक्ता होताहै ॥ ३१० ॥

गुरु जिसराशिके नवमांशमेहोवे उसकास्वामी उच्चराशीकाहोवे अथवा गोपुरांशमे होवेतो अच्छावक्ता होताहै ॥ ३११ ॥

शुभग्रहसे युक्त गुरु वर्गोत्तमांशमें होवेतो अच्छावक्ता होताहै ३१२

धनभावका स्वामि पारावतांशमेहोवे गुरुसे युक्त होवेतो अच्छावक्ता होताहै ॥ ३१३ ॥

जिव्हादोषयोग

षष्ठेशेज्ञेजिव्हादोषः ॥ ३१४ ॥

टीका–छठे स्थानकास्वामीबुध होवेतो मवानमे कोई भीतरहका दोष होताहै ॥३१४॥

ये दोषहोना संभव प्रतीतनहीहोता क्योंकीजिव्हाका संबंध धनस्थानसे है अतएव धनस्थानमे पापग्रह स्थितहोवे धनकोपाप ग्रह देखतेहोवे और षष्ठेश बुधहोवे पापग्रहो से युक्त दृष्टहोवे शत्रुनीचराशी गतहोव तो अवश्य जिव्हामे दोषहोना संभवहै ।

भस्फुटोक्तियोग.

मदेशाद्धने केतावस्फुटोक्तिः ॥ ३१५ ॥

टीका–सातमे स्थानके स्वामी से धनस्थानमे केतु होवे तो साफ बोलनेवाला नहि होताहै ॥ ३१५ ॥

गद्गदवाक्योग.

मंदर्क्षेन्दे मंददृष्टे गद्गदवाक् ॥ ३१६ ॥

टीका–बुध १०।११ राशिका होवे और शनि उस्को देखता होवेतो गद्गद वाक् (प्रेमसे जैस गदगद स्वरहोक बोलता है वैसही गद्गद कंठसे बोलने वाला) होताहै ॥ ३१६ ॥

लल्लोरोक्तियोग

धर्मेशे शुक्रे लल्लरोक्तिः ॥ ३१७ ॥

धनेशे निबले क्रूरांशे लल्लरोक्तिः ॥३१८॥

पापेधने वा पापदृष्टे क्रूरांशे पापयुते लल्लरोक्तिः ॥३१९॥

टीका–नवमेस्थानका स्वामि शुक्र होवेतो ल्लरोक्ति (जिसअक्षरपर जबानटअकजाव उसअक्षरपर बहुतदेरतक जबानचलेकरे और पीछे बोलसके एसा) अटक के बोलनेवाला होताहै ॥ ३१७ ॥

केवल नवमेश्वर शुक्रहोनेसे ये योग मिलना असभवहै ।

धनेशनिर्बली होवे और क्रूरग्रह के नवांशमें होवेतो ल्लरोक्ति (जादे अटक के बोलने वाला) होताहै ॥ ३१८ ॥

धनस्थानमे पापग्रह होव अथवा धनस्थान को पापग्रह देखतेहोवे क्रूर ग्रहके नवांशमे होव और पापग्रहसे युतहोवे तो लल्लरोक्ति (जादे

भटक के बोलने वाला) होताहै ॥ ३१९ ॥

परुष वाक्योग.

मंदेन्दुयोगे परुषवाक् ॥ ३२० ॥

टीका-शनि, चंद्रका योग कोईभिस्थानमे होवेतो परुषवाक् (कठोर, वचन बोलने वाला) होताहै ॥ ३२० ॥

दंतविकारयोग

गोजधनेगे क्रूरैर्दृष्टे वा युते दंतविकारः ॥ ३२१ ॥

सप्तमेपापाः सौम्यैरदृष्टा दंतविकृतिः ॥ ३२२ ॥

चंद्रार्कार्की वा पापा अस्ते दशनाभिघातः॥ ३२३ ॥

सप्तमेशाद्धनेराहौ स्थूलदंतः ॥ ३२४ ॥

धनारीशौयुतौ सपापौ दंतरोगी ॥ ३२५ ॥

सुतेगेराहौ दंतुरो दंतरोगीवा ॥ ३२६ ॥

टीका-पापग्रहोसे दृष्ट अथवा युक्त वृषभ,मेष, वा धन राशि कालग्न होवे तो दंतविकार (दांतमे बीमारी) होती है ॥ ३२१ ॥

सातमे स्थान मे गये हुवे पपाग्रहोको शुभग्रह नाहिंदेखतेहोवे तो दंतविकृति (दांतमे विकार) होता है ॥ ३२२ ॥

चंद्र शनि और सूर्य सातमे स्थान मे जाय अथवा पपाग्रह सातमे बैठे होवे तो दांतगिरजावे अथवा टूटजातेहै ॥ ३२३ ॥

सप्तमेश से दूसरे स्थान मे राहुहोवे तो मोटेदांतवाला होताहै ३२४

धनेश और षष्ठेश येदोनो, पपाग्रहो से युतहोवेतो दंतरोगी होताहै ३२५

पांचमे अथवा लग्नमें राहुहोवे तो बडे दातवाला दंतुर, अथवा दंत रोगी होताहै ॥ ३२६ ॥

हस्तनाश हस्तपीडा योग

शकुनुजीयुतौ दिवातुर्यगे शुक्रेच हस्तनाशः ॥३२७॥

शन्यारैराहुमुखे चारीगो हस्तनाशः ॥ ३२८ ॥

द्वेष्येस मंदेशुक्रयुते हस्तनाशः ॥ ३२९ ॥

मंदेन्द्वर्काः षष्ठाष्टमगा हस्तपीडा ॥ ३३० ॥

टीका–शनि १ मंगल २ बुध ३ गुरु ४ येचारो अेकस्थानमेयुतहोवे दिनके समयका जन्महोवे और चोथे स्थानमे शुक्र स्थितहोवे तो हातकानाश होता है ॥ ३२७ ॥

शनिऔर मंगलराहुके भोग्यांशमें स्थितहोवे और छेठस्थान में जावे तो हस्तनाश होताहै ॥ ३२८ ॥

छठे स्थानमे शत्रुराशिका शनि शुक्रसेयुतहोवे तो हस्तनाश होताहै ॥ ३२९ ॥

शनि चंद्र और सूर्य ये तीनोहि छठे वा आठमे स्थानमे स्थितहोवे तो हातमे पीढाहोती है ॥ ३३० ॥

कुब्जयोग

तुर्येङ्गेशे वक्रभेल्यांशे कुब्जः ॥ ३३१ ॥

टीका–मेषतथा वृश्चिक राशिका लग्नेश्वर चतुर्थस्थानमे जावे और वह वृश्चिकराशि के नवांशमे स्थित होवे तो कूबडा होता है ३३१

काठिन चित्त योग

रंध्रेस्थिरे ज्ञेज्यशुक्राः कठिनचित्तः ॥ ३३२ ॥

टीका–बुध गुरु और शुक्र येतीनोही आठमे स्थानमे स्थिर राशि २। ५।८।११ के होवे तो कठोरचित्तवाल होता है ॥ ३३२ ॥

विरुद्धचित्तयोग.

सुखेक्रूरे क्रूरान्वितसुखेशे विरुद्धचित्तः ॥ ३३३ ॥

टीका–चतुर्थस्थानमे क्रूरग्रह ,स्थितहोवे और सुखेश क्रूरग्रहसे युत होयेतो विरुद्धचित्त होताहै ॥ ३३३ ॥

भडवृद्धियोग

रंध्रगौ शुक्रारौ वातादण्डवृद्धिः ॥ ३३४ ॥

भौमर्क्षगौशुक्रारौ वातादण्डवृद्धिः ॥ ३३५ ॥

इद्वच्छौ भौमर्क्षगौ मंदेज्यदृष्टौ कललजाण्डवृद्धिः ३३६

सगुलिकेशे ज्ञपात्रदृष्टे स्थूलाण्डः ॥ ३३७ ॥

टीका—शुक्र और मंगल आठमेस्थानमे युक्तहोवे तो वायुके कोपसे अंडवृद्धिहोतीहै ॥ ३३४ ॥

शुक्र और मंगल मेष अथवा वृश्चिक राशिकेहोवेता वायसे अंडवृद्धि होतीहै ॥ ३३५ ॥

चंद्र और शुक्र मेष अथवा वृश्चिक राशिमे होव और उनको शनि गुरु देखतेहोवेतो कललज (रक्तऔर जलवीर्य के कोपसे) अंडवृद्धि होतीहै ॥ ३३६ ॥

कारकांश लग्नमे गुलिक युक्तहोवे और केवल बुधहीउसको देखता होवेतो स्थूल (बडे) अंडका होताहै ॥ ३३७ ॥

जंघाक्षतियोग.

पूर्णेन्द्वारौषष्ठे जङ्घाक्षतिः ॥ ३३८ ॥

शनीन्द्वाराव्यये जंघाक्षतिः ॥ ३३९ ॥

टीका— पूर्णचद्रमा और मंगलका योग छठेस्थानमेहोवेतो जंघाक्षति (पींडलीमे पीडा) होती है ॥ ३३८ ॥

शनि चंद्र और मंगल बारमे स्थानमे स्थितहोवेतो जंघाक्षति (पि-डलीमेपीडा) होतीहै ॥ ३३९ ॥

पंगुयोग.

झपाल्यजकर्कमृगान्यतमगौइन्द्वर्कजौ सपापौनवमपंचमगौ वा पंगुः ॥ ३४० ॥

षष्ठेसूर्यारमंदाः पंगुः ॥ ३४१ ॥

मंदारीशौव्यये पापदृष्टौ पंगुः ॥ ३४२ ॥

रंध्रांकेशौ सपापौ तुर्ये पंगुः ॥ ३४३ ॥

कर्कचंद्रार्कजौ शुभादृष्टौ पंगुः ॥ ३४४ ॥

मंदाच्छयुतौ शुभादृष्टौ पंगुः ॥ ३४५ ॥

दारेशेसौरेमपापे पंगुः ॥ ३४६ ॥

इति प्रथमविवेक.

टीका–मीन १२ वृश्चिक ८ मेष, १ कर्क ४ मकर १० इन राशिमे से कोईभी राशिमे चंद्र शनि पापग्रहो से युक्तहोवे १ अथवा पापग्रहोसे युक्तचंद्रशनि ९।५ मे स्थानमे स्थितहोवे २ तो पगु (पागला) होताहै ॥ ३४० ॥

सूर्य मंगल और शनि छठेस्थानमे ऐकत्रित होवेतो पगु (पागला) होताहै ॥ ३४१ ॥

शनि और षष्ठेशये दोनो बारमेस्थानमेहोवे और पापग्रह इनको देखते होवेतो पगु होताहै ॥ ३४२ ॥

अष्टमेश और नवम स्थानका स्वामिये दोनो चोथेस्थानमे पापग्रह से युक्तहोव तो पगु होताहै ॥ ३४३ ॥

चंद्र शनि कर्क राशिमे स्थितहोवे और शुभग्रह उनको नहि देखते होवतो पंगु होताहै ॥ ३४४ ॥

कोईभि स्थानमे शनि शुक्र का योग होवे और उनको शुभग्रह नहि देखते होवतो पंगु होताहै ॥ ३४५ ॥

सप्तम स्थानकास्वामि शनि, पापग्रहसे युक्तहोवेतो पंगुहोताहै ३४६

पायपर १२ वा स्थान मीनराशी और शनि का अमलहै इसकारण येतीनो पापग्रहोसे युत दृष्टहोवे नीचतथा शत्रुकिराशी मेहो और ऊपर कहेहुवेयोगवनतहोवेतो अवश्यपगु वापावमेकोईभी तरहकी पिडा-होनेका संभवहै

इसके शिवाय और क्यादेखना ?

उपरोक्त योगोके शिवायम भाई कोलाभ, भाईकपुत्रकीस्त्री, माताका पिता (नाना) माताकाराज्य, मीत्रकाबाप, पुत्रकाशाला, पुत्रकेछोटे-भाईकीस्त्री, पुत्रकाभाग्य, सालकापुत्र, मालिककीमाता, बापकीमाता, (दादी) ससुरेकापिता, मामकामृत्यु, काकेकामारकेश, गुरुकापुत्र, ससुरेकाराज्यव्यापार, सासुकीमाता, आदि का विचारभी उपरकहे हुवे योगोके अनुसारही प्रथम भावमे देखना

शरीर के लक्षणोंपरसे ।

लग्नचंद्र और ग्रहोंकी परिक्षा करना अतिमहत्त्वका कामहै और वह प्रथमभावसे संबंधरखता है अतः यहांउसका दिग्दर्शनकरादेना भीआवश्यक है।

शरीर और शरीरके अवयव, वर्ण, चेहरा, नेत्र, स्वर, दंतपंक्ति, वाणी वेश, हाव भाव शरीर के ऊपरकेचिन्ह आदि के सहायतासे लग्न व चंद्र और ग्रहोंकि परिक्षा होतीहै इसमे कुछभी शंकानहीहै किंतु अवलोकनशक्ति जिसमान की होतीहै उसीमानसे इसकाममे यशमिलताहै. अतएव शरीर लक्षणपरसे यहपरिक्षा कैसे करना ऐसे उपयोगी विषयका परिज्ञान सर्व साधारणोको प्राप्त होनेके लिये कईवार अनेक मनुष्यो पर अनुभव कियेहुये योग सर्वसाधारणो केअनुभवार्थ प्रकाश करतेहै जिससे लग्न खराहै किंवा खोटा इसका निर्णयभी भलीप्रकार कुंडली तथा शरीर लक्षणपर से करसकेंगे. ।

नीचेलिखे हुवे लक्षण जिस जिस समय जिन २ के शरीरपर देखनेमे आवे उसी उसी समय अमुक लग्न व अमुक राशी है ऐसा निःशंसय कहनेमे हरकत नही इन लक्षणोमे सर्व मनुष्यमात्र आसकेंगे ऐसा कह नहीसके क्योकि ईश्वरीकृतीका वर्गीकरण करणां अत्यंत कठिणही नही किंतु अशक्य है। अत. आज पर्यंत जितने समझमे और अनुभवमे आयेहै उतनेही योग लिखेहै अभ्यासि मनुष्योने इनका योग्य उपयोग करके अपना अपना ज्ञान बढाना चाहिये।

मेष—अश्विनी, भरणी, कृतिका का अेकचरण मिलके मेषराशी होतीहै, ऐसेही प्रत्येक राशी २। नक्षत्रो की होतीहै इन प्रत्येक नक्षत्राका स्वरूप भिन्न २ है इसकारण इसराशीके तथा प्रत्येक राशीयोके लक्षण जो जो लिखेहै उनमे परस्पर विरोध देखने मे आवेगा। अमुक नक्षत्र का अमुक लक्षण कहनेमेआना कठीणहै तथापि प्रत्येक राशीयोंके मनुष्यो मे जो जो लक्षण देखने मे आयेहै वे सर्व लिखेहै इसकारण विरोध के तरफ नक्षत्रोके भिन्नत्वसे देखके विचार करना।

चालचलन बावले के समान एकांत अधिकप्रिय, हसना बहुत कम और कहभी सिर्फ चेहरेपर दिखनेवाला, बोलना अटकतेहुवे, जादे बोलनही, शब्दफिका घोगरा (रोत्या मनुष्यके समान) होठके बाहर नीकलेहुवेदांत किंवा दांतो केसाथ दुसरी छोटीलाइन या दांतोके पीछे एकदोतीन एकके पीछेएक ऐसेदांत होवे, दांतो की नीचेकी पक्तीकरी

केदांत के समान छोटी व गोलहोवे, शरीर की मुद्रा गुस्सेवाले मनुष्य केसमान, बहुतिजलदचलनेवाला और दोडनेवाला, दूरदूर की मुसाफरी करनेवाला, वारंवारस्थलांतर करनेवाला, फिरणेका उद्योग धंधा करने वाला, शरीरपतला, वर्णताम्रकेसमान, दांतोमेसेखूनपडनेकीपीडा, किंवा अन्यकोईभी प्रकारका दंतरोगवाला, जितना कहे उत्तनाहि काम करने वाला (खुदकीबुद्धि नहि) स्वतंत्रविचारनकरतेहुवे दूसरा कहे उस माफिक सुनके अमलकरनेवाला क्रोधविशेष परंतु क्रोध का आविर्भाव अत्यतकम, नेत्रलालरंगके, तथा कछपीले (पिंगट) मस्तकतथा मस्त अथवाकोनसेहिशिरोभागपराकिसीभीतरहकीनिशानीहोवे प्रकृति उष्ण, बहुधा ज्वरका तथा रक्तका विकारवाला, तामसी, निग्रही, अपना हट्टअंतपर्यंत चलानेवाला, मनमेंभावे उसका कुछ विचारनकरते कामकरनेवाला, शरीरके अवयव मजबूत, ऐसा इसराशीका स्वरूपहे

सर्वराशिपोमे यह राशी जल्दी पेहचानमें आसकीहे और इस राशीके मनुष्यभी बहुत देखनेमे आतेहे ।

इसराशीमे यदि रवि होवेतो सफेत, हरा, और कालामिले हुवे रंगके जैसे किसी किसी अंग्रजो के नेत्र होतेहै वैसे नेत्रहोवे, रवि और मंगल एकत्रहोवेतो विशेष उपरोक्त रंग के नेत्र होवे, केवल मंगलहोवेतोनेत्रव केश तांबेकेसमानव पिंगट होवे, इसराशीमे जो अकेला रवी लग्नमे होवे तो यह मनुष्य ऊंचा शरीरका और संतप्तहोवे, व मस्तकशूलकीपीडारहै, इसराशीके लग्नमे केवलमंगल होवतो शरीरके कोईभी भागसे रक्तस्रावका विकारहोवे, मुख व छाती का भाग विशेषलालहोवे, मस्तकमे गूमडेचट्टे टाट वगेरा विकारहोके उस की निशानीरहे, किंवा पडनेसे जखमहोवे उसकी निशानीरहे, अथवा माताके वणहोवे, ।

रवि किंवा मंगल इसराशीमे दूसरेस्थानमेहोवेतो विशेषकाला हरा और सफेदमिलेहुवेरंगकेनेत्र (कोई२अंग्रेजोंके जैसे होतेहे वैसे)होवे, व दुखी मनुष्यके सरीखेहोवे, और नेत्रपीडा (आंखआनेकी) विशेष आदतरहे ।

चौथे अथवा छठे स्थानमे ये ग्रह होवेतो अपघातहोवे, अग्निभय होवे, पेट पर दाग (डामके) निशानहोवे, भयंकर तापआवे, छोटी माता तथा बडीमातसे विशेषपीडाहोवे अम्लपित्तरोगहोवे वा अग्निसे जलनेका दुःखहोवे, ।

इसराशीमे लग्नमे शनिहोवेतो बोलतेसमय जबानविशेष अटके अथवा दूसरी कोईभी खोडहोवे दांतबंदकरके बोले किंवा टेढामुंह करके बोले नेत्रमेले बारीक व ऊंडहोवे और कुछ पिंगट होवे ।

शनिकेसाथ रवि अथवा मंगलकायोग होवे किंवा रवि मंगल दोनुका योग होवेतो नेत्र मांजरे (बिल्लीकेनेत्रके समान) होवे, इसराशीमे रवि अथवा शनीकोईभी स्थानमे होवेतो शब्द फीका खोखरा होताहै ।

वृषभ—कृत्तिका के तीन चरण रोहणी व मृगके दोचरण मिलके वृषभ राशी होती है इसराशी के मनुष्य क्वचित मिलते है ।

शरीरकाबांधा खुबसूरत व मध्यमऊंचा, दांतसफेत, वर्णसफेत, गौर व तेजस्वी, चेहरामोहक, व सुंदर, नेत्रसफेतहोके तेजस्वी प्रकृति निरोगी गालऔर हातकामणीबंध (कलई) गोल और भरीहुई, विशेषतः शरीरमे वर्तुलत्व तेजयअतिस्वच्छता येगुण विशेष नजरआते है चेहरेपर छायाका चिन्हभीहोजावे इसराशी किस्त्रिया अति तेजस्वी और गौर होती है.

इसराशिमे गुरु चंद्र किंवा शुक्रहोवेतो शरीर का और दांतका वर्ण स्फटिक के समान शुभ्र व तेजस्वी होताहै.

उपरोक्त वर्णन जैसा रोहिणी भागमे अच्छामिलेगा वैसा इतर भागमे नही मिलेगा.

मिथुन- मृगके दो चरण, आर्द्रा व पुनर्वसूके तीनचरण मिलके मिथुनराशी होती है इसराशी के मनुष्य बहुत नजरआते है

चेहरा सुंदर और दाढीकेभागकीतरफ छोटापन मस्तकपीछेकेभाग की तरफ नारलसरीखालंबा शरीर दुबलापतलाव ऊंचा, वर्णहरामिलाहुवा काला, नेत्रकाले, केशबारीक, स्वरमंजुल, वाणीस्पष्ट, विशेषबोलनेवाला, वक्ता (व्याख्यानदाता) विद्वान, विद्याव्यासंगी, भाषाशास्त्र उत्तमजाननेवाला, शास्त्री, पुराणी, श्लोक दोहे कहावत वगेरा का उपयोग बोलने मे विशेष करने वाला, और कमर बाहर निकालकेनमताहुवा चलने वाला होवे, ऐसेइस राशी के लक्षण है–

कर्क—पुनर्वसु का एक चरण, पुष्य व अश्लेषा मिलके कर्क राशी होतीहै. मवाशी उत्तम पानीमेतिरनेवाला, बाग बगीचे का शौकीन, जलाशय,

केनजीक जन्म पानेवाला अथवा रहनेवाला, फिरनेका धंधाकरने वाला, गायन जानने वाला, आगेके दांत चोडे व मोठे, और कुछेक बाहरदिखनेसरीखे, चेहरा गोलऔरमोहक, हातकेपंजेडगलिये और पांव ये अवयववडेहोवे, वडातेजदोडनेवाला जल्दी परंतु वाके पांवरखके चलनेवाला, शूर, अभद्र बोलने वाला, चैनकरने वाला, स्त्रीयोका शोकीन दोस्त्रियोवाला, वर्णकालासांवला, बांधासाधारण मजवूत, वंशायिमध्यम, व्यसनी और अनेक स्त्रीयोको भोगनेवाला, इस प्रकार के लक्षण इस रा.ी के है.

इस राशी के लग्न मे गुरू होवेतो वर्णगोरा व बांधाशरीर का अच्छा होता है और निर्व्य शनी होताहै, इस राशी मे शुक्र व चंद्र होवे लग्न मेतो अती चैनी होताहै, और गाने का वजाने का तथा नाटक का विशेष शोकीन होताहै, मंगल शनी व राहु होवेतो व्यशनी हलके विचार का व रोगी प्रकृति का होता है, चतुर्थ तथा षष्ट स्थान मे इस राशी मे ये ग्रह होवेतो दुःख दारिद्र और विपत्ति भोगने वाला बहुधा पेटमें दुखने का तथा उदर रोग वाला होता है.,

सिंह—मघा पुर्वा व उत्तरा का १ चरण मिलके सिंह राशी होती है, दांतअतिशय मजबूत, छाति चोडी व भरदार, कपाल विस्तीर्ण और कुछेक आगे निकला हुवा, चेहराभोवेके पाससेसूक्ष्म दृष्टी से देखने से सिंह सरीखा दीखे, नाकऊंचरा, शरीरमजबूत, कसाहूवा शरीर, वर्णशाला, शब्दमोठा, निधडकछातिका, वेडर, ममखपणेसे अग्रगण्य होके पदद्वारमे नियमितचलने, वाला अधिकारि (आफिसर) प्रख्यात, छातिकोआगे निकालके चलने वालाऔर खडारहने वाला, वडा मजबूत वलवान, किल्ला पर्वत और अरण्य इनमे कोईभी कारण वश निवास करने वाला, व इनमे प्रीतिरखने वाला, इस प्रकार इस राशी का स्वरूप है ।

इस राशी मे गुरु चन्द्र शुक्र बुध ये ग्रह होवेतो वर्णगोरा होता है, चेहरेका दूसरेपर सहज मे रोब (दवदवा) बेठ जाता है कपाल भव्य चाडा व मस्तक का भागभी बडा होता है.

शनि होवेतो बहुधा वर्ण काला होताहै, पण शरीर मजबूत व अतिशत सुडोल होताहै, मंगल होवेतो प्रकृति अति उष्ण होतीहै, शरीर बहुत ”

घान मजबूत होता है, वर्ण तांबेके समान होता है, नेत्र पीले, शरीर का दिखाव लढ़ाउमनुष्य के समान, और अति गंभीरदिखताहै, दूसरे मनुष्य को अपने तावेमें रखनेवाला कपाळ अधिक आगे निकला हुवा और कपाल पर उंचापणा, तेजस्वी, क्रूरस्वभावका, अमलदार, (बड़ा आफिसर) सनापाति होने योग्य, अपघात, दुःसाप्ति, और रक्त स्राव इनका भय विशेष, ऐसा होता है.

शनि किंवा राहु होवेतो शरीर परिश्रम सहन करने की शक्तिवाला होता है परंतु रोगिष्ट रहता प्रमुखत्व प्राप्त नही होवे शत्रुभय विशेष होवे.

कन्या—उत्तरा के तीनचरण हस्त और चित्राके दो चरण मिल के कन्या राशी होती है. लज्जावाला खडा रहे और चले उस वक्त गर्दन टेढीरक्खे, आलसी, धीमा, चलते समय हातजादे हिलावे, हंसताहुवा बोले, चेहराचौडाय गोल, चालहातीसरीखीघूमती, स्त्रीयों के लक्षण. विशेष, स्वरबारीक, विद्वान, हस्तकलाकुशल, पहनने के कपडे वगेरा का बिगड ने करने की विशेष चिंता नही करने वाला, इस प्रकार का इस राशी का स्वरूप है.

तुला—चित्रा के दो चरण स्वाती और विशाखा के तीन चरण मिलके तुल राशी होतीहै. चेहरा, हात, पांवकी नलिये औरएकंदर शरीर अधिक लंबा होता है, पांवकी नालिये बाकदार, शरीरउंचा और दुबला पतला, वर्ण बहुधा काला, स्वर पतला, मुंह बंद करके हंसने वाला, अनुकरण करने योग्य, गिनतीके और तुलेहुवेवचन ठहरके बोलने वाला, वृत्तिसात्विक बोलते समय उभीगर्दनजादे हिलाताहै खडा रहे और चले उस समय कमर नमाके आगे झुका हुवा दिखता है, विद्वान, और शास्त्रज्ञ, ऐसा इस राशी का स्वरूप है।

लग्न मे रवि इसराशी का होवेतो शरीर विशेष ऊंचा व काला होताहै, चद्र होवेतो शरीर के अवयव जादे लंबे और गोरे होते है, गुरु शुक्र व बुध होवेतो दिखनोटा सुदर शरीर होता है.

वृश्चिक—विशाखा का एक चरण अनुराधा ज्येष्टा मिलके वृश्चिक राशी होती है. कमर के उपर के भागकी अपेक्षा नीचे का भाग छोटा होता है, औरउसी प्रमाणे कितनेक अवयवभी छोटे होतेहै, ऊंचाई

कम होतीहै नाक मोटा और फूला हुवा स्वभावगहरा और सुन्नस रखने वाला, सर्वदातवडे, वर्णगोरा, मुखकाजवाडा मोठा, इस तरह का इस राशी का स्वरुप है.

धनु—मूल पूर्वाषाढा और उत्तराषाढाका एक चरणमिलके धनराशी होतीहै छाति आगे करके घूमते चलनेवाला कमाहुवा शरीर, शरीरकी आकृति विशेषमजबूत और सुडोल, नाक चपेकीस्लीके समानतीक्षा शरीरनदुबला न जादेपुष्ट, बहुतहीमजबूत, गला व दाढी ये भाग मानो किसीने हातसे दुरुस्त किये होवे वैसे जोरदारसुन्दर गरदन जाडी भरी हुइ, भुजदंडभरेहुवे, पहलवान के समान, और हाथकी कलई जाडी घाडेपर बेठनेवाला, लडाई दंगे मे पीछे न हटने वाला, बोलने मे बलका गर्व विशेष रखनेवाला, वर्णसाधारणगोरा, लडाई मेबहादुर, नेत्रपीले, ऐसा इस राशी का स्वरुप है

इस राशी मे मंगल होवेतो प्रकृति अत्यत उष्ण होति है और अर्श (बवाशीर) अथवा दूसरा रक्त विकार का कोईरोग, अपघात किंवा कोईभी दुःख की प्राप्ति होतीरहे, शुक्रहोवेतो शरीर तेजस्वी होवे दैवी मनुष्यकेसमान दिखनेवाला होता है, बुध व। गुरु इस राशी मे होवेतो साफसुथरा तेजस्वी सुन्दर स्वरुप वाला होता है, शनि वा राहु होयतो सुडोलसशक्त होवे परतु रोगिष्ट रहे

मकर—उत्तराषाढा केतीनचरण, श्रवण, धनिष्टाके दोचरण मिलकर मकर राशी होती है, कितनेक वखत शरीर पतला, छोटा गर्दन उट सरीखी लंबी, असबद्ध और अविचार से बोलनेवाला एकही बात मे मन गुथा अनेवाला, अंगविक्षेप हास्यास्पद, एकदम बडे आवाज से और मध्य मे बहुतधीरप से भाषण करने वाला, कितनेक समय शरीर अति लष्ट, (मजबूत) शरीर के कितनेक अवयव बाजवीकी अपक्षा अधिकजाडे, बालूसे जकडा हुवा शरीर, स्नान संध्यादि कर्म भक्तिपर सर करने वाला, परमेश्वरकी सगुण भक्ति करने वाला, जमा खच के तरफ विशेष लक्ष देने वाला, वडी वडी, गुच्छेदार मूछे रखनेवाला, भौंकेके केश कररडे, दूर दूरदेशोकी मुसाफरी करने वाला जमादामगरके सरीखा किंवा बहुतबारीक, शरीरके मान ॥ मरनक बहुत बडा, इसप्रकार का इस राशी का स्वरूप है.

इस राशी मे जब मंगल अंतके भागमें होवेतो शरीर बडा भारी व अति लठ्ठ होता है वर्ण, तांबेके समान होवे और शरीर पर अतिशय केशहोते है.

कुंभ—धनिष्ठा के दोचरण शततारका, पूर्वाभाद्रपदाके तीन चरण मिलके कुंभ राशी होतीहै, शरीर सूक्ष्म, बहुधा मस्तकपर तालुके भागमे केशनहीहोवे, कपालके दोनुबाजुके भाग जादे छोटे दिसतेहै, चेहरा दिखाउ सुंदर, विद्याभ्यासंगी, बडाकल्पना करने वाला, गंभीर व तात्विक विचार करने वाला, कायदेकापंडित इस प्रकार इस राशीका स्वरूप है. इसराशीका शनि लग्नमे होवेतो शरीरपुष्ट, ऊंचा, और मजबुत, होताहै.

मीन—पूर्वा भाद्रपदा का अेक चरण उत्तरा भाद्रपदा व रेवती मिल के मीन राशी होती है. शरीर विशेषठेंगणा, मस्तक व कितनेक शरीर के अवयव बहुत छोटे, जननेंद्रियवारीक, वर्णसाधारणगोरा, इसप्रकार के इस राशी के लक्षण है.

इस प्रमाणे राशी के सामान्य लक्षण है एक राशी के सर्वेही लक्षण एक ही मनुष्य में मिल जावेंगे ऐसा नही समझना चाहिये किंतु जिस समय एक दो लक्षण स्पष्ट देखने मे आवे उस समय उस राशी का निश्चयात्मक ज्ञान होवेगा।

लग्न अमुक राशिका व चन्द्र अमुक राशीका है ऐसा निश्चयात्मक कहते आना मुश्किलहै तथापि दोनो मेसे एक कायम होने बाद दूसरे का ज्ञान उत्तम होसकेगा इस काममे अवलोकन व विचार शक्ति बढाने का ज्यों ज्यों विशेष अभ्यास होता जावेगा त्यो त्यो लग्न व चन्द्रकी परिक्षा होने मे परिज्ञान अधिक बढता जावेगा।

ग्रह परिक्षा.

कुंडली मे ग्रह कहींभी क्योन बैठेहो राशिपरत्व और स्थानपरत्व शरीरपर परिणाम अवश्य करते है इस परिणाम का बरोबर ज्ञान होने से किसी समय लग्न का ज्ञान नहीभी होवेतो वह इस परसे होसका है इस कारण थोडेसे अनुभव किये हुवे योग नीचे दिये है.

१ कपाल अधिक आगे दिखेतो सिंह राशीका मंगल लग्न में है एसा जानना—

२ नेत्र पीले और लाल दिखेतो अग्नि राशी (मेष-सिंह-अथवा धनु)मे रवि अथवा मंगल ग्रह है ऐसा जानना नेत्र बहुत बडे और आगे आये हुवे (निकले हुवे) दिखने के लक्षण मंगल के ही है यह निश्चय जानना—
३ नेत्र गाल होवे और भाग हुवे दिखते होवेतो सप्तम मे मंगल है एसा समझना
४ कपाल मे दर्द, अर्श (बवाशिर) नेत्रो मेभारक्तपणा, चेहरेपर अधिक लाली, ऐसा लक्षण होनेतो मंगल लग्न मे है ऐसा जानना
५ गर्दन के भागपर लाल रंगका दाग, किसीभी कारण से उत्पन्न हुवे जखम का निशान होवे अथवा जल जानरा तथा रक्त विकार के गाठ वगरा का चिन्ह होवे मातावे रगका चिन्ह होवे इस प्रकार के लक्षण देखन मे आवतो लग्न मे अथवा चन्द्र के पास मंगल होगा और ये योग मेष राशी पर हुवा होगातो अवश्य कुछ निशान होवे गा
६ नेत्र मे पीडा होती रहती होवे विशेषत आखोंकी पलको मे दाह पहजान वा विकार होवतो मंगल धनस्थान मे है ऐसा जानना
७ शरीर का कोनसाहि भाग टुटा हुवा काटा हुवा अथवा जलाया हुवा होवेतो धन राशी मे मंगल है एसा जानना
८ काला हरा और सफेद मिले हुवे रंग के नेत्र जैसे किसी २ अंग्रेज के होते है वैसे होवेतो रविमंगल किंवा हर्शलमंगल ये नेत्र स्थान में अथवा कुंडली मे कहीभी एकत्र होवेगे
९ नेत्र अति तेजस्वी स्वच्छ काले व पाणीदार होवेतो शुक्र दूसरे स्थान मे अथवा नेत्रस्थानमे होवेगा एसा समझना
१० नेत्र मलिन अतिकाले गहूल रंगके (गुमले) छोटे वडे इस प्रकार के होवेतो लग्नमें अथवा दुसरे स्थान मे चद्रसे युतशुक्रजानना
११ शुक्र के समानही चद्रकेही नेत्र होते है यह अवलोकन अभ्यास शक्ती से इनदोनो ग्रहोका फरकसमझ नेमेआताहै लिखते नहीं बनता।
१२ नेत्र मे हरेपणा अधिक होवेतो रवि शनि,मंगल शनि,व हर्शल शनि, का योग लग्नमे अथवा दुसरे स्थानमे कर्क, सिंह, धन, मेष, राशी मे है एसा जानना
१३ दांत शुभ्र स्वच्छ व तेजस्वी होवेतो चद्र गुरू और शुक्र लग्न तथा दुसरे स्थान मे समझना

१४ आर्द्रमुख व होठपर चर्बी व लालपणा विशेष होवेतो लग्नमे तथा दूसरे स्थानमे चंद्रसमझना.

१५ बोलते वखत अटकताहोवे तथा जीभ मे विकार होवेतो लग्नमे अथवा दूसरेस्थानमे राहूपापयुत समझना.

१६ दातबंदकरके अथवा मुखजादे नहींखोळके मुहमेही बोलताहोवे तो लग्नमे शनिहै ऐसाजानना.

१७ लिखनेके समय मुहमांकोटेढ़ा करके लिखताहोवे तो दूसरस्थानमे राहु का संभव जानना.

१८ जिबान भागे करके बोलता होवे रकारका उच्चार उत्तम नहींकर सक्ता होवे किंवा अन्यकोई बोलने की खोड होवेतो चंद्रराहुसेयुक्तजानना अथवा लग्नमे राहूजानना.

१९ दंतपंक्ति धनुष्या कार व अतिशय वांकदार होवेतो लग्नमे राहु होताहै.

२० दमा सर्दीका विकार व वातबद्ध शरीर होवेतो शनिचंद्र जलराशीमे अेकत्र समझना.

२१ बोलतेवखत खंकारताहोवेव वारंवार खांदेसे गरदन घसंताहोवे तो चंद्र शनि कुंभराशिमे एकत्र जानना.

२२ हमेशा सरदी से नाकबहता होवे वा बहुधा बोलते समय नाकमे कुछ अटकगयाहोवे वैसा करेतो शनिचंद्र मकर राशिमे अथवा जलराशि (कर्क वृश्चिक मीन) मे जानना.

२३ पेट बहुतबडादिखे किंवा पेटपर बहुतसेकेश होवेतो चौथेस्थान मे चंद्र अथवा गुरु इनदोनोमेसे एक का संभव जानना.

२४ अम्लपित्तका रोगहोव तो रविमंगल ये दोनो मेषराशी के होके लग्न चतुर्थ वा षष्ठ स्थानमे जानना.

२५ अपस्मार (मृगी) होवेतो चंद्रमा शनिसे युक्तहै और सामने मंगलहै किंवा चंद्रमा मंगलसे युक्तहै और सामने शनिबैठाहै वा छठे स्थानमे चद्र और बारमे स्थानमे मंगल गया है एसा जानना.

२६ वस्त्र भरणसे शरीरको सजानेवाला, न्यारे न्यारे रंगके अनेक प्रकार के पोषाख पहननेवाला, और शोकीन,ऐठबाज,अत्तरकाशोकीन, ऐश करनेवाला होवेतो लग्नमे शुक्रहोनका संभव जानना.

२७ दूंद (तोंद) वाला शरीर, गोरा, सत्वगुणी, श्रेष्ठबुद्धिका, कफ प्रकृति, बिनचूक कामकरनेवाला, स्मरणशक्तिअपूर्व, अश्रांतश्रमकरने वाला, भव्य, बिलकुलनिर्व्यसनी, गंभीर, भव्य कीर्तीमान्, विद्वान, सफेदकपडेपहननेवाला, दांत व नेत्र स्वच्छ, विद्याव्यासंगी, प्रौढ विचारका होवेतो लग्नमे गुरु जानना.

२८ अंडवृद्धी का विकार होवेतो वृश्चिक राशिके शनिको मंगल देखना है किंवा वृश्चिक राशिमे गयेहुवे चंद्रको शनि और मंगल देखते होंगे एसा जानना.

२९ जाली फूल पत्ते कतरना वलणदार [मरोडदार सुन्दर] अक्षर लिखना नाखनसे अक्षर लिखना ड्राइंग वगेरा कोईभी तरहकी हस्त कौशल्यका काम करताहोवे तो कन्याराशीमे शुक्र अथवा चंद्रमाका संभव जानना.

३० वकील बेरीस्टर सोलीसीटर वा जज होवेतो मिथुन कन्या, किंवा मकर कुंभ, किंवा धन मीन, इनलग्नमे जन्म जानना.

अथवा इन लग्नमे जन्मनहीहोवेतो बुध गुरु व शनि तो अवश्य उपरोक्त राशीमे समझना—तथा शनि और गुरु ये दोनो ग्रह उसकी कुंडलीमे मुख्यत्वसे तीन स्थितीमे अवश्य होवेंगे.

१ शनि गुरु एकराशीमे बहुत नजीक नजीक अंशमेहोवे.

२ शनि गुरु परस्पर एकसे दूसरा सातमे स्थानमे होवे.

३ येही ग्रह परस्पर नवम पंचमहोवे और मेष तुल मिथुन धन कुंभ किंवा सिंह राशिके होके १।७।२।८।५।११।३।९ स्थान मेगये है ऐसाजानना.

३१ इंजनियर तथा एल. सी. परिक्षा पास कियाहुवा ओव्हर सियर होवेतो उसके मिथुन तुल वा कुंभ राशीका मंगल और शुक्र १।२।५। ९।३।११ मे स्थानमे है, रवि और शुक्र एक राशी मे नजीक नजीक अंशके है, और लग्न अथवा चंद्र चरराशिके है ऐसा जानना. ।

३२ शिक्षक का धंधा करनेवाला होवेतो लग्न अथवा चंद्र से नवमे स्थानमे गुरु समझना.

३३ जंगल का नोकरी करने वाले गार्ड राउंड गार्ड किंवा रेंजर (इन्सपेक्टर) होवेतो मेष लग्न किंवा मेषका चंद्रहै ऐसा समझना

३४ स्नान संध्या पूजा सोला वगेरा का विशेष आडंबर होवेतो मकर

राशीमे गुरु अथवा चंद्रहै एसाजानो

३५ राजकीयसंकट आयेहोवे तो रवि अथवा चंद्र इनका और शनि किंवा हर्शल का केंद्रयोगहै अथवा रवि या चंद्र शनि अथवा हर्शल से युतहै ऐसाजानो

३६ सर्जन डाक्टर होवेतो वृश्चिक राशीमे चंद्र मंगल अथवा गुरुहै अथवा वृश्चिक राशी लग्नमें या दशमेहै ऐसाजानो।

३७ निपुत्रिक होवेतो शनि व गुरु एकराशीपर है एसाजानना।

३८ संतती मूलमे होतिही नहींहोवे अथवा बहुत कम होतिहोवेतो पंचम भावके आरंभमे सिंह कुंभ अथवा मेष राशीहै एसाजानो

३९ संतती जल्दी जल्दी होतीहोवेतो पंचममे कर्क मकर वृश्चिक या मीनराशिहै एसा समझो

४० कन्या प्रजा अधिक होतीहोवेतो लग्न चंद्र पंचम स्थान व गुरु ये कर्क मकर वृश्चिक वा मीन राशीमेहै एसाजानो

४१ लडके अधिक मरते होवे तो गुरू व मंगल ये एक राशी पर बहुत नजीक नजीक अंशके अथवा मंगल की पूर्ण दृष्टि योग में गुरू है ऐसा जानना।

४२ गर्भपात होते होवे बालक जन्म के बाद अल्प काल मे मरते होवे स्त्री के प्रसूती समय में बालक अडताहोवे किंवा बालक को काट के निकाल नेका प्रसंग आताहोवेतो पंचमस्थानमे वा एकादश स्थानमे राहु मंगल व हर्शल ये ग्रहहै ऐसाजानना. परंतु कर्क, वृषभ मेष, राशी का राहु होवेतो संतान जल्दी देताहै और हानीभी नहीकरता

४३ सर्व लडकेहि होतेहोवेतो पंचममे पुरुष राशि है और गरु चंद्र भी पुरुष राशी मे है अथवा पांचमे व एकादशस्थानमे पुरुषग्रह है एसाजानन.

४४ संतती एकवख्त होने बाद फेर बहुत वर्ष पीछे बालक होवेतो पंचममे तथा एकादशमे शनिहै एसाजानना.

४५ पीठपर बहुत भाई बहन होवेतो तीसरे स्थानमे कर्क, मकर. वृश्चिक, मीन, ये राशी है ऐसाजानो.

४६ पीठपरके भाई बहन जीवते नहीहोवेतो तीसरे स्थानमे मेष सिंह धन या वृश्चिक राशिका, होनेका संभवहै.

४७ ज्येष्ठ व पीठपरका (छोटा) भाई व बहन मृतहोवे अथवा उनके गर्भगत हुवेहोवेतो तीसरे स्थानमे रवि वा मंगल है एसा जानना.

४८ भाईयोमे एकयता नहीहोवे किंवा भाइयोका कोईभी तरह का सुख नहीहोवेतो तीसरे अथवा ९ नवमे स्थानमे मंगल है एसाजानना

४९ कानसे कम सुनताहोवे तो मिथुन तुल वा कुंभ राशीका शनि तीसरे ग्यारमे अथवा नवमे स्थानमे जानना.

५० कान फुटाहोवेतो शनि मंगल व रवि ये ग्रह तीसरे ग्यारवे किंवा नवमे स्थानमे एकत्र अथवा, उलट पुलट ये एक एक ग्रह एक एक स्थानमे होने का संभव जानना ।

५१ जन्म होनेके पश्चात् ७ सात वर्षकेभीतर किंचित पहले कोईभी समय जो कुटुंबमे एक अथवा अधिक अकस्मात् मृत्यु हुवे होवेतो दूसरे स्थानमे हर्शल है ऐसा जानना ।

५२ हर्शल का स्वाभाविक धर्म ऐसाहै कि वह जन्म कालमे जिस स्थानमे होवे उस स्थानपर जिस व्यक्तिका विचारकिया जाताहै उसी व्यक्तिका अकस्मात् मृत्यु होताहै ।

५३ मा बाप का मृत्यु एकसाथ एकही समयमे होवेतो चतुर्थ स्थान में शनि चंद्र योग होवे और चौथे अथवा दशमे स्थानमे हर्शल होना चाहिये-इससंबंधके औरभी योगहै वे इसग्रंथमे क्रमसे अगेआवेगेही

५४ जिनके भगंदर सर्वांगमे जखम कियाम्रग, गर्मी व दूसरे भयंकर जननेंद्रियके विकार होवेतो उनके छठेस्थानमे वृश्चिक राशीमे शनि किंवा मंगल होवेगा ।

५५ लग्नकार्यमे जो भांजगडपडीहोवे किंवा अकस्मात् लग्न निश्चय हुये हुये बिसरजावे किंवा अन्य विघ्न आयहोवे तो सप्तममे हर्शल हानेका संभवहै

५६ जिनका दिगंत कीर्ति प्राप्तहोतीहै उनके नवम स्थानमे गुरु चंद्र योग होताहै ।

५७ जो मनुष्य अपने पीछे अपना नाम कायम रखने वालेहोतेहै उनके नवमस्थानमे अथवा चंद्रसे नवमस्थानमे शनि, गुरु रवि व हर्शल इन बडेग्रहोमसे एकादा भी ग्रह, बलवान् गये बिनारह ।।नही

५८ साधारणत: श्रीमंत मनुष्योके ग्रह उदीत (सप्तमसेलग्नपर्यंत)

भागमे किंवा धनभाग (नवमेसे तीसरे स्थानके आरंभ पर्यंत) मे बहुत ग्रह स्थित होतेहै ।

५९ द्रव्य कितनाही मिले तथापी हातमे टिकतानही विनाकारण खर्चहोजावे कर्जहोजावे वगेरा बाते संपत्ति संबंधमे बनतीहोवे तो लग्न के तथा चंद्रके दूसरे स्थानमे मंगल होनेका संभवहै वाजवी रीतीसे खर्च करतेहुवेभि पैसा की तंगीरहे और कर्जा करनापडता होवेतो लग्नसे अथवा चंद्रसे बारवे स्थानमे मंगल होनेका संभवहै ।

६० कुटुंब बडाहोवे किंवा बहुत मनुष्यो का उपजीवन स्वतःके आधारपरहोवे तो दूसरेस्थानमे गुरू होने का संभव होताहै

६१ कुटुंब मे कलह होतारहताहोवे तो दूसरेस्थानमे रवि होनेकासंभवहै

६२ वडीलार्जित संपत्ति के संबंधका झगडा पेदाहोवेतो दूसरेस्थानमे मकर राशिका रविहोनेका संभवहै.

६३ वाहन (सवारी) तथा चतुष्पदका व बगीचेवगेरा कृषी का शोख होवेतो चतुर्थस्थानमे गुरु शुक्र अथवा बुध होनेका संभवजानना

६४ नाक मुख दांत पेटीये वगेरा मेसे कोइभी अवयवसे रुधिर जानेका विकार होवतो मेषराशीके २६ अंशके आगे का लग्न होताहै ।

६५ स्त्री अति सुंदर व गोरी होवेतो सप्तममे अथवा लग्नमे शुक्रहोवे अथवा गुरुहोवे क्वचित् चंद्रभीहोता है ।

६६ स्त्री ताम्रवर्णकी दुबले पतलेबांधेकी और बडी संतप्तक्रूरस्वभाव की होवेतो सप्तममे अथवा दुसरे स्थानमे मंगल होताहै ।

६७ बालबच्चे सुस्वरूप होवेतो पांचमे अथवा एकादश स्थानमे शुक्र होनेका संभवहै ।

६८ बच्चे रोगी रहते होवे तो पांचमे स्थानमे शनि अथवा मंगल होनेका संभवजानना ।

६९ कथा वाचनेवाला तथा व्याख्यान दाता शास्त्री किंवा वैय्याकरणी होवेतो मिथुन राशीका लग्न अथवा चंद्र होताहै ।

७० स्त्रीरुठके चली गई होवे किंवा किसीभीकारणसे स्त्रीसे वेबनाव होवेतो सप्तम स्थानमे हर्शल जानना ।

७१ यदिकोई मनुष्य किसीके गोद (दत्तक) गयाहोवेतो उसकी कुंडली मे नीचे लिखेहुवे योगोमेसे एकआद योग निश्चय होवेगा ।

(१) कर्क किंवा सिंहराशीमे पापग्रह.
(२) चंद्र किंवा रवि ये पापग्रहोंसे युक्त अथवा दृष्ट
(३) चतुर्थ अथवा दशम मे पापग्रह.
(४) मेष सिंह धन किंवा मकर इन राशियोंमेसे कोईभी भेर राशी च ुर्थ अथवा दशम स्थानमे.
(५) चंद्र के चतुर्थ स्थानमे पापग्रह.
(६) रविके दशमे अथवा नवमे पापग्रह.
(७) चंद्र अथवा रवि ये शत्रुक्षेत्री शत्रुग्रहसे युक्त

७२ जोडले (दोबच्चे सायहोवे) बच्च बहुधा एकलग्न और एकही राशीमे जन्मपाते है उनके लग्नमे राहु होताहै और यह राहु कन्या मीन मिथुन अथवा धन राशी मे होताहै मीन और मिथुन ये राशी राशि चक्रमे युग्म (जोडली) राशीहै इसकारण जोडले बालकोकी कुंडली मे इनराशीमे लग्न, चंद्र, राहु, किंवा शुक्र, अथवा लग्न स्वामी, होतेहै ऐसा देखनेमे आताहै कन्या और धन ये राशी अनुक्रमसे । मीन और मिथुन राशी की सातमी राशी है इसकारण उपरोक्त लग्न चंद्र राहु आदि इन राशियोंमे भी देखनेमे आतेहै ।

७३ ललाई लिये हुवे गौर कांती, मुखपर व छातीपर लाली, नेत्र पाणीदार, चित्र विचित्र पोषाख धारण करने का हौस निर्मलता, तेजस्विता, बूट, स्टॉकिंग घडचाल, छत्री, लकडी ये वापरने का हौस होवे तो शुक्र और मंगल का योग होने का संभव होता है ।

७४ चेहरा ऊबाकम, चोढाजादा, हास्यमुख, टाप टीपसे चलने वाला वस्तृत्वविशेष स्वच्छ वस्त्र पहिनने का व शरीर स्वच्छ रखने का और विद्या व्यासंगका हौस होवे तो लग्न मे बुध है एसा जानना ।

७५ शरीर दुबला पतला कफ प्रकृती, गौरा व पाणीदार अतिचंचल बोलन बरून जिसके मुहमेंसे थूंक उडता होवे वा लाल पडती होवे दांतस्वच्छ पोषाख मलिन नेत्रसफेद, प्रवासी, अलंकार व सुगंधीपदार्थ धारण करनेवाला ये लक्षण होवेतो लग्नमे चंद्र होनेका संभवहै ।

७६ निर्व्यसनी होवतो लग्नमे बुध गुरु शुक्र अथवा चंद्र इनमे से काई भी एक ग्रह समझना ।

७७ जगतमे लोग अग्रमे गिनेजातेहो जो राजा, संस्थानिक, जाहागिरदार, इनामदार, किंवा बडी तनख्वाह के सरकारी मोठे नोकर, (बडे ऑफिसर) बहुतलोकोपर अधिकार रखनेवाला, तथा बहुतलोग जिसको मानदेवे और अपने उपर मुख्यमाने तथा जोलोग खासगीधंधा चलानेवाले होवे उनको भी जगतमे राजा अथवा प्रजाके पाससे मोठा मान मिले, प्रजाकेलोको के तरफ से यही अपना खरा अग्रगण्य है ऐसा समझ राजा सरीखा मान जिसको मिलताहो, उत्तम व्याख्यान दाता, उत्तम पुराणिक, बडा शास्त्री, उत्तम हरीदास, वगेरा मानपानेवाले लोक तथा जिनके हाथनीचे विशेष लोक काम करतेहो, जो प्रधान होके कोईभी मुख्य पदपररहनेवाले होते है, उनकी कुंडली मे सिंह अथवा कर्क ये राजाराशि अवश्य बलवान् हुये विना रहती नही । और जैसा जिसका अधिकार और मान बडा होवे उसी माफिक इन राशिमे रवि चंद्र गुरु बुध किंवा शुक्र ये सर्व ग्रह किंवा इनमेंसे एकभी कोई ग्रह युक्त हुये विना रहतानही.

(१) लग्न सिंह होवे इस राशि मे रवि, चंद्र, गुरु, बुध किंवा शुक्र मेसे कोई एक ग्रह वा सर्वग्रह युक्त होवे और दशमे इनमे से कोई ग्रह होवेतो मुख्यत्व प्राप्त करणेका कारण होताहै.

(२) मंगल सिंह राशि का होवे वा दशमे सिंह राशिका जावेतो उस मनुष्य को मुख्यत्व शीघ्र मिले और उसका मान अधिकार और तनख्वाह जल्दी२ बढतीजातीहै

(३) सिंहराशि मे राहु शनि ये दो ग्रह मात्र अच्छेनहीहै ये ग्रह होवे तो मनुष्य जिस खाते मे होवे उस खाते मे मुख्य की जगह उसको जल्दी मिलने वाली नही और तरक्की (प्रमुशन, पगार बढना) भी जल्दी होता नही

(४) सिंहराशि १।३।४।५।९।१० स्थान मे स्वाभाविक बलवान है इन स्थानो मेसे कोई भी स्थानमे येराशि होने औरइसमे गुरु, मंगल रवि, चंद्र बुध, वा शुक्र होवे तो अनुक्रम उत्तोतर पहिले की अपेक्षा दूसरा निर्बल योगहोताहै

(५) सिंहराशि मे कोई भी ग्रहनही होवे तोभी केवल सिंहराशि ही उपरोक्त स्थानमे होवेतो मुख्यपद देतीहै उपरोक्त बडेमनुष्यो

कि कुंडली मे सिंहराशि कोई भी उपरोक्त स्थिती में जोनहीं होवेतो फिर फल ज्योतिष का महत्वही क्याहै ।

(३) जिस प्रमाणे सिंहराशि का वर्णन कियाहै उसीप्रमाणे कर्क राशि काभि महत्व हे फक्त इसराशीमे कोइभी पापग्रह का योगनहीं होना चाहिये शुक्र, बुध, चंद्र, गुरु, ये ग्रह इसराशिमे उतरोत्तर बलवान होते है

(७) कुंडलि मे ये दोनु [४।५] राशि उत्तम स्थितीमे होवेतो अति उत्तम योग होताहै

एक राशि बलवान दुसरी निग्रह होवेतो उत्तम योग
एकराशि बलवान दूसरी बलहीन होवेतो मध्यम योग
परंतु कर्क राशि बलवान और सिंह निर्बल होवेतो निर्बल योग

(८) लग्न बलवान होवे और इन दोनुराशी का पूर्वोक्त योग कुंडलीमे कहींभी होवे तो इनके फलका अनुभव स्थान बलके योग्यतानुसार मिलेगा।

लग्नबलवान नही होवे और ये राशी कुंडलीमे कहींभी बलवान होवेतो जो हल के पगार की मुख्यपणे की जगह होवे वह जगह मिलतीहै परंतु जिनके लग्न बलवान नही होवे और ये राशी भी बलवान नही होवे तो उसका जीवनतो निरर्थक ही होताहै.

इनके शिवाय जितने अनेक योग इस पुस्तकमे लिखे है उन सब योगोका इसी प्रमाणे मनुष्य के शरीर लक्षण सुख दुःखादि जीवन क्रमके योग मिलाके अनुभव करने का सतत अभ्यास करते रहने से कुंडली देखनेकी जिसमानकी अवलोकन व विचार शक्ति ज्यों ज्यों अधिक बढ़ेगा त्यो त्यो अद्भुतफल कहनेका और सहजमे मनुष्य की कुंडली के ग्रहोंकि परिक्षा करनेकी योग्यता उतनेही मानसे बढ़तीजावेगी । इतिशम्

इति प्रथम विवेक टीका समाप्तः

अथ धनविवेक.

धनेंगेशे खेलाभपे धनेशांशेशे शुभे नामतोधनी ॥ १ ॥

चंद्राच्छुभै रुपचयगैः सद्योधनी ॥ २ ॥

खार्थपौ युतौ केंद्र कोणगौ सद्योधनी ॥ ३ ॥

खेशांशेशायेशौ युतौ सद्योधनी ॥ ४ ॥

सिंहासने धनेश धनी ॥ ५ ॥

धनेशात् धनांगपेशौ केंद्रगौधनी ॥ ६ ॥

चतुर्षु स्वर्क्षेगेषुधनी ॥ ७ ॥

वल्यर्थेशः खायांकगो धनी ॥ ८ ॥

चंद्रार योगे धनी ॥ ९ ॥

अबधन भावका विचारकहतेहै

टीका–लग्नेश धन २ स्थानमे, लाभ ११ पति दशमस्थानमे धनस्थान केस्वामि का नवमांशका स्वामि शुभ ग्रहोवे तो नाम मात्र से धनवान् होताहै अर्थातपास कुछनहि होते हुवेभी धनवान समझा जावेगा ॥ १ ॥

चंद्रमासे ३।६।१०।११ स्थानमे शुभग्रह स्थितहोवैतो शीघ्रधनवान होताहै ॥ २ ॥

दशमे स्थानका और धनस्थान का स्वामि एक राशिमे युतहोके १।४।७।१०।५।९ मे स्थानमे स्थित होवेतो शीघ्र धनवान होताहै ॥ ३ ॥

दशमस्थान के स्वामि का नवांश का स्वामि और लाभ ११ स्थान का स्वामि एकत्र युतहोवे तो शीघ्र धनवान होता है ॥ ४ ॥

धन २ स्थानका स्वामि सिंहासनांश मे होवेतो धनवान होताहै ॥५॥

धनस्थान का स्वामि जाहाबैठाहोवे उससे दूसरे स्थानका स्वामि और लग्नका स्वामि येदोनो १।४।७।१० मे स्थानमे जावे तो धनवान होताहै ६

चारग्रह स्वराशि मे गये होवेतो धनवान होताहै ॥ ७ ॥

बलवान धन २ स्थानका स्वामि १०।११।९ मे स्थानमे जावेतो धनवान होता है ॥ ८ ॥

चद्र और मगलका योग होवेतो धनवान होता है ॥ ९ ॥

स्वल्प धन योग

केंद्र कोणेऽंशे क्रूरषष्ट्यंशे स्वल्पधनं ॥ १० ॥

लाभेशांशेशेक्रूरषष्ट्यंशेशुक्रजीवान्यतरयुतदृष्टे स्वल्पधनी ॥ ११ ॥

टीका–दूसरे स्थानका स्वामि क्रूर षष्ट्यंश मेहोवे और १।४।७।१०।९।५ मे स्थानमे स्थितहोवे तो स्वल्पधनी होताहै ॥ १० ॥

लाभेश जिसग्रह के नवांशमे होवे वहग्रह क्रूर षष्ट्यंशमे होवे और शुक्रअथवा गुरु से युत दृष्टहोवे तो स्वल्पधनी होताहै ॥ ११ ॥

बहुधन योग वा महाधनी योग

सौम्ये ऽपचये बहुधनः ॥ १२ ॥

लग्नेशांशेशांशेशे बलाढ्ये वैशेषिकांशेशुभदृष्टेबहुधनः १३

खेशांशेशे वैशेषिकांशे सार्थेश लाभेश दृष्टयुते बहुधनी १४

केंद्र चतुष्टये शुभान्विते महाधनि । १५ ॥

लग्नार्थायेशा वैशेषिकांशे महाधनी ॥ १६ ॥

कर्केज्ञे मंदेलाभे महाधनी ॥ १७ ॥

स्वर्क्षेसुते लाभेमंदे महाधनी ॥ १८ ॥

लाभेजीवे स्वर्क्षेर्के पंचमे महाधनी ॥ १९ ॥

स्वर्क्षेगुरौ पुत्रेचंद्रे महाधनी ॥ २० ॥

सिंहेर्केज्ञे गुर्वारयुते माहाधनी ॥ २१ ॥

कर्केज्ञे चंद्रे गुर्वारयुते महाधनी ॥ २२ ॥

भौमेंगे स्वर्क्षे मन्दाच्छज्ञयुते महाधनी ॥ २३ ॥

१२ का गुरु होनेसे ५ मे कर्क का चंद्र हो सकताहै इससे दोनो स्वक्षेत्रि का नवम पञ्चम योग होताहै और इन दोनो केंद्र त्रिकोणाधिपोंका दृष्टी संबध होताहै सो मीन लग्न मे यह योग अधिक बलवान जानना चाहिये ।

सिंह राशि का सूर्य लग्नमे गुरुमंगलसे युत होवे तो महा धनिहोताहै २१

स्वराशि का चंद्रमा लग्नमे गुरु मंगल से युतहोवेतो महाधनी होताहै ॥ २२ ॥

स्वराशि १।८ का मंगल लग्नमे होवे और शनि, शुक्र, बुध, इनतीनो से युतहोवे तो महा धनी होताहै ॥ २३ ॥

स्वराशि ९।१२ का गुरु लग्नमे होवे और चंद्र मंगल से संयुत होवे तो महा धनी होताहै ॥ २४ ॥

स्वराशि(३।६)का बुध लग्नमे शनि शुक्रसे युक्त होवे वा दृष्टहोवे तो महाधनी होतहै ॥ २५ ॥

स्वराशि(२।७)काशुक्रलग्नमे होवे औरचंद्रसूर्य से युतदृष्टहोवेतो महाधनी होताहै ॥ २६ ॥

कन्या राशिमें शनि,मंगल राहु और, शुक्र, ये चारोग्रह स्थितहोवेतो महाधनवानहोताहै ॥ २७ ॥

सहस्रनिष्केशयोग ।

लग्नपारेरोधनपाशेरोच सौम्येगुरुदृष्टे सहस्रनिष्केशः २८
लग्नपेर्थे लाभेशेकर्मगे गुरुदृष्टे सहस्रनिष्केशः ॥२९॥
अंगशांशेशे गोपुरे कर्मेश दृष्टेसहस्रनिष्केशः ॥३०॥

टीका- लग्नेश धनराशिकास्वामी औरधनेशकेनवांशकास्वामी शुभग्रहहोय और इनको गुरुदेखताहोवेतो एक हजार निष्कका स्वामी होताहै ॥ २८ ॥

निष्क = असर्फि (मोहर) को कहतेहैं अमरने लिखाहै " दीनारेऽपिच निष्कोस्त्री"कोई२लोग निष्क का अर्थ रुपया भीकरतेहैं परंतु शास्त्रदृष्टया और अनुभवसे निष्कका अर्थ असर्फिहोहोना युक्ति युक्त है इसकारण इसग्रंथमे जहा निष्क शब्द आवे वहा असर्फि जानना ।

टीका– लग्नके नवांशकास्वामि और भाग्येश येदोनो परम उच्चांश मेजावे और लाभेश वैशेषिकांशमेंस्थित होवेतो कोटीश (एककरोड का स्वामी) होताहै ॥ ४० ॥

बाल्ये बहु धन लाभयोग ।

सांकार्थेशौ केंद्रगौ लग्नेशस्यांशेशस्येश्वरेणदृष्टौ बाल्ये बहुधनलाभः ॥ ४१ ॥

लग्नार्थायगैः शुभैर्बलाढ्यैर्धनेशस्यांशेशेनदृष्टैर्बाल्येबहुधन लाभः ॥ ४२ ॥

टीका– नवमेश और धनेशकायोग १।४।७।१०मे स्थानमेसे कोई भी स्थानमे होवे और उनको लग्नेशके नवांशका स्वामि जिसराशिमे होवे उसराशीका स्वामी देखता होवेतो बालपणेकी अवस्थामे बहुतधन कालाभ होताहै ॥ ४१ ॥

लग्न १ धन २ और ग्यारमे भावमे सर्वशुभग्रह बलवान् होके स्थित होवे और उनको धनेश के, नवांशका स्वामी देखताहोवेतो बालपणेकी अवस्थामे बहुतधनका लाभहोताहै ॥ ४२ ॥

निध्याप्तियोग

लाभेशेङ्गे लग्नेशेर्थे धनेशेलाभे निध्याप्तिः ॥४३॥

लग्नेशेशुभेर्थे निध्याप्तिः ॥४४॥

कोशेशे रंध्रेनिध्याप्तिः ॥४५॥

टीका—लाभेश लग्नमे, लग्नेश धनस्थानमे, धनेश लाभस्थानमे, होवेतो गडेहुवे धनकालाभ होताहै ॥ ४३ ॥

लग्नका स्वामी शुभग्रह धन २ स्थानमे स्थित होवे तो गडेहुए खजाने की प्राप्ती होतिहै ॥ ४४ ॥

धन स्थानका स्वामि आठमे स्थानमे स्थितहोवेतो गडे हुवे धनका लाभ होताहै ॥ ४५ ॥

स्वोपार्जित धनाप्तियोग.

सर्वग्रहाधिकबले लग्नपेकेंद्रे जीवयुते वैशेषिकांशेर्थेशे स्वोपार्जितधनः ॥ ४६ ॥

अंगेशांशेशोबली धनपमित्रं सत्केंद्रकोणगः स्वो० ४७

लग्नायपयुक्तोर्थेशः केंद्रकोणेशुभदृष्टः कालबलान्वितः स्वोपार्जितधनः॥ ४८ ॥

टीका-लग्नका स्वामि सर्वग्रहोसे अधिक बलवान् होके १।४।७।१० मे स्थानमे गुरुसे युक्तहोवे और धनेश वैशेषिकांशमे स्थितहोवेतो अपने बलपराक्रमसे कमायाहुवा धन प्राप्तहोताहे ॥ ४६ ॥

लग्नेश के नवांश का स्वामि बलवान होवे तथा धनभाव के स्वामिका मित्र शुभग्रहहोवे और केंद्रकोण (१।४।७।१०।९।५) स्थानमेस्थित होवे तो अपने बलपराक्रमसे कमायाहुवा धन प्राप्तहोताहे ॥४७॥

धनभाव का स्वामि लग्नेश और लाभेश से युक्तहोके केंद्रकोण (१।४ ७।१०।९।५) स्थानमे स्थितहोवे और शुभग्रह से दृष्टहोवे, कालबलसे युक्तहोवे तो अपने बलपराक्रम से कमायाहुआ धनप्राप्त होताहै ४८

भ्रातृधनाप्तियोग.

बलान्वितौसोत्थगो धनाङ्गपौ पुंग्रहदृष्टयुक्तौ वैशेषिकांशग सोत्थेशतयुतदृष्टौ भ्रातृधनाप्तिः ॥ ४९ ॥

टीका-धनेश और लग्नेश ये दोनो बलवान् होके तीसरे स्थानमे स्थितहोवे पुरुषग्रहसे युक्त अथवा दृष्टहोवे और वैशेषिकांशमे स्थित, तृतीयेश से युत वा दृष्टहोवे तो भाईका धनप्राप्तहोता है ॥ ४९ ॥

मातृधनलाभयोग.

तुर्येशयुतदृष्टे धनेशे जननी धनलाभः ॥ ५० ॥

टीका-धनेश चतुर्थस्थानके स्वामी से युत वा दृष्टहोवे तो माताका धन मप्तहोता है ॥ ५० ॥

बंधुतः कृषेर्वाधनलाभयोग.

धनेशेसुखेशयुतदृष्टे वैशेषिकांशेबन्धुतःकृषेर्वाधनलाभः ५१

टीका-धनेश चोथेस्थानके स्वामिसे युक्त वा दृष्टहोवे और वैशेषिकांशमे होवेतो बंधु से वा कृषिकर्म से धनलाभ होताहै ५१

पुत्रतःधनाप्तियोग.

सुतेशतत्कारकाभ्यांयुतदृष्टेवार्थेशेबलिनिसुततोधनाप्तिः ५२

टीका-धनस्थान का स्वामि पंचम स्थानके स्वामि से और पंचमके कारकसे युत वा दृष्टहोवे वा धनेश बलवान्होवे तो पुत्रसे धनप्राप्ति होतीहै ॥ ५२ ॥

सुपुत्रार्जित धनाप्तियोग.

वैशेषिकांशेङ्गेशे बलाढ्ये सुपुत्रार्जितधनाप्तिः ॥ ५३ ॥

टीका-लग्नेश वैशेषिकांशमे होवे और बलवानहोवे तो सुपुत्रार्जित धनकीप्राप्ति होतीहै ॥ ५३ ॥

शत्रुतोधनाप्तियोग.

षष्ठेशतत्कारकयुतदृष्टेर्थेशे बलिनिशत्रुतो धनाप्तिः ५४

टीका-षष्ठेश से तथा उसके कारकसे धनेश युत वा दृष्टहोवे और बलवान्होवे तो शत्रुसे धन प्राप्तिहोती है ॥ ५४ ॥

भार्यातोधनाप्तियोग.

जायेश तत्कारकयुतदृष्टेर्थेशे बलिनिभार्यातो धनाप्तिः ५५

टीका-बलवान् धनेश सप्तम भावके स्वामि और सप्तम भावके कारकसे युत वा दृष्टहोवेतो स्त्री से (स्त्री संबंध से) धनाप्तिहोति है ५५

पितासे धनाप्तियोग.

खेशतत्कारकयुतदृष्टेर्थेशे बलिनिपितृतोधनाप्तिः ॥ ५६ ॥

टीका-बलवान् धनभावका स्वामि दशमेश और दशमभावके कारक ग्रह से युत वा दृष्टहोवेतो पितासे धनकी प्राप्तिहोतीहै ॥ ५६ ॥

तुर्येर्के पितृधनाप्तिः ॥ ५७ ॥

टीका-चतुर्थ स्थानमे सूर्य स्थितहोवेतो पिताके धनकी प्राप्ति होतीहै ॥ ५७ ॥

धनाप्तियोग

कोशेशेबलवतियस्यकारकेण यद्भावेशेनवा युतेदृष्टे तद्द्वारा धनाप्तिः ॥ ५८ ॥

टीका–धनस्थानका स्वामि बलवान् होकर जिस भावके कारक से अथवा जिस भावके स्वामी से युत वा दृष्टहोवे उसभावसे जिस २ पितृ मातृ भ्राता दिव्यक्तिका विचार कियाजाताहै उसर व्यक्तिकेद्वाराधन की प्राप्ति होवेगा ऐसाजानना ॥ ५८ ॥

धनलाभ प्राप्तिदिशा

लाभेश दिशायाधनाप्तिः ॥ ५९ ॥

लाभ गत राशि दिशातो धनाप्तिः ॥ ६० ॥

टीका–लाभ ११ स्थानका स्वामि जिस दिशाका मालिक होवे उसी दिशासे धन प्राप्ति होतिहै दिशाके स्वामी वृहज्जातकमे "प्रागाद्या रवि शुक्र लोहित तम शौरिंदु वित्सूरय "इस प्रकार कहेहै अर्थात् लाभेश रवि होवेतो पूर्व दिशासे शुक्रहोवे तो अग्निकोणसे मंगलहोवेतो दक्षिणदिशासे राहु होवेतो नैऋत्यकोणसे शनिहोवेतोपश्चिम से चंद्र होवेतो वायुकोणसे बुध होतो उत्तरसे गुरुहोतो इशान कोणसे धनलाभ होताहै ॥ ५९ ॥

एव लाभस्थान मे जो राशी स्थितहोवे उसराशी की जो दिशा होवेउसी दिशासे धनकी प्राप्ति कहना अर्थात १ । २ राशिहोतो पूर्वसे ३ अग्नि कोणसे४।५ होतो दक्षिणसे ६ होतो नैऋतसे ७।८ होतो पश्चिमसे ९ होतो वायुकोणसे १०।११ होतो उत्तर दिशासे १२ मीन राशि होवे लाभ स्थानमेतो ईशान कोणसे धनलाभहोवेगा कितनोका यहभिमतहैकि १।५।९ राशिहोतो पूर्वसे २।६।१० दक्षिणसे, ३।७।११ पश्चिमसे, ४।८।१२ उत्तर से प्राप्ति होतीहै ॥ ६० ॥

धनलाभयोग

लाभेशे केंद्र कोणे लाभेपापे धनलाभः ॥ ६१ ॥

लाभपेधने धनपेलाभे धनलाभः ॥ ६२ ॥

धनायपौ केंद्रगौ धनलाभः ॥ ६३ ॥

लाभपेपारावतायंशे धनलाभः ॥ ६४ ॥

लाभेशेंशे केंद्रकोणे शुभसंबंधे धनलाभः ॥ ६५ ॥

शुभांतरे लाभेशेंशे धनलाभः ॥ ६६ ॥

लाभपस्यांशेशे शुभसंबंधे धनलाभः ॥ ६७ ॥

ज्ञाच्छा वर्थे धनलाभः ॥ ६८ ॥

रंध्रेसौम्या धनलाभ ः ॥ ६९ ॥

मेषे चंद्रे घटेमंदे नक्रे शुक्रे चापेर्के पैतृकं धनं नलभते ७०

टीका–लाभेश १।४।७।१०।९।५ मे स्थान मे स्थितहोवे और ग्यारहवें स्थानमे पापग्रह बेठहोवे तो धनलाभ होताहै ॥ ६१ ॥

लाभेश धनभावमे और धनेश लाभ भावमे स्थितहोवेतो धनलाभ होताहै ॥ ६२ ॥

दूसरे २ और ग्यारहवे ११स्थानके स्वामी १।४।७।१० मे स्थानमे स्थित होवे तो धनलाभ होताहै ॥ ६३ ॥

लाभ (११) भाव का स्वामी पारा वतादि अंशमे होवेतो धनलाभ होताहै॥ ६४ ॥

लाभ ११ भावका स्वामी कारकांश कुंडली मे १-४-७-१०-९-५ मे स्थानमे स्थित होवे शुभग्रह से संबंध कर ताहोतो धनलाभ होताहै ६५

लाभ ११ भावेश कार कांश लग्नमे शुभ ग्रहो के मध्यमे होवेतो धनलाभ होताहै ॥ ६६ ॥

लाभेशका नवांशका स्वामि शुभग्रह सेसंबंध करताहोतो धनलाभ होताहै ॥ ६७ ॥

बुध और शुक्र धन भाव मेगये होवेतो धनलाभ होताहै ॥ ६८ ॥

आठमे भावमे शुभ ग्रह गयेहोवेतो धनलाभ होताहै ॥ ६९ ॥

मेष राशि मे चंद्रमा, कुंभ राशिमे शनि मकर राशीमे शुक्र, धनराशि मे सूर्य क्रमसे स्थितहोवेतो पिताका धन [संपत्ति] नहीमिलेगा ॥७०॥

परांगना आसाक्तिमे द्रव्यनाश योग

अंशादंकेराहौपरांगनासक्तेर्द्रव्यनाशः ॥ ७१ ॥

टीका-नार यास लग्नसे ९ नवमे स्थानमे राहु होवेतो परस्त्री की आसक्ती के कारण से धनका नाश होताहै ॥ ७१ ॥

ज्ञाति विवाद से धनहानी योग

व्ययेज्ञे ज्ञातिविवादाद्धनहानीः॥ ७२ ॥

टीका-बारह १२ वे स्थानमे बुध स्थित होवेतो जाति संबधी विवाद से धनहानि होतिहै ७२

मिथ्याक्रोशांतकृत्तयोग

सक्रूरेव्ययेशे मिथ्याक्रोशांतकृत् ॥ ७३ ॥

टीका-व्यय १२ स्थान का स्वामि पापग्रह से युत होवेतो फजूल कामम धन खरच करके संपत्तिकानाशकरनेवाला होताहै ॥ ७३ ॥

राजदंडाद्धनक्षययोग

लग्नेशेल्पबलेसूर्ययुतेर्थेशेव्ययेनीचेवा पापदृष्टे राजदंडाद्धनक्षय. ॥ ७४ ॥

लाभेशेव्ययेव्ययेशेर्थे त्रिकेर्थेशे वा नीचगे राज० । ७५ ।

षष्ठेर्थेशे सपापे नीचगे राजकारकयुते वा राज०॥ ७६ ॥

धनगेल्पे व्ययेशेर्थे सपापेगेशेरिगेराजदं० ॥ ७७ ॥

लाभेखेरोगेशयुते दुःपष्ठयंशे राजदं० ॥ ७८ ॥

टीका-लग्नेश अल्प बलीहोवे धनस्थानका स्वामी बारवे १२स्थानमे सूर्य से युतहोवे और नीचराशि का होवे अथवा पापग्रहसे दृष्टहोवेतो राजदंड (जरवाना देनेसे) धनका नाशहोता है ॥ ७४ ॥

लाभश बारवे १२ स्थानमे और बारवस्थानका स्वामि २धनभावमे होवे १ अथवा धनेश ६।८।१२ मे स्थानमे नीचराशी का होवेतो राजदंड से धननाश होताहै ७५ (इससूत्रमे २ योगकहेहै)

धनभावका स्वामि नीचराशी मे स्थितहो के छठे स्थानमे पापग्रह के साथ युत होवे अथवा राजकारक ग्रह से युतहोवे तो राजदंड से धनक्षयहोताहै ॥ ७६ ॥

धनस्थान कास्वामी १२ बारहवे स्थानमे, बारमे स्थानका स्वामीधन स्थान मे होवे और पापग्र सेयुत लग्नका स्वामीछठे स्थानमेहोवेतो राजदंडसे धनक्षयहोताहै ७७

दशम भावका स्वामि ग्यारवे ११ स्थानमे लग्नेश से युत होवे और वह दुष्ट[अशुभ]षष्ट्यंश मे होवेतो राजदंड से धनक्षय होताहै ७८

चौराग्नि भूप कृत धन नाशयोग.

धनायपौ कुजदृष्टौ पापांशगौ हीनबलौ सपापौ चौराग्नि भूपकृतो धननाशः ॥ ७९ ॥

धनेशांशे शांशेशेसपापेत्रिकेलग्नेशदृष्टे चौराग्नी भूप कृतो धननाशः ॥ ८० ॥

टीका-धन २ और लाभ ११ भावके स्वामि ये दोनोही भौमसे दृष्ट होवे पापग्रह के नवांश मे होवे,निर्बली होवे, और पापग्रह से युत होवे तो चौरसे अग्निसे वा राजा से धन का नाश होताहै ७९

धनभावकास्वामी जिस ग्रह के नवांशमे होवे उसके नवांशका स्वामि पापग्रह से युत होकर ६।८।१२ स्थानमे स्थितहोवे और उसको लग्न कास्वामि देखता होवेतोचौरसे[चोरिहोनेसे]अग्निसे(लायलगनेसे) राजा से (राजाकि नाराजीसे) धनका नाश होताहै ८०

लोकाप वाद मूलसे धनक्षययोग.

सपापे खेशेरिगेक्रूरषष्ट्यंशे धनायपयुते लोकापवाद मूलक धनक्षयः ॥ ८१ ॥

टीका- दशम भाव का स्वामी छटे स्थानमे पापग्रह सेयुतहोवे क्रूर षष्ट्यंशमे होवे धन २ और लाभ ११ भावके स्वामी योंसे युतहोवेतो लोकापवाद के कारण धननाशहोताहै. ८१

निर्धनयोग

धनेशांशेशेशे त्रिके सपापे क्रूरषष्ट्यंशे निर्धनः ॥८२॥

सपापा धनधनेशायेशा निर्धनः ॥ ८३ ॥

व्ययेशांशेशे धनेश युतदृष्टे निर्धनः ॥ ८४ ॥

नीचेक केंद्रे सपापे निर्धनः ॥ ८५ ॥
कोशेशांशे शांशेशे कालदंडांशे निर्धनः ॥ ८६ ॥
लाभे लाभपे वा पाप संबंधे निर्धनः ॥ ८७ ॥

टीका–धनेश का नवांशका स्वामि जिसराशिमे स्थित होवे उस्का स्वामी ६।८।१२ मे स्थानमे पापग्रह से युतहोवे और क्रूरषष्ठ्यंशमे होवे तो निर्धन होताहै ८२

धने २ भाव धनभाव का स्वामि और लाभ ११ भावपति येतीनो पाप ग्रह से युत होवे तो निर्धन होताहै ८३

बारवे स्थानके स्वामीका नवांशका स्वामि धनेश से युत होवे वा दृष्ट होवेतो निर्धन होताहै ८४

नीचराशि का सूर्य केंद्र (१।४।७।१०) मे पापग्रह से युत होवेतो निर्धन होता है ८५

धनेश के नवांशका स्वामि का नवांशका स्वामि कालदंडांशमे होवे तो निर्धन होताहै ८६

लाभेश लाभ ११ भावमे पापग्रह सेसंबंध करताहोवेतो निर्धन होताहै ८७

पाप मूलक धननाश योग

व्यये व्ययेशे वा पापसंबन्धे पापमूलक धनक्षयः ॥८८॥

टीका–व्यय १२ स्थानका स्वामि बारमे स्थानमे होवे अथवा पापग्रह से संबंध करताहोवेतो पापकर्ममे धननाश होताहै ८८

धर्म मूलक धनक्षय योग

अंत्येंत्येशेवा शुभसंबंधे धर्ममूलक धनक्षयः ॥ ८९ ॥
शुक्रज्यौ वा चंद्रज्ञौ व्यये धर्ममूलक धननाशः॥ ९० ॥

टीका–बारवे स्थानका स्वामि बारवे स्थान मे स्थित होवे अथवा शुभग्रह से संबंध करता होवेतो धर्म कार्यमे धनक्षय होताहै ८९

* शुक्र गुरु अथवा चंद्र बुध व्यय १२ स्थान मे स्थित होवे तो धर्म ५ मे धन का नाश होता है ९०

भ्रातृकृत धननाशयोग

अंत्येशेल्पबले भौमसंबंधे भ्रातृकृतो धननाशः॥ ९१ ॥

टीका-व्ययस्थानकास्वामि निर्बलीहोवे और मंगल से संबंध करता होवेतो भाई धनकानाश करताहै ॥ ९१ ॥

मातृकृतधननाशयोग

सुखेश संबंधेंत्येशे मातृकृतो धननाशः ॥ ९२ ॥

टीका-बारमे स्थानका स्वामि निर्बलीहोवे और सुखेस ४ से संबंध करताहोवेतो माता धननाशकरतीहै ॥ ९२ ॥

पुत्रकृतधननाशयोग

व्ययपेल्पबले पुत्रेश संबंधे पुत्रकृतो धननाशः ॥९३॥

टीका-व्ययेश निर्बलीहोवे और पुत्रेश (पंचमेश) से संबंध करताहोवेतो पुत्र धनको नाशकरताहै ॥ ९३ ॥

शत्रुकृत धन नाश योग.

व्ययेशे बलहीने गुलिकादियुते वा पष्ठेशसंबंधे शत्रु

तो धननाशः ॥९४॥

धनेशेरिगे शत्रुकृतो धननाशः ॥ ९५ ॥

टीका-व्यय १२ स्थानका स्वामि निर्बली होवे और गुलिक शनि मंगल राहु आदिपापग्रहसे युतहोवे अथवा षष्टेश सें सम्बंध करता होवे तो शत्रु के सबब से धनका नाश होताहै ॥ ९४ ॥

टीका-धनस्थानका स्वामि छठेस्थानमे जावेतो शत्रु धनका नाश करताहै ॥ ९५ ॥

जाया कृत धननाशयोग

क्रूरांशेन्त्येशेल्पबलेजायेशसम्बंधेजायाकृतोधननाशः ९६

टीका-बारवे स्थानका स्वामि क्रूर ग्रह [शु० मं० श०] केनवांश मे स्थितहोकर निर्बली होवे और सप्तमेश से सम्बंध करता होवे तो स्त्री धनकानाश करती है ॥ ९६ ॥

पितृकृतधननाशयोग

व्ययेशे खेश संबंधे पितृकृतो धननाशः ॥ ९७ ॥

टीका–व्ययेश अल्पबलीहोवे और दशमेशसे संबंधकरताहोवेतो पिता धनकानाशकरताहै ॥ ९७ ॥

धननाशयोग

धनेज्ञे चंद्रदृष्टे धनहानीः ॥ ९८ ॥

क्षीणेंदावर्थे ज्ञदृष्टे संचित धननाशः ॥ ९९ ॥

राव्हर्कजार्थे शुक्रेंदुयुतराशीशयुते कुमार्गव्ययः १००

कोशेकुजेर्थनाशोग्निचोरादितः ॥ १०१ ॥

त्रिकोणजीवे भोजने धननाशः ॥ १०२ ॥

कोणेश संबंधी योर्थेगेहेग्रह त्रिके शयुतो धननाशकः१०३

टीका–धनभावमेबुध, चंद्रमासे दृष्टहोवेतो धनहानि होतिहै ॥ ९८ ॥ क्षीणचद्रमा धनभावमे होवे और उस्कोबुधदेखता होयेतो संचित कियेहुवे धनका नाश होताहै ९९

धनभावमे राहु शनि शुक्र और चंद्रमा, जिसराशिके होवे उस के स्वामि से युत होवेतो कुमार्ग मे धनका खर्च अधिक होताहै १००

धनभाव मे मंगल होवेतो अग्नि अथवा चौर वगेरा से धनकानाश होताहै १०१

नवमे पांचवमे भावमे गुरुहोवेतो भोजन के (जीमने जिमाने के) काममे धनकानाश होताहै १०२

जोग्रह धनभावमे, नवमे पाचमे स्थानके स्वामी से सम्बंध करताहोवे और ६।८।१२ स्थानके स्वामी से युत होवे वहधननाश कारक जानना १०३

निर्धनयोग

लाभार्थात्येराहुः शयने निर्धनो भ्रमतेमहीम्॥ १०४ ॥

लग्नेशेरंध्रेरंध्रेशेगे मारकेशयुते निर्धन. ॥ १०५ ॥

षष्टेशेंगे लग्नेशेषष्टे मारकेशयुते निर्धनः १०६

चंद्रार्कविंगेमारकेश युतदृष्टे निर्धनः १०७

टीका-शयना स्थान मे गयाहुवाराहु ग्यारवें दूसरे अथवा बारमे भावमे जावेतो धनकेलिये भूमिपर भटकताफिरता रहनेपरभी निर्धन होताहै १०४

लग्नेश आठमे और अष्टमेश लग्नमे दूसरे तथा सातमेस्थानके स्वामीसे युत होवेतो निर्धन होता है १०५

छठेस्थान का स्वामि लग्नमे और लग्नका स्वामी छठेस्थान मे दूसरे तथा सातमे स्थानके स्वामी से युत होवेतो निर्धन होताहै १०६

लग्नमे चंद्र और सूर्य ये दोनो दूसरे तथा सातमे स्थान के स्वामि से युत तथा दृष्टहोवे तो निर्धन होताहै ॥ १०७ ॥

दरिद्रीयोग.

धनकारकात् धनेवेदेशरेपापे दरिद्री १०८

स्वकारकात त्रिषष्टे शुभे दरिद्री १०९

खेशुभा धनेपापा दरिद्री ११०

टीक-धनकारक (गुरु) से दूसरे, चोथे, तथा पांचमे, स्थानमे पापग्रह होवेतो दरिद्री होताहै ॥ १०८ ॥

धनकारक [गुरु] से तीसरे, छठे स्थानमे शुभग्रह होवेतो दरिद्री होताहै ॥१०९॥

दूसरे भावमे पापग्रह और दशमे शुभग्रह होवेतो दरिद्री होताहै ११०

महादरिद्रीयोग.

धर्मेशोत्येंत्येशोर्थे तृतीयगेषुपापेषु महादरिद्री १११

केंद्रगाश्चंद्रेज्यमंदागुलिकाशेसुतांत्याष्ठमगोमहादरिद्री ११२

एकभस्थौ पुष्पवंता वन्योन्यांशगौ सदादरिद्री ११३

पुष्पवंतौघ्रे शेपानीचक्षेगा राजपुत्रोपि दरिद्री ११४

क्षेद्वारपमा नीचगा मृगेशुक्रेराजपुत्रोपि दरिद्री ११५

नीचेर्केकोणे रंध्रेभौमे राजपुत्रोपि दरिद्री ११६,

टीका–नवमे स्थानका स्वामि बारमे, बारमे भावका स्वामी धनभावमे, और तीसरे भावमे दोतीन पापग्रहजावे तो महादरिद्रीहोताहै १११
चंद्र गुरु और शनि १।४।७।१० मे स्थानमे जावे और गुलिक व मंगल ये दोनो पाचवे बारवे तथा आठमे स्थानमे हावेतो महादरिद्री होताहै ११२
सूर्य और चद्रमा य दोनो एक राशीमे होवे और सूर्य, चद्रके नवांश मे व चद्रमा सूर्यके नवांशमे (कर्क राशीके नवांश मे सूर्य और सिंह राशी के नवांशमे चद्रमा) होवेतो सदादरिद्री होताहै ११३
सूर्य और चंद्रमा ये दोनो कुंभराशीमे होवे और शेष सर्व ग्रह नीच राशीमे गय हावे तो राजाका पुत्र हावता भी दरिद्री होताहै ११४
बुध, चद्र, मगल, शनि ये चारो नीचराशीके होवे और मकर राशी का शुक्र हावे ता राजदापुत्रहोवे तो भी दरिद्री होताहै ११५
नीचराशीका सूर्य नवमे तथा पाचमे होवे और आठमे भावमे मंगल होवेतो राजाकापुत्रभी दरिद्रीही होताहै ११६

सर्व संपत्तमान् योग

अंशेशोगुरु शुक्रवियुतः केन्द्रगः सर्वसम्पदन्वितः ११७
स्वोच्चेस्वमित्रेवा शुभभे शुभैर्दृष्टेङ्गेशे संपत्तिमान् ११८
धनेशेज्यौ धनेकेंद्रे संपत्तिमान् ११९
देवलोकांशके सवलेङ्गेशे सम्पत्तिमान् १२०
लग्नेशेबलवति शुभवर्गेकेंद्रपयुते सम्पत्तिमान् १२१
लग्नेके शुभैर्दृष्टे खेङ्गेशे सम्पत्तिमान् १२२
केन्द्रार्थकोणे लग्नेशेज्ययोगे सम्पत्तिमान १२३
लाभगेस्थेपसौम्येषु सम्पत्तिमान् १२४
धर्मेशेङ्गे तुर्यकेशौ स्वभावानलोकिनौ सम्पत्तिमान् १२५

टीका–लग्नका स्वामि गुरु, बुध शुक्र से युक्त होके १।४।७।१० मे स्थानमे स्थित होवेतो सर्वसम्पदन्वित होताहै ११७

लग्नेश्वर स्व, उच्च, तथा अपने मित्र, राशीका अथवा शुभ ग्रहकी राशी का होवे और उस्को शुभग्रह देखते होवेतो सम्पत्तिमान् होताहै ११८

धनभावका स्वामी और गुरु ये दोनो १।२।४।७।१० स्थानमे जावे तो सम्पत्तिमान् होताहै ११९

देवलोकांश मे सूर्यहोवे और लग्नेश्वर बलवान् होवे तो सम्पत्तिमान् होताहै १२०

लग्नेशबलवान्होवे शुभग्रहोके वर्गमे जावे केन्द्रकेस्वामि से युतहोवे तो सम्पत्तिमान् होताहै १२१

लग्नमे सूर्य शुभग्रहोसे दृष्टहोवे और लग्नका स्वामी दशम भावमे होवेतो सम्पत्तीमान् होताहै १२२

लग्नेश्वर और गुरु इन दोनुका एकराशिमे योग १।४।७।१०।२।९।५ स्थानमे होवेतो सम्पत्तिमान् होताहै १२३

ग्यारमे और पाचवे स्थानमे सर्व शुभग्रह गयेहोवेतो सर्व सम्पत्तिमान होताहै १२४

नवमस्थानका स्वामि लग्नमे होवे चतुर्थका स्वामि चतर्थ को और नवमका स्वामि नवमभावको देखता होवेतो सम्पत्तिमान् होताहै १२५

बहुकुटुंबीयोग

ससौम्येर्थेशेर्थे केन्द्रेवा कुटुम्बी १२६

धनेधनेशे वा शुभसम्बन्धे कुटुम्बी १२७

टीका–धनभावका स्वामि शुभग्रह से युक्तहोके दूसरे भाव मे होवे अथवा केंद्र १।४।७।१० स्थानमे जावेतो कुटुम्बवाला होताहै १२६

धनभावका स्वामिधनभावमे होवे अथवा धनेश शुभग्रहसे सम्बंध करताहोवेतो बडेकुटुंबवाला होताहै १२७

विंशतिजन पालक योग.

धनेशे शुभैर्युते पारावतांशे विंशतिजनपालकः १२८

टीका– धनभावका स्वामी शुभग्रहोसे युतहोवे और पारावतांशमे स्थित होवे तो वीस मनुष्यो को पालनेवाला होताहै १२८

पंचाशज्जनपालकयोग.

धनेशेगोपुरांशे धनेशांशपेशुभे सिंहासनांशे पञ्चाशज्जन पालकः १२९

टीका-धनेश गोपुरांशमें होवे और धनभावके स्वामीका नवांशका स्वामि शुभग्रहहोवे और वह सिंहासनांशमें गयाहोवेतो पचास मनुष्यों को पालने वाला होताहै १२९

त्रिंशतजनपालकयोग.

धनेशेसिंहासने वा पारावतांशे जीवयुतदृष्टे त्रिंशत जन पालकः १३०

टीका-धनभावपति सिंहासनांशमें होवे अथवा पारावतांशमेंहोवे और गुरुसे युत किंवादृष्टहोवे तो तीनसो मनुष्यो को पालन करनेवाला होताहै १३०

अनेकजनपालकयोग.

सिंहासनांशेजीवे गोपुरांशेशुक्रे धनेशे ऐरावतांशे अनेकजन पालकः १३१

टीका-सिंहासनांशमें गुरु, गोपुरांशमें शुक्र, और ऐरावतांशमें धनेश होवेतो अनेक मनुष्योंका पालन करनेवाला होताहै १३१

अनादरयोग.

सपापेरन्ध्रेशे पापदृष्टे पापांतरे पापर्क्षेवा रन्ध्रे वातथाभुते पारिभवान्वितोन्यथा तद्धीनः १३२

टीका-अष्टमेश अथवा अष्टमस्थान पापग्रहसे युतहोवे, पापग्रहसे दृष्टहोवे, पापग्रहोंके बीचमेंहोवे वा पापग्रहकी राशीमें गयाहोवे तो अनादर पानेवाला होताहै (कहींभी आदरनहीं होवे) और शुभग्रहसे युतदृष्ट शुभग्रहोंके बीचमें शुभग्रहकी राशीवा अष्टमेश अथवा अष्टम भावहोवेतो सर्वत्र आदरपानेवाला होताहै १३२

सम्पद्धीनयोग.

वृषेर्के मीनेचन्द्रे मेषेमन्दे कर्कभौमे सम्पद्धीनः १३३

भाग्येशे व्यये केन्द्रेपापे धनादिहीनः १३४

टीका–वृषभराशी का सूर्य, मीन का चंद्र, मेष का शनि, और कर्क का मंगल, होवेतो संपदारहित होताहै १३३

नवमे भावका स्वामी बारमे होवे और १।४।७।१० स्थानमे पापग्रह गये होवेतो धनादि सम्पत्तीहीन होताहै १३४

परिवारक्षय योग.

लग्नान्त्यास्ते सर्वे परिवारक्षयः १३५

इतिद्वितीय धनविवेकः

टीका— लग्नमे बारमे और सातमे स्थानमे सर्व ग्रह गयेहोवे तो परिवारकाक्षय होताहै (परिवारके सर्वलोकोंका नाश होजाताहै) १३५

विशेषप्रकारके धनयोग

(१) भाग्येश लाभेशयोग.
(२) भाग्येश दशमेशयोग.
(३) भाग्येश चतुर्थेशयोग.
(४) भाग्येश पंचमेशयोग
(५) भाग्येश लग्नेशयोग.
(६) भाग्येश धनेशयोग.
(७) दशमेश लाभेशयोग.
(८) दशमेश चतुर्थेशयोग.
(९) दशमेश लग्नेशयोग.
(१०) दशमेश पंचमेशयोग.
(११) दशमेश धनेशयोग.
(१२) लाभेश धनेशयोग.
(१३) लाभेश चतुर्थेशयोग.
(१४) लाभेश लग्नेशयोग.
(१५) लाभेश पंचमेशयोग.
(१६) लग्नेश धनेशयोग.
(१७) लग्नेश चतुर्थेशयोग.
(१८) लग्नेश पंचमेशयोग.
(१९) धनेश चतुर्थेशयोग.
(२०) धनेश पंचमेशयोग.
(२१) चतुर्थेश पंचमेशयोग.

ये इक्वीस प्रकारके और भी विशेष धनयोगहैं येसर्वयोग व्ययस्थान केसिवाय धनभागमेहोवे अथवा चतुर्थपंचम स्थानमेहोवे तोपूर्णउत्तम. फल देनेवालेजानना।

७ सातमे स्थानमे धनयोगहोवेतो पूर्णफल आठमेबारमे होवेतो आधाफल　६ छठेहोवेतो चतुर्थांशफल दातासमझना. अथवा ग्रहबहुतनजीक २ (बहुतता ५ अंशकेफरकसे) होवेतभियोगजानना.

दारीद्ययोग.

[१] षष्ठेश धनेशयोग.
[२] षष्ठेश लग्नेशयोग.
[३] षष्ठेश चतुर्थेशयोग.
[४] व्ययेश धनेशयोग.
[५] व्ययेश चतुर्थेशयोग.
[६] व्ययेश लग्नेशयोग.
[७] षष्ठेश दशमेशयोग.
[८] व्ययेश दशमेशयोग.
[९] षष्ठेश पंचमेशयोग.
[१०] षष्ठेश सप्तमेशयोग.
[११] व्ययेश पंचमेशयोग.
[१२] व्ययेश सप्तमेशयोग.
[१३] षष्ठेश भाग्येशयोग.
[१४] षष्ठेश तृतीयेशयोग.
[१५] व्ययेश भाग्येशयोग.
[१६] व्ययेश तृतीयेशयोग.
[१७] षष्ठेश लाभेशयोग.
[१८] षष्ठेश अष्टमेशयोग.
[१९] व्ययेश लाभेशयोग.
[२०] व्ययेश अष्टमेशयोग.
[२१] षष्ठेश व्ययेशयोग.

ये इक्वीस प्रकारके विशेष दारिद्र्ययोगहै. येयोग धनस्थानमे वा दारिद्यभागमेहोवेतो पूर्णबलवान्‌जानना व्ययस्थानमेहोवेतो पादोन (पोन ४५) और दुसरेस्थानमे हारतो अर्धबलजानना.

उपरोक्त समस्त धन और दारिद्र योगों का विचार करने से जितने जोजोयोग आवे वे क्रमसे (धनयोग) धनयोगके तरफ और दारिद्र्ययोग दारिद्र्ययोग के तरफ जुदे २ अंक २ बाजु क्रमसे लिखना और उनके बला बलका विचार करके देखना यदि धनयोगकी अपेक्षा दारिद्र योग अधिक बलवान् होगये होनेतो धनयोग होतेहुवेभी दारिद्र योगकी प्रब लता ही रहेगी। औरं यदि दारिद्र योगकी अपेक्षा धनयोग अधिक सं-ख्या का और बलवान् होवेतो धन योगकी प्रबलता होनेके कारण दा रिद्र योग होतेहुवेभी धनयोग की ही प्रबलता होवेगा.

इसप्रकार उभय योगोंमेसे जोयाग बलवत्तर होवे वही फल बलाबल के तारतम्यानुसार जानना.

इनमेभी विशेष सूक्ष्म विचार पूर्वक देखने से धन और दारिद्र्य योग के बलाबल के तारतम्य भेद्से ही श्रीमंतका दरिद्री और दरिद्री या श्रीमंत तथा श्रीमंतके महा श्रीमंत और दरिद्री के महा दरिद्री होतेहै उनका विचार इसप्रकार जानना.

गरीब किंवा श्रीमंत स्थिति येसे कोईभी स्थितिमे जन्म क्योनहो

परंतु इतना निश्चित है कि गरीब स्थिती मे जन्म होके जोमनुष्य श्रीमंत होजाते है उनके धनयोग श्रीमंती की स्थिति में जन्म पानेवाले मनुष्यके धन योगसेभी बलवत्तर होते है। ऐसे दोमनुष्यो कि कुंडली देखनेसे जान पडेगा कि पहिला श्रीमंत व दूसरा चाहे कितनाही श्रीमंत है तथापि सामान्य दिखेगा। इसी प्रमाणे जन्मभर सामान्य स्थिति भोगने वाले कि अपेक्षा किंवा जन्म दरिद्री मनुष्यकीअपेक्षा जो मनुष्य श्रीमंत के यहां जन्म लेके आगे बिलकुल दरिद्री होनेवाले है उनके मह दारिद्य योग करने वाली स्थितिमे अधिक बल वत्तर होंगे।

देशकाल व जातिपरत्व से धनयोग के फल मिलते है हिंदुस्थान मे जन्म पाये हुवे मनुष्य के जो उत्तम धनयोग होवे वही योग जो आज के समय मे अमेरीका जर्मन अथवा इंग्लंड देशोमे किसी मनुष्य के होवेतो वह कोटचाधीशहोये विना रहेगानही और हिन्दुस्थान मे उसी उत्तम धनयोग वाला वहुत हुवा तो लक्षाधिश होजाताहै ऐसेहि मह हिंदुस्थान मभी यदि किसी भिल्ल वगेरा नीच जातीवाले के आजावे तो वह बहुत हुवातो वेफिक्री से पेटभर खाने कमाने वाला होसक्ता है इससे अधिक उसकी श्रीमंतीकी दोड जानेवाली नही सारांश, धन योग का फल परिस्थिती के प्रमाणसे प्राप्तहोवेगा।

ज्योतिष शास्त्र से हि इस बातका निर्णय होना चाहिये यह बात बराबरहै परंतु इतनी सूक्ष्मता समझने कि मनुष्य मे सामर्थ्य नही इस लिये अपनेको देश, काल, जाति, परिस्थीती, के तरफ लक्ष देके विचार करने के शिवाय दूसरा साधन नही.

कुंडलीमे भाग्यभवन को आदिले धनभाव पर्यंत ६ स्थान "धनभाग" और सहजभावसे अष्टमभावपर्यंत ६ स्थान "दारिद्यभाग" केजानना

१ धनयोग और दारिद्ययोग ये दोनोयोग यदि धनभागमेंहोवे और धनयोग उत्तम प्रबल बनेहोवेतो मनुष्य गरीब के घरमे जन्मपाकर भी गरीबी की स्थिती से निकलके श्रीमंती (उन्नती) पायेविनारहेगानही परंतु यदि दारिद्ययोग की शक्ति अधिकहोवेतो वहकितनाहि उलट सुलट प्रयत्नकरेगा तथापि मूलकीस्थितीमे विशेष बदलाता होनेवाला नही, और दारिद्ययोग यदिबिलकुलही नहीहोवेतो वहमनुष्य आमरणांत श्रीमंतीभोगेगा और रंककाराव हुयेविना रहेगानही, धनयोगही मूलमेनहीहोवेतो किसी तरेसे कष्टसे पेट भरता रहेगा.

२ धनयोग और दारिद्रयोग यदि ये दोनुयोग दारिद्रभागमेहुये होवे ऐसे समय यदि धनयोग की शक्ति अधिक बलवान् होवेतो मनुष्य गरीब स्थिर्तीमे होतेहुवे भि उन्नतिपानेमे अग्रसर होवेगा परंतु उसका स्वरूप (मर्यादा) सामान्यरहेगा और समयभी अधिक लगेगा ऐसा मनुष्य नं० १ के योग के मनुष्यो की अपेक्षा कम योग्यताका होवेगा. और यदि दारिद्रयोगमूलमेही नहीं होवेतो मनुष्य मूलमे गरीब होवेतो प्रयत्न से धनवान् होवेगा और धनवान् स्थितिका होवेतो किंचित् धन बढावेगा अथवा जो स्थितिहै वही कायम रहेगा। धनयोग बिलकुल नही होयतो आमरण दारिद्रभागकरेगा अथवा श्रीमान के कुलमे जन्म लिया होवेगा तो दिनादिन कंगाल होता जावेगा।

धनयोगकी अपेक्षा दारिद्रयोगकी शक्ति अधिक होवेतो किसी समय ठीकस्थिति किसीसमय दुःखी स्थिति भोगना पडेगा.

३ धनभागमे धनयोग व दारिद्रभागमे दारिद्र योग सम समान शक्ति के होवेतो मनुष्य कितनेक दिन गरीब स्थितीको व कितनेक दिन श्रीमंती स्थिति को भोगेगा। यदि धनयोग की शक्ति अधिक होवेतो गरीबीसे निकलके उन्नती पावेगा और धनवानस्थितीका होवे तो किंचित धनबढानेवाला होवेगा। दारिद्रयोग की शक्ति अधिक होवे तो उसके नसीबम या जन्म दारिद्रभागना पडेगा.

यदि ये योग धनवान के होवेतो "भरमभारी और टिपारा खाली" ऐसी स्थिति उसके आयुष्यमे जावेगा, अर्थात् पईसा नहीरहेगा और केवल भरम बनारहेगा।

४ दारिद्रभागमे धनयोग व धनभागमे दारिद्रयोग होवेतो मनुष्य सधनघरमे जन्म पावे तो आगेदरिद्रीहोवेगा व जन्ममे दरिद्री होवेतो बहुत समय बाद किंचित दारिद्रसे पिंडछुटेगा.

ये योग जिसप्रकार जन्म लग्नपर से देखे वैसेही चंद्र कुंडली पर भी देखना और तारतम्यसे सांपत्तिक स्थितिका विचार करना।

इसप्रकार धनयोगका विचार करके निर्णय करने से जो अनुमान ठेरायाजावेगा वह सहसा चुकनेवालानही यह विचार ज्योतिषीकी अपेक्षा जिसका जो स्वयं करेगा तो बिनचूक अनुमान बंधसकेगा।

धनयोगों के शिवायमे धनभावमे भाईकी स्त्री का मामा, भाईकी काकीसासु, भाईको मुसाफरी वा धनहानि खर्च, मामाकि भाईकीस्त्री, माताकोलाभ. मित्रके पुत्रकीस्त्री, मित्रकोलाभ, पुत्रकीसासु, पुत्रके मित्रकी स्त्री, पुत्रकोराज्यसुख. शत्रुके भाईकीस्त्री, स्त्री की मृत्यु, दादा की मृत्यु, दादीको धन सुख, सुसराकोलाभ, आदिबातोका भि विचार करना.

इतिद्वितीय धनविवेकटीका समाप्तः

अथ सहजविवेकः ।

बहुभ्रातृभगिनीयोग.

लग्नलग्नेशान्यतरत दृयावगे केन्द्रारेज्ये बहुभ्रातरः केतौ-
तुबहु भगिन्यः ॥ १ ॥
सोत्थेशे स्वर्क्षेसौम्यदृष्टे भ्रातृमान् ॥ २ ॥
सोत्थपे सशुभेकेन्द्रे भ्रातृसुखम् ॥ ३ ॥
सोत्थेशुभैर्युते वा दृष्टे सोत्थपेबलिनिभ्रातृलाभः ॥४॥
भ्रातृपे कारके वा बलिनी शुभसम्बन्धे भ्रातृलाभः॥५॥
गोपुरे सोत्थेशे कारके सिंहासने शुभर्क्षे भ्रातृलाभः ॥६॥
परावते भ्रातृपे केन्द्रे शुभयुतदृष्टे भ्रातृलाभः ॥ ७ ॥
सोत्थपे सौम्यभांशे भ्रातृलाभः ॥ ८ ॥
सोत्थेसोत्थपे बलाढ्ये भ्रातृलाभः ॥९॥
मृदंशादियुते सोत्थपे शुभयुतदृष्टे भ्रातृलाभः ॥ १० ॥

वैशेषिकांशे सोत्थपे शुभयुतदृष्टे भ्रातृलाभः ॥ ११ ॥
पुंभांशे सोत्थकारकेशौ पुंग्रहदृष्टौ भ्रातृलाभे-
वैपरित्येभगिनीलाभो मिश्रे उभयलाभः ॥ १२ ॥

टीका–लग्न तथा लग्नेश से तीसरे और ग्यारवे स्थानमे बुध चन्द्र मंगल गुरु जावे तो बहुत भाइ का सुख होताहै और केतु गया होवे तो बहुत भगिनी का सुख होता है. १

तीसरे भावका स्वामि स्वराशीका होवे शुभ ग्रह देखते होवे तो भाई का सुखवाला होताहै २

तीसरे भावका स्वामि शुभग्रह से युतहोवे और केंद्र (१।४।७।१०) स्थानमे गयाहोवे तो भाई का सुखहोता है ३

तीसरा भाव शुभग्रहो से युतहोवे अथवा शुभग्रहो से दृष्टहोवे तीसरे भावका स्वामि बलवान् होवेतो भाई का लाभहोता है ४

तीसरे भावका स्वामि अथवा भ्रातृकारक बलवान् होवे शुभग्रह से सम्बंध करताहोवे तो भाईकी प्राप्ति होती है ५

तीसरे भावका स्वामि गोपुरांशमे होवे भ्रातृकारक सिंहासनांशमे होवे और शुभग्रह की राशी मे गयाहोवे तो भा॰ की प्राप्ती होतीहै ६

भ्रातृस्थान का स्वामि पारावतांशमे होवे और केंद्र (१।४।७।१०) स्थान मे स्थितहोकर शुभग्रह से युत दृष्टहोवेतो भाई का लाभ होताहै ७

तीसरे भावका स्वामि शुभराशी और शुभराशी के नवांशमे होवेतो भाई का लाभ होताहै ८

तीसरे स्थानमे तीसरेभावका स्वामी गयाहोवे बलवान् होवता भाई का लाभहोता है ९

तीसरे भावका स्वामि मृदंशादिक से युतहोवे और शुभग्रह से युत दृष्ट होवेतो भाई लाभ होताहै. १०

तीसरे भावका स्वामि वैशेषिकांशमे होवे शुभग्रहसे युतदृष्ट होवेतो भाई का लाभ होताहै ११

तीसरे भावका स्वामि और भ्रातृकारक ग्रह ये दोनो पुरुषराशी (१।३।५।७।९।११) और पुरुषराशी के नवांशमे गये होवे इनको पुरुषग्रह (र. मं. गु) देखते होवेतो भाईका लाभहोवेगा और इनसे विपरीत

होवे अर्थात् दोनोग्रह स्त्री राशी और स्त्री राशी के नवाशमे गये होवे और इनको स्त्री ग्रह (चं. शु. श.) देखते होवेतो भगिनी का लाभ होवेगा। और मिश्रग्रह देखते होवे मिश्रराशि नवाशमे दोनो ग्रहगये होवे तो दोनो का (भाई बहनका) लाभ होवेगा १२

भ्रातृ भगिनी संख्या विचार.

मोत्थराश्यंश वशाद्भ्रात्रादि संख्या ॥ १३ ॥
सोत्थगग्रह स्यांशका भ्रात्रादि संख्या ॥ १४ ॥
सोत्थेशकारयुत भांशवशाद्भ्रातत्संख्या ॥ १५॥
सोत्थेशयुतभांशवशा त्तत्संख्या ॥ १६ ॥
स्त्री खेटैर्धर्मगै भगिन्यो नृखेटैर्भ्रातरः ॥ १७ ॥
इज्यौधने कन्यायांराहौ भ्रातृत्रयम् ॥ १८ ॥

टीका–तीसरे स्थानमे जितनी राशीहोवे वा जितने नवांश गये होवे उत्तनेहि भाई बहन की संख्या जानना १३

तीसरे भावमे गयेहुवे ग्रहके नवाश की संख्या के अनुसार अर्थात् जितने नवाशगये होवे उतनेहि भाई बहन की संख्या जानना १४

तीसरे भावका स्वामि और कारक ये दोनो जितनी संख्याके राशी अथवा नवाशमे होवे उतनीही संख्या भाई बहनकी जानना १५

तीसरे भावका स्वामि जितनी राशी और नवांशमे गयाहोवे उसके वशात्भाईबहन की संख्या जानना १६

नवमे भावमे जितने स्त्री ग्रह गयेहोवे उतनीही संख्या बहिन जानना और जितने पुरुषग्रह गयेहोवे उतनीही संख्या के भाई जानना यदिग्रह वक्रअथवा उच्चराशी के होवेतो तीनगुनी संख्या जानना एवं स्वक्षेत्री होवेतो द्विगुण संख्या जानना ऐसेहि नीच शत्रुक्षेत्री होवेतो आधी संख्या जानना १७

बुध गुरु धनभावमे गयेहोवे और कन्याराशीका राहु होवेतो तीन भाई जानना १८

भ्रातृहीनयोग.

विक्रमेशारौ त्रिकस्थौ भ्रातृहीनः ॥ १९ ॥
षष्टेसोत्थपारौ पापभगौ पापयुतौवा भ्रावरउत्पन्ननश्यंति२०
भ्रातृकारके नीचर्क्षांशे पापदृष्टे दुःषष्ट्यंशे भ्रातृहानिः २१
सोत्थेपापयुत दृष्टे भ्रातृहानिः ॥ २२ ॥
भ्रात्रीशेपापांतरे भ्रातृहानिः ॥ २३ ॥
पपांतरेसोत्थे नीचखेटान्विते वा शुभादृष्टे भ्रातृहानिः २४
सोत्थपांशेशे षष्ठे नीचास्तारिगे भ्रातृहानिः ॥ २५ ॥
भ्रातृकारके पापान्तरे भ्रातृहानिः ॥ २६ ॥
भ्रातृपे सोत्थे क्रूरषष्ट्यंशे पापदृष्टे भ्रातृहानिः ॥ २७ ॥
सहजेशांशेशेश्वरांशेशेषष्टे भ्रातृहानिः ॥ २८ ॥
सोत्थेशांशेश्वरांशेशे नीचास्तारिभेभ्रातृहानिः ॥२९॥
सोत्थेपे वा कारकेत्रिके पापेक्षितयुतेस्वोच्चेवा भ्रातृहानिः३०
सोत्थगैःपापैर्बल्ये भ्रातृहानिः ॥ ३१ ॥
सोत्थपेतत्कारके वा पापैर्युते वा भ्रातृहानिः ॥ ३२ ॥
सिंहेकेंद्रे भ्रातृहानिः ॥ ३३ ॥
धनगाःपापाःसहजेराहौ भ्रातृहानिः ॥ ३४ ॥
भौमात्सोत्थेपापे भ्रातृसुखंन ॥ ३५ ॥

टीका–तीसरे भावका स्वामि और मंगल ये दोनु ६।८।१२ स्थानमे येहोवेतो भ्रातृहीन होवे १९

तीसरे स्थानका स्वामि और मंगल ये दोनोग्रह छठेस्थानमे पापकी राशीकेहोवे अथवा पापग्रहसे युक्त होवेतो भाई उत्पन्नहोके नाश २०

भ्रातृकारकग्रह नीचराशी तथा नीचराशी के नवांशमे होवे, पापग्रह से दृष्टहोवे दुष्ट षष्ट्यंश में होवे तो भ्रातृहानि होवे २१
तीसरा भाव पापग्रह से युत दृष्टहोवे तो भ्रातृहानि होवे २२
तीसरे भावका स्वामि पापग्रहाके मध्यमे (बीचमे) होवेतो भ्रातृ हानिहोवे २३
तीसरा भाव पापग्रहो के बीचमेहोवे नीचराशीमे गयेहुवे ग्रहसे युत होवे अथवा शुभग्रहोसे अदृष्टहोवेतो भ्रातृहानी होवे २४
तीसरे भावके स्वामिका नवांशका स्वामी छठेस्थानमे नीच अस्त तथा शत्रुराशी मे गया होवे तो भ्रातृहानि होवे २५
भ्रातृकारक ग्रह पापग्रहो के बीचमे होवेतो भ्रातृहानिहोवे २६
तृतीयेश तृतीयभावमे पापग्रहोंसे दृष्टहोवे वा क्रूरषष्ट्यंशमेहोवे तो भाइयाका नाशहोवे २७
तृतीयेश के नवांशके स्वामीका नवांशका स्वामी छठेस्थान में ...याहोवे तो भ्रातृहानिहोवे २८
तृतीयेश के नवांशका स्वामी जिसराशी के नवांशमे होवे उसका स्वामी ...च अस्त तथा शत्रु ग्रह की राशिमे गयाहोवेतो भ्रातृ हानी होवे २९,
तीसरे भावका स्वामि अथवा कारकग्रह त्रिकस्थान (६।८।१२) में ...पग्रह सेयुक्त दृष्टहोवे अथवा अपनी उच्चराशिमे स्थितहोकेभी ...।८।१२ स्थानमे पापग्रसे युक्तदृष्टहोवेतो भ्रातृहानी होवे ३०
तीसरे भावमे पापग्रहोका योग अधिक होवेतो बाल्यावस्थामे भ्रातृ ...ानि होवे ३१
तीसरे भाव का स्वामी अथवा भ्रतृकारकग्रह पापग्रहों से युत होवेतो भ्रातृ हानिहोवे ३२
सिंहराशी का सूर्य नवमे होवेतो भ्रातृहानिहोवे ३३
धनभावमे दो तीन पापग्रह गयेहोवे और तीसरे भावे राहु होवेतो भ्रातृ हानिहोवे ३४
मंगल से तीसरे स्थानमे पापग्रह गये होवे तो भाई का सुख नहीहोवे३५

अनुजोत्पत्तियोग.

लग्नांत्यगौपापौ अनुजोत्पत्तिः ॥ ३६ ॥

टीका–लग्न और बारमे भावमे पापग्रहगये होवे तो छोटे भाईका जन्म होवे ३६

अनुजहीनयोग.

सोत्थेमंदे भौमदृष्टे ऽनुजहीनः ॥ ३७ ॥

टीका–तीसरे भावमे शनि जावे उस्को मंगल देखता होवेतो छोटा भाई नहींहोवे कदाचित होवेभीतो जीवित नहींरहे ३७

भ्रातारोगीयोग

महजेऽज्ञ वर्गे भौमदृष्टे भ्रातारोगी ॥ ३८ ॥

टीका—तीसरे भाव मे चंद्रमाका वर्ग अधिक होवे और उसको मगल देखता होवे तो भाई रोगी रहे ३८

भ्रातृत स्नेहयोग

सोत्थांगेशौमित्रे भ्रातृस्नेहः शत्रूचेद्वैरम् ॥ ३९ ॥

टीका—तीसरे भवका स्वामी और लग्न का स्वामी येदोनो ग्रह परस्पर मित्र होवेतो भाई के साथ मित्रता रहेगा और येदोनो परस्पर शत्रुग्रहहोवे तो भाइ केसाथ शत्रुता रहेगा ३९

राजप्रेष्ययोग.

अंशे रविशुक्रदृष्टे राजप्रेष्यः ॥ ४० ॥

अंशात्खे शुद्दष्टयुते राजप्रेष्यः ॥४१ ॥

टीका–करकाश लग्नको रविशुक देखतेहोवेतो राजाकी नोकरी करने वालाहोताहै ४०

कारकाश लग्नसे दशम भाव शुभसेयुतदृष्ट होवेतो राजाकी नोकरी करने वाला होताहै ४१

विवरण–हलकारा, चपराशी, सिपाही, हवालदारको, आदिले नीचे-दर्जेके मुत्सद्दीगिरी की नोकरी करनेवालोमेसे कोइभी काम करने वालेको प्रेष्यकहतेहे ।

भृतकयोग ।

सुर्यारमंदैः शुभदृष्टिहीनैः कर्मगैर्भृतकः ॥ ४२ ॥

मन्दांशे नीचभेशुक्रे व्ययेचंद्रार्कौ भृतकः ॥ ४३ ॥

दशमगैः पापै सौम्या दृष्टैर्भृतक ः ॥ ४४ ॥

टीका-सूर्य, मंगल, शनि, येतीनो दशमे भावमे जावे और इनको शुभ ग्रहनही देखतेहोवे तो कोई भीतरहकी मजूरी करनेवाला होताहै ४२

नीचराशी का शुक्र शनिके राशी के नवांशमे होवे और चद्र सूर्य बारवेस्थनमे गयेहोवेतो कोईभीतरहकी मजूरी करनेवाला होताहै ४३

दशमे भावमेदोतीन पापग्रहजावे औरउनको कोई शुभग्रहनही देखताहोवे तो कोईभी तरहकी मजूरी करने वालाहोताहै ४४

दासान्वितयोग

पष्टेशेमाने खेशेमन्दयुत केन्द्रे दासान्वितः ॥ ४५ ॥

राज्ये शुभदृष्ट्याधिक्ये दासान्वितः ॥४६ ॥

टीका-छठेस्थानका स्वामीदशमे भावमेहोवे दशमेभावकास्वामि शनीसे युतहोवे केन्द्र(१।४।७।१०)स्थानमें गयाहोवेतो नोकर चाकरोसे युतहोवे ४५

दशमे भावपर शुभग्रहो कीदृष्टि अधिकहोवतो नोकर चाकरो से युतहोवे ४६

बहुदासान्वितयोग.

कर्मेशांशेशे मंदे षष्टपसंबंधे बहुदासान्वित : ॥ ४७ ॥

नृपेर्के शुभकर्मपदृष्टे बहुदासान्वित : ॥ ४८ ॥

टीका-दशमे भावके स्वामिके नवांशकास्वामिशनि छठे भावके स्वामिसे संबंध करताहोवेतो बहुतनोकरोसेयुतहोवे ४७

दशमे स्थानमे सूर्य होवे औरउसको दशमेस्थान का स्वामि शुभग्रह देखताहोवेतो बहुत दासो (नोकरो) वालाहोताहै ४८

विक्रमीयोग.

सहजे शुभ दृष्ट्याधिक्ये वा पापयुते वा सहजपे बलाढ्यं विक्रमी ॥ ४९ ॥

सहजपे केन्द्र कोणे विक्रमी ॥ ५० ॥

सोरथांगेशयोगे विक्रमी ॥ ५१ ॥

टीका–तीसरे भावपर शुभग्रहोंकि अधिक दृष्टि होवे १ अथवा तिसरे भावमें पापग्रह युतहोवे २ अथवा तिसरे भावका स्वामी बलवान होवेतो पराक्रमी होताहै ॥ ४९ ॥

तिसरे भावका स्वामी केंद्रकोण (१।४।७।१०।९।५) स्थानमे जावे तो पराक्रमी होताहै ॥ ५० ॥

तीसरे भावका स्वामि और लग्नका स्वामि इन दोनो का योगहोवे (दोनो अेक राशीमे ५ अंश के अंतर से अधिक अंतर पे नहीहोवे) तो पराक्रमी होताहै ॥ ५१ ॥

प्रसिद्ध कर्मा जीवी योग

अंशे मंदे प्रसिद्ध कर्मा जीवी ॥ ५२ ॥

टीका–कार काश लग्नमें शनि गयाहोवे तो प्रसिद्ध कर्म करके जीवन व्यतीत करने वालाहोवे ॥ ५२ ॥

काष्ट पाषाणादि विक्रेता योग

षष्टेशे सोत्थे काष्ट पाषाणादि विक्रेता ॥ ५३ ॥

टीका–छठे स्थानका स्वामि तीसरे भावमे जावेतो लकडीवा लकडी का वनाहुवा सामान और पाषाण (पत्थर) वगेरा का सामान वेचनेवाला होताहै (स्टेशनरी सामान वचनेवाला भी इसी योगमे होताहै) ५३

भिक्षुकयोग

मेषचंद्रे भौमदृष्टे भिक्षुकः ॥ ५४ ॥

चंद्रे शुभदृग्धीने दासोथवा भिक्षुकः ॥ ५५ ॥

सर्वे ग्रहे नीच मूढांशगैः कर्मान्यगे भिक्षुकः ॥ ५६ ॥

अंत्ये गुरौ केंद्रेशानो लग्नेब्जे भिक्षुकः ॥ ५७ ॥

टीका–मेषराशी मे चद्रमाहोवे उसको मगल देखता होवेतो भिक्षुक (भीखमाग के पेटभरने वाला) होता है ५४ ॥

चद्रमाको शुभग्रह नहीदेखत होवतो दास अथवा भिक्षुक होताहै ५५

सर्वग्रह नीचराशि अथवा नीचराशिके नवांशके तथा अस्तक होवे और दशमे स्थानके विना दूसरे कोई भी स्थानमे जावेतो भिक्षुक होताहै ॥ ५६ ॥

बारमे भावमे गुरु, केंद्रमे शनि, लग्नमे चंद्रमा गयाहोवेतो (भिक्षुक) भीक्षमांगकेपेट भरने वालाहोताहै ॥ ५७ ॥

निंद्यकर्मा जीवी तथानीच कर्माजीवीयोग.

चन्द्राद्धेनपुत्रेजीवे छमेशुभे वा पापेनिंन्द्य कर्माजीवी५८

एकस्मिन्ग्रहे मित्रभगेपराजीवी ॥ ५९ ॥

राज्येङ्गेशे त्रिकोणार्थे मन्देपापैर्मृत्युगै नीचवृत्याजीवी ६०

टीका–चंद्रमासे दूसरे अथवा पांचमेंस्थानमे गुरुहोवे, और आठमे स्थानमे शुभ अथवा पापग्रह गयाहोवेतो निन्द्यकर्मकरनेसे आजीविका होवे ॥ ५८ ॥

एकभीग्रह अपने मित्र ग्रह की राशिमे गयाहोवेतो पराजीवी अर्थात् दूसरेके आधारपर नीर्वाहचलाने वालाहोताहै ॥ ५९ ॥

लग्न का स्वामि दशमे स्थानमे और २।५।९ स्थानमे शनि और आठमे स्थानमे पापग्रहगये होवेतो नीचवृत्तीके कर्मसे जीवननीर्वाह करने वालाहोवे ॥ ६० ॥

पित्रादितःअर्थाप्तियोग.

लग्नाद्वाचंद्रा दर्काद्यैर्दशमगैः पितृ जननी शत्रुमित्रभ्रातृ स्त्री भृत्ये भ्योऽर्थाप्तिः ॥ ६१ ॥

टीका–लग्नसे अथवा चंद्रमासे दशमे स्थानमेंसूर्य गयाहोवेतो पितासे, चंद्रमाहोवेतो मातासे, मंगलहोवेतो शत्रुसे, बुधहोवेतोमित्रसे, गुरुहोवेतोभ्रातासे, शुक्रहोवेतोस्त्रीसे, शनिहोवेतानाकरचाकरसे, धनकी प्राप्ति होतीहै ६१

सारावली में विशेषफल इसीप्रकार लिखाहै

चंद्रसे दशमे सूर्य होवेतो—सिद्धारंभ, धनसमृद्ध, उत्तमसत्व, नृपति, ज्ञानअथवान् पुष्टदेहहोवे.

" " भौमहोवेतो—साहसनिरत, अत्यंतवनिवासी, विषयलुब्ध, क्रूर निषादचरितहोवे.

" " बुधहोवेतो—विद्वान, धनवंत, बहुश्रुत, नृपतिसंमत, ख्यात, शिल्पज्ञ, प्राज्ञ, होवे.

चंद्रसे दशमें गुरुहोवेतो—सिद्धार्थ, धार्मिक, धनसमृद्ध, उत्तमचरित.
नरेंद्रसचिव, प्रख्यातहोवे.
" " शुक्रहोवेतो—सुभग, ललितस्वर, वित्तवंत, सिद्धारंभ,
नृपपूजितहोवे.
" " शनिहोवेतो—रोगी, नि:स्व, दु:खान्वित, प्रजाहीन, क्रूरकर्मी,
नित्योद्विग्नमनहोवे.

वृत्तिविचार.

लग्नेन्द्वर्कैर्व्यः खेशस्यांशेश वशाद्वृत्तिंवदेत् ॥ ६२ ॥

टीका– लग्न चंद्र और सूर्य इनतीनो मेसे जो अधिक बलवान् होवे उससे दशम स्थान के स्वामी का नवांश का स्वामि जोग्रहहोवे उसीकधर्मानुसारवृत्ति (धंधा)कहना अर्थात् वह जिन२ धणवस्तुधातु दिशा समय आदिका कारकहोवे उन्हींउन्ही वस्तु ओंके व्यवसाय (धंधाकरने) वालाहोवेगा। कितनेकआमतहैकि धंधेकाविचार" भद्रकाँ स्वपदपतिनवांशनाथवृत्त्या" "कर्मेशस्यनवांशराशिपवशाद्वृत्तिवदेत्" इत्यादिवचनसे रवि चंद्र योंजिस ग्रहके नवांशमेंहोवे उसके धर्मानुसार धंधाकहना, तीसरामतयहहैकि कुंडलीमे लग्नचंद्रमेसे जोबलवान्होवे उससेजोदशमस्थानहै उसकाअधिपति जिसगृहके नवांशमे होवे उसकेधर्म प्रमाणेसधंधाकहना। इनतीनोंमेंसे प्रथमरीति लग्न चंद्र और सूर्य मेंसे जो अधिकबलसम्पन्नहोवे उससेदशमस्थानका अधिपति जिस राशीके नवांशमे हो उसकेस्वामी के धर्मप्रमाणे धंधा कहना यहिपूर्वोक्तकल्पना अधिकआरूढ औरयुक्ति युक्त है अतएव इसिप्रमाणे धंधेकी कल्पनाकरना

ग्रहोंकाधर्म

सूर्यांशे भैषज्य सुगन्धिसुवर्णोर्णा मुक्तामणिपण्येन मंत्रोपदेश रसवाद विनोद मार्गै र्वावृत्तिः ६३

चंद्रांशेशङ्ख मुक्ता प्रवालादि वाणिज्येन कृषि मृद्वाग्विनोद मार्गै राज्याङ्गना श्रयेन वृत्तिः ६४

भौमांशे मनःशिला हरितालहिंगलुकाञ्जनादिभि :खड्गचक्र

कुन्त चापतोमराद्यैः साहसै रिग्निक्रिययास्वबल कियारम्भे धनाप्तिः ॥ ६५ ॥

ज्ञांशेऽक्षरविन्यासेनगणितेन य-त्रयोगेनकाव्येनचित्रपुस्तक पत्रच्छेद बाणमाल्यरचना गन्धयुक्तिप्रभृतिभिर्वृत्तिः ६६

जीवांशे देवब्राह्मण पंडितेभ्यःसुवर्ण लवणांजन गजायाकरेभ्यःक्रियावादेनयज्ञदानतीर्थोपवासगुरुसेवनादिभ्योवृत्तिः६७

शुक्रांशे वज्रमरकत पद्मरागेन्द्र नीलप्रभृतिः रौप्येणलोहै र्गोभिःश्रेष्टमहिषिभिः सुवर्ण गजाश्वव्यापारेण वृत्तिः ६८

शन्यंशे अध्वगमना दिकेन वध्यघातिकया स्वशरीर ताडनाद्येन भारवाहेण स्वकुलानुचित कर्मभिःवृत्तिः ॥६९॥

टीका—लग्नचंद्र तथा सूर्यसे दशम स्थान के स्वामि का नवांश का स्वामि सूर्य होवेतो—वैद्यकी (वैद्य अथवा डाक्टरी कामसे,) अत्तर तेल वगेरा सुगंधी पदार्थोंसे, सुवर्णके लेनदेनसे, ऊनी कपडोंके व्यापार से, मोति मणि वगेरा की दुकान से अच्छी सलाह या रायदेनेसे, घी गुड शक्कर वगेरा षड्रस के व्यापारसे, मुकद्दमेबाजीसे, हसी खुशी के खेल तमाशोंके रस्तेसे अथवा कितनोकका मत है कि इनके शिवाय घास लकडी और धान्यके व्यापारसे वृति होवे ६३

व्यापारसे तलवार चक्र भाला धनुष्य तोमर बन्दूक तोप आदि अस्त्र शस्त्रोंके व्यापारसे साहस कर्मोके करनेसे, अग्नि के सहायतासे होनेवाले सुनार, लुहार, आदिके काम से लड़ाई से वाद विवाद आदि स्वबल क्रियारंभसे तथा कितनेक के मतसे चोरी, सिपाहि, बिजली, सम्बन्धी कामकरने से, रसोई करनेसे, तथा खटीक का काम करने से वृत्ति होवे ॥ ६५ ॥

लग्न चन्द्र अथवा सूर्य से दशमे स्थान के स्वामी का नवांशका स्वामि बुधहोवेतो-सुन्दर अक्षर लिखनेस गणित के कामसे (हिसाबके कामसे), यंत्रकला कौशल्य के काम से कविता करने से ड्राईंग (चित्र लेखन) के कामसे पुस्तककी बंधाई पुस्तकरचनाई आदि कामस पत्रके फुल पत्ती आदि काटके बनानेके कामसे बाणरचना तथा पुष्पके हार गजरे गेंद पंख शय्या आदि रचना के कामस धूप अगरबत्ती उबटना आदि सुगंधी पदार्थोके व्यापार से तथाकितनेक के मतसे वक्तृत्व (व्याख्यान तथा बालनके कामसे) शास्त्राध्ययन और ज्योतिष के धंधासे तथा बुद्धिसामर्थ्यके धंधेसे शिक्षक के कामसे बुकसेलर के कामसे कागद के व्यापारसे वपासन अथवा नेमणुक लेकर रहनेवाला ऐसा धंधा करने से वृत्ति होवे ॥ ६६ ॥

लग्नचद्र अथवा सूर्य से दशमे स्थानके स्वामिके नवांशका स्वामि गुरुहोवेतो-देव ब्राह्मण तथा पंडित के संबंधी देवपूजन यज्ञ याग अनुष्ठान तथा शास्त्रीय पुराण कथा वार्ता व्याख्यानादि धर्मोपदेशक कामसे सुवर्ण लवण सुरमा आदिके तथा हाथी के व्यापारसे भूगर्भस्थ खदानोंके व्यवसायसे वमकाडादि क्रियावारसे दान तीर्थ उपवास गुरु सेवनादि कामस तथा शिक्षक संन्यासी वेदांती योगी हरदास वकील बेरिस्टर सोलीसीटरके कामसे मसलतदार भक्त साधु आहदेदार माजिस्ट्रेटतथा न्यायाधीश के कामसे व लोकोंमे मुख्या आदि के काम से वृत्ति (धंधा) होवे ॥ ६७ ॥

लग्न चद्र तथा सूर्य से दशमेस्थान केनवांश का स्वामि शुक्रहोवेतो-हीरा मरकतमणि पद्मराग इंद्रनीलमणि आदिके व्यापारसे चांदी, लोहा, सोना, सुंदर गो, भैंस, गज, अश्व, आदि के व्यापारसे तथा दूध दही गुड व क्षारपदार्थ के व्यापारसे तथा कितनेक के मतस दारुके

काममे रहने वाला, कपडे सुगंधीपदार्थ व फूल बेचने वाला नाटक मे पार्टलानेवाला अलंकारदागदागीनेबेचना तथातय्यार करनेका धंधाकरनेवाला होवे ॥ ६८ ॥

लग्न चंद्र तथा सुर्य से दशमे स्थान के स्वामिके नवांश का स्वामी शनिहोवेतो-चपरासी हलकारा तथाजिन को रस्तेमे ज्यादा चलना फिरनापडे वैसे कामकरनेवाला, ओहदेदारकेआश्रमें खुन हिंसा व चोरी करने से अपने शरीर को ताडनादि दुःखदेनेसे हमाली मजूरी आदि स्वकुलानुचित कर्म करने सें तथा छापाखाने का मालिक अथवा उनमे नोकरी करनेसे खेती व बागबगीचेका काम करनेसें देवालयमे नोकरी करने से कभी कभी ईश्वरभक्ति मंदिरमेपूजा करनेका और सम्वाद पहुचानेका धंधा करनेवाला होवे ॥ ६९ ॥

पाश्चात्यलोक धंधा के विचार करने मे जन्म कुंडली मे दशमस्थानमें गई हुई राशी तथा बलवान् राशि और राशियोंमे गयेहुवे ग्रहोके धर्मा-नुसार वृत्तिका निर्णय करते है। इनलोगोका कथन है कि मेष, वृषभ, सिंह, व मकर य राशी धातु इमारतबांधना सोनारका काम और यांत्रिकविद्या इनका बोधकरती है.

मिथुन तुल व कुंभ ये तीनो शास्त्रीय राशिये है इसकारण निसकानेसे तर्क, शास्त्र, व बुद्धिचातुर्य का उपयोग विशेषहोवे वेसे काम के करने वाले लोक उत्पन्न करती है.

मेष सिंह धन ये अग्निराशी अग्निसे अथवा वाफसे अथवा विजलीसे चलनेवाले कारखानेका धंधे करनेवाला, हथियारोका कारखाना चलाने वाला लुहार व भयंकर रितिके कामकरनेवालेलोक तय्यार करती है। जब बहोतसे ग्रह इन राशियो मे बलवान् होवे तो ऐसा धंधा करने वाला होता है.

जब बहुतसे ग्रह कर्क वृश्चिक और मीन इन जलराशियोंमें गयेहोवेतो पाणीसरीखी पतलीदवा सोडावाटर लिमोनेट, अर्क, गुलाबजल, लवेंडर और तेरहवार अनेक प्रकारकी दारूबचनेवाला बलालीका धधा करनेवाला तथा मच्छीका वेपारी होताहै.

जो बहुत ग्रह शाब्दीय राशीमे गयेहोवेतो उत्तम पिढ्याम मुस्सद्दी लेखक संपादक अथवा कपडेका वेपारी होवेगा.

जो बहुतग्रह पृथ्वी (वृष कन्या मकर) राशीमेहोयेतो इमारत बांधनेका काम खेतीका काम भूमि संबंधका व्यवसाय करने मे प्रवीण होताहै.

जब बहुत ग्रह मेष सिंह धन इन अग्निराशीमेगये होवेतो लुहार सुतार सोनार कारीगर का कामकरनेसें घोडा वगेरा चतुष्पदका व्यापारी चाबुकसवार ईंजनीयर व लोह का काम करनेवाला दलाल और सेनामे हरके प्रकार की नोकरी करने वाला होताहै।

बुध मंगल व शनि बलवान्होकर एकत्र होवेतो मनुष्य चोर लुटारु बद-माश बे कायदे शिर काम करने वाला बहुत बुरे लोको का अगुआ होताहै.

शुक्र बुध मंगल एकत्र होवेतो खोदाइका बारीक नकाशीका काम करनेवाला चित्र कारीका काम करने वाला कारीगर मनुष्य होताहै.

चंद्र शनीसें दुषित हुवा होवेतो उस मनुष्यने स्वतंत्र धंधाकरना नही पांतीदार होवेतो उसमे आगेहोनानही ऐसा मनुष्यने नोकरी कर-नाहि अच्छाहै इसीमे भाग्योदयहोवेगा.

पश्चात्य ज्योतिषी इसतत्व के आधारपर धंधेकीकल्पना करते है। राशिवग्रह इनका उपरोक्तनत्वानुसार विचार करके लग्न चंद्र व सूर्य सें दशमस्थानगतराशि, उसकास्वामी, उसके नवांशकीराशी, और उसराशी का स्वामि, दशम स्थानस्थग्रह, और अधिक ग्रह जिनराशी धेमे जावे उनका विचार करके, धंधे का विचार देशकाल जाति कुल रिवाज और परिस्थितीको ध्यानमेंरखके करनेसे बहुत करके धंधे की कल्पनाठीक होवेगा।

लग्नाद्दशमेश आगवशाद्यस्मिन्नवांशे वर्तते तदीशोक्तावृत्तिः प्रत्यहं ॥ ७० ॥

अथवा पित्रारिस्वभान्यतरत्रयत्रगतास्तांदृशामित्राऽरिस्वो-द्योगद्वाराधनाप्तिः ॥ ७१ ॥

धनदोर्के स्वतुङ्गे बलिनि स्वविक्रमाद्धनम् ॥ ७२ ॥

लग्नार्थायेषु सौम्ये बलिभि बहुप्रकारे धनाप्तिः ॥ ७३ ॥

इति तृतीय विवेकः

टीका- जन्म लग्नसे दशम स्थान का स्वामी गोचरमे राशि भ्रमण-वशात् जिस समय जिसराशी के नवांशमे होवे उसके स्वामिके धर्मा नुसार प्रायह वृत्ति कहना ॥ ७० ॥

द्रव्यदेनेवाला ग्रह अपने मित्र ग्रहकीराशिमे गयाहोवेतो मित्रद्वारा शत्रु कीराशिमे गयाहोवेतो शत्रुद्वारा स्वराशीमे गया होवेतो अपने उद्योग द्वारा धन प्राप्तिहोतीहै ॥ ७१ ॥

धनदेने वाला सूर्य अपनी उच्चराशिमे गयाहोवे बलवानहोवे तोअपने पराक्रमसे धनकी प्राप्ति होवेगा ॥ ७२ ॥

लग्न धन और लाभ स्थानमे बलवान् शुभ ग्रह गये होवेतो बहुत तरहसे धनाप्ति होवेगा ॥ ७३ ॥

इसके सिवाय पराक्रम, भाइके सालेकापुत्र, भाईकेपुत्रकीस्त्रीका भाई, मामाकापिता, माताकाव्यय, माताकाकाका, माताकीमुसाफरी, माताकीमामी, मित्रकीमामी, मित्रकाकाका, मित्रकाव्यय, पुत्रकेपुत्र-कीस्त्री, पुत्रकालाभ, शत्रुकापिता, सालेकीस्त्री, स्त्रीकाभाग्य, नोकर-चाकर, उरुस्थल, पिताकारोगशत्रु, दादीकाभाई, दादाकामान, आदिकाविचारभी तीसरे भावसेहीकरना।

इति तृतीय विवेक टीका समाप्ता।



अथचतुर्थविवेकः

मातृदुग्धशोषयोग.

वृश्चिकांशे मातृदुग्धशोषः ॥ १ ॥

सोत्थपेत्रिके सचन्द्रेपरस्त्री स्तन्यपानं ॥ २ ॥

टीका–ज्यारकांश लग्न वृश्चिकराशीका होवेतो माताका दूध सूकजावे अर्थात् माताके दूध कमतीउतरे ॥ १ ॥

तीसरे भावका स्वामी ६।८।१२स्थान में होवे और चंद्रमा संयुक्त होवेतो परस्त्रीका स्तनपानकरके परवरीश होवेगा ॥ २ ॥

मातृसुख नाशयोग

खेकुजेष्टमेजीवे बलाढ्ये मातृ सुखन ॥ ३ ॥

षष्ठेष्टमेचंद्रे स्तेभौमे सपापे मातृ सुखंन ॥ ४ ॥

शुक्रे वाचंद्रेपापान्तरे पापयुतदृष्टे मातृसुखंन ॥ ५ ॥

सुखे सुखेशे वापापांतरे पापयुतदृष्टेवा मातृसुखंन ॥ ६ ॥

चंद्राद्स्वे सपापे शुक्रे मातृसुखंन ॥ ७ ॥

मंदे पापयुते पापर्क्षे मातृसुखंन ॥ ८ ॥

पुत्रेचंद्रे मातृसुखंन ॥ ९ ॥

चन्द्रारौखे धर्मगा मातृसुखंन ॥ १० ॥

सपाप चंद्रेस्ते मातृसुखन ॥ ११ ॥

गुरावंगे धनेमन्दे राहौयूने मातृसुखंन ॥ १२ ॥

जीवेङ्गेर्थेमंदे सोत्ये राहौ माता नजीवति ॥ १३ ॥

सोत्येस्तर्के लग्नेभौमे माता नजीवति ॥ १४ ॥

पापांतरेचंद्रेवाचंद्रात्सुर्येनगस्थाः पापामाता नजीवति १५

सुखे मंदे पाप दृष्टे शीघ्र मातृ नाशः ॥ १६ ॥

टीका- दशमे भावमें मंगल आठमे स्थानमे बलवान् गुरुहोवेतो मातःका सुखनहीं होवे ॥ ३ ॥

छठे अथवा आठमे स्थानमे चंद्रमा होवे और पापग्रह संयुत मंगल सातमे गया होवेतो मातःका सुखनहीं होवे ॥ ४ ॥

शुक्र अथवा चंद्रमा पाप ग्रहोंके बीचमें होवे अथवा पाप ग्रहोंसेयुत दृष्ट होवेतो माताकासुखनहीहोवे ॥ ५ ॥

सुखेश सुख भावमे गया होवे अथवा सुखेश पाप ग्रहोंके बीचमें होवे वापापग्रहोंसे युतदृष्ट होवेतो माताका सुख नहींहोवे ॥ ६ ॥

चंद्रमासे सातमे स्थानमे पापग्रहसेयुतशुक्र गया होवेतो माताकासुख नहीहोवे ॥ ७ ॥

शनि पापग्रहोसे युतहोवे और पाप ग्रहकी राशी मेंगयाहोवेतो माताका सुख नहीहोवे ॥ ८ ॥

चंद्रमा पांचमे स्थानमे गयाहोवेतो माताका सुख नहीहोवे ॥ ९ ॥

चंद्र और मंगल येदोनो नवमे अथवा दशमे भावमे गयेहोवेतो माता कासुख नहींहोवे ॥ १० ॥

पाप ग्रह सेयुत चंद्रमा सातमे स्थानमे गयाहोवेतो माताका सुख नहींहोवे ॥ ११ ॥

लग्नमें गुरू धनमें शनि सातमेराहु होवेतो माताका सुखनहीहोवे १२

लग्नमेगुरु धनमेशनि तीसरे स्थानमेराहु गया होवेतो माता नहींजीवे ॥ १३ ॥

तीसरे अथवा सातमे स्थानमे सूर्य और लग्नमें मंगल गयाहोवेतो मातानहींजीवे ॥ १४ ॥

पापग्रहाके बीचमे चंद्रमा होवे अथवा चंद्रमासे चौथे औरसातमे स्थानमें पापग्रह गयेहोवेतो माता नहींजीवे ॥ १५ ॥

सुख (४) स्थानमे शनि पापग्रहसे दृष्टहोवेतो शीघ्र माताका नाश होवे ॥ १६ ॥

मातुर्दीर्घायुयोग.

सुखेमदे शुभदृष्टे चिरेण मातृनाशः ॥ १७ ॥

सुखेशुभेकारकेशुभयुतेबलाढ्येवासुखेमातुर्दीर्घायुः १८

चंद्रे बलाढ्ये वा शुक्रे शुभयुतदृष्टे मातुर्दीर्घायुः ॥१९॥

शुक्रे वाचन्द्रे शुभांशे केन्द्रे मातुर्दीर्घायुः ॥ २० ॥

सुखपांशेशांशपे के द्रे बलाढ्ये मातुर्दीर्घायुः ॥ २१ ॥

टीका– चोथेस्थान मे शनि शुभ ग्रह से दृष्टहोवेतो माताका नाश-बहुत वर्षो पीछे होवे ॥ १७ ॥

चतुर्थ भावमे शुभग्रह होवे बलवान्मातृकारक ग्रह शुभग्रहसंयुत होवे अथवा चद्रमातृ कारकग्रह सुखस्थानमें गयाहोवेतो माता दीर्घायु होवे ॥ १८ ॥

चद्र बलवान् होवे अथवा शुक्र शुभग्रहसे युत दृष्ट होवेतो माता दीर्घायुहोवे ॥ १९ ॥

शुक्र अथवा चद्रमा शुभग्रहकि राशिके नवांशमे होवे और केंद्र (१।४।७।१०) स्थानमे गयाहोवेतोमाता दीर्घायुहोवे ॥ २० ॥

चतुर्थ स्थानके स्वामि केनवांशका स्वामी जिसग्रहके नवांशमेहोय वहग्रह बलवान् होकर केंद्र (१।४।७।१०) स्थानमे जावेतोमाता-दीर्घायुहोवे ॥ २१ ॥

पिता माता सहैव मृत्यु योग

लग्नाम्बुधर्मेशास्त्रिकोणकेन्द्रगाःपितामात्रासहैवम्रियते २२

टीका–लग्न चतुर्थ और नवम स्थानके स्वामि १।४।५।७।९।१० इनस्थानोंमेगये होवेतो पिताकिमृत्यु माताके साथहीहोवे ॥ २२ ॥

मातृ वधयो

रात्रौ चंद्रात्रिकोणे मन्दे मातृवधः ॥ २३ ॥

टीका रात्रिके समय जन्महोवे और चंद्रमासे ९।५ स्थानमे शनि गयाहोवेतो माताका वधहोवे ॥ २३ ॥

माता पतिव्रता योग

सुखेशेङ्के बलाढ्ये माता पतिव्रता ॥ २४ ॥

सुपस्ने वैशेषिकांशे शुभदृष्टे माता पतिव्रता ॥२५॥

तुर्येशे शुभार्कदृष्टे माता पतिव्रता ॥ २६ ॥

टीका– लग्नमे बलवान् सुखेश होवेतो माता पतिव्रता होवे ॥ २४॥

सुखेश वैशेषिकांशमें होवे शुभग्रहों से दृष्ट होवेतो माता पतिव्रता होवे ॥ २५ ॥

चतुर्थेश शुभग्रहहोवे उसको शुभग्रह और रवि देखता होवेतो माता पतिव्रता होवे ॥ २६ ॥

माता जारिणियोग.

षष्ठेश कुजेनयुते चंद्रेसुखे पापदृष्टे माता जारिणी ॥२७॥

सुखपे राहुयुते सपापे माता जारिणी ॥ २८ ॥

टीका– षष्ठेश और मंगल इनदोनो से युत चंद्रमा सुख स्थानमें जावे और इनको पाप ग्रह देखते होवेतो माता जारिणी (पति व्रत धर्महीना) होवे ॥ २७ ॥

सुख स्थानका स्वामि राहु और पापग्रहोंसे युत होवेतो माता जारिणी होवे ॥ २८ ॥

मातृ स्नेहयोग.

लग्न सुखेशा वन्योन्यमित्रे शुभेक्षित युते मातृस्नेहः २९

तुर्येशे केन्द्रे लग्नेशदृष्टे वाशुभ दृग्युते मातृस्नेहः ३०

टीका–लग्न और सुख स्थान कास्वामि येदोनो परस्पर मित्रग्रह होवे और शुभग्रहों सेयुततथा दृष्टहोवेतो मातासेप्रीति अच्छिरहेगा २९

चतुर्थेशकेंद्र (१।४।७।१०) स्थानमें गया होवे और उसको लग्नेश देखताहोवे अथवा केंद्रमें गया हुवा सुखेश शुभग्रहसे युत दृष्ट होवेतो मातासे स्नेह रहेगा। इनयोगोंके विपरीत होवेतो मातासे वैर होवेगा ऐसा जानना ॥ ३० ॥

द्विवि मातायोग.

तुर्येपापे द्विव्रामातरः सौम्ये एका ॥ ३१ ॥

टीका– चतुर्थ स्थानमें पापग्रहगया होवेतो दोतीन माताहोवे और शुभ ग्रहगया होवेतो एक माता होवे ॥ ३१ ॥

चतुष्पदसुखयोग।

वृषांशे चतुष्पदाः सुखदाः ॥ ३२ ॥

सुखे शुभ दृष्टवाधिकपे चतुष्पदाः सुखदाः ३३

टीका-चारवांश लग्न वृषभ राशिका होवेतो चतुष्पद (गाय भैंस घोडा वगैरा) का सुख होयगा. ॥ ३२ ॥

सुखस्थानपर शुभग्रहाकि दृष्टि अधिक होवेतो चतुष्पदका सुख होवगा ॥ ३३ ॥

बाल्येसुखीयोग.

जीवेकेन्द्रेऽङ्गेशे पारावते बाल्येसुखी ॥ ३४ ॥

धर्मेशुभेऽङ्गेपापे धेशुभेस्वर्लोके बाल्येसुखी ॥ ३५ ॥

टीका-गुरु कद्रस्थानमे होवे और लग्नका स्वामि पारावतांशमे गयाहोवेतो बाल्यावस्थामे सुखी रहगा ॥ ३४ ॥

नवम भावमे शुभग्रह लग्नम पापग्रह धनभावमे शुभग्रह देवलोकांश मे होवेतो बाल्यावस्थामे सुखीरहगा ॥ ३५ ॥

षोडशाब्दात्परंसुखी योग.

शुभर्क्षेऽङ्गेशे शुभेक्षिते वा गोपुरेषोडशाब्दात्परंसुखी ३६

टीका-लग्नका स्वामि शुभग्रहकी राशिमेजावे शुभग्रहो स दृष्टहोवे अथवा गोपुरांशमे गयाहोवेतो १६ सालावधकी उमर होनेबाद सुखी होवगा ॥ ३६ ॥

विंशतिवर्षोर्ध्वंसुखीयोग

लग्नेशेचापे वा लग्नेशांशेपे वा तथास्थितेलाभेशे विंशतिवर्षेभ्यः परंसुखी ॥ ३७ ॥

टीका-लग्न कास्वामि धनराशिका होवे १ अथवा लग्नस्थानक नवांशका स्वामि धनराशिका होवे २ अथवा लाभश वा लाभ स्थानक स्वनिवांशनवांशका स्वामि धनराशिम गयाहवेतो (इनतीनोंयोगो-मेसकोइ भीअक योगहोवतो) वीस वर्षकी उमर होनेके बादसुखी होवेगा ॥ ३७ ॥

त्रिंशद्वर्षतः परंसुखी योग।

लग्नेशांशेशेकेन्द्रे तथालाभे शांशेशे वा त्रिंशद्वर्षतः परंसुखी ॥ ३८ ॥

टीका- लग्नके स्वामीका नवांशका स्वामी केंद्र (१।४।७।१०) गया होवे १ तथा लाभ (११) स्थानके स्वामीका नवांशका स्वामि केंद्र (१।४।७।१०) मेंगयाहोवेतो २ तीस वर्षकी उमर होजाने के पश्चात् सुखी होवेगा ॥ ३८ ॥

आद्यवयसिसुखयोग.

लग्नादातुरीयगाः शुभाआये वयसि सुखम् ॥ ३९ ॥

लग्नेशुक्रे पूर्वार्द्धसुखी ॥ ४० ॥

केंद्रस्था गुरुजन्मतनुपा यौवने सुखी ॥ ४१ ॥

टीका- जन्मलग्नसेंचतुर्थभावपर्यंत (१।२।३।४) शुभग्रह गयेहोवेतो उमरके आदिभागमें सुखीहोवेगा ॥ ३९ ॥

लग्नमेंशुक्र गयाहोवेतो आयुके पूर्वार्द्धमें सुखीरहेगा ॥ ४० ॥

केंद्र(१।४।७।१०) स्थानमें गुरु और जन्मलग्नका स्वामिगयाहोवेतो यौवनावस्थामें सुखीरहेगा ॥ ४१ ॥

बाल्येदुःखीततःसुखीयोग.

पापाधने केन्द्रेशुभे लग्नेशउत्तमांशे बाल्येदुःखितत : सुखी ॥ ४२ ॥

टीका- धनभावमें पापग्रह, केंद्र (१।४।७।१०) मेंशुभग्रह गयेहोवे और लग्नेश उत्तमांशमें होवेतो बालपणेमें दुःखीरहे और पीछेसुखीरहेगा. ॥ ४२ ॥

मध्यवयसीसुखीयोग.

पञ्चमादाष्टमगाःशुभामध्यवयसिसुखी ॥ ४३ ॥

टीका- पंचमस्थानसें आठवेंस्थान पर्यंत (५।६।७।८) सर्वशुभग्रह गयेहोवेतो मध्यावस्था मे सुखीरहेगा ॥ ४३ ॥

आद्यमध्यवयसोसुखीयोग.

शुभवर्गैर्लग्नान्त्यलाभगैः केन्द्रेसिंहासनेजीवे आद्य मध्य-वयसोः सुखी ॥ ४४ ॥

लग्नार्थसोत्थे शुभदृष्टियुते शुभेङ्के जीवेपारावते आद्यमध्य वयसो सुखी ॥ ४५ ॥

टीका– लग्न (१) व्यय (१२) और लाभ (११) स्थानमेसर्वशुभ ग्रहगयेहोवे और सिंहासनांशमे गयाहुवा गुरु केंद्र (१।४।७।१०) स्थानमेगयाहोवेतो आद्य और मध्यदोना अवस्थामे सुखीरहेगा ४४ लग्नधन और तृतीयस्थान शुभयहोसे युतदृष्टहोवे लग्नमेंशुभग्रहकी राशिहोवेगुरुपारावतांशमे गयाहोवेतो आद्यऔरमध्यदोनोअवस्थामे सुखीरहेगा ॥ ४५ ॥

अंत्यतथामध्यांतवयसोः सुखीयोग.

धर्मादारिःफगाः शुभा अन्त्येवयसिसुखी ॥ ४६ ॥

देवलोकांशेशुक्रे गोपुरेलग्ने शुभदृष्टे मध्यान्त्य वयसोः सुखी ॥ ४७ ॥

टीका– नवमस्थानसे बारमेस्थान पर्यंत (९।१०।११।१२) सर्वशुभ ग्रहगयेहोवेतो अंत्यावस्थामेसुखीहोवे ॥ ४६ ॥

देवलोकांशमे शुक्रहोवे गोपुरांशमे लग्नहोवे औरशुभग्रहसे दृष्टहोवेतो मध्य और अंत्यदोनो अवस्थामेसुखीरहेगा. ॥ ४७ ॥

आजीव सुखीयोग.

वर्गोत्तमेङ्गेशे वा स्वोच्चांशके वा स्वमित्रत्र्यंशे वा शुभयुतदृष्टे आजीवमुखी ॥ ४८ ॥

टीका-लग्नकास्वामी वर्गोत्तमांशमे (जिसराशिकाजन्मकुंडलीमेहोवे उसीराशीका नवांश कुंडलीमेभी) होवेतो १ अथवालग्नकास्वामि अपनिस्वराशि व उच्चराशि केनवांशमेहोवे २ अथवा लग्नकास्वामी अपने मित्रग्रहके द्रेष्काणमे होवे अथवा शुभग्रहो से युतदृष्ट होवेतो आमरण (जीवे जहांतक) सुखी रहेगा ॥ ४८ ॥

सुखीयोग.

शुभेङ्गेशुभदृष्टे पापयोगरहिते सुखी ॥ ४९ ॥

पञ्चसुस्वर्क्षगेषु महासुखी ॥ ५० ॥

पातालेशेजीवदृष्टेसुखी ॥ ५१ ॥
शुभेसुखेसुखी ॥ ५२ ॥
सुखेशेशुभान्वितेसुखी ॥ ५३ ॥
जीवेबलिनी तुंगयुतेसुखी ॥ ५४ ॥
केन्द्रकोणेसशुभेसुखेगे सुखी ॥ ५५ ॥
पातालेशे मृदंशेसुखी ॥ ५६ ॥
लग्नेशाज्जीवे बलिनिसुखी ॥ ५७ ॥
गोपुरांशेऽम्बुपे जीवेचसुखी ॥ ५८ ॥
शुभांशेतुर्येशे धनोपचयेसुखी ॥ ५९ ॥
शुभान्तरेचन्द्रेसुखी ॥ ६० ॥

दुःखी योग.

ज्ञाराव्हर्काः सुतस्था स्तर्येभौमे रन्ध्रेमन्दे दुःखी ॥६१॥

लग्नगाः पापा दुःखी ॥ ६२ ॥

पापे तुर्येजीवे ल्पबलिनिसधनोपिदुःखी ॥ ६३ ॥

सपापे सुखपे ऽबले सधनोपिदुःखी ॥ ६४ ॥

पापांशेम्बुपेनीचगे सधनपुत्रोपिदुःखी ॥ ६५ ॥

सभौमार्काम्बुपे क्रूरांशे शुभदृग्घीनेनित्यं दुःखी ॥६६॥

भौमार्कौनीचारिभागगौ सुखेपापदृष्टौ क्रूरांशेप्रमादा दूहार्थ नाशोदुःखीच ॥ ६७ ॥

रंध्रेशेलाभे बाल्येदुःखी ॥ ६८ ॥

लग्नेर्कजे ष्टमेराहौ षष्टे भौमे दुःखी ॥ ६९ ॥

पापान्तरे चन्द्रे दुःखी ॥ ७० ॥

लग्नेशेन्त्ये खेपापे चंद्रार योगे दुःखी ॥ ७१ ॥

टीका- पंचमस्थानमे बुधराहुऔरसूर्य, चौथेस्थानमेभौम, आठवे-स्थानमे शनि गयाहोवेतो दुःखीहोवे ॥ ६१ ॥

लग्नमे पापग्रहगय होवेतो दुःखीहोवे ॥ ६२ ॥

सुखस्थानमे एकपापग्रहजाव और गुरू अल्पबलीहोवे तोसधन होतेहुवेभीदुःखीहोवेगा ॥ ६३ ॥

सुखस्थानका स्वामि पापग्रहसे युतहोवे औरवहनिर्बलीहोवे तो सधन होतेहुव भी दुःखीहोवे ॥ ६४ ॥

सुखस्थान का स्वामि नीचराशी मे गयाहोवे और पापग्रहकी राशी के नवांशमे होवेतो सधन और पुत्र वाला होतेहुवे भी दुःखीहोवेगा ६५

सुखस्थान का स्वामि पापग्रह केनवांशमेजाव सूर्यमगलसेयुतहोर और शुभग्रहोंसे दृष्टनहीहोवेतोनित्य दुःखीरहेगा. ॥ ६६ ॥

सूर्य और मगल येदोनो नीचशत्रु और पापग्रहकी राशिकनवांशमे

स्थितहोकर सुखस्थानमेंजावे और पापग्रहोंसे दृष्टहोवेतो अपनेप्रमादसे गृह धन आदि का नाशहोवे और दुःखीहोवे ॥ ६७ ॥

अष्टमस्थान का स्वामि ग्यारवे स्थानमे गयाहोवेतो बाल्या वस्थामे दुःखीहोवे. ॥ ६८ ॥

लग्नमेंशनि, आठमेंराहु, छठेस्थानमेंभौम, स्थितहोवे तो दुःखीहोवे६९

पापग्रहोंके मध्यमे चन्द्रमागयाहोवे तो दुःखी होवे ॥ ७० ॥

लग्नेशबारमे स्थानमे, और पापग्रह दशमेस्थानमे, गयाहोवे और चंद्र मंगलका योग कोई भी स्थानमें हुवा होवेतो दुःखी होवे ॥ ७१ ॥

मूषिका मार्जार आदिदुःखदयोग.

मेषांशे मूषिका मांर्जारं दुःखदम् ॥ ७२ ॥

सिंहांशे श्वापदयो दुःखदा ॥ ७३ ॥

कन्यांशे ग्निकणा दुःखम् ॥ ७४ ॥

टीका–कारकांश कुंडलीमे मेष राशिका लग्नहोवेतो मूषिका (चूहे) और बिल्ली दुःखदेवेगे ॥ ७२ ॥

कारकांश कुंडलीमें सिंहराशिकालग्न होवेतो श्वान वगैरा दुःख देवेगे ॥ ७३ ॥

कारकांशलग्न कन्याराशीका होयतो अग्निकेकण (तणख्या) वगैरासे दुःखहोवेगा ॥ ७४ ॥

प्रसादवान्योग.

तुर्यंशाच्चन्द्राच्छो प्रासादवान् ॥ ७५ ॥

तुर्यंशादुच्चग्रहे प्रासादवान् ॥ ७६ ॥

अंशात्तुर्यराव्हर्कजो प्रासादवान् ॥ ७७ ॥

टीका–कारकांश कुंडलीमें चतुर्थस्थानमें चन्द्रशुक्रकायोग होवेतो प्रासाद (राजाओंके महल के समानमहल) वालाहोवे ॥ ७५ ॥

कारकांशलग्नसे चतुर्थस्थानमे उच्चराशीका ग्रहगया होवेतो प्रासाद वालाहोवे ॥ ७६ ॥

कारकांश लग्नसे चतुर्थस्थानमे राहु शनिकायोग होवेतो प्रासाद वाला होवे ॥ ७७ ॥

इष्टिकागृहयोग.

केत्वारौतुर्येशा दिष्टकागृहं ॥ ७८ ॥

टीका–कारकांशलग्नसे चतुर्थस्थानमे केतु मंगल का योग होवेतो ईटसेबनाहुवा मकानहोवे ॥ ७८ ॥

काष्ठगृहयोग.

सुखेशाञ्जीवे काष्ठगृहम् ॥ ७९ ॥

टीका–कारकांश लग्नसे सुखस्थानमे गुरुगयाहोवेतो लकड़ीका मकान (जिस्मे लकड़ीज्यादे लगीहोवे वैसामकान) होवे ॥ ७९ ॥

तृणगृहयोग.

सुखेशा दर्के तृणगृहम् ८०

टीका–कारकांश लग्नसे सुखस्थानमें सूर्यगयाहोवेतो तृणगृह (फूस छायर) होवे ॥ ८० ॥

विचित्रगृहयोग

धर्मपेकेन्द्रे गेहेशेस्वोच्चामित्रगे तुर्येतुंगगेग्रहेविचित्रगृहम् ८१

स्वतुर्येशौ चन्द्रमन्दयुतौ विचित्रवेश्म ८२

टीका–नवमेभावकास्वामी केन्द्र (१।४।७।१०)स्थानमें, चतुर्थस्थान कास्वामी स्वउच्च अथवामित्रराशिका होवे और चतुर्थभावमें उच्च-राशिमे गयाहुवा कोईभी ग्रहस्थितहोवे तो विचित्रगृहहोवे ॥ ८१ ॥

दशम और चतुर्थका स्वामि येदोनो चन्द्रशनिसे युतहोवे तो विचित्रगृहहोवे ॥ ८२ ॥

हर्म्यप्राकारादियुतगृहयोग.

सोरथेसौम्ये तुर्येशेबलिनि गृहेशेशे चलपूर्गे हर्म्यप्राकारादियुतगृहम् ८३*

तुर्यपेसिंहासने गोपुरे मृद्वंशे वा हर्म्यप्राकारादियुतगृहम् ८४

टीका–तीसरेभावमें शुभग्रहहोवे चतुर्थेश बलवान्होवे और चतुर्थस्थानके स्वामिका स्वामि (चतुर्थभावकास्वामिजिसराशिमेगयाहोय उसकास्वामी) पूर्णबलवान्होवे तो देवता,राजा, और ८८२४धनवानोके रहनेयोग्य चोगिर्दकिलेसेवेष्टित उत्तममहल्होवे ॥ ८३ ॥

चतुर्थभावका स्वामि सिंहासनांश गोपुरांश अथवा मृदंशमें गयाहोवे तो राजाओंकेरहनेयोग्य उत्तम महल होवे ॥ ८४ ॥

देविकवेश्मयोग.

गृहेशे पारावते गोपुरे वा चन्द्रगुरुदृष्टे देविकवेश्म ८५

लग्नांबर्थेशा यावन्तः केंद्रकोणेतावन्तो गृहाःशोभनाः ८६

टीका–चतुर्थभावकास्वामि पारावतांशमें अथवा गोपुरांशमें होवे और वह चन्द्रगुरुसे दृष्टहोवे तो देवताओंकेसमान यद्वादेवतायुक्त उत्तम महलहोवे ॥ ८५ ॥

लग्नेशचतुर्थेश और धनेश इन तीनोंग्रहोंमेसे जितनेग्रह केन्द्रकोण (१।४।५।७।९।१०)स्थानमें गयेहोंव उतनेहीगृह अच्छे सुंदरहोवे ८६

गृहलाभयोग.

लग्नेशेम्बुगे सुखेशेङ्गे गृहलाभः ८७

गेहेशेबलाढये केन्द्रे शुभदृष्टे गृहलाभः ८८

सुखेशे वैशेषिकांशे परमोच्चगे गृहलाभः ८९

तुर्यशांशेशपांशेशे केन्द्रे गृहलाभः ९०

लाभार्थेशौ तुर्यतुर्यपे वैशेषिकांशे शुभदृग्योगेवह्वर्थगृहं लभ्यते ९१

टीका–लग्नेशचतुर्थभावमें और चतुर्थेशलग्नमें गयाहोवेतो गृह लाभहोवे ॥ ८७ ॥

चतुर्थेश बलवान्होके केन्द्र (१।४।७।१०) स्थानमें गयाहोवे शुभ ग्रहसे दृष्टहोवेतो गृहलाभहोवे ॥ ८८ ॥

परमोच्चराशिमे गयाहुवा सुखेश वैशेषिकांशमे गयाहोवेतो गृह-लाभहोवे ॥ ८९ ॥

चतुर्थेश के नवांशका स्वामी जिसराशिमें गयाहोवे उसराशी के स्वामी या नवांश का स्वामी केन्द्र (१।४।७।१०) स्थानमें गयाहोवे तो गृहलाभ (घरकालाभ) होवे ॥ ९० ॥

गृहलाभहोवेगा । जोलोग दत्तकगयेहे अथवाजोजानेवालेहे उनकी-जन्मकुंडलीमें इन ७योगोंमेसे अेक दो तीनयोग अवश्यदेखनेमें आवेगा, यदि अेकभी योगनहींदेखनेमें आवे तो जोतिषको झुठामान-नेवालोका कथन सत्यसमझना ।

गृहनाशयोग.

यावन्तः पापाः खाम्बुस्वान्त्यनाथैः सहिता स्त्रिकस्था स्तावन्तोगृहा वन्हिनादह्यन्ते ॥ ९३ ॥
राव्हर्कौंअंशे कुजमात्रदृष्टे गृहदाहः ॥ ९४ ॥
तुर्येशेषष्ठे पापदृष्टेगेहनाशः ॥ ९५ ॥
गेहेशांशेशेषष्ठे गेहनाशः ॥ ९६ ॥
तुर्याङ्गार्थेशा यावत्पापैर्युता स्तावन्तां गेहानांनाशो-नतुशुभदृष्टे ॥ ९७ ॥
केन्द्र केणेर्के गेहे शैथिल्यप्रयुक्त पात भयम् ९८
तुर्येशेरन्ध्रे स्वयमेव गेहं पातयति ९९

टीका–जितने पापग्रह दशम, चतुर्थ,धन, और बारमे, भावके स्वामि-योसे युक्त होके ६।८।१२ स्थानमेगये होवे उतने हीघर अग्निसे जलजा वेगे ७३

कारकांश लग्नम राहु सूर्यगयेहोवे और इनको केवल मंगलही देखता होवे तो अग्निसे घर जलेगा ९४

चतुर्येश छठेभावमें पापग्रह से दृष्टहोवेतो घरका नाशहोवे ९५

चतुर्येश के नवांश का स्वामीछठे स्थानमे गयाहोवे तो घरकानाश-होवे. ९६

चतुर्थ लग्न ओ धन इनतीभाव के स्वामि जितने पापग्रहो से युतहोवे उतनेही घरो का नाशहोवे औरयदि ये शुभग्रहोंसे दृष्टहोवेतो घरकानाशनहीं होवेगा ९७

केन्द्र कोण (१।४।५।७।९।१०) स्थानमें रविस्थितहोवेतो पुराना घरहोनेकेसबबसें पड़नेका भयरहे ९८

चतुर्थेश आठमे भावमें गयाहोवेतो खुदही घरकोपाडताहै ९९

बहुगृहवासयोग

तुर्यतत्पौचरर्क्षे कारके वा तथा बहु गृहवासः १००

टीका–चतुर्थभाव और उसका स्वामि ये दोनो चर राशी के होवे अथवा चतुर्थभावका कारक (चंद्र बुध) चरराशी का होवे तो बहुत घरमे रहनवाला (अकघरमे कभी स्थिर वास नही करने वाला)होवे १००

स्थिरवासयोग

गृहतत्पौ स्थिरे तथा कारके वा स्थिरवासः १०१

शुभषष्ठ्यंशे तुर्ये स्थिरवासः १०२

टीका–चतुर्थभाव और उसकास्वामी येदोनो स्थिराशीके होवे अथवा चतुर्थभावका कारक [चद्रबुध] स्थिरराशीके होवेतो अेकही घरमे स्थिरवास करनेवालाहोवे. १०१

चतुर्थभाव शुभषष्ठ्यंशमे होवे तो अेकही घरमे स्थिरवास करनेवालाहोवे १०२

बहुक्षेत्रवान् योग

खे सुखेशे कर्मेशेम्बुगे बलिनिभौमे बहुक्षेत्रवान् १०३

बलाढ्यौ खाम्बुपौ परस्परसुहृदौ बहुक्षेत्रवान् १ ४

तुर्यतत्पौ शुभयुतौ बहुक्षेत्रवान् १०५

तुर्येशेसुते गोपुरांशे बहुक्षेत्रवान् १०६

टीका· चतुर्थेशदशमेभावमें और दशमेशचतुर्थस्थानमे गयाहोविमगल· बलवानहोवेतो बहुतजमीनवाला (बडाजागीरदार) होवे १०३

दशम और चतुर्थ भावके स्वामी बलवानहोवे और आपसमेदोनो मित्रमहहोवे तो बहुतजमीन वालाहोव १०४

चतुर्थभाव और चतुर्थ भावकास्वामि येदोनो शुभग्रहसेयुत होवेतो बहुत जमीनवालाहोवे १०५

चतुर्थेश पचमभावमें गोपुरादि अंशमे गयाहोवे तो बहुत जमीनवाला (बडाजागीरदार) होवे १०६

क्षेत्राप्तियोग.

बलिन्यङ्गेशेम्बुगे बलिन्यम्बुपेङ्गे शुभदृग्योगे स्वपराक्रमात्क्षेत्राप्तिः १०७

भ्रातृपेण तत्कारकेण वा युते तुर्येशे भ्रातृतःक्षेत्राप्तिः१०८

स्त्रीकारकेम्बुगे क्षेत्रपेद्यूने तयोर्मैत्र्यां कलत्रतःक्षेत्राप्तिः१०९

षष्ठेशेतुर्ये तत्पेषष्ठे षष्ठेशतःक्षेत्रपेधिकबलेशत्रुतःक्षेत्राप्तिः११०

गेहेशेस्वराशौ बलिन्युपचयगेशुभदृष्टे बहुक्षेत्राप्तिः १११

टीका–बलवान्लग्नेशसुखभावमें,औरबलवान्चतुर्थेश लग्नमेंगयाहोवे शुभग्रहसे युतदृष्टहोवे तो अपनेपराक्रमसे जमीनकी प्राप्ती होवे १०७

तृतीयभावकेस्वामीसेअथवातृतीभावकेकारक(मंगल)सेचतुर्थ भाव कास्वामि युतहोवेतोभाईसे जमीनकीप्राप्तिहोवे १०८

स्त्रीकारकग्रह [शुक्र] सुखभावमे औरसुखभावकास्वामी सातवें भावमें गयाहोवे यदोनो परस्परमित्रग्रहहोवेतो स्त्री से अथवा स्त्रीके संबंधसे जमीनकीप्राप्ती होवे. १०९

छठेभावका स्वामि चतुर्थभावमें औरचतुर्थभावकास्वामि छठेभावमें गयाहोवे छठेभावके स्वामीसे चतुर्थेश अधिक बलवान् होवेतो शत्रुसे जमीनकी प्राप्तिहोवै ११०

चतुर्थेश स्वराशिकाहोवे और बलवान्होकर ३।६।१०।११में भावमें- शुभग्रहसे दृष्टहो के गयाहोवे तो बहुतजमीनकी प्राप्तिहोवे १११

क्षेत्रादिनाशयोग

गेहेशेनीचारातिमूढगेपापान्तरेपापदृष्टेक्षेत्रादि नाशः ११२

पापान्तरे कुजे पापदृष्टे क्रूरांशेक्षेत्रादिनाशः ११३

तुर्येशे क्रूरषष्ट्यंशे तुर्येपापे क्षेत्रादिनाशः ११४

तुर्येशेत्रिके क्षेत्रादिनाशः ११५

गेहेशेर्थे सपापे नीचारिभे क्षेत्रादिनाशः ११६
कर्मेशेम्बुगे सपापे क्षेत्रनाशः ११७
क्रूरमृत्युयमायंशे सपेसुखे क्षेत्रनाशः ११८
खेससूर्येम्बुपे राजकोपात् क्षेत्रनाशः ११९
वित्तेशांशेशशिश्वरेणसहितेसपापेम्बुपे राजकोपात्
क्षेत्रनाशः १२०

टीका–चतुर्थेश नीच शत्रु राशीका अथवा अस्तंगतहोवे पापग्रहोंके बीचमें और पापग्रहोंसे दृष्टहोवे तो जमीननायदादका नाशहोवे ११२

पापग्रहोंके मध्यमें मंगलगयाहोवे पापाग्रहोंसे दृष्टहोवे और क्रूरग्रहकी राशिकेनवांशमें होवेतो जमीननायदादका नाशहोवे ११३

चतुर्थेश क्रूरषष्ठ्यंश (पापषष्ठ्यंश) मेंहोव और चतुर्थस्थानमें पापग्रहगयाहोवेतो जमीननायदादका नाशहोवे ११४

चतुर्थेश ६।८।१२में भावमेंगयाहोवेतोजमीनवगैराका नाशहोवे ११५

चतुर्थेश धनभावमें पापग्रहसे युतहोवे नीच तथा शत्रुराशिमें गयाहोवे तो जमीन जायदादआदि सम्पत्तिकानाशहोय ११६

दशमभावका स्वामि पापग्रहसे युतहोके चतुर्थभावमें जावेतो जमीनका नाशहोवे ११७

क्रूर,मृत्यु,यम, आदि दुष्टषष्ठ्यंशमें गयाहुवा दशमभावकास्वामी चतुर्थभावमें गयाहोवेतो जमीनका नाशहोवे ११८

सूर्य और चतुर्थभावकास्वामी येदोनो दशमें भावमेंगये होवेतो राजाके कोपसे जमीनका नाशहोवे (राजाजमीनजप्तकरलेवे) ११९ .

धनेश के नवांशका स्वामी जिसराशिके नवांशमें होवे उसकेस्वामीसे और पापग्रहसे चतुर्थभावका स्वामी युतहोवे तो राजाके कोपसे जमीनका नाशहोवे १२०

भूमिविक्रेतायोग

गेहेशेतुङ्गे थेंशेपापेनीचारिभे भूमिविक्रेता १२१

टीका–चतुर्थेश उच्चराशिमें और नीच तथा शत्रु राशिमे गयाहुवा

धनभावक स्वामि पापग्रहहोवे तो जमीन बेचने वालाहोवे १२१

पुत्रवःमित्रतायोग.

सुताङ्गेशमित्रत्वे पुत्रोमित्रम् १२२

टीका-पंचमेश और लग्नेशके मित्रताहोवेतो पुत्रसे मित्रतारहे १२२

स्त्रीतःप्रीतियोग.

यूनाङ्गेशमित्रत्वे स्त्री मैत्री १२३

टीका-सप्तमेश और लग्नेशके मित्रताहोवेतो स्त्रीसे मित्रतारहे १२३

बहुजनमैत्रीयोग.

सुखाङ्गेशमित्रत्वे बहुजनमैत्री १२४

सुखेशुभदृष्ट्याधिक्येबहुजनमित्रता १२५

टीका-सुखेश और लग्नेशके मित्रताहोवेतो बहुत मनुष्यो से मित्रताहोवे १२४

चतुर्थ भावपर शुभग्रहोंकि दृष्टि अधिकहोवे तो बहुतजनोंसे मित्रताहोवे १२५

सुहृत्पोष्ययोग.

द्वयोर्मित्रक्षेत्रगयोः सुहृत्पोष्यः १२६

टीका- कोइभी दोग्रहमित्रराशिमे गयहोवेतो मित्र का पोषणकरने वालाहोवे १२६

बन्धुपूज्ययोग.

सुखेसौम्ये सौम्यदृष्टे सुखकारकेबलिनि बन्धुपूज्यः १२७

गेहजीवे गेहपे शुभयुते जीवदृष्टे बन्धुपूज्यः १२८

तुर्यस्वाच्चे स्वमित्रभे वा खेटे गुरुदृष्टे बन्धुपूज्यः १२९

त्रिभिस्स्वक्षगे बन्धुपूज्यः १३०

टीका-चतुर्थभावमें गयाहुवा शुभग्रह, शुभग्रह से दृष्टहोवे और सुख कारक[चंद्र बुध]ग्रह बलवान् होवेतो बन्धु वर्गका पूज्य (माननीय) होवे १२७

चतुर्थ भावमें गुरुगयाहोवे चतुर्थभावका स्वामि शुभग्रह से युत और गुरुसे दृष्टहोवे तो बन्धु वर्गकापूज्य (माननीय) होवे. १२८

लग्नेशत्रिक (६।८।१२) स्थानमें गयाहोवेतो शयनका सुखनहीं होवे १४२

लग्नेश नीचराशी का होवे तो शयनका सुखनहींहोवे १४३

लग्नेश शनि गुलिक तथा राहुसंयुतहोवेतो शयन का सुखनहीं होवे १४४

इसकेसिवाय गाडीकेधनकाविचार' पुत्रकाव्यय, पुत्रका मुसाफरी पुत्रकाशयनसुख, स्त्री का पिता, मालिककीस्त्री' द्रव्य, दादाकीराज्य मानव्यपार, दादीकी माताका सुख, इनत्रभानेकाविचार आदिविषय भीचतुर्थभावसेदेखना ।

इतिचतुर्थविवेकस्यटीकासमाप्ता:

अथपञ्चमविवेकः ।

बुद्धिमान्योग.

सुतर्क्षेशुभे शुभदृष्ट युते बुद्धिमान् १

सुतेशेतुङ्गे वा शुभान्तरे बुद्धिमान् २

गुरौकेन्द्रे कोणे बुद्धिमान् ३

शुभभे सुतेशे सुतेजीवे बुद्धिमान् ४

चे सुते वा सुतेशे बलिनि केन्द्रेवा बुद्धिमान् ५

टीका—पंचम भावमें शुभग्रह की राशी शुभग्रहसे युक्तदृष्ट होवेतो बुद्धिमान् होवे १

पंचम भावका स्वामि अपनी उच्चराशीमें गयाहोवे अथवा शुभग्रहो के मध्यमें होवे तो बुद्धिमान्होवे २

गुरू केन्द्र कोण [१।४।७।१०।९।५]स्थानमें गयाहोवे तो बुद्धिमान् होवे ३

पंचेश शुभग्रहकीराशि [३।६।२-७।९-१२।४ इनराशी योमेंसे कोई-भीराशी]मेंगयाहोवे और पंचम भावमें गुरु होवे तो बुद्धिमान् होवे ४

बुध पांचवे भावमें गयाहोवे १ अथवा पंचमेशबलवान्होवे २अथवा पंचमेश बलवान्होके केन्द्रमें गयाहोवे ३ तो बुद्धिमान् होवे ५

विशेष बुद्धिमान् योग.

पुत्रेशे केन्द्रे शुभान्विते धारणादिपटुः ६

सुतेशे कारके मृद्वंशादियुते शुभदृग्युते धारणादिपटुः ७

सुतेशे गोपुरादौ धारणादिपटुः ८

सुतकारके गोपुरादौ पराङ्गितज्ञो मेधावी ९

टीका-पंचमेश केन्द्र (१।४।७।१०) स्थानमें शुभग्रहसे युत होवेतो धारणादिपटु [कोईभीबात अेकवखत सुनलेनेसे याद रखने समझने आदिमें विशेषचतुर बुद्धिवाला] होवे ६

पंचमेश और पंचमका कारक[गुरु]मृदुआदिशुभषष्ट्यंशमें होवे और शुभग्रहसे दृष्टहोवे तो धारणादिपटु होवे ७

पंचमेश गोपुरादि अंशमें होवेतो धारणादिपटु होवे ८

पंचमका कारक [गुरु] गोपुरादि अंशमें होवेतो दूसरेके अभिप्राय को उसकीचेष्टा परसेहीसमझलेने वाला और मेधावी (धारणावति-बुद्धिवाला) होवे९

क्षिप्रोत्तरदानशीलयोग.

केन्द्राराणा मुपरि बलिग्रह दृष्टो क्षिप्रोत्तरदानशीलः१०

टीका-बुध चंद्र और मंगल इनतीनोंपर बलवान् शुभग्रहकीदृष्टि होवेतो हाजरजवाब (तुरतजवाब जवाबदेनेवाला) होवे १०

चंचल धी योग.

लग्न कोणे चन्द्रार्कौ चंचलधीः ११

केन्द्रे जीवे चंचलधीः १२

सौम्येर्ये ऽस्तके पापदृष्टे चलचित्तः १३

टीका-लग्नमें तथा ९।५ भावमें रवि चंद्र गयेहोवेतो चंचल बुद्धि वालाहोवे ११

केन्द्र स्थानमें गुरुगयाहोवे तो चंचल बुद्धिवालाहोवे १२

धनभावमे बुध निर्बलीहोके गयाहोवे और यह पापग्रहसे दृष्टहोवेतो चलचित्त [अस्थिरचित्त वाला] होवे १३

सात्विकयोग.

सहोत्थपे ज्ञे सात्विकः १४

टीका-तृतीय भावके स्वामीसे बुध युक्तहोवे तो सात्विक प्रकृति वाला होवे १४

सुवाक्योग

व्ययेशेऽङ्गे सुवाक् १५

टीका-व्ययश लग्नमे गयाहोवे तो अच्छा सुंदर बोलने वाला होवे १५

विस्मयशीलयोग

त्रिके चन्द्रे शुक्र दृष्टे विस्मयलशीलः १६

सपापे सुतपे विस्मयशीलः १७

धी कारके सपापे वा क्रूरषष्ठ्यशे विस्मयशीलः १८

टीका-त्रिकस्थान [६।८।१२] में गयाहुवा चन्द्रमा शुक्रसे दृष्टहोवे तो विस्मरण बुद्धिवाला होवे १६

पंचमेश पापग्रहसें युक्तहोवे तो विस्मरण बुद्धिवालाहोवे १७

बुद्धिकारक ग्रह (बुध गुरु) पापग्रहसंयुक्तहोवे अथवा बुद्धिकारकग्रह क्रूरषष्ठ्यंशमें गयाहोवेतो विस्मरण बुद्धिवाला होवे १८

हीनधीयोग

लग्ने चन्द्रे मन्दारदृष्टे हीनधीः १९

सुतेशे क्रूरषष्ठ्यशे हीनधीः २०

मंदारार्का श्चन्द्र पश्यन्ति मौर्ख्यकराः २१

टीका-लग्नमेंगयाहुवा चन्द्रमा शनिमंगल से दृष्टहोवे बुधिदहीनहोवे १९
पंचमेश क्रूरषष्ठ्यंशमें होवेतो बुद्धिहीनहोवे २०
शनि मंगल और सूर्य येतीनो चन्द्रमाको देखने होयतो मूर्खहोय २१

जडयोग

केन्द्रगा मन्देन्दु गुलिका जडः २२

धनेगुलिकार्कौ पापदृष्टौ वा सार्कजेसोत्थेपेजड़ः २३

सपाप धनेशे खे सभाजड़ः २४

सतमसि सोत्थपे जड़ः २५

सुतेमन्दे लग्नेशे मन्ददृष्टे सुतेशेसपापेजड़ः २६

गुलिकार्कजौसुते शुभयोगहीने जड़ः २७

सुतेजीवे मेधानाशः २८

टीका-शनिचंद्र और गुलिक येतीनो केन्द्र (१।४।७।१०) मेंगयेहो-येतो जडबुध्दि [महामूर्ख] होवे २२

धनभावमें गुलिक और सूर्य गयेहोवे इनदोनो कों पापग्रहदेखतेहोवे १ अथवा तृतीयभावका स्वामि शनिसयुतहोवेतो जडबुद्धिहोवे २३

पापग्रहसेयुतधनेश दशमे भावमें गयाहोवेतो सभामेजड़होवे अर्थात् सभामेकुछबोलनहोसके २४

तीसरभावका स्वामि राहुसे युत होवेतो जड़होवे २५

पंचमभावमेंगयाहुवा शनि, लग्नेश कों देखताहोवे और पंचमेश पापग्रहसेयुतहोवे तो जडहोवे २६

पंचमभावमें गुलिक शनिकायोग किसीशुभग्रहसेयुतनहीहोवे तो जड़होवै २७

पंचमभावमें गुरुगयाहोवेतो मेधानाश (धारणावतिबुद्धिकानाश) होवे २८

यात्रिकयोग.

अंशेकेतौशुक्रमात्रदृष्टेयात्रिकः २९

टीका-नवांश लग्नमें केतु केवलशुक्रसे दृष्टहोवे तो यज्ञादिकर्म कार करानेवालाहोवे २९

मान्त्रिकयोग

अंशात्कोणे पापद्वये मान्त्रिकः ३०

अंशात्कोणे पापद्वये पापदृष्टौभूतादिनिग्रहकर्ता ३१

अंशात्कोणेपापे शुभदृष्टेनुग्राहकः ३२

टीका–कारकांशलग्नसे पांचमें और नवमें स्थानमें क्रमसे अेकक पापग्रह दोनोंस्थानमें गयेहोवेतोमांत्रिक (मंत्रवेत्ता) होवे ३०

कारकांशलग्नसे नवमेंपांचमें दोनोंस्थानमेंएक२ पापग्रहगयेहोवे और उनकों पापग्रह देखते होवेतो भूतादिकों का निग्रह (प्रतिबंध) करनेवालामांत्रिक होय ३१

कारकांशलग्नसे नवमें पांचमेंस्थानमें गयेहुवेदोनो पापग्रह शुभग्रहमें दृष्टहोवेतो लोकोपरमंत्रादिद्वारा अनुग्रह करनेवालाहोवे ३२

भिषग्योग

अंशे ज्ञेन्दुशुक्रदृष्टे वा धनेभिषक् ३३

शुक्रेन्दुदृष्टेंशे रसवादी ३४

सशुभराह्वर्कांशेपापयुतेविषवैद्यः ३५

टीका–कारकांश लग्नकों बुध, चंद्र, शुक्र ये तीनो ग्रहदेखते होवे १ अथवा धनभावकों ये तीनोग्रह देखते होय तो भिषक् [वैद्य] होवे ३३

कारकांशलग्न शुक्रचन्द्रसे, दृष्टहोवेतोरसायनका उपयोग करने वाला रसवैद्य होवे ३४

कारकांशलग्न में राहु रवि शुभ और पाप दोनो ग्रहोसे युत होवेतो विषवैद्य [विषका विशेष उपयोग करनेवाला वैद्य] होवे ३५

लग्न, रवि, चंद्र, मंगल, और दशम भाव इन पांचोमें से अेक दो तीन किंवा पांचोहि वृश्चिक राशिमें अथवा वृश्चिक राशिके नवांशमें किंवा वृश्चिकराशिके गुणक अंश§मेंगयेहोवे तथा अग्निराशिमें तथा हस्तकला कुशलराशि [६]में तथा ३।६ राशिके अंशमें होवेतो डाक्टर होवेगा

वैय्याकरणयोग

अर्थस्तपो रंशाज्जीवे वैयाकरणः ३६

बलिनिगुरौतद्दृष्टेशे रविशुक्रदृष्टेशाब्दिकः ३७

---

§ मेषराशिका ८ २० २१ वृषभका ७–१७ २९ मिथुनका ६ १८ ३ कर्कका ५ १७ २९ सिंहका ४ १६ २८ कन्याका ३ १० २७ तुलका २ १४ ६ वृश्चिकका ४ १३ २१ धनका १२ २४ मकरका ११ २३ कुंभका १०–२२ मीनका ९–२१ मा अंश वृश्चिक राशिक गुणक अंशहै ।

टीका– कारकांशलग्नसे धनभावमे तथा पांचमे गुरुगया होवेतो वैयाकरण होवे ३६

धनभावका स्वामी गुरु पूर्णबलवान्होवे और उसको रवि, शुक्र देखते होवेतो वैयाकरण होवे ३७

मीमांसकयोग.

धनेसोत्थे शुतेंशाज्ज्ञेज्यौ मीमांसकः ३८

टीका–कारकांशलग्नसे दूसरे तीसरे तथा पांचमें स्थानमे बुध गुरु गयेहोवे तो मीमांसा शास्त्रज्ञहोवे ३८

तर्कज्ञयोग.

अंशात्सुतार्थसोत्थे जीवारौ तार्किकः ३९

जीवाच्छौधनेशौरव्यार दृष्टौतार्किकः ४०

जीवाच्छौतुङ्गस्वर्क्षे त्रिकोणगौ तार्किकः ४१

टीका–कारकांशलग्नसे दूसरे तीसरे तथा पांचमें भावमे गुरु मंगल गयेहोवेतो तर्कशास्त्री होवे ३९

द्वितीय भावका स्वामि गुरु अथवा शुक्र होवे और उसको रवि मंगल देखते होवेतो न्याय शास्त्री होवे ४०

गुरु और शुक्र ये दोनो अपनी उच्च, स्व, अथवा मलत्रिकोण राशिमे गये होवेतो न्यायशास्त्रज्ञ होवे ४१

सांख्यज्ञयोग.

अंशाद्धने पुत्रे सोत्थे जीवेन्दू सांख्यज्ञः ४२

टीका–कारकांशलग्नसे दूसरे तीसरे तथा पांचमें भावमे गुरु चंद्र गयेहोवेतो सांख्यशास्त्रज्ञ होवे ४२

गणितज्ञयोग.

अंशात्सोत्थे सुतेर्थे केतुजीवौ गणितज्ञः ४३

धनेभौमे शुभदृष्टे गणितज्ञः ४४

चंद्रारौधने ज्ञदृष्टौ केन्द्रेबुधे वा कुजे गणितज्ञः ४५

धनेशेज्ञेस्वोच्चे गुरौलग्नेऽष्टमे मंदे गणितज्ञः ४६

जीवेकेन्द्रकोणे स्वोच्चेशुक्रेज्ञेथेंशे वा धने गणितज्ञः ४७

टीका-कारकांश लग्नसे दूसरे, तीसरे अथवा पांचमें भावमें केतु और गुरु गये होवे तो गणितशास्त्र का जाननेवाला होवे ४३

धनभावमें मंगलगया होवे और वह शुभ ग्रहसे दृष्टहोवे तो गणित शास्त्रका जानने वालाहोवे ४४

धनभावमें चंद्र मंगल का योग होवे और उनको बुध देखताहोवे १ अथवा केंद्रस्थानमें बुध किंवा मंगल गयाहोवे तो गणित शास्त्रका जाननेवाला होवे ४५

धनभावका स्वामि बुध अपनी उच्चराशि (कन्या राशिमे १५ अंश तक) में, गुरुलग्नमें, और शनि आठमें भावमें गयाहोवेतो गणित शास्त्र जानने वालाहोवे ४६

गुरुकेंद्र त्रिकोणस्थानमें शुक्र अपनी उच्चराशि (मीन) में और बुध धनभावकास्वामीहोवे वा धनभाव में गया होवे तो गणितशास्त्र जाननेवाला होवे ४७

जिसके गणितज्ञ योग होताहै वह गणितका जाननवाला ज्योतिषी अथवा गणितशास्त्री किंवा हिसाबतपासनेवाला [अकाउन्टेन्टजनरल] वा इंजनियर, ओवरसीयर, सेटलमेन्टआफीसर, रव्हेन्युआफिसर, साइन्सजाननेवाला, पैमायशजाननवाला, रोकड्या, खजानची, हिसाबरखनेवाला, जमाखर्चनविश, आदि गणितसे सबधरखनेवालेकार्योंमें स ग्रहयोग के बल.बल तारतम्यभेदके अनुसार कोईभी गणितकाकाम करनेवाला होवेगा।

ज्योतिर्विद् योग

ज्ञाच्छौ सोत्थार्थगौ ज्योतिर्विदांश्रेष्टः ४८

धनेशेबलिनि केन्द्रायकोणेज्ञे ज्योतिर्विदांश्रेष्टः ४९

स्वोच्चेधनेजीवे ज्योतिर्विदांश्रेष्टः ५०

टीका-बुध शुक्र का योग दूसरे तथा तीसरे भावमे होवे अथवा इन दोनोमे से एक दूसरे और दूसरा तीसरे भावमे गयाहोवे तो ज्योतिर्विदोंमे श्रेष्टहोवे ४८

धनभावका स्वामि बलवान् होवे और केंद्रत्रिकोण स्थानमे बुध गया होतो ज्योतिर्विदोंमे श्रेष्ठहोवे ४९

स्वराशी (कर्क) का गुरु धनभावमें गयाहोवो ज्योतिषियोंमें उत्तम ज्योतिषी होवे ५०

सर्वार्थमें एक यह भी योगलिखाहै कि धनभावका स्वामि सूर्य वा मंगल होवे और वह गुरु शुक्र से दृष्टहोवे बुध पारावतांशमे गया होवे तो ज्योतिष की युक्ती जाननेमे तत्परहोवे ५१

भविष्यवक्तायोग.

धीकारके केंद्र कोणे शुभदृष्टे भविष्यद्वक्ता ५१

टीका–बुद्धिकारकग्रह (गुरु) केन्द्रत्रिकोणस्थान में गयाहोवे और शुभग्रहसे दृष्टहोवेतो भविष्यफल कहनेवाला ज्योतिषीहोवे ५१

त्रिकालज्ञयोग.

जीवेस्वांशेमृद्वंशे त्रिकालज्ञः ५२

जीवेगोपुरे शुभदृष्टे त्रिकालज्ञः ५३

टीका–गुरु अपनि स्वराशी ९।१२ के नवांशमेहोवे और मृदुसंज्ञकअंशमे गयाहोवेतो त्रिकालज्ञ(भूत भविष्य वर्तमान तीनोकाल के फल जानने वाला) ज्योतिर्विद होवे ५२

गुरु गोपुरांशमें गयाहोवे और शुभग्रहसे दृष्टहोवे तो भूत भविष्य वर्तमान कालका फल जाननेवाला त्रिकालज्ञ होवे ५३

वेदांतसंगीतज्ञयोग.

अंशाद्धनेपुत्रेसोत्थे जीवार्कौवेदांत संगीतज्ञः ५४

टीका–कारकांश लग्नसे दूसरे तीसरे तथा पांचमें भावमें गुरु सूर्य गये होवे तो वेदान्त शास्त्र और संगीतशास्त्र (गायन शास्त्र) जानने वाला होवे ५४

वेदांतज्ञयोग.

धनेशेज्ञेतुंगे गोपुरेर्कजे सिंहासनेजीवेच वेदान्तज्ञः ५५

पारावतेमन्दे ज्ञेन गुरोदृष्टे वेदान्तज्ञः ५६

केंद्रकोणेजीवे वेदान्तज्ञः ५७

उत्तमांशे भृगौलग्ने वेदान्तज्ञः ५८

देवलोकेचंद्रे उत्तमांशेभृगौकेन्द्रे वेदान्तज्ञः ५९

कोशेगेशे कोशेशे पारावते वेदान्ती ६०

स्वोचेगेज्ञे कोशेशे परावते व्ययेशुक्रेवेदांती ६१

टीका-धनेशबुध अपनी उच्चराशि (कन्याके १५) में, शनि गोपुराशमें, और गुरु सिंहासनाशमें, गयाहोवे तो वेदांत शास्त्र जानने वाला होवे ५५

परावताशमें शनि होवे और गुरुको बुध देखता होवेतो वेदान्त शास्त्रज्ञहोवे ५६

गुरु केन्द्र त्रिकोण स्थानमें गयाहोवे तो वेदान्त शास्त्रज्ञ होवे (इस योगमें यदि गुरु स्व, उच्च या मित्र राशिकाहोवेतो यथोक्त मिलेगा। ५७

उत्तमांशमें गयाहुआ शुक्र लग्नमें गयाहोवे तो वेदान्त शास्त्र जानने वालाहोवे ५८

देवलोकाशमें चंद्रमा, और उत्तमांशमें गयाहुवा शुक्र ये दोनो केंद्र स्थानमें गयेहोवे तो वेदान्त शास्त्र जाननेवाला होवे ५९

लग्नेशधनमें और धनेशपारावताशमें होवेतो वेदांती होवे ६०

अपनि उच्चराशि मे गयाहुवा बुध लग्नमे, और पारावतांशमें, गयाहुवा धनेश शुक्र बारमें भावमे गयाहोवे तो वेदान्तीहोवे (ये योग कन्या लग्न में जन्महोवे उसके होवेगा) ६१

ब्रह्मनिष्ठयोग

खेशेदेवलोके शुभदृष्टे ब्रह्मनिष्टः ६२

भाग्येपे पारावते शुभदृष्टे ब्रह्मनिष्टः ६३

टीका-दशम भावका स्वामि देवलोकाशमें गयाहोवे और वह शुभ ग्रहसे दृष्टहोवे तो ब्रह्मनिष्ठहोवे ६२

नवम भावका स्वामि पारावताशमें होवे और वह शुभ ग्रहसे दृष्टहोवे तो ब्रह्मनिष्ठहोवे ६३

कवियोग.

खेशेगेकविः ६४

लाभेशे लाभेकविः ६५

टीका-दशमेभावका स्वामि लग्नमे गयाहोवे तो कवि (कविता करने वाला) होवे ६४
लाभेश लाभ भावमे होवेतो कविहोवे ६५

विदुषांरंजकः

सारेज्ञे शुभर्क्षे विदुषां रञ्जकः ६६

ज्ञारौमंदभे कैरष्टौ राजविदुषो रञ्जकः ६७

टीका-शुभग्रहकी राशीमे बुध मंगल का योग होवेतो विद्वानोंको प्रसन्न करने वाला होवे ६६
शनिकी राशि (१० वा ११) में गयेहुवे बुध मंगल को सूर्य देखता होवेतो राजा और विद्वानोंको प्रसन्न करने वाला होवे ६७
इन दोनो योगो मे मंगल बुध का योग का स्थान नही बताया है परंतु यदि ये योग धन अथवा पंचम भावमे होवेतो अधिक बलवान् होवेगा।

विद्वान तथा पंडित योग.

बलीसुतेशे केन्द्रकोणे विद्वान् ६८

धनेलाभेङ्गेशे पण्डितोधर्मवित् ६९

खेलाभेसुतेशे पंडितः ७०

टीका-स्व, उच्च, मित्र राशिमें गयाहुवा बलवान् पंचमेश केन्द्र या त्रिकोण (१।४।७।१०।९।५) स्थानमें गया होवेतो विद्वानहोवे ६८
लग्नेश धन मे अथवा लाभ भावमें गया होवे तो धर्मका जानने वाला पण्डित होवे ६९
पंचमेश दशमें अथवा लाभ भावमें गयाहोवे तो पण्डितहोवे ७०

पट्शास्त्रवल्लभयोग.

केन्द्रेजीवे सिंहासनेशुक्रे धनस्थभांशे ह्मगोपुरे पट्शा-
स्त्रवल्लभः ७१

कोशेशस्थानेश्वरांशेशेमंदे [redacted] भौमेसपापे केंद्रकोणगे
पट्शास्त्रवल्लभः ७२

सूर्यांशेशो वैशेषिकांशे बलिन्यर्थे पट्शास्त्रवल्लभः ७३

गुरौबलिन्यर्थेधने धांशेशेकेंद्रे शुभदृष्टे पट्शास्त्रवल्लभः ७४

टीका–गुरुकेन्द्रस्थानमें, शुक्रसिंहासनांशमें, और धनभावमें जो राशि होवे उसराशिके नवांशमें गयाहुवा बुध गोपुरांशमें होवेतो पट्शास्त्र जाननेवाला विद्वान् होवे ७१

धनेश जिसराशिमें स्थितहोवे उसके स्वामिका नवांशका स्वामि शनि अथवा मंगल होवे और वह पापग्रहसे युतहोकर केन्द्र त्रिकोण (१।४।७।१०।९।५।) स्थानमें गया होवे तो छहों शास्त्रोंके जाननेवाला विद्वान् होवे ७२

सूर्य जिसराशिके नवांशमे हो उसका स्वामि वैशेषिकांशमे गया होवे और धनभाव बलवान् (अपनेस्वामि या शुभग्रहसे युत) होवेतो पट्शास्त्रज्ञहोवे ७३

स्व, उच्च, मित्र राशिमें गयाहुवा बलवान् गुरु धनभावमें और धनेशके नवांशका स्वामि केंद्रमें शुभग्रहसे दृष्टहोवे तो पट्शास्त्र वेत्ता विद्वान् होवे ७४

ग्रंथकर्तायोग

अंशास्सुते सपापौ चंद्रेज्यौ ग्रंथकृत् ७५

टीका–कारकांश लग्नसें पांचमे भावमें पापग्रहसें युत चंद्र गुरु गये होवेतो ग्रंथकर्ताहोवे ७५

शूद्रोपि विद्वान् योग.

स्वजादिमंदेः ग्रहितेज्ये शुक्रेक्षिते शूद्रोपिविद्वान् ७६

टीका-राहु अथवा केतु औरशनिसें युतगुरु शुक्रसे दृष्टहो तो शूद्रजातिमे उत्पन्नहुवा हो तोभी विद्वान् होवे ७६

सर्वविद्यायोग.

चंद्रार्कोणजीवे ज्ञात्कोणभौमे सर्वविद्याः ७७

टीका-चन्द्रमासे ९-५ भावमें गुरु और बुधसे ९-५ भावमें मंगल गयाहोतो सर्वविद्या जाननेवाला होवे ७८

इंग्रेजी पारसी अरबी विद्यायोग.

पंचमेरविणामभौमे कविमंदतमाभपि पापग्रहेण संदृष्टाविद्या ताम्रमुखी भवेत् १ लग्नस्थितोनिशानाथः सुतेशेपापसंयुते पंचमेभवने पाप: पारसी मार्वी पठेत् २ ज्योतिषश्याम संग्रह पत्र १०२

ज्योतिषश्यामसंग्रहमें लिखाहै कि—रविसे पांचमे भावमे मंगल शुक्र, शनि, और राहु इनचारो मे से कोईभी अेक, दो या तीन ग्रह गयेहो और पापग्रह से दृष्टहो तो इंग्रेजी विद्या जानने वालाहोवे। लग्नमे चंद्रमाजावे पंचमभाव और पंचमेशपापग्रहसे युतहोवेतो पारसी अथवा अरबी विद्या जाननेवाला होवे। २

जज्ज, बेरिस्टर, प्लीडर, किंवा वकील योग.

कुंडलीविज्ञानमेंलिखाहैकि—जिनके जन्मलग्नसे १-७।२-८।५-११।३-९ स्थानमे से कोईभी स्थानमे गुरु और शनि एकराशिमे अतिसमीप के अंशोमे गयेहोवे १ अथवा परस्पर (शनि से गुरु) सातमे स्थानमे गयेहोवे २ अथवा परस्पर नवमे पांचमे स्थानमे उपरोक्त भावोमे गयेहोवे ३ और मेष, तुल, मिथुन, धन, कुंभ, किंवा सिंहराशिके हो तो जज्ज, बेरिस्टर, सोलिसीटर, प्लीडर किंवा वकील बीए एल. एल बी. आदि ऊंचीपरिक्षामेपास*कियाहुवा मनुष्य होवे।

जैसा गुरु शनि के योग का फल है वैसाही शनि बुध के योगका भी फल उपरोक्त स्थान और राशी मे गुरु शनिकी स्थितिके समान हो तो होताहै परंतु शनि और बुध इनकायोग वक्तृत्वताके लिये उत्तम नहीहोता कारण यह है कि बुध वाणीकारकग्रहहै उसका शनिसे योग होवेतो मनुष्य अच्छा वक्ता होनेवालानही इसलिये जिसके जन्म

* परिक्षामे पसहोन न होने का समय जाननाहो तो हमारी लिखी " परिक्षा विचारकी " पुस्तक मगा देखिये।

कुंडलीमे ये योग होताहैवह वकील अल्पभाषी होताहै।
उपरोक्त (गुरु शनि वा बुध शनि) ग्रहोंका योग पंचमस्थान में स र्वोत्तम होताहै ९ मेस्थान में हो तो मध्यम और लग्नमें वा धनभावमे होतो कनिष्ठ होताहै।

सभामूकयोग.

तुर्येशेऽस्ते पंडितोऽपिसभामूकः ७८

टीका—चतुर्थेश लग्न अथवा सप्तम भावमें गया होतो पंडित होते हुवे भी सभामे मूककेसमान होजावे अर्थात् सभामें बोलनहीं सके (सभाक्षोभ होजावे) ७८

अनपत्ययोग.

विवीर्याः सर्वेऽनपत्यता ७९

टीका – सर्वग्रहनिर्बली (नीच, शत्रु, राशीमे, वाअस्तंगत तथा ६। ८।१२ स्थानमें गये हो वा केन्द्रोमे कहे हुवे षड्बल मे हीन बली) हो तो पुत्र किंवा पुत्री कोई भी संतान नहि होवे (संतान रहीत होवे) ७९

गर्भानुत्पादयोग.

लग्नेऽर्के स्तेमन्दे वा द्यूनेर्कशनी खेजीवदृष्टे गर्भानुत्पादः८०

मन्दारौ षष्ठे वा तुर्ये गर्भानुत्पादः ८१

सारीशो कुजः षष्ठ चन्द्रे चास्ते गर्भानुत्पादः ८२

टीका – लग्नमें सूर्य, और सातमें शनि गया हो १ अथवा सातमे भावमें रवि शनी गये हो और दशमे भाव कों गुरुदेखता हो तो गर्भ ही उत्पन्न नहीं होवे (गर्भोत्पत्ती भी नहि होवे) ८०
छठे अथवा चतुर्थ भावमें शनि मंगल का योग हो तो गर्भोत्पत्ती भी नहींहोवे ८१.
छठे भाव का स्वामी और शनी येदोनो छठे भावमे जावे और सात मे भावमे चंद्रमा गया हो तो गर्भोत्पत्ति भी नहींहोवे ८२

गर्भच्युतियोग.

सुतपापयुतदृष्टे गर्भच्युतिः ८३

पुत्रस्थनवांशे यावत्पापदृष्टः शुभादृष्ट स्तावद्गर्भपातः ८४

टीका-पंचमभाव पापग्रह (सू. मं. श. रा. के. ह. ने. और इनसे युत बुध) से युत और दृष्टहो तो गर्भपातहोजावेगा ८३

पंचमभावमें जिसराशी का नवांशहोवे उसराशीको यदि कोई शुभग्रह देखता नही हो तो जितने पापग्रह देखते होवे उतनेही गर्भका नाश [पात] होवे ८४

सर्पशापाद्विपुत्रयोग.

सुतेराहौ भौमदृष्टे भौमभे वा सर्पशापाद्विपुत्रः ८५

यमेसुते चन्द्रदृष्टे सुतेशेराहुयुते सर्पशापाद्विपुत्रः ८६

सराहौपुत्रकारकेपुत्रेशेऽबलेभौमांगेशौयुतौसर्पशापाद्विपुत्रः८७

सुतकारकेसारे राहंगे पुत्रेशेत्रिके सर्पशापाद्विपुत्रः ८८

पुत्रेशेज्ञे सारेकुजांशे राहुमांदियुतें गेचसर्पशापाद्विपुत्रः८९

सुतेशेभौमे सुतेराहौ सौम्यदृष्टे सर्पशापाद्विपुत्रः ९०

सुतांगेशौविबलौ सज्ञेज्यासुतेपापाः सर्पशापाद्विपुत्रः ९१

लग्नेशेराहुयुते पुत्रेशेभौमयुते कारकेराहुदृष्टे सर्पशापाद्विपुत्रः ९२

टीका-पंचम भावमें गयाहुवा राहू मंगल से दृष्टहो किंवा पंचमभावमें मंगलकी (मेष, वृश्चिक) राशीमें राहूगयाहो तो सर्पके शापसे पुत्रनही होवे ८५

पंचम भावमें गयाहुवा शनि चन्द्रसें दृष्टहो और पंचमेश राहूसें युतहो तो सर्पके शापसे पुत्राहीनहोवे ८६

पुत्रकारकग्रह [गुरु] राहूसें युतहो, पंचमेश निर्बली हो, और लग्नेश मंगलसें युतहो तो सर्प के शापसे पुत्ररहितहोवे ८७

पुत्रकारकग्रह (गुरु) मंगलसें युतहो लग्नमेंराहू, और पंचमेश ६।८।१२ भावमें गयाहो तो सर्प के शापसे पुत्रहीनहोवे ८८

पंचमभावका स्वामि बुध, मंगल सें युतहो कर मंगलके ही नवांशमे गयाहो और राहु गुलिक लग्नमे गये होवेतो सर्पके शापसे पुत्रहीन होवे ८९

पंचमभावका स्वामि मंगलहोवे और पंचम भावमे गयाहुआ राहू बुधसे युत किंवा दृष्टहो तो सर्पके शापसे विपुत्रहोवे ९०

पंचमेश और लग्नेश ये दोनो निर्बल होवे पंचमभावमें सर्वपापग्रह बुध गुरु से युत होकर गयेहो (पांचमे र. मं श रा बु गु. गयेहोवे) तो सर्पके शापसे पुत्रहीनहोवे ९१

लग्नेश राहुसे व पंचमेश मंगलसे युतहो और पुत्रकारकग्रह [गुरु] राहुसे दृष्टहो तो सर्पके शापसे पुत्रहीनहोवे ९२

पितृशापाद्विपुत्रयोग.

पुत्रेपेर्के क्रूरांतरे त्रिकोणगपयुतदृष्टे पितृशापाद्विपुत्रः ९३

सुतेर्केपापान्तरे मन्दांशेनीचगे पितृशापाद्विपुत्रः ९४

सिंहेज्ये पुत्रेशेर्कयुते पुत्राङ्गगौपापौ पितृशापाद्विपुत्रः ९५

सूर्येरन्ध्रेसुतेमन्दे पुत्रेशेराहुयुते पितृशापाद्विपुत्रः ९६

व्ययपेङ्गेरन्ध्रपेपुत्रे खपेरन्ध्रे पितृशापाद्विपुत्रः ९७

टीका—पंचमभावकास्वामि सूर्य ९ में तथा ५ में भावमे पापग्रहोके बीचमे गयाहो और पापग्रहोसे युतदृष्टहो तो पितृकेशापसे पुत्रहीन होवे ९३

पंचमभावमे नीचराशीका सूर्य, शनिके नवांशमे तुल राशीके ४-५ में नवांशमे) गयाहो और पापग्रहोके मध्यमे स्थितहो तो (पितृ) के शापसे पुत्रहीन होवे ९४

सिंहराशीमे गुरुगयाहो, पंचमेश सूर्यसे युतहोवे और पंचमभावमें व लग्नमे पापग्रहगये होतो पितृकेशापसे पुत्रनहींहोवे ९५

आठवेंभावमें रवि, व पंचमभावमे शनि, गयाहो और पंचमेश राहु से युतहो तो पितृकेशापसे पुत्रनहीं होवे ९६

बारवेंभावकास्वामि लग्नमे, अष्टमभावकास्वामी पंचम भावमें और दशमभावकास्वामी आठवेंभावमे गयाहो तो पितृके शापसे पुत्रहीनहोवे ९७

मातृशापाद्विपुत्रयोग

पुत्रेपेचन्द्रेनीचगेवापापान्तरे सुताम्बुगौपापौमातृशापाद्विपुत्रः ९८

लाभेमन्दे तुर्येपापाः पुत्रेनीचगेचन्द्रे मातृशापाद्विपुत्रः ९९
सुतेशेत्रिकेलग्नेशेनीचेपापयुतेचन्द्रेमातृशापाद्विपुत्रः १००
सुतेशेचन्द्रे मन्दराह्वारयुते मातृशापाद्विपुत्रः १०१
सुखेशेभौमेराह्वर्कजयुतेलग्नेपुष्णवन्द्रौमातृशापाद्विपुत्रः १०२
सुखेशेष्टमेपुत्राङ्गेशौषष्ठेखारीशौलग्नेमातृशापाद्विपुत्रः १०३
पुत्राङ्गाष्टारिगाराह्वर्कारमंदालग्नेशेत्रिकेमातृशापाद्विपुत्रः १०४
राह्वारेज्यात्रिकस्था मन्दचन्द्रौपुत्रे मातृशापाद्विपुत्रः १०५

टीका–पंचमभावका स्वामि चंद्रमा नीचराशिका हो अथवा पापग्रहोके मध्यमे (पापाकर्तरीमे) हो और चतुर्थ व पंचमभावमे पाप ग्रह गयेहो तो माताके शापसे पुत्रहीनहोवे ९८

लाभभावम् शनी, व चतुर्थभावमे २।३ पापग्रह गयेहो और पंचम भावमे नीचराशी (८) का चन्द्रमा गयाहो तो माताके शापसे पुत्र हीनहोवे ९९

पंचमेश ६।८।१२ भावमें गयाहो लग्नेश नीचराशी का हो और चंद्रमा पापग्रह से युतहो तो माताके शापसे पुत्रहीनहोवे १००

पचमेश चंद्रमाहोवे और वह शनि राहु व मंगल से युतहो तो माताकेशापसे पुत्रहीनहोवे १०१

सुखेश मंगल हो और वह राहु व शनि से युतहो और लग्नमें सूर्य, चंद्रमा, ये दोनो गयेहोतो माताकेशापसे पुत्रहीनहोवे १०२

सुखेशआठमे भावमे, पंचमेश व लग्नेश ये दोनो छठेभावमें तथा दशमेश और षष्ठेश ये दोनो लग्नमे गयेहोतो माताके शापसे पुत्र हीन होवे १०३

राहु सूर्य मंगल और शनि ५।१।८।६ इनभावोमें यथाक्रम कीवा व्युत्क्रम गयेहो और लग्नेश ६।८।१२ भावमें गयाहो तो माताके शापसे पुत्रहीन होवे १०४

राहु मंगल और गुरु ये तीनो ६।८।१२, भावमेंगयेहो और पंचम भावमें शनि चन्द्रमाका योग हो तो माताकेशापसे पुत्रहीनहोवे १०५

कुलदेवदोषा द्विपुत्रयोग

मन्दोरिगेहे ज्ञेन्दुसूर्यदृष्टेलग्नेपापदृष्ट कुलदेवदोषाद्विपुत्रः १०६

मन्दर्क्षेसूर्येपापदृष्टे वा पापवर्गेङ्के कुलदेवदोषाद्विपुत्रः १०७

टीका–छठेभावमेंगयाहुवाशनि, बुध चंद्र और सूर्य से दृष्टहो लग्नमें पापग्रह देखतेहोतो कुलदेवकेदोषसे पुत्रहीनहोवे १०६

शनि की राशी (१०।११) में गयाहुआ सूर्य पापग्रहसे दृष्टहोवे अथवा लग्नमे पापग्रहोका वर्ग अधिक होतो कुलदेवके दोषसे पुत्र हीनहोवे १०७

सुतहीनयोग.

सूर्येङ्के सुतेभौमे सुतहीनः १०८

जीवात्सुतेशेगिकेपुत्रङ्गाङ्केशालग्नात्त्रिकस्था सुतहीनः १०९

जीवेपञ्चमे जीवात्सुतेक्रूरे सुतहीनः ११०

दाराङ्केपुत्रपेबलिनि षष्ठेशयुतदृष्टेऽपुत्रः १११

धीधर्मेशौ सदारेशौ दुस्थानगौ हीनबलौ सुभादृष्टेसुते बहुदारोप्यपुत्रः ११२

मन्दारौखेधर्मेवाऽपुत्रता ११३

मन्दारशुक्रादारगा अपुत्रः ११४

शत्रुभेलग्नपे ज्ञेन्दुदृष्टे पञ्चार्थे सूर्ये विपुत्रः ११५

सुतेशेस्वांशे पापयुते विपुत्रः ११६

गुरौसुतेशे सपापेऽबलेविपुत्रः ११७

सपापेङ्केशे त्रिकेसुतेशे विपुत्रः ११८

कोणेगुरौ पापयुतेविपुत्रः ११९

लग्नेशेकुजर्क्षेपष्ठेपुत्रेशे विपुत्रः १२०

व्ययेशेलाये विपुत्रः १२१

कन्याङ्गसूर्ये भौमेसुतेविपुत्रः १२२
सुतेशुक्रभौमान्यतराऽदृष्टे क्षितिविव्राहेष्वप्य संतानः १२३
लाभेसेन्दौमन्देऽप्रजत्वमः १२४

टीका–लग्नमें सूर्य और पांचमे मंगल गयाहोतो सुतहीनहोवे १०८

जिसराशीमे गुरु स्थितहो उसराशीसें पंचम भावका स्वामि जो ग्रहहो वह ६।८।१२ भावमे गयाहो और जन्मलग्नसे भी पंचम नवम व लग्नके स्वामी ६।८।१२ भावमें गयेहो तो पुत्रहीनहोवे १०९

पंचम भावमें गुरुगयाहो और गुरुसे पांचमे भावमें पापग्रह गयाहो तो पुत्रहीनहोवे ११०

पंचमेश सप्तमभावमें अथवा लग्नमे गयाहो और वह बलवान् पंचेश से युतदृष्टहो तो पुत्रहीनहोवे १११

नवम, पंचम और सप्तम भावके स्वामी निर्बली होकर ६।८।१२ भावमें गयेहो और पापग्रहो सें युतदृष्टहो तोबहुतस्त्रियेहोवे तोभी पुत्र-नहीहोवे ११२

शनि और मंगल ये दोनो नवमे तथा दशमें भावमें गयेहो तो पुत्र-हीनहोवे ११३

शनि मंगल और शुक्र येतीनो सातमे भावमें गयेहो तो पुत्रहीन होवे ११४

लग्नेश छठे स्थानमें शत्रुग्रहकी राशीमे हो, और वह बुधचंद्र सें दृष्टहो छठे अथवा दूसरे भावमे सूर्यगयाहो तो अपुत्रहोवे ११५

पंचमेश के नवांश कास्वामी अस्तकाहो और वह पापग्रहसें युतहो तो पुत्रहीनहोवे ११६

पंचम भावका स्वामि गुरु पापग्रहसेयुत हो और निर्बली हो तो पुत्रहीनहोवे (पंचम भावमें धन मीन राशीहोवेतो ये योगहोताहै) ११७

लग्नेश पापग्रह सें युतहो और पंचमेश ६।८।१२ में गयाहो तो पुत्रहीनहोवे ११८

पापग्रहसें युतहोकर गुरु ९ में तथा ५ में भावमे गयाहोवो पुत्र-हीनहोवे ११९

लग्नेश मंगलकी राशी (१।८) में गयाहो और पंचमेश छठे भाव-मे होतो पुत्रहीनहोवे १२०

यावे भावकास्वामी दशमें किंवा लग्नमें गयाहो तो पुत्रहीनहोवे १२१
कन्याराशीके लग्नमे सूर्यहो और पांचमें भावमे मंगळ गयाहो तो पुत्रहीनहोवे १२२

शुक्र किंवा मंगल इनदोनोमेसे यदि एक भी पंचमभावको नहीं देखताहो तो दो तीन विवाह करलेनेपरभी संतान नहीं होवे १२३ तात्पर्ययह है कि पंचम भावको शुक्र किंवा मंगल किंवा दोनो देखते होतो संततीहोवेगा । कारण–वियंका स्वामि शुक्रहै और रितुका स्वामि मंगल है जब रितु रेत के स्वामिकी दृष्टि गर्भस्थान (पंचम) पर होवेगा तभी गर्भ रहेगा और इन की दृष्टि नहींहो तो ९ कि वा १० स्त्रियोंसे विवाह करलेने परभी संततीहोना असंभवहै ।

लाभभावमे चंद्र शनी का योग (युती) हो तो संतती नहीहोवे १२४

पुत्रनाशयोग.

पापांतरेसुतभेवातदीशे वाकारके पापसंयुते पुत्रनाशः १२५

स्त्रीधर्मपुत्रेशांशपाः पापांशगाः पापयुताः पुत्रनाशः १२६

पुत्रेशेक्रूरांशे नीचास्तभे पापदृष्टे पुत्रनाशः १२७

व्ययेशांशेशस्य व्ययेशेनयुते वा दृष्टेसुतेशे पुत्रनाशः १२८

पुत्रेर्केप्रकाशे जातंजातंम्रियते १२९

पापाःपञ्चमे जातंजातंम्रियते १३०

सुतेसूर्ये मृतापत्यः १३१

कोणगाःपापाः क्षीणेन्दञ्जे मन्दर्क्षेजीवेमूढे पुत्रसुखंभूत्वा नश्यति १३२

ज्ञेपञ्चमेलग्नेसुखेपापे पुत्रसुखं भूत्वानश्यति १३३

टीका–पंचमभाव, अथवा पंचमेश, किंवा पंचमभावका कारकग्रह [गुरु] पापग्रहोके मध्यमें (पापकर्तरीमे) हो और पापग्रहसे युत हो तो पुत्रनाशहोवे (पुत्रप्राप्ती तो होवेगा किंतु जीवेगानहीं) १२५

पंचमेश, सप्तमेश, और नवमेश, ये तीनोग्रह जिस जिस ग्रहके नवांशमेंहोवें वेग्रह पापग्रहके नवांशमें गयेहो और पापग्रहसे युतहो तो पुत्रनाशहोवे [पुत्रहोकर मरजावे] १२६

पंचमेश क्रूरग्रह के नवांशमे गयाहो और वह नीचराशी का वा अस्तंगतहोकर पापग्रह से दृष्टहो तो पुत्रनाशहोवे १२७

व्ययेशके नवांशका स्वामि जिसराशीके द्रेष्काण मे हो उसराशीके स्वामी से पंचमेश युत किंवा दृष्टहो तो पुत्रनाशहोवे १२८

प्रकाशावस्थामे गयाहुआ सूर्य पंचमभावमे गयाहो तो जितने संतान जन्मतेजाय उतनेही मरतेजाय (संतान जीवित रहेनही) १२९

तीन चार पापग्रह पंचमभावमे गयेहो तो जितने संतान जन्मतेजावे उतनेही मरतेजाय १३०

पंचमभावमे सूर्य गयाहो तो मृतापत्य होवे १३१

नवमे पाचमे भावमे पापग्रह, लग्नमे क्षीणचंद्रमा, और शनि की राशी (१०–११) मे गयाहुवा गुरु अस्तका हो तो पुत्रकासुख होकर नाशहोजावे १३२

पंचमभावमे बुध गयाहोवे और लग्न तथा सुख इनदोनो भावमे पाप ग्रह गयेहोतो पुत्रका सुखहोके नाशहोजावे १३३ येसबयोग अल्पायु-प्रजाहोनेकेहै।

पुत्रार्ति वा पुत्रसुख रहित योग।

क्रूर पष्ठ्यंशे पुत्रपे पाप दृष्टयुते पुत्रार्तिः १३४

सोत्थेश चंद्रौ केन्द्रकोणगौ पुत्रसुखंन. १३५

सिंहेर्कजारौ सुतगौ सुतेशेपष्ठे सुतसौख्यंन १३६

भौमर्क्षेसुतेराहौ भौमदृष्टे सुतसौख्यंन. १३७

नीचेगुरौ भृगौवा समेत्रे विपमेर्के सुतसौख्यंन १३८

धीस्थेमंदे पुत्र सुखंन १३९

व्यन्त्याङ्गार्थ सुतेसहजपे सुतसुखंन १४०

पश्चपे जीवर्क्षे सुतसुखंन १४१

मन्दज्ञावङ्के लौशुक्रेज्यौ सुतसुखंन १४२
जीवात्सुतेपापे मन्तान सुखाभावो नान्यथा १४३

टीका-पचमेश क्रूरषष्ठंचशमे होवे और पापग्रहसे युतकिंवा दृष्ट होतो पुत्र कासुख नहीहोव (पुत्रहोते हुवेभीउसका सुखनही होवे) १३४

तृतीयेश और चंद्रमा ये दोनो १।४।७।१०।९।५ भावमेगये होतो पुत्रसुखनही होवे १३५

सिंहराशिमे गयेहुवे शनि मंगल पंचमभावमे स्थितहोवे और पचमेश छठे भावमे हो तो पुत्र सुखनही होवे १३६

पंचम भावमे मंगल की राशि (१—८) में गया हुवाराहु, मंगलसे दृष्टहोवे तो पुत्रका सुख नही होय १३७

गुरु और शुक्र अपनी नीचराशी (१०–६) मे गयेहोवे अथवा बुध समराशी (२–४–६–८–१०–१२) मे और सूर्य विषम राशी (१–३ ५–७–९–११) में गयाहोव तो पुत्रका सुखनहीहोवे १३८

पंचम भावमे शनिगया हो तो पुत्रका सुखनही होवे १३९

तृतीयभावका स्वामी (३–१२–१–२–५) भावमेगया होतो पुत्र का सुखनहीहोवे १४०

पंचम भावमे गुरुकी राशी (९।१२) होतो पुत्रकासुखनही होवे १४१

बुध शनि लग्नमे गयहो और वृश्चिक राशीमे गुरु शुक्रका योग होतो पुत्रका सुखनही होवे १४२

गुरु सें पाचमे भावमे पापग्रह गयाहो तो संतान सुख नहीहोवे और शुभग्रह गयेहोय तो संतानका सुखहोवेगा १४३

पुत्रसुखहीनयोग मे पुत्रहोवेनही, १ किंवा पुत्रहोकर मरजावे २ अथवा पुत्रहोतेहुवे भी पुत्रका सुखनहीहोवे ३ (पुत्रहुआ और नहीहुआ सरीखाहीहोवे) ये तीनप्रकारके पुत्रसुख नहीहोनेके भेदहै इनमेसे जिनके पुत्र हीन किंवा पुत्रनाश, किंवा वंशविच्छेदयोग, प्रबलहुवा होवे उनके तो पुत्रहोवगाहीनही किंवा होके मरजावेगा। और केवल पुत्रसुखहीन योग ही होवे और दूसरे उपरोक्त योग नही हो तो पुत्रहोत हुवेभी पुत्रका सुखनहीहोवेगा।

वंशविच्छेदयोग.

ज्ञाङ्गपौ लग्नेतर केन्द्रगौवंशविच्छेदः १४४
पापग्रहा व्ययसुताष्टमगा वंशविच्छेदः १४५
चन्द्रेज्यौलग्ने द्यूनेमन्दे वा भौमे वंशविच्छेदः १४६
सुखेपापा वंशविच्छेदः १४७
लग्नान्त्य सुताष्टमगैः पापैर्वंशच्छेदः १४८
सुतेचन्द्रे पापारन्ध्राङ्गान्त्यगा वंशविच्छेदः १४९
ज्ञाच्छौमदे सुखेपापे सुतेजीवे वंशविच्छेदः १५०
चन्द्राष्टमेपापा वंशविच्छेदः १५१
पापेङ्गेसुखेचन्द्रेसुतेङ्गेशे सुतपेऽल्पबले वंशविच्छेदः १५२
पञ्चमेपापा वंशविच्छेदः १५३
शुक्रेस्मरे खेचन्द्रेसुखेपापा वंशविच्छेदः १५४
भौमेङ्गे मन्देरन्ध्रे सुतेर्के वंशविच्छेदः १५५

टीका–बुध और लग्नेश ये दोनो लग्नके विना दूसरे केन्द्रस्थान (४।७।१०) में गयेहो तो वंशविच्छेद होवे १४४

बारमे, पांचमे, और आठमे, भावमें पापग्रह गयेहो तो वंशविच्छेदहोवे १४५

लग्नमें चंद्र गुरु का योगहोवे और सातमें भावमें शनि किंवा मंगल गयाहो तो वंशविच्छेद होवे १४६

संपूर्ण पापग्रह चतुर्थ भावमें गयेहोवे तो वंशविच्छेद होवे १४७

जन्मलग्नमें, बारमें, पांचमें, और आठमें भावमे संपूर्ण पापग्रह गये हो तो वंशविच्छेद होवे १४८

पंचम भावमे चंद्रमा गयाहोवे और आठमें, लग्नमें, बारमे, भावमें संपूर्ण पापग्रह गयेहो तो वंशविच्छेद होवे १४९

सातमें भावमें बुध शुक्र, चतुर्थ में पापग्रह, और पंचम भावमें गुरु गयाहोवे तो वंशविच्छेद होवे १५०

वैशेषिकांशेजीवे तथा पुत्रेशेच शुभदृष्टेपुत्राप्तिः १६९
वित्तेशेसुते बलाढ्ये गुरुदृष्टे पुत्राप्तिः १७०
पुत्राङ्गपौपरस्परं पश्यतः पुत्राप्तिः १७१
पुत्राङ्गपावन्योन्यभगौ वा युतौ पुत्राप्तिः १७२
सुताङ्गेशौ केन्द्रगौशुभान्वितौ धनपेबलिनिपुत्राप्तिः१७३
पुत्रेशांशेशे शुभयुतदृष्टे पुत्राप्तिः १७४
धर्माङ्गेशौसप्तमे धनेशेङ्गे पुत्राप्तिः १७५
सुतेशेमृदंशादिगे पुत्राप्तिः १७६
गोपुरादौसुतेशे पुत्राप्तिः १७७
पुत्रांशेशेङ्गे लग्नेशांशेशेसुते पुंप्राप्तिः १७८
जीवांशेशेकेन्द्रे पुत्राप्तिः १७९
धर्मायसुतेशाः पारावतादिगाः शुभदृष्टाः पुंप्राप्तिः १८०
लग्नाद्वाचन्द्रात्पंचमे शुभर्क्षेशुभसम्बन्धे पुत्रसम्भवोनान्यथा१८१

टीका-सप्तमेश के नवांशका स्वामी लग्नेश, धनेश, और नवमेश, इन तीनों ग्रहोसे दृष्टहो तो पुत्रप्राप्ती होवेगा १६५

पंचमेश किंवा पंचमभाव अथवा पंचमका कारकग्रह (गुरु) शुभ ग्रहसे युत और दृष्टहो तो पुत्रप्राप्तिहोवेगा १६६

लग्नेश पंचम भावमेंगयाहो, पंचमेश और गुरु ये दोनो परिपूर्ण बलवान् होवें तो पुत्रप्राप्तिहोवेगा १६७

पंचमेशगुरु पूर्णबलवान् होवे और उसको लग्नेश देखताहो तो पुत्राप्तिहोवेगा १६८

गुरु अथवा पंचमभावका स्वामि वैशेषिकांशमे गयाहोवे और शुभ- ग्रहसे दृष्टहो तो पुत्राप्तिहोवेगा १६९

धनभावका स्वामि बलवान होकर पंचमभावमेगय हो और गुरु सें दृष्टहो तो पुत्राप्तिहोवेगा १७०

पंचमेश और लग्नेश ये दोनोपरस्पर अेक दूसरे को देखते होतो पुत्राप्तिहोवेगा १७१

पंचमेश और लग्नेश ये दोनो अन्योन्यराशीमे (पंचमेशकी राशीमे लग्नेश और लग्नेशकी राशीमे पंचमेश) गयाहो अथवा पंचमेश और लग्नेश ये दोनो अेकराशीमे युतहोतो पुत्राप्तिहोवेगा १७२

लग्नेश और पंचमेश ये दोनो शुभग्रहसे युतहो कर केन्द्र [१।४। ७।१०] स्थानमे गयेहो, और धनेशबलवानहो तो पुत्राप्तिहोवेगा १७३

पंचमेश के नवांशका स्वामी शुभग्रहसेयुत और दृष्टहो तो पुत्राप्तिहोवेगा १७४

नवमेश और लग्नेश ये दोनो सप्तम भावमें गयेहो और धनेशलग्न मे गयाहो तो पुत्राप्तिहोवेगा १७५

पंचमेश मृद्वंशादि शुभांशम गयाहोतो पुत्राप्तिहोवेगा १७६

पंचमेश गोपुरादि अंशमेगयाहो तो पुत्राप्तिहोवेगा १७७

पंचमभावका नवांशका स्वामी लग्नमे और लग्नेश के नवांशका स्वामी पंचमभावम गयाहो तो पुत्राप्तिहोवेगा १७८

गुरुके नवांशका स्वामी केन्द्र (१।४।७।१०) मे गयाहो तो पुत्राप्तिहोवेगा १७९

नवम, लग्न, और पंचमेश, ये तीनोग्रह पारावतादि अंशमगयेहोवे और शुभग्रहसे दृष्टहो तो पुत्राप्तिहोवेगा १८०

लग्नसे अथवा चन्द्रमासे पांचवे भावमेशुभग्रह की राशि शुभग्रह से युत दृष्ट होतो पुत्रहोवेगा और इससे विपरीत होवेतो नही होवेगा १८१

कन्या प्राप्तियोग।

सुतभे समांशवर्गे ज्ञमन्दान्यतरयुते शुक्रचंद्रान्यतर दृष्टे कन्या प्रजावान् १८२

पुत्रेशे नेत्रपाणौ पुत्रहानिः कन्याप्तिश्च १८३

पुत्रेयूनेशे सभावस्थागे कन्याधिक्यं १८४

शुक्राब्जवर्गे सुतभे समर्क्षे शुक्राब्जदृष्टे बहुकन्यावान् १८५

सुतेशेर्थेष्टमे बहुकन्या १८६

लाभेज्ञे शुक्रेचन्द्रेवा कन्याप्रजाः १८७

ज्ञेन्द्वच्छानामन्यतमे सुते कन्योत्पादः १८८

टिका–पंचम भाव मे समराशी (२।४।६।८।१०।१२) और सम राशिका नवांश बुध किंवा शनी से युतहोवे और शुक्र अथवा चंन्द्रसे किंवा इनदोनोसे दृष्टहो तो कन्या प्रजा वाला होवे १८२

नेत्र पाणि अवस्था में गयाहुवा बुध पंचमभावमे गयाहो तो पुत्रकी हानी और कन्याकी प्राप्ती होवेगा १८३

सभावस्ता मे गयाहुवा बुध पांचमे अथवा सातमे भावमे गयाहो तो बहुत कन्या होवेगा १८४

पंचम भाव समराशी (२।४।६।८।१०।१२) का होवे और वह शुक्र चंद्र के दशवर्ग मे होकर शुक्र चन्द्रसे ही दृष्टहो तो बहुत कन्यावा का होवे १८५

पंचमेश धनमे अथवा आठमे भावमे गयाहोतो बहुत कन्या होवेगा १८६

लाभभावमे बुध, शुक्र, किंवा चंद्रमा इनतीनो मेसे (अेकभी ग्रह गया होतो कन्याप्रजावाला होवे १८७ (जितने अधिक ग्रहका योग होवे बतनाही योग बलवान होताहे)

बुध, चंद्र, और शुक्र इन तीनोमेसे एकभी पांचमे भावमे गयाहो तो कन्या प्रजा का जन्म होवेगा १८८

अल्पापत्य योग।

कर्केचन्द्रेसुतेकन्यावान्वाल्पापत्यः १८९

नीचे पुत्रेशे षष्ठादित्रयगे पापयुते काकवन्ध्या १९०

पुत्रेशे नीचे मन्दयुते काकवन्ध्या १९१

टीका–कर्क राशी का चन्द्रमा पंचम भावमे गयाहो तो कन्यावा का किंवा अल्प संतान वाला होवे १८९

पंचमेश नीचका होकर ६।८।१२ मे भावमे गया हो और पाप ग्रहसे युतहोतो काकवन्ध्या होवे (अेकवार संतान होकर फिरनही होवे) १९०

पंचमेश नीचका होकर शनीसें युतहो तो काकवन्ध्या होवे १९१

बहुप्रज योग.

सुतेशुक्रभांशौ वा शुक्रदृष्टेबहुप्रजः १९२

टीका-पंचम भावमें शुक्र की राशी (२-७) और नवांश होवें किंवा बलवान् शुक्र पंचम भाव को देखता हो तो बहुप्रज (बहुत संतान वाला) होताहै १९२

पुत्र पुत्री संख्या योग.

पुत्रे यावत्पुंग्रहदृष्टि स्तावत्पुत्राः १९३

कोणेशुक्रर्क्षगेन्दावेकपुत्रः १९४

सुतेराहु केतु कुपुत्रः १९५

धीस्थेर्के शुभदृष्टे त्रिपुत्रः १९६

मृगेर्कजेसुते त्रिपुत्रः १९७

सुते मृगगे भौमे त्रिपुत्रः १९८

कुंभेमन्दे सुते पञ्चपुत्रः १९९

सुतेसूर्यभौमगुर्वन्यतमेक्रमा देक त्रि पञ्च पुत्रोत्पत्तिः २००

सितेन्दुवर्गेपुत्रर्क्षे ओजभे सितेन्दुयुते बहुपुत्रः २०१

पुत्रेस्त्रीग्रह दृक्तुल्या कन्या २०२

सुते चन्द्रज्ञ सितशनयो द्वित्रि पञ्चसप्तकन्योत्पत्तिः२०३

टीका- पंचम भावपर जितने पुरुष ग्रह की दृष्टिहोवे उतनेही पुत्र होवेंगे १९३ (जिस ग्रहकी दृष्टी होवें वह स्व राशीका होतो द्विगुण उच्च मूल त्रिकोण राशी का होतो त्रिगुण संख्या कहना) अथवा पंचम भावमें जितने नवांश गयेहोवे उतने संतान कहना शुभ ग्रहसेदृष्ट होतो उससे द्विगुण संख्या जानना। अथवा कितनेक विद्वान पुत्र स्थान में गई हुई राशी के अंकाके संख्याके समान किंवा पुत्रस्थानेश की किरण की संख्या के समान भी संतानकी संख्या कहते है।

शुक्रकीराशी (७-२) मे गयाहुवा चंद्रमा नवम किंवा पंचम भावमें गयाहोतो एकपुत्र होवेगा १९४

पंचम भावमे राहु अथवा केतु गयाहै वे तो एक कुपुत्र होवे १९५
पचम भावमे गयाहुवा सूर्य शुभ ग्रहसे दृष्ट होतो तीनपुत्रहोवे १९६
मकर राशी मे गयाहुवा मंगल पंचमभावमे होतो तीनपुत्रहोवे १९७
मकर राशी का शनी पंचमभावमे गयाहोतो तीनपुत्रहोवे १९८

कुंभ राशी का शनी पंचमभावमे गयाहोतो पाचपुत्र होवेगे परंतु सूत्र २०९ के अनुसार इसी योगमे दत्तपुत्र योगभी होजाताहै इस कारण यदि मकर राशीका पंचम भाव ६ अंश४० कलासे अधिक अंश का होवे और उसमे शनीगया होतो तीन पुत्र होवेगे एवं कुंभराशीका पंचम भाव १० अंश०कलासे १६ अंश ४० कला पर्यंत के ६ अंश४० कलाके अति रिक्त शेष अशका होवे और उसमे शनिगयाहोतो पाच पुत्र होवेगे अन्यथा नही होवेगे। तात्पर्य यहहै कि मकरके ६अंश ४० कला पर्यंत के पंचम भावमे मकर का शनि, तथा कुंभ के १०ही अंश से १६ अंश ४० कला पर्यंत के पंचम भावमें कुंभका शनि, जावेगा तो दत्त पुत्र ही लेना पडेगा तीन तथा पांच पुत्र नही होवेंगे १९९

पंचम भावमें सूर्य गया होतो १ एक पुत्र, मंगल गयाहोतो ३ तीन पुत्र, गुरु गया होतो ५ पांचपुत्र, होगा। सूर्य मंगल दोनोहोवे तो ४ सूर्य गुरु होव तो ६ मंगल गुरु होवतो ८ सूर्य मंगल गुरु ये तीनो गये होवेतो ९ पुत्र का जन्म होवेगा २००

विषम राशी १।३।५।७।९।११का पंचमभाव शुक्र और चंद्रके दृशवर्गमें गया होवे और वह शुक्र चंद्रसे युत होवेतो वहुत पुत्रवाला होवेगा २०१
पंचम भावपर जितने स्त्री ग्रहकी दृष्टी होवे उतनीहीकन्याहोवेगा२०२

पंचमभावमें चंद्रगयाहोतो ३ शुक्र गया होतो ५शनीगयाहोवेतो ७ कन्याका जन्महोवेगा (और ये ग्रह दो तीन सयुक्त होवे तो उनकी संख्या के एकत्रके अनुसार कन्याका जन्म समझना) २०३

बृहत्पाराशरीमे संतान संख्याके औरभीविशेष योग इसप्रकार लिखेहैकि

लग्नमेराहू, पाचमेगुरु, नवमेशनि, गयाहोतो १ पुत्र होवगा।

धनेश पंचमेशका योग पंचम भावमे हुवा होतो ६ पुत्र होवेगा उनमे ३ मरजावेगा।

नवमे भावमे शनि गया होवे और नवमेश पंचम मे होतो ७ पुत्र होवेगा जिनमे दो गभ यमल (जोडले) बालकके होवेग।

गुरु ९ मे किंवा ५ में भावमे व धनेश १० मे भावमे गयाहो और पंचमेश बलवान होवेतो ८ पुत्र होवेगा।

परमोच्चराशी का गुरुहो व धनेश राहुसे युत होवे और नवमेश ९मे गयाहोतो ९ पुत्र होवेगा।

परमोच्चराशी मे गया हुवा पंचमेश लग्नेशसे युतहोवे और गुरु शुभग्रहसे युतहोतो १० पुत्र होवेगा।

पंचम भावमे पापग्रह गयाहोवे और गुरुसे पांचमे शनीगया हो तो दूसरा विवाह करने से (दूसरी स्त्री के) पुत्र होवेगा और ३ स्त्रा का सुख रहेगा.

प्रथम पुत्र किंवा पुत्री जन्म योग।

स्वर्थाङ्गे लग्नपे प्रथमः सुतः २०४

द्विस्व भावगा श्चन्द्रारशुक्राः प्रथमः सुतः २०५

लाभेपापे पंचमे चन्द्राच्छौ प्रथमः कन्याः २०६

पुत्रेशे पुंभाशगे पुंग्रेह प्रथमं पुत्रोन्यथा कन्या २०७

टीका–लग्नेश लग्नमे किंवा दूसरे तीसरे भावमे गयाहोतो प्रथम पुत्रहोवेगा।२०४

चंद्र, मंगल, और शुक्र. ये तीनो द्विस्वभाव राशी में गयेहोतो प्रथम पुत्र होवेगा. २०५

लाभ (११) भावमे पापग्रह गयाहोवे और पांचवे भावमे चंद्र शुक्र का योग होतो प्रथम कन्या होवेगा २०६

पंचमेश पुरुष ग्रह होवे और वह पुरुष राशी (१।३।५।७।९।११) मे, पुरुष कीराशी के ही नवांश मे गया होवे तो प्रथम पुत्रहोवेगा। और पंचमेश यदि स्त्री ग्रह हो वे और स्त्री राशी (२।४।६।८।१०।१२) मे स्त्री राशी के ही नवांशमे गया होतो प्रथम कन्या होवेगा २०७

औरस पुत्र योग।

पंचमेएकतमे गुरुवर्गे शुभराशावौरसः पुत्रः २०८

टीका–पंचमभावमे केवल गुरुका दशवर्ग होवे किंवा पंचम में शुभ ग्रह की राशी शुभग्रह के वर्ग मे शुभग्रह से दृष्ट होतो औरस पुत्र (सगे पुत्र) का सुख होवेगा २०८

अथ षष्ठविवेकः ।

ज्ञातिशत्रु योग ।

षष्ठेशे षष्ठे ज्ञातिः शत्रुः १

टीका-छठे भाव का स्वामी छठे भावमही जावेतो जातिके लोग शत्रुहोवे १

सुत शत्रुयोग ।

अन्त्यारिगे सुतेशेसुतःशत्रुः २

पुत्राद्येश शात्रवे वा पुत्रपेषष्ठे लग्नेशदृष्टे पुत्रःशत्रुः ३

टीका-पंचमेश छठे अथवा बारमे भावमे जावेतो पुत्र शत्रु होवे २

लग्नेश पंचमेश के परस्पर शत्रुता होवे अथवा पंचमेश छठेभाव में गयाहो और उसको लग्नेश देखता हो तो पुत्र शत्रुहोवे ३

मातृवैरयोग ।

लग्नेशस्य सुखायेशौ शत्रु चेन्मातृवैरम् ४

सुखपे पापदृग्युते मातृवैरम् ५

तुर्यपे लग्नपतः षष्ठे वा तुर्येशे षष्ठे मातृवैरम् ६

टीका-सुख और लाभ भावके स्वामी लग्नेशके शत्रु होतो माता से वैरहोवे ४

सुखेश पापग्रहसे युत दृष्टहोतो मातासे वैरहोवे ५

सुखेश लग्नेशसे छठे भावमें गयाहो अथवा सुखेश छठेभावमेंगयाहो वो मातासे वैर होवे ६

पिता शत्रु योग ।

लग्नखेशयोः शात्रवे वाखेशे लग्नगो लग्नपतो वा षष्ठे पिताशत्रुः ७

सुतेशेत्रिके लग्नेशदृष्टे पितृदूषकः ८

पुत्रेशे त्रिकेराज्ञार दृष्टे पितृदूषकः ९

टीका–लग्नेश दशमेश के परस्पर शत्रुताहो अथवा दशमभावका स्वामी लग्नमें या लग्नेश छठेभावमें गया होतो पिता शत्रुहोवे ७

पंचमेश ६।८।१२ स्थानमें गयाहो और उसको लग्नेश देखता हो तो पिताको दूषण लगाने वाला होवे ८

पंचमेश ६।८।१२ स्थानमें गयाहो और वह राहु मंगल इन दोनो ग्रहो से दृष्टहो तो पिताको दूषण लगाने वालाहोवे ९

शत्रुपीडायोग.

षष्ठेशेकेंद्रे पापदृष्टे शत्रुपीडा १०

षष्ठपापा वा लग्नेशः षष्ठे षष्ठेशेऽङ्गे शत्रुपीडा ११

षष्ठपेऽबले पापदृष्टे पापांतरे वा शत्रुपीडा १२

टीका–षष्ठेश केंद्रमे गयाहो और पापग्रह से दृष्टहो तो शत्रुकी पीडा होवेगा १०

छठे भावमे पापग्रह युतहो अथवा लग्नेश छठेभावमे और षष्ठेशलग्न में गयाहोतो शत्रुकी पीडाहोवेगा ११

षष्ठेश निर्बली होकर पापग्रह से दृष्टहोवे अथवा पापग्रहोके मध्यगत हो तो शत्रुकी पीडाहोवेगा १२

स्त्री शत्रु योग।

लग्नदारपयोः शात्रवे स्त्रीशत्रुः १३

टीका–लग्नेश सप्तमेश के परस्पर शत्रुता होतो स्त्री शत्रुहोवे १३

वैरिहन्ता तथा शत्रुनाश योग।

षष्ठेशेंगे वैरिहन्ता १४

षष्ठेशे बलाढ्ये वैरिहन्ता १५

षष्ठेशुभ दृष्ट्या धिक्ये वैरिहन्ता १६

षष्ठेशेत्रिके नीचमूढारियुते लग्नेशेबलिनि शत्रुनाशः १७

लग्नेशाद्रीशेल्पबले शत्रुनाशः १८

षष्ठेर्के कौतुके शत्रुनाशः १९

टीका-षष्ठेश लग्नमें गयाहोतो वैरिकानाश करनेवाला होवे १४
षष्ठेश बलवान होवेतो वैरिहन्ता होवे १५
षष्ठस्थानपर शुभग्रहों कि दृष्टि अधिकहोतो वैरिहन्ता होवे १६
षष्ठेश (६।८।१२) त्रिकस्थानमें हो नीच, अस्त तथा शत्रुराशी के ग्रहसे युतहोवे और लग्नेश बलवान होतो शत्रुका नाश होवे १७
लग्नेश से षष्ठेश अल्प बली होतो शत्रु का नाश होवे १८
छठे भावमें सूर्य कौतुकावस्थामें गया होतो शत्रुका नाशहोवे १९

व्रणपिटिकादि पीडायोग।

भौमेज्ञौ गुरुसितदृग्योगे व्रणपिटिकापीडा २०
केत्वर्कजा दृग्वे व्रणपीठिका पाडा २१
लग्नपारौ त्रिके ग्रन्थिशस्त्रज व्रणपीडा २२
सपापेरीशे लग्नेत्रिके शरीरेव्रणः २३
मंदारा वारिगौ वा व्ययगौ व्रणः २४
सार्केरीशेज्ञे वाष्टमे शिरोव्रणः २५
लग्नेरौकुजेपुत्रेपापान्वितेपापदृष्टेशिलाशस्त्रजंव्रणंमस्तके२६
भौमेंगे यूनेजीवे वा शुक्रे व्रणांकितशिरः २७
सचंद्ररीशेंगे वाष्टमे मुखव्रणः २८
भौमारीशावंगे वाष्टमे कंठव्रणः २९
जीवारीशा वंगे वाष्टमे नाभिमूलेव्रणः ३०
ज्ञारीशौरंध्रेगेवा हृदय व्रणः ३१
शुक्रारीशौ लग्नेरंध्रे नेत्रमूले व्रणः ३२
मंदारीशौ रंध्र देहे पादव्रणः ३३
राहु केतु युतारीशोष्टमे देहे अधरव्रणः ३४
व्ययारिगेभौमे व्ययेशुक्रे वामपार्श्वेव्रणः ३५

व्ययेगुरौविधौ ज्ञे व्यायारिगेगुदा व्रणः ३६
षष्ठेत्येशार्किंयोगे सौम्यादृष्टे गंडमालादयः ३७
सपापे कर्मगेरिशे पापदृष्टे वा यदंगराशौ तदंगे व्रणः ३८

टीका -वृश्चिक राशिमे गयेहुवे मंगलको गुरु शुक्र नहीं देखने होवेतो जखम फोड़ा फुनसी की पीडाहोवे २०

केतु और शनि ये दोनो सातमे भावमें गयेहोवो जखम फोड़ा वगेरा की पीड़ाहोवेगा २१

लग्नेश और मंगल ये दोनो ६।८।१२ भावमे गयेहोवेतो गठान की और शस्त्र के जखमको पीड़ा होवेगा २२

पापग्रहसें युत षष्ठेश लग्नमे तथा त्रिकस्थानमें गयाहोतो शरीरमे घाव (जखम) होवेगा २३

शनि और मंगल ये दोनो छठे अथवा बारमे भावमें गयेहोतो घावकी पीड़ा होवेगा २४

षष्ठेश सूर्यसें युतहोकर लग्नमें वा आठमें भावमें आवेतो मस्तक में जखमहोवेगा २५

लग्नेश मंगल होवे और वह पंचम भावमें पापग्रह सें युतदृष्टहो तो पाषाण तथा शस्त्र से मस्तकमें जखम होवेगा २६

लग्नमें मंगलहो और सातमें भावमें गुरु अथवा शुक्र गयाहोतो व्रणांकित शिरहोवे अर्थात् मस्तकमें बहुत जखमो के चिन्ह होवे २७

षष्ठेश चंद्रसे युतहोकर लग्नमे अथवा आठमें भावमे गया होवेतो मुखपर व्रण (घाव) होवे २८

मंगल सें युत होकर षष्ठेश लग्नमें वा आठमें भावमे गयाहोवेतो कंठमे जखम होवे २९

गुरुसें युतहोकर षष्ठेश लग्नमें वा आठमें भावमें जोवेतो नाभीके नीचे व्रण होवेगा ३०

बुधसे युतहोकर षष्ठेश लग्नमें वा आठमें भाव में गयाहोवेतो हृदयमें व्रणहोवेगा ३१

शुक्रसे युत होकर षष्ठेश लग्नमे वा आठमें भावमे गया होवेतो नेत्र के मूलमें जखम होवे ३२

शनीसे युतहोकर षष्ठेश लग्नमेंवा आठमें भावमें गयाहोवेतो पांव मे व्रण होवे [illegible]

राहु वा केतुसे युतहोकर षष्ठेश लग्नमें अथवा आठमें भावमें गया होतो आष्ठ पर व्रण होवेगा ३४

मगल ३-११-६ भावमे गयाहो और बारमें भावमे शुक्रहोतो वाम पार्श्व में व्रण होवे ३५

बारमे भावमे गुरु और चंद्र दोना गये हो और बुध ३-६-११ भावमे होतो गुदा के समीप व्रण होवे ३६

मंगल और शनि का योग छठे अथवा बारमें भावमें होवे और उनको शुभग्रह नहीं देखते होतो गंडमाला रोग (कंठम होताहै वह) होवे ३७

पापग्रहसे युत अथवा दृष्ट षष्ठेश लग्नमें भावमे जिसराशीमें जावे [illegible] राशिकालपुरुष के अगम जिस अंगकी होवे उसी अगमे जखम (घाव) होवेगा अर्थात मेषराशी होतो मस्तक मे वृषभ होतोमुखपर इत्यादि क्रमसे राशीके अग के अनुसार व्रणका स्थान मानना ३८

वातगण्ड योग ।

लग्नेशार्कौ त्रिके वातगण्डः ३९

टीका-लग्नेश और रवि इन दोनो का योग ६।८।१२ भावमें हों तो वातगंड (वायुजन्य गलगंड) रोगहोवे ३९

जलज गंड योग ।

चंद्राङ्गेशौ त्रिके जलज गण्डः ४०

लग्नषष्ठेशचंद्रास्त्रिके जलगजण्डः ४१

मकरांशे दुष्टग्रन्थि गण्डादि ४२

टीका-चद्र और लग्नेश इनदोनोका योग ६।८।१२ भाव मे होतो जलसे उत्पन्न हुवा गलगण्ड रोगहोवे ४०

लग्नेश, षष्ठेश, और चंद्रमा ये तीनो ६।८।१२ भावमे गयेहोवेतो जलजगंड (कफजानितगलगंड) रोग होव ४१

कारकांशलग्न मकर राशीका होतो दुष्टग्रंथि रोग या गलगंड रोगादि होवे ४२

पित्तरोगीयोग.

लग्नेशज्ञौ त्रिके पित्तरोगी ४३

टीका-लग्नेश और बुध का योग ६।८।१२ भावमें होतो पित्तका रोग होवे ४३

आमरोगीयोग.

जीवांगेशौत्रिके आमरोगी ४४

टीका-गुरु और लग्नेश का योग ६।८।१२ भावमें हो तो आम रोगी होवे ४४

क्षय रोगी योग।

शुक्राङ्गेशौ त्रिके क्षयरोगी ४५

अंशात्तुर्यांत्यगौ क्रमात्कुजराहू क्षयरोगी ४६

भौमार्क्य दृष्टे लग्ने श्वासक्षयादिः ४७

चंद्रार्को यन्योन्य भांशगौ क्षयी ४८

सिंहेवा कर्केचंद्रार्कौ क्षयी ४९

स्वपे चंद्रे भौमदृष्टे ग्रहणिजः क्षयी ५०

कर्केज्ञे क्षयी ५१

टीका-शुक्र और लग्नेशका योग ६।८।१२ भावमें होतो क्षयरोगी होवे ४५

कारकाश लग्नसे चतुर्थभावमें मंगल और बारमें भावमें राहु गये हो तो क्षयरोगीहोवे ४६

मंगल और शनि लग्नको देखते होतो श्वास क्षयादिरोग होवे ४७

चंद्र और रवि परस्पर अन्योन्य राशी और नवांशमें गयेहोवे अर्थात् चंद्रकी (कर्क) राशीमें कर्कराशीके नवांशका रविहो और रवि की (सिंह) राशीमें सिंह राशीके नवांशका चंद्रमा हो तो क्षय रोगी होवे ४८

सिंह राशीमें अथवा कर्कराशी में रवि चंद्रकायोग होतो क्षयरोगी होवे ४९

शनिसे युक्त चंद्रमा को भौम देखता हो तो संग्रहणी रोग जनित क्षय रोग होवे ५०

कर्कराशी मे बुध गया होवे तो क्षयरोगी होवे ५१

चौरान्त्यज जनित रोगयोग।

लग्नेशेनसह शनि राहु केत्वन्यतमास्त्रिके चौरांत्यज जनितो रोगः ५२

टीका-लग्नेश से शनि, राहु, किंवा केतु इनतीनो ग्रहों में से कोईभीएक ग्रह युतहोकर (६।८।१२) त्रिकस्थानमे गयाहोतो चौर तथा अंत्यज जातिके मनुष्य के सबब से रोगहोवेगा। ५२

हृद्रोगीयोग।

तुर्यगा इज्यार्कार्कजाहृद्रोगी ५३

टीका-गुरु रवि और शनि ये तीनो ग्रह चतुर्थ भावमे गयेहोतो हृद्रोगी होवे ५३

व्याधियुत नित्यरोगी तथा नाना रोगवान् योग.

मंदे पापयुतदृष्टेन्त्ये वा त्रिकोणे व्याधियुतः ५४

त्रिकेष्टमेशे नित्यरोगी ५५

लाभेशेषष्ठ नानारोगवान् ५६

टीका-पापग्रहसे युत दृष्ट होकर शनि बारवें भावमें हो किंवा ९।५ भाव में गयाहोतो व्याधियुत (रोगी) होवे ५४

आठवें भावका स्वामी ६।८।१२ स्थानमे गयाहोतो नित्य रोगी होवे ५५

लाभेश छठे भावमें गयाहो तो अनेक रोग वाला होताहै ५६

स्त्री रोग योग।

शुक्रारौ सप्तमे स्त्री रोगः ५७

टीका-शुक्र और मंगल का योग सप्तम भाव में होतो स्त्री संबंधी दुःखका रोगहोवे ५७

दीर्घ रोगी योग।

शन्यारौषष्ठे राह्वर्के दृष्टौ लग्नेशेऽबले दीर्घ रोगी ५८

टीका-छठेभावमें गयेहुवे शनि मंगल रवि व राहु से दृष्टहो और लग्नेश बलहीन होतो बहुत दिनतक आराम नहीं होनेवाला (दीर्घ) रोग होवे ५८

उदर रोगी योग।

मदे राहु केतू उदररोगः ५९

रंध्रेमंदे लग्ने चंद्रे उदररोगः ६०

टीका-सातमें भावमें राहु किंवाकेतु गयाहोतो उदर (पेटमें) रोगहोवे ५९

आठमें भाव में शनि और लग्न मेंचंद्रगया होतो उदर रोग (पेटका रोग अर्थात मंदाग्नी पेटमें दुखना जलोदर कठोदर आदिरोग)होवे ६०

दंतरोगी योग.

लग्ने गुरु राहु दन्तरोगी ६१

षष्ठे राहु केतू दन्ते धरे वारोगी ६२

टीका-लग्नमें गुरु राहु का योगहो तो दंतरोगी (दांतके रोगवाला) होवे ६१

छठेभावमें राहु किंवा केतुगया होतो दांतमें वा ओष्ठमेंरोगहोवे ६२

स्मररोगी योग

मन्दारार्केन्दुषु रंध्रारिवित्तान्त्यस्थेषु स्मररोगी ६३

टीका-शनि, मंगल, रवि, और चंद्रमा ये चारोग्रह ८।६।२।१२ इनचारो भावो में क्रमसे वा कोईभी स्थान में चारो ग्रह [illegible] ये च्यारे च्यार गये होतो काम संबंधी (वीर्य विकारका) रोगहोवे ६३

नाभिरोगी योग।

गोरथेर्गोगे नाभिरोगी ६४

टीका-छटभाव का स्वामी ३ तीसरे भाव में गयाहोतो नाभिरोगी (नाभी में रोगहो वा नामसरकाने की पीडा) होवे ६४

पाद रोगीयोग

मंदेरिगे पादरोगी ६५

टीका-छठेभाव में शनिगयाहोतो पांव में रोगवाला होताहै ६५

टीका-तीसरे भाव का स्वामि बुधसे युत होतो गलेमे रोगहोवे८१
तीसरे भाव में पापग्रह गयेहोतो गलेमे रोगहोवे ८२
तीसरे भाव में गुलिक गयाहोतो अवश्य गलरोग होवे ८३
पापग्रह सें युतचंद्रमा सुखभाव मे गयाहोतो कंठमे रोगहोवे ८४

मस्तक रोग योग।

सोत्थेशेशेश्वराशेशे केंद्राद्ययुत दृष्टे मस्तकरोगः ८५

यमाररहव एकर्क्षगा मस्तकरोगः ८६

टीका-तीसरे भावके स्वामी के नवांश का स्वामी जिसराशि के नवांश मे होवे उसका स्वामि १।४।७।१० भाव मे गयाहो और पापग्रह सें युत दृष्ट होतो मस्तकमें रोग होवे ८५

शनि, मंगल, और राहु ये तीनोग्रह एकराशीमें गयेहोतो मस्तक मे रोगहोवे ८६

मुखरोगयोग.

कुजर्क्षगेशे ज्ञयुते मुखरोगः ८७

कोशेकारौ मुखरोगः ८८

टीका-मंगलकी राशी (१।८) में गया हुवा लग्नेश बुध से युत होतो मुख मे रोग होवे ८७

धनभावमे रवि मंगलका योग होतो मुख में रोग होवे ८८

कर्णरोग योग

सोत्थे प्रेत पुरीषांशे भौमे कर्णरोगः ८९

सोत्थे गुलिकार्कजौ शुभदृग्घीनौ कर्णरोगः ९०

सोत्थपे क्रूरषष्ठ्यंशे कर्णरोगः ९१

अंशे केतौ पापदृष्टे कर्णच्छेदः कर्णरोगो वा ९२

टीका- प्रेत पुरीष संज्ञक षष्ठ्यंशमें गयाहुवा मंगल तीसरे भावमें गया होतो कानमे रोग होवे ८९

तीसरे भावमे गुलिक और शनि गये हो और इनको कोइ शुभ ग्रह नहीं देखता होतो कानमे रोगहोवे ९०

टीका-छठेभावमें गयेहुवे शनि, मंगल रवि व राहु से दृष्टहो और लग्नेश बलहीन होतो बहुत दिनतक आराम नही होनेवाला (दीर्घ) रोग होवे ५८.

उदर रोगी योग।

मंदेराहु केतू उदररोगः ५९

रंध्रेमंदे लग्ने चंद्रे उदररोगः ६०

टीका-सातमें भावमें राहु किंवाकेतु गयाहोतो उदर (पेटमे) रोगहोवे ५९

आठवें भाव में शनि और लग्न मे चंद्रगया होतो उदर रोग (पेटका रोग अर्थात मंदाग्नी पेटमे दुखना जलोदर कठोदर आदिरोग)होवे६०

दंतरोगी योग.

लग्ने गुरु राहु दन्तरोगी ६१

षष्ठे राहु केतू लग्ने धरे वारोगी ६२

टीका-लग्नमे गुरु राहु का योगहो तो दंतरोगी (दातके रोगवाला) होवे ६१

छटेभावमें राहु किंवा केतुगया होतो दांतमे वा ओष्टमेरोगहोवे ६२

स्मररोगी योग

मन्दाराकेंन्दुषु रंध्रारिवितान्त्यस्थेषु स्मररोगी ६३

टीका-शनि, मंगळ, रवि, और चद्रमा ये चारोग्रह ८।६।२।१२ इनचारो भावो में क्रमसे वा कोईभी स्थान में चारों अेक राशी में वा न्यारे न्यार गये होतो काम संबंधी (वीर्य विकारका) रोगहोवे ६३

नाभिरोगी योग।

सोत्थेरांशे नाभिरोगी ६४

टीका-छठेभाव का स्वामी ३ तीसरे भाव में गयाहोतो नाभिरोगी (नाभी मे रोगहो वा नामसरकने की पीडा) होवे ६४

पाद रोगीयोग

मंदेरिगे पादरोगी ६५

टीका-छठेभाव में शनिगयाहोतो पांव में रोगवाला होवाहै ६५

टीका-तीसरे भाव का स्वामि बुधसे युत होतो गलेमे रोगहोवे८१
तीसरे भाव में पापग्रह गयेहोतो गलेमे रोगहोवे ८२
तीसरे भाव में गुलिक गयाहोतो अवश्य गलरोग होवे ८३
पापग्रह से युतचंद्रमा सुखभाव में गयाहोतो कंठमें रोगहोवे ८४

मस्तक रोग योग।

सोत्थेशेशेश्वरांशे केंद्रगारयुत दृष्टे मस्तकरोगः ८५

यमाररा‍हव एकर्क्षगा मस्तकरोगः ८६

टीका-तीसरे भावके स्वामी के नवांश का स्वामी जिसराशि के नवांश में होवे उसका स्वामि १।४।७।१० भाव में गयाहो और पापग्रह से युत दृष्ट होतो मस्तकमें रोग होव ८५

शनि, मंगल, और राहु ये तीनोग्रह एकराशिमें गयेहोतो मस्तक मे रोगहोवे ८६

मुखरोगयोग

कुजर्क्षगेशे ज्ञयुते मुखरोग. ८७

कोशेर्कारौ मुखरोगः ८८

टीका-मंगलकी राशी (१।८) में गया हुवा लग्नेश बुध से युत होतो मुख मे राग होव ८७

धनभावमे रवि मंगलका योग होतो मुख में रोग होवे ८८

कर्णरोग योग

स त्थे प्रेत पुरीषांशे भौमे कर्णरोगः ८९

सोत्थे गुलिकार्कजौ शुभदृग्घीनौ कर्णरोग. ९०

सोत्थपे क्रूरपष्ठ्यंशे कर्णरोगः ९१

अंशे केतौ पापदृष्टे कर्णच्छेद कर्णरोगो वा ९२

टीका- प्रेत पुरीष संज्ञक षष्ठ्यंशमें गयाहुवा मंगल तीसरे भावमें गया होतो कानमे रोग होवे ८९

तीसरे भावमे गुलिक और शनि गये हो और इनको कोइ शुभ ग्रह नहीं देखता होतो कानमें रोगहोवे ९०

तीसरे भावका स्वामिक्रूरग्रहयुक्तषष्ठमेंगयाहो तोकानमेंरोगहोवे ९१
बारवांश लग्नमें गयेहुवे केतुको पाप ग्रह देखते होतो कानकटजावे अथवा कानमें रोग होवे ९२

पीनसरोग योग.

षष्ठचंद्रे रंध्रेमंदे व्ययपापेलग्नेपापांशे पीनसरोगः ९३

टीका-छठे चंद्रमा, आठमे शनि, व बारमें पापग्रह, गये हो और लग्नेश पापग्रहके नवांशमे होतो पीनस रोग होवे ९३

पिशाच पाडायोग.

रंध्रचंद्रे समंदे बले पिशाचपीडा.९४

तमोर्कजौ लग्ने पिशाचपीडा ९५

टीका-आठमे भावमें चद्रमा शनीसे युत हो और निर्बली होतो पिशाचपीडा होवे ९४
राहु और शनि का योग लग्नमे होतो पिशाचपीडाहोवे ९५

चातुर्थिक ज्वरयोग.

रंध्रेशसराहुकेतौचातुर्थिकज्वरः ९६

टीका-अष्टमेश राहु किंवा केतुसे युत हो तो चातुर्थिक ज्वरका रोग होवे ९६

देहवैकल्य योग।

व्ययेशे बले क्रूरभांशे नीचांशे वा देहवैकल्यम् ९७

व्ययेशाशा वा व्ययेशः पापयुतो देह वैकल्यम् ९८

सूर्या द्वितीयेमंदे खेचंद्रे सप्तमेभौमे देहवैकल्यम् ९९

टीका-बारमें भावका स्वामि निर्बली हो और पापग्रहकी राशीमें नवशमे अथवा नीचराशी के नवांशमें होतो देह मे विकलताहोवे ९७
बारमें भावमे पापग्रह गये हो अथवा व्ययेश पापग्रहासे युतहोतो देहमें विकलता होवे ९८
सूर्यसे दूसरे भावमें शनि, दशमेंचंद्रमा, और सातमें भावमे मगल गया होतो देहमें विकलता होवे ९९

तनुशोष, गुल्म, संग्रहणी, अतिसार रोग योगाः

चंद्रार्कौ अन्योन्यर्क्षगौ तनुशोषः १००

कर्कालिघटांशे चंद्रे समंदे गुल्मरोगः १०१

अंशात्सुते केतौ संग्रहणी १०२

कोशेमंदे वा राहौ संग्रहणी १०३

लग्नेतमोज्ञौ द्यूनेयमारौ अतिसाररोगः १०४

टीका–चद्रकी राशी (४) में रवि और रविकी राशी (५) में चंद्रमागयाहो तो तनुशोषरोग (शरीरसूखताजावे यह रोग) होवे १००

कर्क वृश्चिक किंवा कुंभराशीके नवांशमें गयाहुवा चंद्रमा शनिसे युत होतो गुल्म रोग (गोलाचढनेकी बिमारी) होवे १०१

कारकांश लग्नसे पाचमें भावमें केतु गयाहोतो संग्रहणीरोग होवे १०२

धनभावमें शनि किंवा राहु गयाहोतो संग्रहणी रोग होवे १०३

लग्नमें राहुबुध और सातमे भावमे शनि मंगळ गये होतो अति-सार रोग होवे १०४

अग्नि विषार्दित तथा शीत रुक् योग.

धर्मे कुजेग्निविषार्दितः १०५

सपापे पापदृष्टे चंद्रे लग्ने शीतरुक् १०६

टीका–नवमे भावमे मंगळगयाहोतो अग्नि तथा विषके सबब से दुखी होवे १०५

पापग्रहसे युत और दृष्ट चंद्रमा लग्नमें गयाहोतो सरदीका रोग होवे १०६

प्रमेहरोग योग.

मंदार्कशुक्राः पंचमस्थाः प्रमेहः १०७

लग्नेर्के मदेभौमे प्रमेहः १०८

खेभौमे शनि युत दृष्टे प्रमेहः १०९

टीका–शनि, रवि, और शुक्र ये तीनो ग्रह पंचमस्थानमे गये होतो प्रमेहरोग (सुजाक वा परमिया) होवे १०७

लग्नमे रवि और सातमे मंगल गयाहोतो प्रमेह रोग होवे १०८

दशमे भावमे मंगल शनिसे युत किंवा दृष्ट होतो प्रमेहका रोग होवे १०९

वातरोग योग

समंदेशे नीचे ऽनिलरोगः ११०

इज्येऽङ्गे मदे मंदे वाताधिक्यं १११

त्रिकोणास्ते भौमे मंदेऽङ्गे वाताधिक्यं ११२

क्षीणेन्दु मन्दौ व्ययगौ वाताधिक्यं ११३

टीका–नीचराशीमे गयाहुवा षष्ठेश शनीसे युत होतो वात रोग होवे अर्थात् ८४ प्रकारके वायुके रोग है उनमेसे कोईभी रोग होवे ११०

लग्नमें गुरु और सातमें भावमें शनिगयाहोतो वायु अधिकहोवे १११

नवमें पांचमे तथा सातमे भावमे मंगल और लग्नमे शनिगया होतो वात रोग अधिक होवे ११२

क्षीणचंद्र और शनीका योग बारमें भावमे होतो वात रोग अधिक होवे ११३

मूत्र कृच्छ्ररोग योग ।

जलभेचंद्रे तत्पेषष्ठे जलर्क्षग ज्ञदृष्टे मूत्रकृच्छ्ररोगः ११४

पापाः षष्ठे वा सप्तमे मूत्र कृच्छ्ररोगः ११५

टीका–जलराशीका चंद्रहो उसचंद्रकी राशीका स्वामी छठे भाव में गयाहो और उसको जलराशी मे गयाहुआ बुधदेखताहोतो मूत्रकृच्छ्र रोग (पेशाब महाकष्ट से उतरे वह रोग) होवे ११४

छठे अथवा सात मे भावमे ३।४ पापग्रह गयेहोतो मूत्र कृच्छ्ररोग होवे ११५

कुष्ठीयोग

मेषेऽसे खेऽब्जे शनि भौम योगे कुष्ठी ११६

युग्मकर्क मीनांशे चंद्रे यमार दृष्टयुते कुष्टी ११७
कर्कालि वृप मृगगैः पापे त्रिकोणे दृष्टे वायुते कुष्टी ११८
ज्ञेन्दु लग्नपा राहु केतु युताः कुष्टी ११९
कुजेज्ञे रन्ध्रेर्के तुर्येर्कजे कुष्टी १२०
मंदारेन्द्वच्छेपु क्रूरार्दितेपु जलभगेपुसजलकुष्टी १२१
मंदार्कार युतौ रक्तकृष्णाख्य कुष्टी १२२
पष्ठेशे सारेंगे पित्तकुष्टी १२३
समन्देशिशेज्ञे कफकुष्टी १२४
सूर्य पष्ठेशावंगे रक्तकुष्टी १२५
अंशात्तुर्येचंद्रे केतुदृष्टे नीलकुष्टी १२६
अंशात्तुर्येचंद्रे कुजदृष्टे महाकुष्टी १२७
चंद्राच्छौ सपापौ जलभगौ श्वित्रि १२८
अंशात्सुखे चंद्रे शुक्र दृष्टे श्वित्रि १२९
लग्नेशा इन्द्वारौ वा राहुकेत्वन्यतर युतौ एकमाश्वित्रि १३०
मंदारचंद्रा मेषेवा वृषे श्वित्रि १३१
सौरारयोरिः फथनरथयोः कभा लग्नेचंद्रे सूर्यस्ते श्वित्रि १३२

टीका–मेपराशी का बुध, दशमे चंद्रमा, और शनि भौमका एकराशिमें योगहोतो कुष्टरोग वाला होवे इसयोग में शनि भौमके योग का स्थाननहीं कहाहै परंतु यदि ये योग दशमें भावमें चंद्रमा से युतहोतो विशेष बलवान होवेगा ११६

मिथुन, कर्क, तथा मीन राशी के नवांश में गयाहुवा चंद्रमा शनि मंगल से यु। किंवा दृष्टहोतो कुष्ट रोगवाला होवे ११७

कर्क, वृश्चिक, और मकर, राशीमें पापग्रह गये हो और उनसे ९।५ भावयुत अथवा दृष्टहो तो कुष्टरोगी होवे ११८

बुध, चंद्र, और लग्नका स्वामी ये तीनो राहु किंवा केतु से युत हो तो कुष्ट रोगी होवे ११९

लग्नमें मंगल, आठमे भावमें रवि और चतुर्थभावमें शनि गया होतो कुष्ट रोगी होवे १२०

शनि, मंगल, चंद्र, और शुक्र ये चारो ग्रह पापग्रहसे युत वा दृष्ट हो आर जलराशी में गये हो तो जिस कुष्टरोगमे पानी चुयाकरे वैसा सजल कुष्ट रोगवाला होवे १२१

शनि रवि और मंगल का योग हो तो रक्तकृष्ण नामका कुष्ट होवे। इस योग में स्थान नहीं कहा है परंतु ये योग १।४।८ भाव में होतो बलवान् जानना १२२

षष्ठेश लग्न में मंगल से युत होतो पित्तकुष्टी होवे १२३

षष्ठेश लग्नमें शनि से युत होतो कफ कुष्टी होवे १२४

षष्ठेश लग्नमें सूर्य से युत हो तो रक्तकुष्टी होवे १२५

कारकांशलग्नसे चतुर्थ भाव में चंद्रमा केतुसें दृष्टहोतो नील कुष्टी होवे १२६

कारकांशलग्नसे चतुर्थभाव में गयाहुव चंद्रमा मंगल से दृष्ट होतो महा कुष्टी होवे १२७

जलराशी मे गये हुवे चंद्र शुक्र पापग्रहो से युतहोतो सफेद कोढ़ का रोग होवे १२८

कारकांश लग्नसे चतुर्थभाव में चंद्रमा शुकसेदृष्ट होतो सफेद कुष्ट रोग होवे १२९

लग्नेश किंवा चंद्र मंगल, राहु अथवा केतुसे युत होतो कोईभी शरीरके एक भागमे सफेद कुष्ट होवेगा १३०

शनि मंगल और चंद्रमा ये तीनो मेष अथवा वृषभ राशी मे गये होतो सफेद कुष्ट रोग होवे १३१

बारमे शनि, धनमें मंगल, लग्न में चंद्रमा, और सातमें सूर्य क्रमसे गये होतो सफेद कुष्ट रोग होवे १३२

कुष्टरोग १८ प्रकारका होता है उनमेसे ग्रहयोगोंके बलानुसार कोईभी जातका कुष्ट रोग होता है।

शूलरोगी योग।

षष्ठान्त्यगौ मन्दारौ शूलरोगी १३३

सिंहे चंद्रे पापार्दिते शूलरोगी १३४

लाभेशे सोत्थे शूलरोगी १३५

केंद्र कोणे सिंहगेशुक्रे सोत्थेजीवे शूलरोगी १३६

टीका—छठे किंवा बारमें भावमें शनि मंगल गयेहो तो शूलरोग वाला होता है १३३

सिंहराशीमें गयाहुवा चंद्रमा पापग्रहोंसे युत दृष्ट होतो शूलरोगी होवे १३४

लाभेश तीसरे भावमे गया होतो शूलरोगी होवे १३५

सिंहराशीमें गयाहुवा शुक्र केंद्रकोणस्थान (१।४।७।१०।९।५) में और गुरु तीसरे भावमें गया होतो शूल रोगी होवे १३६

पामान योग।

सपाप चंद्रे नवमे पामानः १३७

टीका—पापग्रहसे युत चंद्रमा नवमे भावमें गयाहोतो पाम (खाज) रोग वाला होवे १३७

अर्शरोग योग।

मन्देन्त्ये पाप दृष्टेऽर्शसः १३८

मन्दे लग्ने कुजेस्तेऽर्शसः १३९

द्युनेरंध्रेशे क्रूर शुभादृष्टेऽर्शसः १४०

मंदेस्तेलौ भौमेक्षेऽर्शसः १४१

मन्देन्त्ये द्युनगौ लग्नपारौ अर्शसः १४२

व्ययेर्कजे भौमांगेशदृष्टेऽर्शसः १४३

टीका—बारमें भावमें शनि पापग्रहसे दृष्ट होतो अर्श (बवाशीरका) रोग होवे १३८

शनि लग्नमें और मंगलसातवमें भावमें होतो अर्श रोगी होवे १३९

अष्टमेश क्रूरग्रह होकर सातमें भावमें गयाहो और शुभग्रहसें दृष्ट नहो तो अर्श रोगी होवे १४०

शनि सप्तमभावमें और वृश्चिकराशीका मंगलनवमे भावमें गया हो तो अर्श रोगी होवे १४१

शनिवारमें भावमें और लग्नेश व मंगल ये दोनो सप्तम भाव में गये होतो अर्श रोगी होवे १४२

बारवे भाव में गयाहुवा शनि, मंगल और लग्नेश दोनोसे दृष्टहोतो अर्शरोगी अर्थात् बवासीर के रोगवाला होवे १४३

कफरोग योग।

मंदार्कै योगे कफरोगः १४४

टीका-शनि सूर्यका योगहोतो कफका रोगहोवे १४४

प्लीहरोग योग।

षष्ठेशेचंद्रे पापयुते प्लीहरोगः १४५

लग्नेशेस्ते क्रूरदृष्टे शुभदृग्घीने प्लीहरोगः १४६

चंद्रेश षष्ठेशौ क्रूरमात्रदृष्टौ प्लीहरोगः १४७

कामांगेशे चंद्रेक्रूरमात्र दृष्टे प्लीहरोगः १४८

सौरारमध्यगे चंद्रे मृगेर्के प्लीहश्वासादिः १४९

सुतगौमंदचंद्रौ प्लीहरोगी १५०

टीका-षष्ठेश चंद्रमा पापयुत होतो प्लीहरोगी (तिल्लीबढनेका रोग) होवे १४५

लग्नेश सप्तम भावमे क्रूर ग्रहसे दृष्टहो और किसी शुभग्रहसे दृष्ट नहिंहोतो प्लीहरोगहोवे १४६

चंद्रमा जिसराशिमे गयाहो उसराशी का स्वामि और षष्ठेश ये दोनो क्रूर ग्रहमात्र सें दृष्ट होतो प्लीहरोग होवे १४७

सप्तम भावका किंवा लग्नका स्वामी चंद्रमा हो और वह क्रूरग्रह मात्र सें दृष्टहोतो प्लीह रोगहोवे १४८

शनि और मंगल के मध्यमे चंद्रमा गयाहो और मकराशीमारवि होतो प्लीह (तिल्ली बढनेका) वा श्वास कास का रोगहोवे १४९

पंचम भाव में शनि चंद्रमा गयेहोतो प्लीहरोगवाला होवे १५०

दद्रुरोग योग।

कोशेजलर्क्षे चन्द्रे मन्ददृष्टे दद्रुः १५१

लग्नेर्के दद्रुः १५२

टीका–जलराशीमे गयाहुवा चंद्रमा धनभावमे गयाहो और उसको शनि देखता हो तो दद्र [दादका] रोगहोवे १५१

लग्नमे रवि गयाहोतो दद्रुरोग होवे १५२

जलभययोग।

कर्कांशे जलभयम् १५३

अष्टमे चन्द्रे जलभयम् १५४

लग्नेब्जे पापदृष्टे जलभीः १५५

टीका–कारकांश लग्न कर्कराशी का होतो जलका भय (जलघात) होवे १५३

आठमे भाव मे चंद्रमा गयाहोतो जलका भय होवे १५४

लग्नमे गायहुवा चंद्रमा पापग्रह से दृष्टहोतो जलका भयहोवे १५५

सर्प भययोग।

चंद्रारौपष्ठेऽष्टमेवा सर्पभयम् १५६

तमस्यर्थे गुलिकयुतदृष्टे सर्पभयम् १५७

सोत्थेशे राहुयुतेङ्के सर्पभयम् १५८

टीका–चंद्र और मंगल छठे अथवा आठ में भाव में गये होतो सर्प का भयहोवेगा १५६

धनभावमे गयाहुवा राहु गुलिक से युतदृष्टहोतो सर्पका भयहोवेगा १५७

तीसरे भाव का स्वामि और राहु कायोग लग्न में होतो सर्पका भयहोवे १५८

चोर तथा अग्नि भय योग

पापेङ्के त्रिकोणे गुलिके चौर भयम् १५९

केतावङ्गे पापयुत दृष्टे पिशाचचौरभयं १६०
सराहुकेतौ षष्ठेशे सर्पपीडाचौराग्निभीर्वा १६१
धर्मेशे षष्ठे षष्ठेश दृष्टे चौराग्निभीः १६२
षष्ठेशे मंदारयुते चौराग्निभीः १६३

टीका–लग्नमें पापग्रह, और ९–५ भावमे गुलिक गया होतो चौर-का भय होवे १५९
लग्नमे गयाहुवा केतु पापग्रहसे युत और दृष्ट होतो पिशाचका तथा चोरकाभय होवे १६०
षष्ठेशराहु से किंवा केतुसे युत होतो सर्प पीडा अथवा चौरभय वा अग्निका भय होवे १६१
नवमें भावका स्वामि छठे भाव में षष्ठेशसे दृष्ट होतो चौर किंवा अग्निका भय होवे १६२
षष्ठेश शनि मंगलसे युत होतो चौर किंवा अग्निका भय होवे १६३

स्फोट अग्नि तथा खल भय योग.

लग्नाष्टास्तेर्के भौमदृष्टे स्फोटाग्निखलभीः १६४
स्ताष्टाद्यार्थे भौमे सूर्यदृष्टे स्फोटाग्निखलभीः १६५
लग्नान्त्यारिमदे गुलिकारौ सूर्यदृष्टौस्फोटाग्निखलभीः१६६
सारेषष्ठेशेऽग्निभीः १६७
क्रूरेंगे पापयुतदृष्टेऽग्निभीः १६८

टीका–लग्नमे आठमे अथवा सातमे भावमें गयाहुवारवि मंगल से दृष्ट होतो फोडाफुन्सिका तथा अग्निका वा दुष्ट मनुष्यका भय होवे १६४
सातमे आठमे लग्नमे अथवा धनभावमें गयाहुवामंगलसूर्यसे दृष्ट होतो फोडा फुन्सिका तथा अग्नीका अथवा दुष्ट मनुष्यकाभय होवे १६५
लग्नमें बारमें छठे अथवा सातमे भावमें गुलिक मंगलका योग हो और उनको रवि देखता होतो फोडाफुन्सि तथा अग्नीका अथवा दुष्टमनुष्यका भय होवे १६६

षष्ठेश मंगल से युत होतो अग्निका भय होवे १६७
लग्नमें गये हुवे क्रूर ग्रह पापग्रहसे युत और दृष्टहो तो अग्नीका भय होवे १६८

श्वान भय योग.

धनेमन्देशपदृष्टयुते शुनोभयम् १६९

मन्देधनेशयुक्तदृष्टे शुनोभयम् १७०

टीका-धनभावमें शनि पापग्रहसे युत और दृष्ट होतो श्वानका (कुत्तेका) भय होवे १६९
शनि धनेशसे युत और दृष्टहोतो श्वानका भय होय १७०

शृगालादि भय योग.

गुलिकारो धनेष्टमे वा धनेश दृष्टौ शृगालादिभिः १७१

यमे षष्ठेशे सूर्ययुते शृगालादिभीः १७२

टीका-गुलिक और मंगल धनमें अथवा आठमें भावमें गये हो और धनेशसे दृष्ट होतो शियाल लोमडी आदि जंगली जानवरोंका भय होवे १७१
धनभावमें षष्ठेश सूर्यसे युतहोतो शियाल वगेरा जंगली जानवरो का भयहोवे १७२

चतुष्पदभययोग.

लग्नेजीवसोत्थपौ चतुष्पदभीः १७३

चंद्रार्कभेराहौ चंद्रार्कयुतेपशुभीः १७४

टीका-गुरु और तीसरे भावका स्वामी ये दोनो लग्नमें गयेहोतो चतुष्पद (गाय भैंस गधा आदि) का भयहोवे १७३
कर्क किंवासिंह राशीमे गयाहुवा राहु रविचंद्रसे युतहोतो पशुका भयहोवे १७४

मृगभययोग.

षष्ठेशे मन्दे राहुकेतुयुते मृगभीः १७५

टीका-षष्ठेशशनि, राहुकिंवा केतुसे युतहोवो हरिणका भयहोवे १७५

गजभययोग.

षष्ठांगपौजीवयुतौगजभीः १७६

टीका-षष्ठेश और लग्नेश ये दोनो गुरुसे युतहोतो गजका भयहोवे १७६

अश्वभययोग.

लग्नारीशौ चंद्रयुतौ अश्वभी १७७

टीका-लग्नेश और षष्ठेश ये दोनो चंद्रमासे युतहोतो अश्वकाभय-होवे १७७

गेहशैथिल्यभययोग.

रंध्रेकोणेर्केगेहशैथिल्यभयम् १७८

टीका-रवि आठमें नवमें किंवा पांचमें भावमें गयाहो तो पुरानेघरका पड़नेका भयहोवे १७८

क्षेत्रचिंतायोग.

खे भौमेक्षेत्रचिंता १७९

टीका-दशमे भावमे मंगल गया होतो क्षेत्र संबंधकी चिंता रहे१७९

सौख्यचिंता योग.

त्रिके भौमे सौख्यचिंता १८०

टीका-मंगल ६।८।१२ भावमें गया हो तो सुखकी चिंता रहे १८०

वाहनाभरणवस्त्रचिंतायोग.

जीवेत्रिके वाहनाभरणवस्त्रचिंता १८१

टीका-गुरु ६।८।१२ भ.व में गया होतो वाहन आभूषण और वस्त्रा-दिककी चिंता रहेगा १८१

छत्र चामर चिंता योग.

त्रिके चंद्रे वा सिते चामर छत्र चिंता १८२

टीका-चंद्र अथवा शुक्र ६।८।१२ में भावमे गया होतो चामर (चँवर) व छत्रकी चिंता रहे १८२

पुत्र चिंता योग.

द्युने कोणे जीवे पुत्र चिंता १८३

युद्धोत्साही युद्धकुशलयोग।

सोत्थेशे सिंहासने पारावत गोपुरे मृदंशे वा शुभदृष्टयुते उत्साहो युद्धकौशलं च ६

सोत्थपेतुङ्गे सशुभे युद्धाभिलाषी ७

सोत्थपे वैशेषिके सबले मृदंशगेङ्गे वा युद्धाभिलाषी ८

टीका-तृतीयेश सिंहासनांश, पारावतांश, गोपुरांश, मे किंवा मृदंशमें शुभग्रहसे युत दृष्ट होवे तो युद्ध मे आनेका उत्साह और युद्धकार्य में कुशल (प्रवीण) होवे ६

तृतीयेश अपनी उच्चराशीमे शुभग्रहसे युत होवे तो युद्धकी अभिलाषा करनेवाला और युद्धकार्य मे प्रवीण होवे ७

तृतीयेश वैशेषिकांशमें बलवान् होवे अथवा मृदंशमें स्थितहोकर लग्न में गया हो तो युद्धकी अभिलाषा करनेवाला युद्ध विद्या विशारद होवे ८

सेनापति योग।

शुभर्क्षे सुखेशे धर्मपयुते सेनाबाहुल्यम् ९

षट्सु मित्रभगेषु सेनापतिः १०

भौमे सबले सेनापतिः ११

टीका-चतुर्थभावका स्वामी शुभ ग्रहकी राशीमे नवमेशसें युत हो तो अधिक सेना वाला होवे ९

छ ग्रह अपनि मित्रराशीमें गये हो तो सेनापति होवे १०

मंगल बलवान् होवे तो सेनापतिहोवे ११ अर्थात् सूबेदार केप्टन मेजर करनल, जरनल, आदिअधिकार वाला सेनाध्यक्ष होता है।

व्यभिचारीयोग।

शुक्रज्ञौ सास्ताष्टान्यतमे व्यभिचारी १२

सास्तगो भौमाच्छौ व्यभिचारी १३

सौद्भुपोकव्यारो व्यभिचारी १४

चंद्रात्खेशुक्रे ततः खे मंदे व्यभिचारी १५
खात्स्वगाः शुक्रभस्था ज्ञाच्छार्कजाव्यभिचारी १६
षष्ठेशे त्रिके व्यभिचारी १७
दारार्थ कर्मेशाः खे व्यभिचारी १८
सराहुकेतौ दारेशे पापदृष्टे व्यभिचारी १९
शन्यारवर्गे शुक्रे भौमार्कदृष्टे व्यभिचारी २०
अंशादन्त्ये शुक्रारौ व्यभिचारी २१
अंशादब्दे केतावाधरणं परांगनाशक्तिः २२
धनेशे सोत्थे तुर्ये विक्रमी व्यभिचारी च २३
द्यूनेशेऽङ्कस्ते व्यभिचारी २४
मन्दारवर्ग मात्रगे भृगौ मन्दपेमन्दारदृष्टे व्यभिचारी २५
लग्नारीपौ पापयुतौ व्यभिचारी २६
क्षीणेन्दौ पापयुतेस्ते वा रन्ध्राद्धेशयोगे व्यभिचारी २७
सपापे दारपे विशेषेण व्यभिचारी २८
सप्तमेऽज्ञे व्यभिचारी २९
शुक्रेज्यौ सपापौ धनास्तारिगौ व्यभिचारी ३०
लग्नपेसपापे व्यभिचारी ३१

टीका-शुक्र बुधका योग दशमे, सातमे, अथवा आठमे, भावमें होतो व्यभिचारी होवे १२
शुक्रऔरमंगल दशमे अथवा सातमे भावमें गये हो तो व्यभिचारीहोवे १३
दशम और चतुर्थ भावके स्वामि शुक्र मंगल हो तो व्यभिचारी होवे १४
चंद्रमा से दशमे भावमे शुक्र और शुक्र से दशमे भावमें शनिगया हो तो व्यभिचारी होवे १५

शुक्रकी राशी (७।२) में गये हुवे बुध शुक्र और शनि दशमे अ-थवा सातवे भावमे गये हो तो व्यभिचारी होवे १६

षष्ठेश ६।८।१२ में भावमें गया हो तो व्यभिचारी होवे १७

सप्तमेश धनेश और दशमेश ये तीनो ग्रह दशमे भाव में गये हो तो व्यभिचारी होवे १८

राहु अथवा यतुसे युक्त सप्तमेश पापग्रहसे दृष्टहोतो व्यभिचारीहोवे १९

शनि और मंगल के दशवर्गमें गयाहुवा शुक्र, रवि और मंगल से दृष्टहोतो व्यभिचारी होवे २०

कारकांशलग्नसे बारवे भावमे शुक्रमंगल गयेहो तो व्यभिचारीहोवे २१

कारकांश लग्नसे नवम भावमें केतुगयाहोतो मरणपर्यंत परस्त्रीमे आसक्तरहे २२

धनेश तीसरे अथवा चतुर्थभावमे गयाहोतो पराक्रमी और व्यभि-चारीहोवे २३

सप्तमेश लग्नमें अथवा सप्तम भावमें गयाहोतो व्यभिचारी होवे २४

शनि और मंगलके ही वर्गमे गयाहुवा शुक्र सप्तमभावमें गयाहो और शनि मंगलसे दृष्टहोतो व्यभिचारीहोवे २५

लग्नेश और षष्ठेश ये दोनो पापग्रहसे युतहोतो व्यभिचारीहोवे २६

पापग्रहसें युक्त क्षीणचंद्रमा सप्तमभावमे गयाहो अथवा अष्टमेश नवमेश का एकराशीमे योगहोतो व्यभिचारीहोवे २७

सप्तमेश पापग्रहसें युतहोतो विशेष व्यभिचारीहोवे २८

सप्तम भावमे बुधगयाहोतो व्यभिचारी होवे २९

शुक्र और गुरु यदोनो पापग्रहस युक्तहोकर दूसरे सातमे अथवा छठे भावमें गयेहोतो व्यभिचारीहावे ३०

लग्नेश पापग्रहसें युक्तहोतो व्यभिचारीहावे ३१

दंपतिजारयोग

सौराराब्जस्ते सेंदू स्त्रियासह व्यभिचारी ३२

चंद्रारार्किंयोगे दम्पतीजारौ ३३

टीका–शनि मंगल और चंद्रमा ये तीनो ग्रह सप्तम भाव मे गये हो तो दोनो स्त्री पुरुष व्यभिचारी होवे ३२

चंद्र मंगल और शनिका योग एकराशिमे कोई भी भाव मे हो तो दोनो स्त्री पुरुष व्यभिचारी होवे ३३

नानास्त्रीगमन योग.

मदेशेन्त्येऽर्थे नाना स्त्री गमनं ३४

टीका-सप्तमेश बारमें अथवा धनभाव मे गया हो तो अनेक स्त्रि-यों से गमन करने वाला होवे ३४

मातृ गमन योग.

केन्द्रे चन्द्रवाशुक्रेपापान्वितदृष्टे क्रूरांशेवाऽवरोहांशेमातृगमनम् ३५

चन्द्रार्कौ पापदृष्टयुतौ केन्द्रे मातृगमनम् ३६

सुखेपापाः पापदृष्टा मातृगमनम् ३७

सुखपे पापदृष्टयुते शुभदृग्धीने दारेशतोङ्गेशेऽल्पबले मातृसमानागामी ३८

टीका-चंद्र अथवा शुक्र केन्द्रस्थान में (१।४।७।१०) पापग्रहसे युत दृष्ट हो और क्रूरग्रहके नवांश में अथवा अवरोहांश‡में गया हो तो माता से गमन करने वाला होवे ३५

चंद्र और सूर्य ये दोनो पापग्रहसे युत दृष्ट हो कर केन्द्र स्थान (१।४।७।१०) मे गये हो तो माता से गमन करने वाला होवे ३६

चतुर्थ भाव में पापग्रहसे दृष्ट पापग्रह गये हो तो माताासे गमन करने वाला होवे ३७

पापग्रहोसे युत दृष्ट सुखेश कोई भी शुभग्रहसे दृष्ट नही होवे और सप्तमेश से लग्नेश अल्प बली होवे तो माताके समान स्त्री से गमन करने वाला होवे ३८

भगिनी गमन योग.

दारेशेसुखे सपापे वा पापदृष्टे क्रूरषष्ठ्यंशे भगिनीगमनं ३९

---

‡ अवरोहांश ३-४-५-६-७ राशी के भागको कहते है अथवा १५ अंशके उपरांत राशी के उत्तरार्द्धके उतरते अंशोकोभी अवरोही अंश कहते है।

सुखे मन्देपापदृष्टे भगिनीगमनम् ४०

टीका–सप्तमेश पापग्रहसे युतहोकर सुख भावमें गया हो। अथवा पापग्रहसे युत सप्तमेश पापग्रहसे दृष्ट वा क्रूरषष्ठ्यंश में गया हो तो भगिनी से गमनकरनें वाला होवे ३९

चतुर्थ भाव में गयाहुवा शनि पापग्रहसे दृष्ट हो तो भगिनी (बहन) से गमन करने वाला होवे ४०

वंध्या अथवा रजस्वला संग योग।

दारे सूर्ये वंध्यासंगः ४१

द्यूने भौमे वन्ध्यारजस्वला सङ्गः ४२

टीका–सप्तम भाव में सूर्य गयाहो तो वंध्यास्त्री से संग करने-वाला होवे ४१

सप्तम भावमें मंगल गया होतो वंध्या और रजस्वला स्त्री से संग करनेवाला होवे ४२

वैश्यासंगयोग।

मदेन्त्ये ज्ञे वैश्यासंगः ४३

टीका–सातमे किंवा बारमे भाव में बुधगया हो तो वैश्य जातिकी स्त्री से संग रखने वाला होवे ४३

ब्राह्मणीसंगयोग.

गुरावस्ते ब्राह्मणीसंङ्गः ४४

टीका–सप्तम भावमे गुरुगयाहोतो ब्राह्मणजातिकी स्त्रीसे संगकरनेवाला होवे ४४

गर्भिणीसंगयोग।

मदेभृगौ राहौवा गर्भिणीसंगः ४५

टीका–सप्तम भावमे शुक्रकिंवा राहुगयाहोतो गर्भिणी स्त्रीसे संग-करनेवालाहोवे ४५

कृष्णवर्ण कुब्जासंगयोग।

द्यूनेशनौ कृष्णवर्ण कुब्जासंगः ४६

टीका-सप्तमभावमें शनिगयाहोतो कालेवर्ण की तथा कुबड़ी स्त्रीसें संगकरनेवालाहोवे ४६

गुरुतल्पगयोग.

सपापे चन्द्रेङ्के गुरुतल्पगः ४७

सपापे शुक्रेङ्के गुरुतल्पगः ४८

सपापौ चन्द्राकेशौ वा शुक्राङ्केशौ गुरुतल्पगः ४९

धर्मेशे नीचगे तदंशगशुक्रयुते गुरुतल्पगः ५०

धर्मेशे नीचे गुरु संबंधी स्त्री गमनम् ५१

टीका-पापग्रहसे युत चन्द्रमा नवमे भाव में गयाहो तो गुरुतल्पग (गुरुकी स्त्री, गुरुकीकन्या अपनि सापत्नमातर बहिन और कन्या आदि से गमन करने वालेको गुरुतल्पकहते है ऐसा अगम्यागमन करने वाला) होवे ४७

पाप ग्रहसे युत होकर शुक्र नवमे भाव में गयाहोतोगुरुतल्पग होवे ४८

चंद्र और नवमेश अथवा शुक्र और नवमेश ये दोनों ग्रह पापग्रहों से युक्त हों तो गुरुतल्पग होवे ४९

नवमेश अपनी नीचराशीमें गया हो और नवमेशके नवांशमें गयेहुवे शुक्रसे युत होतो गुरुतल्पग होवे ५०

नवमेश नीच राशिमें गया हो तो गुरुके संबंधकी स्त्री स गमन करने वाला होवे ५१

वयोधिक स्त्री गमन योग.

धर्मे चन्द्रे वयोधिक स्त्री गमनं ५२

टीका-नवमे भावमें चंद्रमा गयाहोवो अपनी उमरसे अधिक वयकी स्त्री से गमन करने वाला होवे ५२

पशु गामी योग.

पापयुक्तदृष्टे कंटक चतुष्टये पशुगामी ५३

सपापगुलिके मदे पशुगामी ५४

मदेर्के सुखे भौमे पशुगामी ५५

राहोदारे सुखे आरे पशुगामी ५६
द्यूनेशे भौमर्क्षे शुक्रदृष्टे पशुगामी ५७
केन्द्रत्रये पापयुते पशुवन्मैथुनशीलः ५८

टीका–चारो ही केन्द्र (१।४।७।१०) स्थान पापग्रहों से युत और दृष्ट हो तो पशुगामी (पशुसे गमन करने वाला) होवे ५३
पापग्रहसे युक्त गुळिक सातम भावमे गया हो तो पशुसे गमन करने वाला होवे ५४
सप्तम भाव में सूर्य और सुख भाव में मंगल गया हो तो पशुगामी होवे ५५
सप्तम भाव में राहु और सुख भाव में मंगल गया हो तो पशुगामी होवे ५६
सप्तमेश मंगलकी राशी (१।८) में गयाहो और उसको शुक्र देखता हो तो पशुगामी होवे ५७
केंद्रके तीन स्थानमे पापग्रह युक्त हो तो पशूके समान संगम करने वाला होवे ५८

भगचुम्बनशील योग.

भृगसंशोभौमर्क्षे भगचुम्बनशील ५९
कर्मेशे भौमभे शुक्र युते मन्ददृष्टे भगचुंबनशील ६०
लग्नेशे वा धनेशे नीचमांशेऽबले भगचुंबनशीलः ६१

टीका–शुक्र और सप्तमेश मंगलकी राशी (१।८) मे गये हो तो भगका चुम्बन करने वाला होवे ५९
शुक्रमें युक्त दशमेश मंगलकी राशी (१।८) में गयाहो और शनीसे दृष्ट हो तो भगका चुम्बन करने वाला होवे ६०
लग्नेश अथवा धनेश अपनी नीचराशी और नीचराशीके नवांशमें निर्बली हो तो भगका चुम्बन करने वाला होवे ६१

विवाहसंख्या योग.

यावन्तोधिकबलादद्यूनगाः खगा द्यूनेशदृष्टा वा रंध्रे यावंतः खेटा रन्ध्रेशदृष्टास्तावंतो विवाहाः ६२

सप्तमेशांशसंख्यानार्यः ६३

टीका-जितने अधिक बलवान् ग्रह सप्तमेश से दृष्ट होकर सप्तम भावमे गये हो अथवा जितने अधिक बलवान् ग्रह अष्टमेशसे दृष्ट होकर अष्टम भावमें गये हो उतनेही विवाह होवेगे ६२

सप्तमेशके नवांशकी संख्याके अनुसार स्त्रीकी संख्या जानना अर्थात् सप्तमेश जितनी संख्याके नवांशमें होवे उतनी [redacted] स्त्रीयं होवेगा ६३

एकविवाह योग.

कामार्थेशौ नीचर्क्षगौसौम्याःकेंद्रकोणगाएकोविवाहः ६४

वक्राकांशेज्ञेज्यौ एको विवाहः ६५

ज्ञे ज्यांशे सप्तमे एको विवाहः ६६

टीका-द्वितीय और सप्तम भावके स्वामि अपनी नीचराशीमें गये हो और शुभग्रह केंद्र कोण स्थान (१।४।७।१०।९।५) में गये हो तो एक विवाह होवेगा ६४

मंगल तथा रविके नवांशमें बुध गुरु गयेहो तो एकविवाह होवेगा ६५

सप्तम भावमें बुध किंवा गुरुका नवांश होतो एकविवाह होवेगा६६

द्विभार्य योग.

लग्नेशेङ्गे द्विभार्यो जारो वा ६७

रंध्रेशेङ्गे स्ते द्वि भार्यः ६८

षष्ठेङ्गपे द्विभार्यः ६९

धनेशे षष्ठे दारपापे द्विभार्यः ७०

जायेशे शुभयुतेरिनीचगे सप्तमेपापे द्विभार्यः ७१

जायाकारके पापयुते वा नीचारिमूढगांशे द्विभार्यः ७२

पापाः सप्तमे द्विभार्यः ७३

टीका-लग्नेश लग्नमें गया हो तो द्विभार्य (दो स्त्रीवाला) अथवा व्यभिचारी होवे ६७

अष्टमेश लग्नमें अथवा सप्तम भावमें गया हो तो दो स्त्री से वि-वाह होवेगा ६८

लग्नेश छठे भावमें गया हो तो दो स्त्री होवेगा ६९

छठे भावमे धनेश और सप्तम भावमे पापग्रह गयाहो तो द्वि भार्या (दो स्त्री से विवाह) होवेगा ७०

सप्तमेश शुभग्रह से युत होकर अपनी शत्रुकी तथा नीच राशी में गया हो और सप्तभावमें पापग्रह गया हो तो द्विभार्या (दो स्त्रीसे विवाह) होवेगा ७१

स्त्रीकारक ग्रह (शुक्र किंवा यवाकेमें तोस्त्रीक रवहुवाहो यह) पापग्रहसे युत होवे अथवा अपनी नीच, शत्रु, अस्त राशी अंश में गयाहो तो दो विवाह होवेगा ७२

पापग्रह सप्तमभाव मे गये होवे तो दो विवाह होवेगा ७३

कलत्र त्रय योग

धनगः पापैर्धनेशाद्दृष्टः कलत्रत्रयं ७४

पापाः कलत्रे जायेशा दृष्टाः कलत्रत्रयं ७५

लग्नार्थदाराः पापयुता दारेशे नीचारिमूढांशेकलत्रत्रयम् ७६

टीका–धनभाव मे बहुत पापग्रह गयेहो और धनेश भी पापग्रहोंसे दृष्टहोतो तीनस्त्री से विवाहहोवेगा ७४

सप्तम भाव मे बहुतपापग्रह गयेहो और सप्तमेश भी पापग्रहोंसे दृष्टहो तो तीन स्त्री से विवाह होवेगा ७५

लग्न, धन, और सप्तम भाव पापग्रह से युक्त होवे और सप्तमेश अपनी नीच शत्रु किंवा अस्तराशी में गयाहोतो तीन स्त्री से विवाह होवेगा ७६

बहुदारा योग।

लग्ने उच्चग्रहे लग्नपे स्वोच्चगे वा बहुदाराः ७७

चंद्राच्छौ बलिनौ युतौ बहुदाराः ७८

यामित्रे बलिशुक्रदृष्टे बहुदाराः ७९

सपापा लग्नार्थागेशाः समभे बहुदाराः ८०

दारेशे सौरे सपापे बहुदाराः ८१

दाराशाद्विक्रमे बलिनिचंद्रे बहुदाराः ८२

स्वांत्यपौमोत्थगौ गुरुणा धर्मपेण वादृष्टौ बहुदाराः ८३

दारपे केंद्र कोणे शुभवर्गे कर्मपदृष्टे बलिनिबहुदाराः ८४

दारायपौ युतौ वान्योन्येक्षितौ बहुदाराः ८५

मदायेशौ बलिनौ कोणगौ बहुदाराः ८६

टीका-लग्नमे उच्चराशी का ग्रहगयाहो अथवा लग्नेश अपनी उच्च राशीमे गयाहो तो बहुत स्त्रीवाला (जिनसे अधिक स्त्रीवाला) होवे बलवान चंद्र और शुक्र एकराशी में युक्त होतो बहुत स्त्रीयेहोवे ७८ बलवान शुक्र सप्तम भावको पूर्णदृष्टि से देखता होतो बहुत स्त्रीये होवे ७९

सप्तम भावमे पापग्रह सेयुत होकर लग्नेश धनेश और षष्ठेश येतीनो इकट्ठे होतो बहुत स्त्रीये होवे ८०

सप्तमेश शनि पापग्रह से युत होतो बहुत स्त्री वाला होवे ८१

सप्तमेश से तीसर भाव मे बलवान चंद्रमा गयाहोतो बहुत स्त्रीयो- वाला होवे ८२

धन और व्यय (बारवा) इनदोनो भावके स्वामी तीसरे भाव में गये हो और गुरुसे अथवा नवम भाव के स्वामीसे दृष्टहोतो बहुत स्त्रियो वाला होवे ८३

शुभग्रहोंके वर्गमे गयाहुवा सप्तमेश १।४।७।१०।९।५ मे भावमें गया हो और दशम भाव के स्वामी ने दृष्ट होतो बहुत स्त्रियोंवाला होवे ८४

सप्तम और लाभ भावके स्वामि एकराशी में युक्त होवे अथवा स- प्तमेशलाभेशको और लाभेशसप्तमेशको परस्पर देखते हो तो बहुत स्त्रीयो वाला होवे ८५

सप्तम और लाभ भावके स्वामी बलवान होकर नवमें वा पांचमे भावमे गये हो तो बहुत स्त्रीयो वाला होवे ८६

शत स्त्री गामी योग।

दारेशांशेशांशेसौम्ययुते पारावतांशे बलिनि शतस्त्रीगामी८७

टीका-सप्तमेशके नवांशका स्वामी जिस राशी के नवांशमे हो उसका स्वामी शुभग्रह से युत होकर पारावतादि शुभाशो में गया हो और बलवान होवे तो अेक सो (१००) स्त्री से गमन करनेवाला होवे ८७

सुंदर स्त्री योग

द्यूनेंशाद्गुरु चंद्रौ स्त्री सुंदरी ८८

टीका-कारकांश लग्नसे सप्तम भावमे गुरुचंद्रमा गये हो तो स्त्री सुंदर रूपवती होवे ८८

वयाधिका स्त्री योग।

अंशाद्स्ते सौरे वयोधिका स्त्री ८९

टीका-कारकांश लग्नसे सप्तम भावमें शनि गया हो तो अपनी उमरसे अधिक उमरकी स्त्री से विवाह होवेगा ८९

विकलांगी स्त्री योग।

अंशादस्ते भौमे स्त्री विकलांगी ९०

टीका-कारकांश लग्नसे सप्तम भाव मे मंगल गयाहो तो विकल शरीर वाली स्त्री से विवाह होवेगा ९०

कलावति स्त्री योग।

ज्ञेस्तेंशात्कलावती स्त्री ९१

टीका-कारकांश लग्नसे सप्तम भाव मे बुध गया हो तो अनेक प्र-कारकी कला जानने वाली चतुर स्त्री से विवाह होवेगा ९१

रोगार्त स्त्री योग।

शशिसिनो लग्ने स्त्री रोगार्ता ९२

शारभगो मंदारो वा लग्नगो नासिकारोगवती स्त्री ९३

ज.पेशेष्टमे सरोगा क्रोधिनी स्त्री ९४

टीका-लग्नमें बुध केतुका योगहोतो रोग से पीडित स्त्री मिलेगा ९२ शनि मंगल, शुक्रकी या मंगलकी राशी मे गये हो अथवा लग्नमें गये हो तो नासिकारोगवती स्त्री मिलेगा ९३

सप्तमेश आठमें भावमें गयाहो तो रोगि और क्रोधी स्त्री से विवाह होवेगा ९४

पुनर्भूभार्या लाभयोग.

स्मरे मन्दज्ञौ पुनर्भू भार्या लाभः ९५

चंद्र शनी कलत्रे पुनर्भू भार्या लाभः ९६

टीका-सप्तमस्थानमें शनि बुधका योग हो तो पुनर्विवाहित स्त्रीवाला होवेगा ९५

सप्तमभावमें चंद्र शनीका योग होतो पुनर्विवाहित स्त्रीवालाहोवे९६

पतिव्रता स्त्री योग.

मदेशेम्बुगे वा दशमे स्त्री पतिव्रता ९७

दारपे वा कारके गुरुयुतदृष्टे बलिनि स्त्री पतिव्रता ९८

रवौ दारपे शुभदृष्टे स्त्री पतिव्रता ९९

द्यूनेशे भृगौ शुभदृष्टे स्त्री पतिव्रता १००

कलत्रेजीवे धर्मशीला पतिव्रता स्त्री १०१

दारेशेकेंद्रे शुभांशेशुभदृष्टयुते धर्मशीलापतिव्रता स्त्री १०२

टीका-सप्तमेश चतुर्थ भावमे किंवा दशम भाव मे गयाहोतो पतिव्रता स्त्री होवे ९७

सप्तमेश व। सप्तम भावका कारक (शुक्र)गुरुसे युत वा दृष्टहोकर बलवान होतो पतिव्रता स्त्री वाला होवे ९८

सप्तमेश रवि होवे और वह शुभग्रहसे दृष्टहोतो पतिव्रता स्त्री वाला होवे९९

सप्तम भावका स्वामि शुक्र होवे और यह शुभग्रह से दृष्ट होतो पतिव्रता स्त्री वाला होवे १००

सप्तम भाव मे गुरु गयाहोतो धर्म शीला और पतिव्रता स्त्रीवाला होवे १०१

सप्तमेश केंद्र (१।४।७।१०) में शुभग्रहकी राशी के नवांशमें गयाहो

शुभ ग्रहसे युतदृष्टहोवो धर्मशीला और पतिव्रता स्त्री वाल होवे १०२

सुदारा योग

दारेशे वा कारके शुभयुतदृष्टेशुभावरेसुदारः १०३

दारेशुभर्क्षे सुदारः १०४

स्वोच्चस्ववर्गे गोपुरादौ वा शुक्रे सुदारः १०५

दारेगुरुदृष्टे सुशीलास्त्री १०६

टीका-सप्तमेश अथवा सप्तमका कारक ग्रह (शुक्र) शुभ ग्रहसे युतदृष्टहो शुभग्रहोके मध्यम गयाहोतो अच्छी स्त्री का लाभ होव १०३

सप्तम भाव मे शुभग्रह की राशी होतो अच्छी स्त्री मिले १०४

शुक्रअपनी उच्चराशी वा स्वराशा क वर्ग म गोपुरादिअशम गया होतो अच्छी स्त्री मिलेगा १०५

सप्तम भाव को गुरु देखता होतो सुशील स्त्री मिलेगा १०६

विधवा स्त्री लाभ याग

अंशाद्दारेराहौ गृहेस्त्री विधवा १०७

टीका-कारकांश लग्न से सातमे भावमे राहुगयाहो तो विधवास्त्री को अपनी स्त्री करके घरमे रखने वाला होवेगा १०७

जारिणी स्त्री याग।

षष्ठाष्टाङ्केशा सपापाः पापदृष्टाः स्त्री जारिणी १०८

अष्टमेशेऽष्टमे स्त्री जारिणी १०९

टीका-षष्ठेश अष्टमेश और नवमेश ये तीनो ग्रह पापग्रह से युत और दृष्ट हो तो स्त्री व्यभिचारिणी होवे १०८

अष्टमेश अष्टम भाव मे गया हो तो व्यभिचारीणी स्त्री होवेगा १०९

कुदारा याग।

मंदेस्ते कुदारः ११०

दारपांशे पापे कुदारः १११

क्रूरषष्ठ्यंशे दारपे कुदारः ११२

नीचभांशेदारपे वा कारके कुदारः ११३

कलत्रेपरवौ पापभांशे पापयुतदृष्टे कुदारः ११४

दारपेचंद्रे पापभांशे कुदारः ११५

टीका–सप्तमभावमें शनि गयाहो वा निंदा करने योग्य खोटी स्त्री वाला होवे (अच्छी स्त्री नही मिले) ११०

सप्तमेश के नवांशका स्वामी पापग्रह हो तो निंदाकरनेयोग्य खोटी स्त्री वाला होवे १११

सप्तमेश क्रूर षष्ठ्यंश मे गया हो तो खोटी स्त्री वाला होवे ११२

सप्तमेश अपनी नीच राशी किंवा नीच राशीके नवांशमें गयाहो अथवा सप्तम भावका कारकग्रह (शुक्र) नीचराशी वा नीचके नवांशमे गयाहो तो निंदा करने योग्य कुदारा वाला होवे ११३

सप्तम भावका स्वामी रविहो भौर वह पापग्रहकी राशीमे वा पापग्रहकी राशीके नवांशमे गया हो भौर पापग्रहसे युत दृष्ट हो तो खोटी स्त्री वाला (दुष्टस्वभावकी स्त्री से विवाह) होवे ११४

सप्तमेश चंद्रमा हो भौर वह पापग्रहकी राशी मे वा नवांशमे गया हो तो खोटी स्त्री वाला होवे ११५

दासी समास्त्री योग.

चंद्रेस्ते दासीसमास्त्री ११६

टीका–सप्तम भावमे चंद्रमा गयाहो तो दासीके समान रहने वाली स्त्री वाला होवे ११६

वन्ध्यास्त्री योग.

यमेर्क्षे ऋक्षसन्धौ शुक्रेस्ते वन्ध्या स्त्री ११७

टीका–लग्नमेशनि ऋक्ष संधी में (कर्क, वृश्चिक किंवा मीनराशी के अंतिम अंश में) गयाहो भौर शुक्र सप्तम भावमे होतो वन्ध्या (वांझ) स्त्री होवे ११७

षण्ढा स्त्री योग.

सोत्थे शाच्छो षष्ठे षण्ढा स्त्री ११८

टीका-तृतीयेश और शुक्र ये दोनो छठे भावमेगये होवो षण्ढा (नपुंसक, रज वीर्य रहित) स्त्री वालाहोवे ११८

स्वदार रत योग.

जीवे सप्तमे स्वदाररतः ११९

टीका-सप्तम भाव में गुरुगयाहोतो अपनी स्त्री से ही गमन करने वाला (पतिव्रत परायण) होवे ११९

कलत्रांतर भागी योग।

नीचरिमूढांशेङ्गपे वायूनपे कलत्रांतरभाक् १२०

मदेशेऽबले स्ते पापदृष्युते कलत्रांतरभागी १२१

धनेशेऽबलेर्थे पापयुतदृष्टे कलत्रांतरभागी १२२

सप्ताष्टमेपापे व्ययेकजेकलत्रांतरभागी १२३

नीचारीमूढांशेगेशे वा दारे कलत्रांतरभागी १२४

टीका-लग्नेश अथवा सप्तमेश अपनी नीचराशीके वा शत्रुराशीके किंवा अस्तराशीके नवांशमें गयाहोतो दुसरीस्त्री करनेवाला होवे (पासवान रखनेवाला अर्थात् अन्यअविवाहित स्त्री सें सहवास करने वाला होताहै) १२०

सप्तमेश सप्तम भाव में निर्बली होकर गयाहो और पापग्रहसे युत दृष्ट हो तो अन्य स्त्री करने वाला होवे १२१

निर्बली धनेश धनभाव में पपाग्रहसे युत दृष्ट होतो अन्य स्त्री करने वाला होवे १२२

सातमे और आठमें भावमें पापग्रह गये हो और बारवे भावमें मंगल हो तो अन्य स्त्री करने वाला होवे १२३

लग्नश किंवा सप्तमेश अपनी नीच, शत्रु तथा अस्त राशी के नवांशमे गया हो तो अन्य स्त्री करने वाला होवे १२४

बाल्येविवाह योग

दारपे सन्निहितेङ्गपे बाल्येविवाहः १२५

लग्नाद्वास्तात्सप्तमेपि शुभे बाल्येविवाहः १२६

दारपे पारावतादौ सबले वा धने तादृशे बाल्येविवाहः १२७

टीका-सप्तमेशके समीप अर्थात् एक राशी मे वा एक राशीके अंतरमें लग्नेश गया हो तो बाल्यावस्था में विवाह होवेगा १२५

लग्नसे किंवा सप्तम भावसे समीप के भावमें (धन मे किंवा अष्टम भावमें) शुभग्रह गया हो तो बाल्यावस्थामें विवाह होवेगा १२६

बलवान् सप्तमेश पारावतादि शुभवर्गमें गया हो अथवा बलवान् धनेश पारावतादि अंशमें गया हो तो बाल्यावस्थामें विवाह होवेगा १२७

बृहत्पाराशरी मे विवाह के वर्ष की संख्या के विशेष योग इस प्रकार लिखेहै कि—यदि सप्तमेश शुभग्रह की राशिमे गयाहो और शुक्र अपनी स्व तथा उच्चराशीमे होतो पांचमे किंवा नवमे वर्ष विवाह होवे १

सप्तम स्थानमे सूर्यगया हो और सप्तमेश शुक्र से युक्त होतो सातमे तथा ग्यार वे वर्षमे विवाह होवेगा २

धनभावमे शुक्र गयाहो और सप्तमेश ग्यार मे भावमे गयाहो तो दस मे १० तथा सोलह १६ मे वर्ष विवाह होवेगा ३

लग्नमे शुक्र हो और लग्नेश शनीकी राशी (१०।११) में गयाहो तो ग्यारहमे वर्ष विवाह होवेगा ४

लग्नसे केंद्र स्थानमे शुक्रगए हो और शुक्र से सातमे भावमे शनि गयाहोतो बारमें वर्षमे तथा १९ में वर्ष विवाह होवेगा ५

चंद्रमा से सातमे भावमें शुक्रगयाहो और शुक्र से सात में शनिग याहोतो १८ मे वर्ष विवाहहोवेगा ६

धनेश ग्यारमें गयाहो और लग्नेश दशमे भाव मे गयाहोतो पंद्रहमे वर्ष विवाह होवेगा ७

धनेश लाभमे और लाभेश धनमें गयाहोतो तेरहमेंवर्ष विवाहहोवेगा ८

धनभावमें शुक्रगयाहो और धनेश मंगल से युतहोतो बावीसमे किंवा सत्तावीस २७ में वर्ष विवाहहोवेगा ९

सप्तम भावमें जोराशीहोवे उसराशीके नवांशमे लग्नेश्वर गयाहो और सप्तमेश्वर बारमे भावमे गयाहोतो तेविसमें तथा २६ छव्वीस मे वर्ष विवाह होवे १०

अष्टम भाव मे जिसराशीका नवांश होवे उहराशी सप्तम भावमेगई हो और लग्नमे जिसराशीका नवांश हो उसमे शुक्रयुक्तहो तो पचीस

मे तथा तेतीसमे वर्ष विवाह होवेगा ११

पंचम भाव में शुक्रगयाहो और चतुर्थ भाव में राहु स्थित होतोइक तीस वर्षमें तथा तेतीस में वर्ष विवाह होवेगा १२

तीसरे भावमें शुक्र और नवमे भावमे सप्तमेश गयाहोवो तीसमे अथवा सत्ता वीसमे वर्ष में विवाह होवेगा १३

शुक्रसे सप्तम भावमे चंद्रमा और चंद्रसे सातमे भावमें बुधगयाहो और अष्टमेश पंचम भाव में स्थित होतो प्रथम विवाह दशमें वर्ष मे दूसरा बावीसमे वर्ष में और तीसरा ३३ तेतीस में वर्ष मे होवेगा १४

दूरदेशे विवाह योग।

कारके वा कलत्रेशे सक्रूरे कोणे दूरदेशे विवाहः १२८

टीका–सप्तमेश किंवा सप्तमभावका कारक (शुक्र) क्रूर ग्रहसे युत होकर ९।५ भाव में गया हो तो दूरदेशे मे विवाह होवेगा १२८

स्थूल स्तनी भार्या योग।

दारेशे सशुभे स्थूल स्तनीभार्या १२९

टीका–सप्तमेश शुभग्रहसे युत हो तो स्त्री मोटेस्तनवाली होवेगा१२९

दीर्घवा ह्रस्व भगवति तथा गुह्यार्द्रा स्त्री योग।

मंदेशे सपापे स्त्री दीर्घभगा १३०

शेन्दुकेजर्क्षे मन्दे स्त्री ह्रस्वभगा १३१

जलर्क्षे दारेशे स्त्री गुह्यार्द्रा १३२

स्त्रीकारके वा दारेजलर्क्षे स्त्री गुह्यार्द्रा १३३

दारेचन्द्र दृष्टे वा जलर्क्षे शुक्रे स्त्री गुह्यार्द्रा १३४

जलभेशे मन्ददृष्टे स्त्री गुह्यार्द्रा १३५

सप्तमे चंद्रेजलर्क्षांशे स्त्री गुह्यार्द्रा १३६

टीका–सप्तमेश पापग्रह से युतहो तोस्त्री दीर्घ भगवाली होवेगा १३० सप्तम भावमे बुध, चंद्र किंवा शनिकी राशी (३।६।४।१०।११) गईहोवो स्त्री ह्रस्वभगवाली होवेगा १३१

सप्तमेश जलराशी मे गयाहोवेतो स्त्री के गुह्यस्थानमे गीलापनरहे१३२
स्त्रीकारक (शुक्र) जलराशीका हो किंवा सप्तमभावमें जलराशी गंइ हो तो स्त्री के गुप्तस्थलमे गीला पन रहेगा १३३
सप्तम भावको चंद्र देखता हो अथवा जलराशी मे शुक्र गया हो तो स्त्रीका गुह्यस्थान गीलापन वाला होवे १३४
जलराशीका बुध शनि से दृष्ट हो तो स्त्रीका गुह्यस्थान गीलापन वाला होवे १३५
जलराशी तथा जलराशीके नवांश मे गया हुवा चंद्रमा सातमें भावमें गया हो तो स्त्रीके गुह्यस्थानमें गिलापन रहेगा १३६

जायानाश योग।

लग्नेके मन्देस्ते जायानाशः १३७
पापान्तरस्थास्फुजिद्रंध्रे वा सुखे जायापाशेन नश्यति १३८
सद्योगदृग्धीने शुक्रे पाशेन भार्यानाशः १३९
भृगुजे सपापे सौम्यैरदृष्टे अग्निदाहाज्जायानाशः १४०
मन्देष्टमे षष्ठेभौमे स्तेराहौ भार्यानजीवति १४१
लग्ने नीचग्रहे लग्नेशे नीचगे वा दारनाशः १४२
द्यूनेशेन वा कोणेशेन युतः शुक्रस्तैर्यावत्क्रूरैर्दृष्टस्ता-
वत्संख्याभार्यानाशः १४३
कन्यांगेसूर्ये झषेमन्दे जायानाशः १४४
पापान्तरे शुक्रे उच्छ्रितपतनाज्जायानाशः १४५
षष्ठेशाच्छौयुतौ भार्याविरत् १४६
सुखेशेदारे दारपेसपापे शुक्रेऽष्टमे गर्भनिमित्तभार्या
नाशः १४७
सुखे नीचगे शुक्रे वा चंद्रे दारनाशः १४८

दारेशे क्रूरपष्ठचंरो दारनाशः १४९

निद्रागते पापेस्ते पापपीडिते दारनाशः १५०

युनेर्के प्रकाशे जायानाशः १५१

भौमेस्तेनेत्रराशौ जायानाशः १५२

टीका-लग्नमे सूर्य और सप्तम भावमे शनि गया हो (रविशनिका प्रतियाग १८० अंशके अंतरकाहो) तो स्त्री का नाश होवेगा (मर-जावेगा) १३७

पापग्रहोंके मध्यमें गया हुवा शुक्र अष्टम भाव में किंवा चतुर्थभावमें गया हो तो फाँशी से स्त्रीका नाश होवेगा १३८

शुक्रशुभग्रहो से युत और दृष्ट नहीं हो तो फाशीसे स्त्री कानाश होवेगा १३९

पापग्रह संयुक्त शुक्र शुभग्रहोंसेदृष्ट नहीहो तो अग्नि से जलजान के कारण स्त्रीकानाश होवेगा १४०

आठमेशनि छठेनेत्र और सातमे भावमे राहु गयाहो तो स्त्री जी-वेगा नहीं (विवाहहोतेजावगे और स्त्री मरती जावेगा) १४१

लग्न (नीच) राशिक ग्रह गयाहो औरलग्नेश नीचराशी गयाहो तो स्त्री का नाश होवेगा १४२

सप्तमेशस अथवा धनेशस युक्त शुक्र ६।८।१२ भाव में गया हो और वह जितने पापग्रहों से दृष्ट होवे उतनी ही संख्या कि स्त्रियोंका नाश (मृत्यु) होवेगा १४३

कन्याराशीके लग्न मे सूर्य और मीन राशी में शनि गया हो तो भायाका नाश होवेगा १४४

पापग्रहो के बीचमें (मध्य में) शुक्र गया हो तो उपरसे पड़नेके कारण स्त्री का मृत्यु होवेगा १४५

षष्ठेश और शुक्रका योग हो तो स्त्री संबंधी विपत्ति रहेगा १४६

पंचमेश सप्तम भाव में गया हो सप्तमेश पापग्रहसे युक्तहो और शुक्र निर्बली होवे तो गर्भके निमित्त भार्याका नाश होवेगा (बालक होत हुवे अथवा मराहुवा बच्चाबच्चीके होनेसे वा गर्भपात से स्त्रीकी मृत्यु होवेगा) १४७

चतुर्थ भावमें नीचराशी में गया हुवा शुक्र किंवा चंद्रमा गया हो तो जायाकी मृत्यु होवे १४८

सप्तमेश क्रूर षष्ठयंश मे गया हो तो भार्याका नाश होवेगा १४९

पापग्रहसे पीडित, निद्रावस्थामे गया हुवा पापग्रह सप्तम भावमें गया हो तो स्त्रीका नाश होवे १५०

प्रकाशावस्था मे गया हुवा सूर्य सप्तम भावमें गया हो तो जायाका नाश होवे १५१

नेत्रपाणी अवस्था में गया हुवा मंगल सप्तम भावमे गया हो तो जायाका नाश होवे १५२

दारनाशके वषकी संख्याके विशेष योग बृहत्पाराशरमें लिखे है कि सप्तमेश नीचराशीकाहो और शुक्र छठे अथवा आठमें भाव में गया हो तो अठारमे तथा तेतीस में वर्ष मे स्त्रीका नाश होवेगा १

शनी जिस राशी मे गयाहो उस राशीका स्वामी आठ में भाव में हो और बारमे भावका स्वामी शनीकी राशी में गया हो तो उन्नईस (१९) मे वर्ष स्त्रीका नाश होवेगा २

धनभावमें राहुगया हो और सातमें भाव में मंगल युक्त हो तो विवाह के तीसरे दिन सांपके काटने से स्त्री की मृत्यु होवेगा ३

अष्टमस्थानमें शुक्र और अष्टमेश शनिकी राशी में गया हो तो बारवें अथवा १९ उन्नईस मे वर्ष मे स्त्रीकी मृत्यु होवेगा ४

लग्नेश नीचराशी में और धनेश अष्टम भाव में गया हो तो चालीस मे वर्ष स्त्री की मृत्यु होवेगा ५

जायाहीन योग ।

धर्मास्तात्मजगौ सितार्कौ जायाहीनः १५३

चंद्रा दस्तेर्कजारौ सशुक्रौ जायाहीनः १५४

शुक्रज्ञौ द्यूने दारहीनः १५५

शुक्रान्मदपापे वा सपापेशुक्रे स्त्री सुखंन १५६

टीका–नवमे, सातमें, तथा पाचमें भावमे रवि शुक्रका योग होवेतो स्त्री हीन (स्त्री रहित) होवे १५३

चंद्रमासेसप्तमभावमेंशनिमंगलऔरशुक्रगयेहोवोस्त्रीरहितहोवे १५४

शुक्र बुध का योग जन्म लग्नसे सप्तम भावमे होतो स्त्रीहीनहोवे१५५
शुक्र से सप्तम भावमे पापग्रह गये हो अथवा पापग्रहसे युक्तशुक्रहो तो स्त्रीका सुखनहीहोवे १५६

लोकापवादा द्भार्या त्याग योग।

लग्नेराहुर्कजो लोकापवादाद्भार्या त्यागः १५७

टीका-लग्न में राहु और शनि का योगहोतो लोकापवाद से भार्या का त्याग करने वाला होवे १५७

भार्या या अग्निदाह योग।

शुक्रात्तुर्याष्टमगैः पापैर्भार्याया अग्निदाहः १५८

टीका-शुक्रसे चतुर्थ और अष्टम भाव में पापग्रह गयेहोतो स्त्रीका अग्निदाह अपने हातसे करने वालाहोवे १५८

स्त्री शरीरे पिशाच पीडायोग।

मन्दारराहुकेत्वन्यतमेदारे स्त्रीशरीरे पिशाचपीडा १५९

टीका-शनि, मंगल, राहु, केतु इनचार ग्रहोंमे से कोइ भी एकग्रह सप्तम भाव मे गयाहोतो स्त्री के शरीर मे पिशाच [भुत, प्रेत डाकन चुडेल आदिकी] पीडाहोवे १५९

दार हंतायोग।

चन्द्रेन्त्ये शुक्रेस्ते दारहन्ता १६०

टीका-बारवे भावमे चंद्रमा और सप्तम भावमें शुक्रगया होतो स्त्री को अपने हात से मारनेवाला होवे १६०

कलत्र संपत् योग।

लग्नाच्चंद्राद्वाद्यूनंशुभेन स्वपतिना वायुतंदृष्टंकलत्रसंपत् १६१

टीका-लग्नसे अथवा चंद्रमा से सप्तम भाव अपने स्वामी से और शुभग्रह से युत दृष्ट होतो स्त्रीका सुख अच्छारहेगा १६१

कामिनीतोष कृतयोग।

चक्रग्रहर्क्षे शुक्रे कामिन्या रतेतोषकृत् १६२

लग्नेशःस्वर्क्षगंसप्तमस्थं शुक्रंपश्यतिचेत्कामिनीतोषकृत्१६३

भौमात्खे सुखे वा मन्दचन्द्रौ कामिनी तोषकृत १६४

टीका–वक्रीग्रह की राशी मे शुक्रगयाहो तो समागम मे कामिनीको प्रसन्न करने वाला होवे १६२

अपनी राशी (७।२) में गये हुवे सप्तम स्थान स्थितशुक्रकों लग्नेश देखताहो तो कांता को संतोष करनें वाला होवे १६३

मंगल से दशमे अथवा चतुर्थ भाव मे शनि चंद्रमा गयेहोतो कामिनी कों रतिमे प्रसन्न करने वाला होवे १६४

वाणिज्यवान्योग।

तुलांशे वाणिज्यवान् १६५

सौम्येंऽशे वा कर्कांशे वाणिज्यवान् १६६

ज्ञार योगे वाणिज्यवान् १६७

इति सप्तमविवेकः।

टीका–कारकांश लग्न तुलराशीकाहो तो वाणिज्य (हाजरमालका व्यापर) करने वाला होवे १६५

कारकांश लग्नमें बुध गया हो अथवा कर्कराशीका कारकांश लग्न हो तो वाणिज्य करने वाला होवे १६६

बुध मंगल का योग होतो वाणिज्य करने वाला होवे। इसयोग मे स्थान नही बताया है परंतु ये योग यदि १।४।७।१०।९।५ इनस्थानोमे होतो बलवान् होवेगा १६७

इनके सिवाय भाईकापुत्र, माताकीमाता, मित्रकीमाता, पुत्रकाछोटाभाई, पुत्रकेशालेकीस्त्री, पुत्रकापराक्रम, शत्रुकाधनकुटुंब, शालेके पुत्रकीस्त्री, स्त्रीकेपिताकामित्र, वस्ती (पेडु) गुप्तस्थान, बापकाबाप (दादा) सुसराकीमाता, इत्यादिका विचार भी सप्तम भाव सें करना।

इति सप्तम विवेकस्यटीका समाप्तः।

अष्टम विवेकः ।

दीर्घायु योग ।

सुतेचंद्रे गुरौकोणे खेभौमे दीर्घायुः १

रन्ध्रेशेपापेलाभेल्पायु रन्यथादीर्घायुः २

रन्ध्रेशेस्वर्क्षे वा मन्देष्टमे दीर्घायुः ३

रन्ध्राङ्गखेशाः केन्द्रकोणलाभगादीर्घायुः ४

मन्देस्वर्क्षोच्चे उपचये वा रन्ध्रपेमन्देसुते दीर्घायुः ५

रन्ध्राङ्गपौरन्ध्रेलाभे वा दीर्घायुः ६

षष्ठान्त्यपौलग्ने वा कर्मपेकेन्द्रे वा लग्नपे दीर्घायुः ७

कर्मपेगुतेस्वोच्चे वा रन्ध्रेशे केन्द्रे वा चतुरस्रेशुभेषु दीर्घायुः८

सभानुजेः स्वाङ्गाष्टमपैः केन्द्रे दीर्घायुः ९

पापाद्वयायारिगाः शुभाः केन्द्रकोणे दीर्घायुः १०

षष्ठाष्टमसप्तमे शुभाः पापास्त्रिषष्ठायेदीर्घायुः ११

रन्ध्रेङ्गेशुक्रेज्यदृष्टे दीर्घायुः १२

शुभाः केन्द्रकोणे पापाः पारावते दीर्घायुः १३

टीका-पंचमभाव में चन्द्रमा, नवमे गुरु और दशमे भावमें मंगल, क्रमसे गये हो तो दीर्घायु होवे १

अष्टमेश पापग्रहहो और वहलाभ (११) भाव में गयाहो तो अल्पायु होवे और लाभ भावके बिना किसी दूसरे भाव में गयाहो तो दीर्घायु होवे २

अष्टमेश अपनी स्वराशी में गया हो अथवा शनि अष्टम भावमें गया हो तो दीर्घायु होवे ३

नोट-१२ वा १६ वर्षपर्यंत अल्पायु ६४ वा ७२ वर्षपर्यंत मध्यायु ६४ वा ७२ से उपर १०० वर्ष पर्यंत दीर्घायु और १०० के पश्चात् उत्तमायु योगमाना जाता है।

अष्टमेश लग्नेश और दशमेश ये तीनों ग्रह केन्द्रकोण वा लाभ स्थान (१।४।७।१०।९,५।११) में गये हो तो दीर्घायु होवे ४

शनि अपनी स्वराशि किंवा उच्चराशी में स्थित होकर उपचय स्थान (३।६।१०।११) में गया हो १ अथवा अष्टमेश शनि पंचम भाव में गया हो तो दीर्घायु होवे ५

अष्टमेश और लग्नेश अष्टम भाव में गये हो १ अथवा अष्टमेश लग्नेश दोनो लाभ भावमें गये हो २ तो दीर्घायु होवे ६

षष्ठेश और व्ययेश ये दोनो लग्नमें गयेहो १ अथवा दशमेश केंद्र में गयाहो २ किंवा लग्नेश केंद्रमें गया हो ३ तो दीर्घायु होवे ७ इससूत्रमें तीन योग कहे है।

दशमेश अपनी उच्चराशी में स्थित होकर पंचमभाव में गया हो १ अथवा अष्टमेश केंद्र में गया हो २ किंवा केंद्रस्थानमें शुभ ग्रह गये हो ३ तो दीर्घायु होवे ८ इस सूत्रमें भी तीन योग है।

दशमेश लग्नेश और अष्टमेश ये तीनो ग्रह शनि से युक्त होकर केंद्रस्थान में गये हो तो दीर्घायु होवे ९

सर्वपापग्रह तीसरे ग्यारवे तथा छठे भावमें और सर्व शुभग्रह केंद्र-कोण स्थानमें गये हो तो दीर्घायु होवे १०

सर्वशुभग्रह छठे सातमें और आठमें भावमे और सर्व पापग्रह तीसरे छठे ग्यारमे भावमें गये हो तो दीर्घायु होवे ११

लग्नमें गयाहुवा अष्टमेश गुरुशुक्र से दृष्ट हो तो दीर्घायु होवे १२

सर्वशुभ ग्रह केंद्रकोण (१।४।७।१०।९।५) स्थानमें गये हो और पापग्रह पारावतांश में गये हो तो दीर्घायु होवे १३

मध्यायु योग।

पापाः पणफरतुर्ये त्रिस्थामध्यायुः १४

अङ्गेशेऽबले जीवेकेंद्रकोणे त्रिकेपापे मध्यायुः १५

शुभे केंद्रकोणे मन्देबलिनि षष्ठेष्टमे वा पापे मध्यायुः १६

त्रिकोणे केंद्रे वा मिश्रा मध्यायुः १७

टीका-सर्वपापग्रह पणफर (२।५।८।११) स्थानमें अथवा तीसरे और चतुर्थ भाव में गये हो तो मध्यायु होवे १४

लग्नेशनिर्बली होवे, गुरु केंद्र किंवा त्रिकोण स्थानमें होवे और पापग्रह ६।८।१२ में भावमे गये हो तो मध्यायु होवे १५

सर्वशुभग्रहकेंद्र वा त्रिकोणस्थान में गये हो और शनि बलवान् होकर छठ किंवा आठ में भाव में गया हो १ अथवा पापग्रह बलवान् होकर छठे वा आठ में भाव मे गये हो तो मध्यायु होवे १६

केन्द्र त्रिकोणस्थान (१।४।७।१०।९।५) में शुभ और पाप (दोनों मिश्र ग्रह गये हो तो मध्यायु होवे १७

अल्पायु योग ।

सपापे रन्ध्रेशेन्त्ये षष्ठे वा अल्पायुः १८

पापाआपोक्लिमस्था अल्पायुः १९

लग्नाष्टमेशौव्यये रिंगे वाऽल्पायुः २०

धनेशेर्के स्वेर्कजे लाभे इज्याच्छौ अल्पायुः २१

लग्नेर्कजारौ चन्द्रो रन्ध्रगः षष्ठे जीवेऽल्पायुः २२

लग्नेशेष्टमे ल्पायुः २३

त्रिकेपापेङ्गेशे ऽबलेल्पायुः २४

क्रूरषष्ठयंशे मन्दरन्ध्रेशौ सपापौ पापदृष्टौवाल्पायुः २५

पापेकेन्द्रे शुभदृग्घीनेङ्गेशेऽबलेल्पायुः २६

व्ययार्थगौपापौ शुभदृग्घीनौ अल्पायुः २७

टीका–अष्टमेश पापग्रहसे युतहोकर बारवे भाव मे किंवा छठे स्थान में गयाहो तो अल्पायु होवे १८

सर्व पापग्रह आपोक्लिम (३।६।९।१२) स्थानमे गयेहो तोअल्पायु होव १९

लग्नेश और अष्टमेश ये दोनो ग्रह बारवे भाव मे अथवा छठेभावमें गये होतो अल्पायुहोवे २०

धनेश नवमे भाव मे शनि सातमे भावमें और गुरु शुक्र लाभ (ग्यार में) भाव में गयेहो तो अल्पायुहोवे २१

लग्नमे शनि मंगल, आठमें भावमें चंद्रमा और छठेस्थान मे गुरु गयाहोतो अल्पायुहोवे २२

लग्नेश अष्टम भावमे गयाहोतो अल्पायुहोवे २३

पापग्रह ६।८।१२ में भाव में गयेहो और लग्नेश निर्बली होतो अल्पायुहोवे २४

शनि और अष्टमेश ये दोनो क्रूरषष्ठ्यंशमे गयेहो और पापग्रहो सें युत किंवा दृष्टहोवेतो अल्पायु होवे २५

केंद्रस्थान (१।४।७।१०) में गयेहुवे सर्व पापग्रहोंको शुभग्रह देखते नहींहो और लग्नेश बलहीन होतो अल्पायु होवे २६

बारवे और दूसरे भाव में पापग्रह गये हो और उनको शुभग्रह नही देखते होतो अल्पायु होवे २७

सद्यो मृत्यु योग।

लग्नेराहुः षष्ठाष्टमे चन्द्रे सद्योमृत्युः २८

टीका–लग्नमे राहु और छठे किंवा आठ में भाव मे चंद्रमा गयाहो तो तुरंत मृत्युहोवेगा २८

वर्षांतरे मृत्युयोग.

मन्दार्कारा षष्ठेष्टमे वर्षान्तरे मृतिः २९

टीका–शनि, रवि, और मंगल छठे आठमे भाव में गये होतो एक वर्षकी उमर होनेकेपश्चात् मृत्यु होवे २९

अर्काब्दे मृत्यु योग.

सूर्यर्क्षेमन्देमन्दर्क्षेऽर्केऽर्काब्दे मृतिः ३०

टीका–सूर्यकी राशि (५) मे शनि और शनिकी राशी (१०।११) में रवि गया हो तो बार में वर्ष में मरण होवेगा ३०

एवं सर्वार्थ चिंतामणीमें योगायुके अन्य विशेष योग लिखे है उनकाभी आयुर्दायमें विचारकरना आवश्यक है अतएव उन योगोंको उधृत करनेमें आते हैं।

चंद्रमाकी राशीका स्वामि सूर्य पापग्रहसे युक्त होकर ६।८ मे भाव में जावे शुभग्रहोंकी दृष्टी से रहित हो और लग्नेश आपोक्लिमस्थानमें ३।६।९।१२ गया हो तो १६ वर्ष मे मृत्यु होवे १

लग्नेशकी राशी मे अष्टमेश और अष्टमेशकी राशीमे लग्नेश हो शुभ ग्रहसे युक्त न हो अथवा लग्नेश अष्टमेश ६।१२ भावमे पंचमेश से युक्तहोतो १८ म वर्ष मरणहोवेगा २

केंद्रस्थान मे पापग्रह शुभग्रहोंकि दृष्टिसे रहितहो और चंद्रमा ६।८ मेभावमे गयाहोतो २० मे वर्ष मरणहोवे ३

बृहस्पतिसे युत सूर्य ४ कर्क राशी के लग्नमे गया हो और अष्टमेश केंद्रमे हो तो २२ में वर्ष मरण होवे ४

राहुसे युत चंद्रमा ७ मे तथा ८मे भाव मे गया हो और लग्न में गुरु हो तो २२ में वर्ष मरण होवे ५

दो पापग्रहोंके बीचमें गया हुवा लग्नेश शुभ ग्रहसे युत न हो और जिस लग्न में पिता का जन्म होवे उसी राशी के लग्न में जन्म हुआ हो तो २५ मे वर्ष मरण होवे ६

अपनि शत्रु राशि में गया हुवा शनि लग्नमे गया हो और सो शुभ ग्रह ३।६।९।१२ भाव मे हो तो २६ वा २७ मे वर्ष मरण होवे ७

रवि और चंद्रमा शनिसे संबंधी होकर अष्टम में गये होवे तो २८ में वर्ष मरण होवे ८

पापग्रह १।८।७ में भावमें गये हो और शुभग्रह पणफर वा आपोक्लिमस्थानमें हो तो २८ मे वर्षे मरण होवे ९

लग्नेश और अष्टमेश के बीचमे चंद्रमा गया हो और अष्टम भावमे हो तो २७ वा ३० मे वर्ष मरण होवे १०

अष्टमेश पापग्रह सहित और पापग्रहों से दृष्ट होवे अथवा ६।१२ में गयाहोतो २८ मे वर्ष मरण होवे ११

अष्टमेश बलवान होकर केंद्र मे अथवा लग्नमे गयाहोतो ३२ मे वर्ष मरण होवे १२

चंद्रमा सूर्य से युतहो अष्टमेश केंद्रमेहो, पापग्रह अष्टम और पापग्रह से युक्त कोई भी निर्बली ग्रह लग्नमें गयाहोतो मृत्यु होवे १३

बुध सहित चंद्रमा बारवें भाव में हो और निर्बली अष्टमेश दुष्ट युत वा दृष्ट होकर केंद्रस्थानमें गया हो तो ३० में वर्ष मरण होवे १४

अष्टमेश ९।२।१ भावों मे से किसी भाव में हो और लग्नेश अष्टम
यानमें पापयुत दृष्ट हो तो २४ में वर्ष मेही मृत्यु होवे १५
ष्टमेश लग्नमें और लग्नेश बलरहित होवे तो ३० वर्षकी ही
होवे १६
द्रमा और लग्नेश पापग्रहोंसे दृष्ट तथा बलहीन होकर आपोक्लि.
थान मे गये हो तो ३० वर्ष से अधिक नही जीवे १७
रुशुक्र केंद्र मे हो पापयुत लग्नेश आपोक्लिम में हो और संध्या
लमें जन्म होवे तो ३६ वर्षकी परमायु होवे १८
पापग्रहोंके बीचमें गयाहुवा शत्रुराशी में स्थित निर्बली रवि लग्नमें
ा हो और शुभग्रह उसको नही देखवे हो तो ३६ वर्षकी परमायु
वे १९
लग्न में चंद्रमंगलगयेहो केंद्र तथा अष्टम भावमें शुभग्रह नहो और
ग्न मे गलिक हो तो ३६ वर्षकी परमायु होवे २०
मंगलकी राशी (१।८) मे गयाहुवा चंद्रमा लग्न में पापग्रहोंसे
ष्ट हो और शुभग्रह केंद्र मे नही गये हो तो ३३ वर्षकी आयु होवे२१
अष्टमेश पापग्रह चंद्रमासे युत होकर केंद्र किंवा त्रिकोणस्थानमें
ा हो और वह दशमस्थान स्थितपापग्रहोंसे दृष्ट हो तो ३३ वर्षकी
युहोवे २२
द्रमा सेयुक्त शनि लग्न में गया हो और शुभराशी में मंगल हो तो
वर्षकी आयु होवे २३
पग्रहोके बीचमे लग्न गया हो और लग्नेश मिथुनराशीका होवे
गुरु चतुर्थभाव मे हो तो ३७ वर्षकी आयु होवे २४
मंगलसे युक्त अष्टमेश लग्न में गया हो यद्वास्थिरराशी में गयाहुवा
ल आठवें वा बारह में भावमें स्थितहो तो ४२ मे वर्ष मरण होवे२५
द्र में गुरु, दश मे शनि, और लग्नचरराशीका हो तो ४४ वर्षकी
यु होवे २६
राशिका शनि लग्न मे, गुरुसप्तमभावमें, और शनि दशमे,
मे गया होतो ४४ वर्ष की आयुहोवे २७
ग्नेश पापग्रहसे युतहोकर अष्टम भावमे गयाहो और शुभग्रह केंद्र
हीहोतो ४० वर्ष की आयुहोवे २८

पापग्रह से युतलग्नेश अष्टमभावमे और पापग्रहसे युत अष्टमेश छठे भाव मे बलवान होवे वा शुभदृष्टि रहित होतो ४९ मे वर्ष मे मरण होवे २९

मेषराशी का पूर्ण चंद्रमा लग्नमे शुभग्रहोसे दृष्टहोवेतो ४८ मे वर्ष मृत्यु होवे ३०

किसीभी ग्रहसे युक्तहोकर शनिलग्न में गयाहो और चद्रमा ८ किंवा १२ मे भावमे होतो ५२ मे वर्ष मरण होवे ३१

धनराशिकागुरु लग्नमे गयाहो और राहुसे युक्त मंगल आठवें भावमें होतो ५७में वर्ष मृत्यु होवे ३२

अष्टमेश सप्तम भावमें और पापयुत चंद्रमा ६।८ मे भावमे गयाहो तो ५८ में वर्ष मृत्यु होवे ३३

अष्टमेश से युक्त गुरुलग्नमे गयाहो अथवा कुंभराशीका गुरु पापग्रह सहित केंद्रमे होतो ६० मे वर्ष मृत्युहोवे ३४

लग्नमे शनि, चतुर्थ मे चंद्रमा, सप्तममे मंगल, दशममें सूर्य गयाहो और बुध गुरु शुक्र मेसे किसीएक से भी युक्तहो तो राजाहोवे ६० वर्ष पर्यंत जीवितरहे ३५

लग्नमे गयाहुवा शुक्र, चंद्र बुध और गुरुसें दृष्टहोवे तथा पंचम भावमे गुरु गयाहोतो ६० वर्ष की आयुहोवे ३६

लग्नमे शुक्र केंद्रमे बुध शनि और ३।११ मे भावमेंपरमोच्चराशी गत ग्रह गया, होतो ६० वर्ष की आयुहोवे ३७

लग्नेश तथा तत्काल होरा लग्नेश ये दोनो आठमे भाव में हो और अष्टमेश केंद्रमे गयाहोतो ६६ किंवा ६० वर्ष की आयुहोवे ३८

चंद्रमा सहित रवि दशमे भावमें, शनि लग्नमें और गुरु चतुर्थ भाव में गयाहोतो ६८ वर्ष की आयुहोवे ३९

लग्नमेंगुरु व मीन राशी में बुध सूर्य शनिकायोग किसी भी भाव में होवे और बारवे भाव मे चंद्रमा गया हो तो ६६ वर्षकी आयु होवे ४०

लग्न में चंद्रमा, कर्क राशीका नीचका शनि दशमे, और सातमें भावमें, सूर्य गया हो तो ६९ वर्षकी आयु होवे ४१

नीचराशीका शनि केंद्र वा त्रिकोणमें हो और शुभ ग्रह केंद्र में हो अथवा बुध सहित सूर्य केंद्रमे गया हो तो ७० वर्ष पर्यंत जीवितरहे४२

बलवान् शुभग्रह केंद्र म गये हो और अष्टम मे कोइ शुभग्रह नहीं होवे तथा लग्नेश पापग्रहों से दृष्ट नहीं हो तो ७० वर्ष तक जीवित रहे४३
पंचम भावमें मंगल नीचराशी में शनि और सप्तमभावमें सूर्य गया हो तो ७० वर्षकी आय होवे ४४
सर्व शुभाशुभ ग्रह लग्न से छठे भावपर्यंत हो अथवा सप्तम सेव्यय पर्यंत क्रम से गये हो तो ७० वष से ऊपर दीर्घायु होवे ४५
लग्नसे छठे भाव पर्यंत बलवान् सर्वशुभग्रह और सप्तम भाव से १२ भावमें पर्यंत बलवान् सर्व पापग्रह गये हो तो ८० वर्ष मे मृत्युहोवे४६
चंद्रमा से युत होकर गुरुकेंद्रमें शुभ ग्रहसें दृष्ट होवे और अन्य सर्व ग्रह दशम भाव से ऊपर के भाव (११।१२) में गयेहोतो ८६ में वर्ष मृत्युहोवे ४७
केन्द्र में शुभग्रह तथैव अष्टमभाव के विना अन्यभावमे पापग्रहहो और लग्नसे छठे भावमें चंद्रमा गयाहोतो ८६ मे वर्ष मृत्युहोवे ४८
लग्नेशसे केन्द्रस्थानमें गुरुगयाहो और (३।६।११।१२) में भावमें पापग्रह स्थित होतो १०० सो वर्ष जीवितरहे ४९
केवल गुरु लग्नेशसे केंद्रमे गयाहोतो ७० वर्ष की आयुहोवे ५०
तीनग्रह अपनी उच्चराशीमेंहो वृषभ किंवा कर्क राशीके लग्नमें गुरुहो मकरका मंगलहो और अन्यसर्व ग्रहकेंद्र में गयेहोतो परमा १२० वर्षकी होवे ५१ इत्यादि और भी अनेक योगहै वे ग्रंथांतरोंसे जानना।

सिंहान्मृत्युयोग।

चंद्रार्कौ षष्ठेवाष्टमे सिंहान्मृतिः ३१

तुर्येभौमे खेर्कजे सिंहान्मृतिः ३२

टीका-सूर्य चंद्रमाकायोग छठे किंवा आठमे भावमें होवो सिंहसे मृत्युहोयेगा ३१
चतुर्थ भावमें मंगल और दशमे भावमें शनिगयाहो तो सिंहसे मृत्यु होवेगा ३२

सर्पान्मृतियोग.

राव्हछौखे सर्पान्मृतिः ३३

राव्हकविंशेपापेक्षितौ सर्पान्मृतिः ३४
खेर्केसुखेभौमे मन्देष्टमे सर्पान्मृतिः ३५
यूनेशन्यर्कराहुसर्पपीडातो मृत्युः ३६

टीका-राहु और शुक्रका योग दशमें भावमें होतो सर्प दंश से मृत्यु होवे ३३
कारकांशलग्नमें गयाहुवासूर्य पापग्रहसेंदृष्टहोतो सर्पदंशसेमृत्युहोवे ३४
दशमें रवि चतुर्थभावम मंगल और आठमे शनिगयाहोतो सर्पदंशसें मृत्युहोवे ३५
शनि रवि और राहुसातमें भावमे गयेहोतो सर्पदंशसें मृत्युहोवें ३६

शस्त्रान्मृतियोग।

कुजार्कजावंगे चाष्टमेचंद्रेशस्त्रान्मृतिः ३७
केतुसुखेशौषष्ठे शस्त्रेणमृत्युः ३८
पापयोर्मध्ये कुजर्क्षगेचंद्रे शस्त्रेणाग्निना वा मृत्युः ३९
रंध्रस्थौ यमारौ राहुयुतौ शस्त्रतोमृत्युः ४०
शुक्रर्क्षे चन्द्रमन्दौ शस्त्रतोमृत्युः ४१

टीका-लग्नमे शनि मंगल और अष्टम भाव में चंद्रमा गया हो तो शस्त्र से मृत्यु होवे ३७
सुखेश और केतु छठे भाव में गये हो तो शस्त्र सें (तलवार बंदूक छुरी कटारी आदिके लगने से) मृत्यु होवे ३८
मंगलकी राशी (१।८) में गया हुवा चंद्रमा पापग्रहों के बीचमें स्थितहो तो शस्त्र से अथवा अग्निमे जलजानेसे मृत्यु होवे ३९
आठमेभावमे शनिमंगल राहुसे युक्त हो तो शस्त्रसें मृत्यु होवे ४०
चन्द्रशनि, शुक्रकीराशी (२।७) मे गयेहो तो शस्त्र से मृत्यु होवे ४१

श्वदंशान्मृति योग।

जीवारौखेर्केयूनेश्वदंशान्मृत्युः ४२

टीका-दशमे गुरुमंगल और सातमें भावमें रवि गया हो तो कुत्तेके काटने से मृत्यु होवे ४२

राजगेहे मृत्यु योग ।

द्वादशांशे खेसुखे सूर्ये राजगेहे मृत्युः ४३

टीका-द्वादशांश कुंडली मे दशमे तथा चतुर्थ भाव में सूर्य गया हो तोराजाके मकानमें मृत्यु होवे ४३

कुमृत्यु योग ।

कुजेन्त्ये मंदेष्टमे कुमृत्युः ४४

भौमेरिगेदुर्मृत्युः ४५

टीका-बारमें भाव में मंगल और आठ में शनि गया हो तो खराब रीतसे मरण होवे ४४

मंगलछठे गया हो तो दुर्मरण होवे ४५

तीर्थे वा पर्वते मरण योग ।

राहुसूर्ययोगे तीर्थे वा पर्वते मृत्युः ४६

जीवेङ्के तीर्थे मृत्युः ४७

ज्ञाच्छौ धर्मे द्वारावत्यांमृत्युः ४८

ज्ञार्कौधर्मे मार्गे वा शिवालये मृत्युः४९

लग्नेधर्मेशे तीर्थे मृत्युः ५०

चंद्रधर्मेशावष्टमे सन्मृत्युः ५१

सौम्येरंध्रे शुभदृष्टे वा धर्मपे सौम्ये तीर्थेमृत्युः ५२

टीका-राहु और सूर्यका एक राशी में योग हो तोतीर्थ में वा पर्वतपर मरण होवे ४६

नवमें भावमें गुरु गयाहोतो तीर्थमें मरण होवे ४७

बुध शुक्र नवमें भावमें गये होतो द्वारावतीपुरी (द्वारीका) में मरण होवे ४८

बुध सूर्य नवमें भाव में गयेहोतो मार्ग में किंवा शिवालयममे मरण होवे ४९

धर्मेश लग्नमे गयाहोतो तीर्थमे मरण होवे ५०

चंद्र और नवमेश ये दोनो आठमेभाव मे गये होतो सन्मरणहोवे (बिनाकष्टपाये अच्छी तरह मरणहोवेगा) ५१

अष्टम भाव मे गयाहुवा बुध शुभग्रह से दृष्टहो अथवा नवमेश बुधहोतो तीर्थमे मरण होवेगा ५२

कफादतिसाराद्वामृत्यु योग ।

भौमेरिगेर्कदृष्टे कफादतिसाराद्वामृत्युः ५३

टीका-छठे भाव मे गयाहुवा मंगल रविसे दृष्ट हो तो कफसे किंवा अतिसाररोग से मरण होवे ५३

शकटान्मरण योग ।

मन्देष्टमे शकटान्मृत्युः ५४

टीका-शनि आठमे भावमे गया हो तो गाड़ी से मरण होवे ५४ यदि यह शनि पापग्रहसे युत दृष्ट हो तो यह योग बलवान् समझना केवल शनिके ८ आठमे होने से फल मिलना असभव है।

कारागारे वा शूलेनमृत्यु योग.

ज्ञार्कजावष्टमे कारागारे शूलेवा मृत्यु ५५

टीका-बुध शनि का अष्टम भावमे योग हो तो जहलखानेमे किंवा शूल (शूलीपर चढनेसे) मृत्यु होवे ५५

वर्तमान समयमे शूलीपर चढानेकी शिक्षाके बदले फासीकी सजाहुआ करतीहै ।

शय्यायां वा अंतराले मरण योग

शुक्रज्ञावष्टमे शय्यायां वान्तराले मृत्युः ५६

टीका-शुक्र और बुध आठ मे भाव मे गये होतो पलंगपर बिछोनेमे अथवा अंतराल में (मंजिलपर) मरणहोवे ५६

विभूतिरोगान्मरण योग ।

मन्दार्क योगे विभूति रोगान्मृत्युः ५७

टीका-शनि रवि का योग आठमे भावमे होतो विभूति रोगसेमरण होवे ५७

उर्ध्ववंधनान्मरणयोग ।

मन्दारौ मृतिगौ उर्ध्ववंधनान्मृत्युः ५८

धनाङ्गपौत्रिके सराहु केतु उद्बंधनान्मृत्युः ५९.

टीका-शनि मंगल आठ मे भाउमे गये हो तो ऊंचा बंधनेसे मरण होवे५८
धनेश और लग्नेश ये दोनो राहु किंवा केतुसे युतहोकर ६।८।१२ भाव में गये हो तो उद्बंधन (फासीसे) मरण होवे ५९

विद्युत्पातसे मृत्यु योग ।

मन्दर्क्षेर्केऽङ्गेशयुते विद्युत्पातान्मृत्युः ६०

टीका-शनिकी राशी (१०।११) में गयाहुआ रवि लग्नेशसे युक्त होतो विजली के गिरनेसे मरण होवे ६०

वाहनान्मरण योग ।

सुखेशेपष्ठे मन्दयुते यानान्मृत्युः ६१

भौमेंबुगे खेर्के वाहनपाततो मृत्युः ६२

रंध्रांगपौ तुर्यपयुतौ वाहनतो मृत्युः ६३

टीका—सुखेश छठ भावमे शनि से युक्त होतो वाहनपरसे पड़ने से मरण होवे ६१
मंगल चतुर्थ भावमे और रवि दशमे भावमे गयाहो तो वाहनपर से पड़ने से मरण होवे ६२
अष्टमेश और लग्नेश ये दोनो चतुर्थेश से युक्त होतो वाहन से मरण होवे ६३
वाहन-हाथी, घोड़ा, गाड़ी, रेल, मोटर, साइकल, उंट, वगेरा वाहन गिनेजाते है।

स्वदेशे विदेशे वा मार्गे मरण योग ।

चरर्क्षेऽङ्गे स्वदेशे द्विस्वभावेऽङ्गे विदेशे ऽन्यथा मार्गे मृत्युः ६४

टीका-जन्म लग्न चरराशीकाहोतो स्वदेशमे ,द्विस्वभाव राशी ३।६।९।१२ का होतो विदेश में और स्थिर राशी २।५।८।११ काहोतो मार्गमे मरण होवेगा ६४

चौरान्मरण योग ।

राहुतुर्येशौपष्ठे चौरान्मृत्युः ६५

रन्ध्रांगपौपष्ठे सराहुकेतु चौरशस्त्रघाततोमृत्युः ६६

टीका-चतुर्थेश राहुसे युतहोकर छठे भावमे गयाहोतो चोरसे मरण होवेगा ६५

अष्टमेश और लग्नेश ये दोनो राहु किंवा केतुसे युक्तहोकर छठे भावमे गये होतो चोरके शस्त्रघातसे मरणहोवे ६६

शिलाप्रपातान्मरण योग.

अर्कारौखेवा सुखे शिलाप्रपातान्मृत्युः ६७

टीका-रवि मंगल दशमें किंवा चतुर्थ भाव में गये होते। शिलाके पड़नेसें मरणहोवे ६७

कूपपातान्मरण योग।

सौरेन्द्वारैः क्रमाद्बन्धस्तकर्मगैः कूपपातान्मृत्युः ६८

चंद्रार्कौ वुभयोदये जलनिमज्जनान्मृत्युः ६९

टीका-चतुर्थ भाव मे शनि, सातमें चन्द्रमा, दशमे मंगल क्रमसेगये होतो कुए मे गिरनेसे मरण होवेगा ६८

चन्द्रऔरसूर्यएकायोगमीनराशिमेहोतोजलमेंडूबजानेसेमरणहोवेगा६९

स्वजनेन हनन योग।

कन्यास्य चंद्रार्कौ पापदृष्टौ स्वजनेन हन्यते ७०

टीका-कन्याराशि में गये हुवे चंद्र रवि पापग्रहोसे दृष्टहोतो अपने कुटुम्ब के (सगोत्रके) मनुष्यके हात से मारनेके कारण मरणहोवेगा७०

जलोदरेण मरण योग।

मृगेचंद्रकर्केमन्दे जलोदरेण मृत्युः ७१

टीका-मकर राशीमें चद्रमा और कर्कराशी में शनि गयाहो तो जलोदर रोग से मरण होवे ७१

रक्तोत्थशोषरोगान्मरणयोग।

कन्यांगेचंद्रे पापयोर्मध्येरक्तोत्थशोषान्मृत्युः ७२

टीका-कन्या राशी में गयाहुवा चंद्रमा पापग्रहोंके बीच में हो तो रुधिर जन्य शोषरोग से मरणहोवे ७२

रज्जु अग्नि पाताद्यमरणम योग.

सौरर्क्षेचंद्रेपापयोर्मध्येरज्ज्वग्निपाते मृत्युः ७३

टीका–शनि की राशी (१०।११) मे गया हुवा चंद्रमा पापग्रहो के बीचमें होतो रस्सी सें वा अग्नी से किंवा गिरजाने सें मरण होवेगा ७३

स्त्री हेतुक मरण होगा।

सपापे इन्दावस्ते मेषेशुक्रे सूर्येङ्गे स्त्री हेतुक मृत्युः ७४

टीका—सप्तम भावमे पापग्रह से युक्त चंद्रमा, मेष राशी मे शुक्र और लग्नमें सूर्य गयाहोतो स्त्रीके कारण मृत्यु होवेगा ७४

शूलरोगेण मृत्यु योग।

सूर्यारौतुर्ये खेपमे शूलेन मृत्युः ७५

त्रिकोणाद्यगैस्सक्षीणेन्दु पापैः शूलेन मृत्युः ७६

तुर्येऽर्के खेकुजे क्षीणेन्दुदृष्टे शूलेन मृत्युः ७७

टीका–चतुर्थ भाव में रवि मंगल और दशमे भाव में शनि गयाहोतो शूल रोगसे मृत्युहोवेगा ७५

क्षीण चंद्रमा से युक्त होकर पापग्रह नवमें पांचमें किंवा लग्नमें गयें होतो शूलरोग से मृत्यु होवे ७६

चतुर्थ भाव में रवि और दशमे मंगळ गया हो इनको क्षीण चंद्रमा देखता होतो शूलरोग से मृत्यु होवे ७७

काष्ठादि घाततो मृत्युयोग।

खेभौमे तुर्येर्के मन्ददृष्टे काष्ठाभिघाततो मृत्युः ७८

रंध्रखाम्बुलग्नगैः क्रमात्क्षीणेन्द्वारार्कजार्के र्लगुडघाततो मृत्युः ७९

क्षीणेन्द्वारार्कजार्कैः स्वाङ्गायेषुगै र्धूमाग्निबन्धनकाष्ठादिप्रहारान्मृत्युः ८०

स्वास्ताम्बुगै र्मन्दार्कारैरायुधाग्नि नृप कोपतो मृत्युः ८१

टीका–दशमें मंगळ, व चतुर्थ भावमे रवि गयाहो और इनको शनिदें

स्वताहोतो लकडीकी चोटलगने से मृत्युहोवे ७८

आठमें भावमे क्षीणचंद्रमा, दशमे मंगल, चतुर्थ भावमे शनि, और लग्नमे रवि क्रम से गयेहोतों लठ्ठकी लगने से मृत्युहोवेगा ७९

दशमे क्षीण चंद्रमा नवमें मंगल ग्यार मे भान में शनि और पंचम भावमे रवि गयेहातो धूएँसे घवराजाने के कारण वा अग्नी मे जलना ने से वा बन्धन मे पडने से किंवा काष्ठादिक के प्रहारसे (घातसे) मरण होवेगा ८०

दशमे शनि सात मे रवि और सुखमे मंगल गयाहोतो शस्त्रसे अग्नि से किंवाराजाक कोपसे मरणहोवेगा ८१

क्रमिपाततो मरण योग।

मन्देन्द्वारे र्व्यङ्विध दशमगे च्छिद्रे क्रमिपाततो मृत्युः ८२

टीका-धनमे शनि सुखमे क्षीणचंद्रमा दशमें मंगल गयाहोतो जखम के छिद्रोमे कीड़े पडजानेसे मरणहोवे ८२

यंत्रपीड़नान्मरण योग।

द्यूनेभौमे चंद्रार्कजावङ्गे यंत्रपीड़नान्मृत्युः ८३

टीका-सातमें मंगल और लग्न मे चंद्र शनि गये होतो किसी यंत्रमे दबजानेसे किंवा कटजानेसे मरण हावे ८३

विण्मध्ये पतितस्य मरणयोग।

भौमार्किचन्द्रैस्तुलाजयपक्षगैर्विण्मध्येपतितस्यमृत्युः ८४

सप्तांबुव्योमगैः सूर्यारक्षीणेन्दु भिर्विण्मध्येपतितस्यमृत्युः८५

टीका-तुलराशी में मंगल मेषराशीमेंशनि,शनिकीराशि (१०।११) म चंद्रमा गये होतो विष्टामे पड़ेहुवे का मरण होवे (मरते समय वि- ष्टामे पडाहुवे और मरण होवे) ८४

सातमें रवि चतुर्थ में मंगल और दशमे क्षीण चंद्रमा गयेहोतो विष्टा में पड़े हुवे का मरण होवेगा ८५

प्रेत पक्षिभिर्भक्ष्यति योग।

सूर्यारावस्ते मन्देष्टमे क्षीणेन्दौतुर्ये पक्षिभिर्भक्ष्यतेप्रेतः ८६

टीका-रवि मंगल सात मे, शनि आठ में, और क्षीण चंद्रमा चतुर्थ

भावमे गये होतो उस के देहको पक्षि भक्षण करेंगे अर्थात् उसके शवका अग्नि संस्कार नही होवेगा और जंगलमे पडेहुवे को पक्षीखावेंगे ८६

शैल शिखरा शनि कुड्यपाततो मरण योग।

चन्द्रेनारयमैर्नेवायात्मजाष्टमगैःशैलशिखराशनिकुड्यपाततो मृत्युः ८७

रन्ध्रलग्नाधिशौ वबलौ भौमषष्ठेशयुतौ शैल शिखराशनिकुड्यपाततो मृत्युः ८८

टीका–नवमेक्षीण चंद्रमा, लग्न में रवि, पांच में मंगल, और आठ में शनि गये हो तो पर्वतके शिखर गिरनेसे, बिजली वा बिजली के संबंधी अशनि उल्का आदिके पडने से किंवा भीतके गिरनेसेनोचे दबके मरण होवेगा ८७

अष्टमेश और लग्नेश ये दोनो निर्बली होकर मंगल और षष्ठेश से युक्त हो तो पर्वतके शिखर गिरनेसे वा बिजलीके पडनेसे किंवा दीवालके गिरनेसे दबके मरण होवेगा ८८

रणे तथा शत्रुकोपतः मृत्यु योग।

रन्ध्रेशुभः पापारिविक्षितोरणे मृत्युः ८९

निद्रितः शयानो वा पापयुतोष्टमे शत्रुकोपतो मृत्यु ९०

टीका–अष्टमभावमे गयाहुवा शुभग्रह पापग्रह से किंवा अपने शत्रु ग्रहसे दृष्ट हो तो संग्राम मे मरण होवे ८९ सर्वार्थ मे लिखा है कि षष्ठेश अष्टमेश किंवा मंगल पराक्रमेश से युक्त हो और शनि गुलिक से युतहोकर क्रूरांशक में स्थित हो तो युद्धसे मरण होवे १

शनि जिसके द्रेष्काण में गया है वहग्रह मंगल से युक्त वा दृष्ट हो और मंगलकी राशीमें वा नवांशमेंही गयःहो तो युद्धसे मरण होवे २

निद्रा तथा शयनावस्था मे गयाहुवा पापग्रह अष्टम भावमें गया हो तो शत्रुके कोपसे मृत्यु होवे ९०

वृषभेण मृत्यु योग।

भौमार्कदृष्टं लग्नं शुक्रेज्यावदृष्टं चेद्वृषभेण मृत्युः ९१

टीका-मंगल और रवि से दृष्ट जन्म लग्न यदि गुरु शुक्रसे दृष्ट न हो तो वृषभ से मरण होवेगा ९१

वृक्षपाततो मृत्युयोग

मन्दार्कौलग्ने राहु दृष्टौ वृक्षपाततो मृत्युः ९२

टीका-लग्नमे गये हुवे शनि रवि राहुसे दृष्ट हो तो वृक्षके गिरनेसे मरण होवेगा ९२

व्याघ्रतो मरण योग।

जीवर्क्षगे मंदर्क्षे कुजे व्याघ्रतो मृत्युः ९३

टीका-गुरुकी राशी ९।१२ में बुध और शनिका राशी १०।११ में मैगल गयाहो तो सिंहकी जातिके छोटे बाघ से मरण होवे ९३

शरेण मरण योग।

धर्मेपापाः शुभादृष्टाः शरेण मृत्युः ९४

टीका-नवम भाव मे गयेहुवे पापग्रह शुभग्रहसे अदृष्टहो तो शरसे (बाणसे) मरण होवेगा ९४

विषेण मरण योग।

चंद्रज्ञौ षष्ठाष्टमे वा विषेण मृत्युः ९५

टीका-छठे किंवा आठ मे भाव मे चंद्र बुध गये होंतो विष (जहरखाने या खिलाने) से मरण होवे ९५

गजतः मरण योग

पुष्पवंतौ षष्ठाष्टमे वा गजतो मृत्युः ९६

टीका-छठे अथवा आठमे भाव मे रवि चंद्रकायोग होतो गजसे मरण होवेगा ९६

रंध्रगत ग्रहदोष वशान्मरणयोग।

रंध्ररवौवन्हे श्चंद्रेजलयोगा त्कौमेशस्त्रतो बुधेज्वरतो गुरौ त्रिदोषतः शुक्रे क्षुधया शनौ तृषया मृत्युः ९७

योबलवान्निधनंपश्यते तद्धातुकोपतोमृत्युः ९८

उक्तयोगाभावेष्टम भावा धिष्ठितत्र्यंशेश स्योक्ताग्न्यम्श्रादि स्वगुण हेतुतोमृत्युः ९९

निधनग द्रेष्काणतोमृत्युः १००

टीका-आठमे भावमे यदि रवि गयाहोतो अग्निमें जलनेसे, चंद्रगया होतो जलमे डूबने से, वा जलके संबधसे, मंगल गयाहोतो शस्त्रसे, बुध गयाहोतो ज्वर, की पीडासे, गुरु गयाहोतो सन्निपात दोषसे, शुक्रगयाहो तो क्षुधाके दुःख से, शनिगयाहोतो तृषार्त होनेसे मरण होवेगा ९७

यदिकोई भी ग्रह आठ में भावमे नहीं गयाहोतो जो बलवान ग्रह अष्टम भावको देखताहो उसीकी उपरोक्त धातु केकोपसे मरण होवेगा अर्थात् यदि बलवान् रवि अष्टम भावको देखता हो तो अग्नि से, चंद्र देखताहो तो जल से, मंगलदेखता हो तो शस्त्रसे, बुध देखता हो तो ज्वर से गुरुदेखताहो तो सन्निपातरोगसे, शुक्र देखता हो तो क्षुधासे, शनि देखता हो तो तृषासे मृत्यु होवेगा ९८

यदि अष्टम भावमें कोई भीग्रह गया नहो वा कोई ग्रह अष्टम भावको देखता भि नहो तो अष्टम भावमे जिसराशीका द्रेष्काण हो उसके स्वामि के अग्नि जल शस्त्रादिदोषके अनुसार मरण होवेगा अर्थात् यदि अष्टम भावके द्रेष्काण का स्वामी रवि होतो अग्निसे, चंद्र होतो जलसे, मंगल होतो शस्त्रसे, बधहोतो ज्वरसे गुरुहोतो त्रिदोषसे, शुक्रहोतो क्षुधासे शनि होतो तृषासे मरण होवेगा ९९

अथवा अष्टमभावमे जोद्रेष्काणहो उसकेअनुसार मरणहोवेगा १००

अष्टमभावमे गई हुई प्रत्येक राशिके ३ तीन द्रेष्काणो काफल भिन्न२ नीचे लिखाहै तदनुसार जानना।

द्रेष्काण फल।

मेषाद्यत्र्यंशे प्लीहजो वा विषजो वा पित्तजो मध्ये जलजो न्त्येकूपादिपाततो मृत्युः १०१

वृषादित्र्यंशे खराश्वादितो मध्ये पित्ताग्निचौरतो न्त्येउच्च स्थलाश्वादितो मृत्युः १०२

गुग्माद्ये वातश्वासतो मध्येत्रिदोषा दन्त्येयानपर्वत पाततो वारण्ये मृत्युः १०३

कर्काद्येऽपेयपानात्कण्टकाद्वामध्ये विषातिसारतोन्त्ये महाभ्रमप्लीह गुल्मादितो मृत्युः १०४

सिंहाद्ये विषांबुरोगेण मध्ये. श्वसनाम्बुरोगेणान्त्येयानपीडाविषशस्त्रेण मृत्युः १०५

कन्याद्ये वातमस्तकरोगेण मध्येदुर्गाद्रिपातान्नृपकोपतोन्त्ये खरोष्ट्र शस्त्राम्बुपाततो मृत्युः १०६

तुलाद्ये पतनात्स्त्रीतः पशुतो मध्येजठररोगेणान्त्येप्याक जलान्मृत्युः १०७

अल्याद्ये विषशस्त्रतो मध्ये भारश्रमाद्वा कटिवस्ति रोगतोन्त्ये लोष्टकाष्ठ पाषणतो मृत्युः १०८

चापाद्ये वातगुदामया न्मध्ये विषबाणाश्पाद्न्त्ये जलजलचार्युदरामयान्मृत्युः १०९

मृगाद्ये सिंहवराह वृश्चिकतो मध्ये भुजंगतोन्त्ये चौराग्नि शस्त्रज्वरतः मृत्युः ११०

कुम्भाद्ये स्पअङ्गजोदर व्याधितो मध्येगुह्यरोगादन्त्येविषान्मृत्युः १११

मीनाद्येग्रहिणी प्रमेहगुल्मजो मध्येजलोदरगजग्राहतो न प्रभेदा दन्त्ये कुरोगा न्मृत्युः ११२

टीका–मेषराशीके प्रथम द्रेष्काणमे अष्टमभावहो तो प्लीहसे (फिये के रोगसे) या विषसे अथवा पित्तके रोगसे मध्यद्रेष्काणहो तो जलमे

डूबनेसे वा जलके संबंधसे अंत्यद्रेष्काणहो तो कुआ बावड़ी तालाव नदी वगैरामें गिरजानेसे मृत्यु होवेगा १०१

अष्टमभाव वृषभ राशीके प्रथम द्रेष्काणमेंहो तो गधा घोड़ा आदि चतुष्पद परसे पड़नेसे वा इनके मारनेसे मध्यद्रेष्काणमेंहो तो पित्तके कोपसे अग्निसे जलनेसे चोरकी चपेटसे तीसरे द्रेष्काणमेंहो तो ऊंची जगहसे (पाहाड़ ऊंचे मकान आदि परसे गिरपड़ने से) वा कुत्ते बिल्ली बन्दर सियाल वरगड़े आदि के काटनेसे मरण होवेगा १०२

अष्टम भाव मिथुनराशिके प्रथम द्रेष्काणमेंहो तो ८४ प्रकारके वात संबंधी वायुरोगसे वा श्वाससे [दमेके रोगसे] मध्यद्रेष्काणमेंहो तो त्रिदोषके कोपसे [सन्निपातसे]तीसरे द्रेष्काणमेंहो तो गाड़ि घोड़ा हाथी मोटर साईकल रेल आदि वाहनपरसे गिरजानेसे वा इनकी लगनेसे वा पर्वतपरसें गिरपड़नेसे अथवा पर्वतका कोई भाग अपने ऊपर गिरपड़ने से वा जंगलमें मरण होवेगा। १०३

अष्टम भाव कर्क राशी के प्रथम द्रेष्काण मे हो तो नहीं पीने योग्य पीनेकी वस्तुको पानकरने से अथवा कांटों सें बिधजाने से मध्यद्रेष्काण मे हो तो विषसे वा अतिसाररोगसे अंत्यद्रेष्काण में हो तो चक्र आनेके महारोगसे प्लीहरोगसे वा गोलके रोगसे वा विशूचिका (हैजा) आदिरोगसे मरण होवेगा १०४

अष्टमभाव सिंहराशी के प्रथम द्रेष्काणमें हो तो विषसे वा जहरीलि हवाके महामारी (प्लेग) हेजा आदिरोगसे तथा जलोदर अथवा जल संबंधी विकारके रोगसे मध्यद्रेष्काण हो तो श्वासरोगसे वा जलसंबंधी रोगसे तीसरा द्रेष्काण हो तो वाहनकी पीड़ासे वा विषसे वा शस्त्राघात से मरण होवेगा। १०५

अष्टमभाव कन्याराशिके प्रथम द्रेष्काण में हो तो ८४ प्रकारकी वायु के रोग से वा मस्तक के रोग से अर्थात् मस्तकमें दर्द पीड़ा होने से वा मस्तिष्कमें उन्मादादि कोइ दुष्ट रोग उत्पन्न होने से मध्यद्रेष्काण हो तो किलेपरसे वा पर्वतपरसे गिरपड़ने से वा राजाके कोपसे, तीसरा द्रेष्काण हो तो गधे परसे वा ऊंट परसे पड़ने से शस्त्राघातसे वा जलमे पड़ने से मरण होवेगा १०६

अष्टम भावमे तुलराशीका प्रथम द्रेष्काण हो तो गिरपड़ने से स्त्री के सबब से (स्त्री स्वयं मारडाले वा स्त्री मरवाडाले) अथवा गाय

भैंस आदि पशु के मारबैठने से दूसरा द्रेष्काण हो तो जलोदर बटोदर मंदाग्नि अजीर्ण विशूचिका आदिपेटके ८ प्रकारके रोग होतेहै उनमेंसे किसी भी पेटके रोगसे, तीसरा द्रेष्काण हो तो सांपके काटने से वा जलमें गिरनेसे मरण होवेगा १०७

अष्टम भाव में वृश्चिकराशिका प्रथम द्रेष्काण हो तो विष (जहर) से शस्त्र से दूसरा द्रेष्काण हो तो बोझा उठानेसे अथवा मिहनतके कामसे वा कमर पेडू आदि स्थानोंके रोगसे तीसरा द्रेष्काण हो तो मिट्टीके ढेलेकी वा काष्टकी वा पाषाणकी चोट लगनेसे मरण होवेगा १०८

अष्टम भाव धनराशिके प्रथम द्रेष्काण में हो तो बादीके अर्शादि गुदाके रोगसे, मध्य द्रेष्काण हो तो विषसे वा बाणके (तीरके) लगनेसे तीसरा द्रेष्काण हो तो जलसे वा जलचारी मगरमच्छ कछुवे आदिजीवों से वा पेटकी पीडा आठ प्रकारकी होती है उनमें से कोइभी पेटके रोगसे मरण होवेगा १०९

अष्टमभाव मकरराशीके प्रथम द्रेष्काण में हो तो सिंहसे वा सुअर से वा बिच्छुके काटने से मध्य द्रेष्काणमें हो तो सांपके काटने से तीसरे द्रेष्काणमें हो तो चोर अग्नि शस्त्र किंवा ज्वरके रोगसे मरण होवेगा ११०

अष्टम भाव कुंभराशी के प्रथम द्रेष्काण मे होतो स्त्री के वा पुरुष के संबंधसे किंवा पेट के रोगसे मध्यद्रेष्काण में होतो गुप्त स्थान (जननेंद्रिय) में गरमी सुजाक प्रमेह आदि गुप्त रोगोंसे तीसरा द्रेष्काण होतो विष (जहर) से मरण होवेगा १११

अष्टम भाव मीन राशी के प्रथम द्रेष्काण में होतो संग्रहणी रोगसे वा प्रमेह गुल्म रोगसे मध्यद्रेष्काणमें होतो जलोदर रोगसे वा नलसे वा मगरसे वा नाव स्टीमर जहाज आदिमें से जलमें गिरजानेसे तीसरे द्रेष्काण में हो तो प्लेग हैजा वगेरा जितने अनेक प्रकारके दुष्ट रोग है उनमें से किसीभी दुष्टरोगसे मरण होवेगा ११२

पत्निसहगामिनी योग ।

धर्मपाराकौ धर्मगा लग्नास्तेशौमित्रे पत्नी सहगामिनी ११३

टीका-नवमेश, मंगल और रवि ये तीनों नवमें भाव में गये हो और लग्नेश सप्तमेश मित्र होवे तो स्त्री सती होवेगा ११३

शुभलोकाप्ति योग ।

अंशाद्वालग्नाद्रन्ध्रेशुभे शुभलोकाप्तिः ११४

टीका–कारकांश लग्नसे अथवा जन्म लग्नसे आठ में भावमें शुभग्रह गया हो तो मरणानंतर शुभलोककी प्राप्ति होवेगा ११४

ब्रह्म सायुज्ययोग ।

सिंहासनेचन्द्रेपारिजातेगुरौऐरावतेशुक्रेब्रह्मसायुज्यं ११५

अन्त्येंशात्केतौ ब्रह्मसायुज्यं ११६

अंशादन्त्ये मेषचापगशुभे ब्रह्मसायुज्यं ११७

एकस्थानगानां चतुर्णामधिष्ठितराशीशेकेन्द्रकोणे ब्रह्मसायुज्यं ११८

माने मीनेसौम्ये वा भौमे ब्रह्मसायुज्यं ११९

रन्ध्रेशेयाने निद्रिते वा शुभयुतदृष्टे ब्रह्मसायुज्यं १२०

लग्नेशोङ्कंधर्मेशोधर्मंरन्ध्रेशोरन्ध्रंपश्यतिचेद्ब्रह्मसायुज्यं १२१

नवमे केवलशुभद्वये ब्रह्मसायुज्यं १२२

टीका–सिंहासनांश में चंद्रमा, पारिजातांश में गुरु और ऐरावतांश में शुक्र गया हो तो ब्रह्मसायुज्य (मुक्ति) प्राप्ति होवेगा ११५

कारकांश लग्न से बारवे भावमें केतु गया हो तो ब्रह्मसायुज्यप्राप्ति होवेगा ११६

कारकांश लग्न से बारवे भावमें मेष किंवा धनराशि में शुभग्रह गया हो तो ब्रह्मसायुज्य प्राप्ति होवेगा ११७

अेकस्थानमें गये हुवे चारग्रह जिस राशीमे गये हो उस राशीका स्वामि केंद्र किंवा त्रिकोणस्थान में गया हो तो ब्रह्मसायुज्यप्राप्ति होवेगा ११८

मीन राशीका बुध दश मे किंवा मीनराशीका मंगल दशमें गया हो तो ब्रह्मसायुज्य प्राप्ति होवेगा ११९

निद्रावस्था में गया हुवा अष्टमेश सुखभाव में गया हो अथवा नि–

द्वावस्था में गया हुवा अष्टमेश शुभ ग्रहों से युत दृष्ट हो तो ब्रह्मसायुज्यप्राप्त होवेगा १२०

लग्नेश लग्नको धर्मेश धर्मको अष्टमेश अष्टमको देखताहो तो ब्रह्मसायुज्यप्राप्ति होवेगा १२१

नवमें भावमे केवल दो शुभग्रह गये हो तो ब्रह्मसायुज्य (मुक्ति) प्राप्त होवेगा १२२

विष, पाषाण, अग्नि जलघात योगा।

षष्ठेष्टमे वा चंद्रज्ञौ विषघातः १२३

ज्ञार्कावष्टमे विषाग्निघातः १२४

लाभेभौमार्कौ विषाग्निशस्त्रघातः १२५

खेर्के सुखेकुजे पाषाणघातः १२६

भौमार्कौ सुखे पाषाणघातः १२७

सुखेश युत दृष्टे खेशे पाषाणघातः १२८

सुखपेतमोर्कि युते कुजेक्षिते पाषाणघातः १२९

राहौ मदे वा लाभे काष्ठपाषाणघातः १३०

कुजेष्टमेग्निघातः १३१

क्षीणेन्दावष्टमे जलघातः १३२

तुर्येशे जलर्क्षे नीचारि मूढहीन बले तुर्यारिगे जलघातः १३३

लग्नेशे बले सुखे पापे जलघातः १३४

सुखेशेऽबले सुखपापे जलघातः १३५

सुखपे सपापे केन्द्रे जलघातः १३६

लग्नसुखेशौ सुखे कर्मेशदृष्टौ जलघातः १३७

सुखेशस्येश्वरेण सुखपे युत दृष्टे जलघातः १३८

टीका-छठे किंवा आठ में भाव में चंद्र बुध गये हो तो विषकी घात अर्थात् जहर से मरणांत कष्ट होवेगा १२३

अष्टम भाव मे बुध सूर्य गये हो तो जहरकि वा अग्निकी घात हो-वेगा (जहरसे वा अग्निसे मरते मरते बचेगा) १२४

रवि मंगल लाभ भावमें गये हो तो विष, अग्नि, वा शस्त्रकी घात होवेगा १२५

दशमे रवि और सुखमें मंगल गया हो तो पाषाण (पत्थर) से घात होवे (मरते मरते बचेगा) १२६

रवि और मंगल दोनो सुखभावमें गये हो तो पाषाणकी घात होवे १२७

सुखेश से युक्त किंवा दृष्ट दशमेशहो तो पाषाणकी घात होवे १२८

सुखेश, शनि व राहुसे युत होवे और मंगलसे दृष्टहो तो पाषाणकी घात होवेगा १२९

सातमें किंवा ग्यारमे भावमें राहु गया हो तो काष्ठ तथा पाषाणकी घात होवेगा १३०

मंगल आठमे भावमे गयाहोतो अग्नि की घात अर्थात अग्निसे जल जानेका भयहो वेगा १३१

क्षीण चंद्रमा अष्टम भावमे गयाहोतो जलघात होवे (जलसे मरता मरता बचे) १३२

चतुर्थेश जलराशीमे अपनी नीच शत्रु किंवा अस्तराशी का हीन बली होकर चतुर्थ मे अथवा छठे भावमे गया होतो जलकी घातहोवे १३३

लग्नेश निर्बलीहो और सुखमे पापग्रह गयाहोतो जलकीघातहोवे १३४

सुखेश निर्बल हो और सुखमे पापग्रह गयाहोतो जलघातहोवे १३५

सुखेश पापग्रह से युतहोकर केंद्रस्थान मे जावेतो जलघात होवे १३६

लग्नेश और सुखेश ये दोनो सुखभावमे गयेहो और दशमेश इनको देखता होतो जलघात होवे १३७

सुखेश जिसराशी मे गयाहो उसके स्वामी से सुखेश युत किंवा दृष्ट होतो जलघात होवे १३८

नोट—घात उसको कहते है जिसको व्यवहारमे लोग " घातक्की " अर्थात् मरते, मरते बचा वा प्राणांत कष्ट हुवा कहते है।

शृंगि, नखि, दंष्ट्री, घात वा वाहनात तथा उच्चप्रदेश तोपतनघात योगाः ।

राव्हारावष्टमे शृंगि नखि दंष्ट्री घातः १३९

चापांशे वाहना दुच्चप्रदेशतो वा पतनम् १४०

टीका–राहु और मंगल आठमे भावमे गयेहोतो गाय भेंस मेंढा हरिण आदि सींगवाले पशुओसे वा सिंह वाघ कुत्ता बिल्ली बन्दर रीछ आदि नखवालें जानवरोसे वा साप विच्छु भ्रमर सूवर आदि काटनें वाले जानवरोसे घातहोवें १३९

कारकांश लग्न धनराशी का होतो वाहनपर से गिरपड़नेसें अथवा ऊंचेमकानादिस्थान पर से गिरने की घात होवे १४०

वाहन भययोग ।

चंद्रारौकेन्द्रे वाष्टमे वाहन भयम् १४१

सुखे क्षीणेन्दौ वाहन भयम् १४२

टीका–चद्र मंगल केन्द्रस्थानम वा आठ मे भाव में गयें होतो वाहन से भयहोवेगा १४१

सुखस्थान मे क्षीणचंद्रमा गयाहोतो वाहन से भयहोवेगा १४२

भुज, कर, पाद, मस्तक, कर्ण, च्छेद योगाः ।

सपापे भौमार्कर्क्षे मंदे भुजच्छेदः १४३

शत्रुभे मन्दे शुक्रयुत दृष्टे करच्छेदः १४४

चंद्रार्कतमोभौमा अष्टमे करपादच्छेदः १४५

मन्दर्क्षे राहौ सिंहेचंद्रेष्टमे मस्तकच्छेदः १४६

भौमार्कौ रंध्रे मस्तकच्छेदः १४७

मन्दारधनेशालग्ने कर्णच्छेदः १४८

षष्ठार्थशौलग्ने मन्दारोपष्ठे कर्णच्छेदः १४९

टीका–मंगलकी (१।८) किंवा सूर्यकी राशी (५) मे शनि पाप ग्रह सहित गया हो तो भुजच्छेद होवेगा १४३

अपने शत्रुकी राशी मे गया हुआ शनि शुक्र से युत किंवा दृष्ट हो तो हाथ कटजावेगा १४४

चंद्र सूर्य राहु और मंगल ये चारो ग्रह आठ में भाव में गये हों तो हाथ तथा पांव कट जावेगा १४५

शनिकी राशी (१०।११) मे राहु गया हो और सिंहराशीका चंद्रमा आठमे भाव मे हो तो मस्तक कटेगा १४६

मंगल और सूर्यका योग आठमे भावमे हो तो मस्तक कटेगा १४७ केवल अेकइरे योग से फलमिलना असंभवहै अतएव यदि ये मंगल रवि पापयुत दृष्ट हो तो ये योग मिलेगा।

शनि मंगल और धनेश ये तीनोलग्नमे गयेहोतो कानकटजावेगा १४८

षष्ठेश और धनेश लग्न में गये हो और शनि मंगलछठे भाव में हो तो कान कटजावेगा १४९

ब्रह्म हत्यादि योग।

पापर्क्षे चंद्रे भौमार्कदृष्टे ब्रह्महत्या १५०

यमाकारयोगे ब्रह्महत्या १५१

जीवाकारयोगे ब्रह्महत्या १५२

पापर्क्षे चंद्रे मन्दार्कार दृष्टे गोहत्या १५३

लग्नपारावेकांशगौ क्रूरहत्या १५४

पापयुते गुरौ नीचे वा रवौ बालहत्या १५५

पापे केंद्रे रन्ध्रेभृगौ पापदृष्टे गो मृगहत्या १५६

चन्द्रज्ञौखे पापदृष्टौ वा नीचांशगौ शुभदृग्घीनौ नित्यं पक्षिहत्या १५७

इत्यष्टम विवेकः।

टीका–पापग्रहकी राशी मे गया हुवा चंद्रमा मंगल और सूर्य से दृष्ट हो तो ब्रह्महत्या करने वाला होवे १५०

शनि रवि और मंगल इन तीनोका योग एकराशी में हो तो ब्रह्महत्या करने वाला होवे १५१

गुरु रवि और मंगल इन तीनोंका योग*एक राशी में हो तो नग्नह॰त्याकरने वाला होता है १५२

पापराशि में गया हुआचंद्रमा शनि रवि और मंगल इन तीनों ग्रहों से दृष्ट हो तो गो हत्या करने वाला होता है १५३

लग्नेश और मंगल ये दोनों अेकराशी मे अेकही अंश मे गये हो अर्थात् लग्नेशका और मंगलकी पूर्ण युति जिसदिन हो उस दिनका जन्म होतो दुष्ट हत्या करने वाला होता है १५४

पापग्रहसे युत गुरु नीच राशी मे गयाहो किंवा पापग्रहसे युत रवि नीच राशी मे गया हो तो बाल हत्या करने वाला होता है १५५

केंद्रस्थानमे पापग्रह और आठ म भाव मे गयाहुवा शुक्र पापग्रहसे दृष्ट हो तो गो तथा मृगकी हत्या करन वाला होता है १५६

दशम भाव मे गये हुव चंद्र बुध पापग्रहो से दृष्ट हो अथवा नीच-राशी क नवांशम गय हो और शुभग्रहों स दृष्ट नहो तो नित्य पक्षियो की हत्या करने वाला होता है १५७

इन के सिवाय भाईकी स्त्रीकेमामाकीस्त्रीका, भाईकेकाकीसुसरेका, भाइक रोगवा शत्रका, मामिकेभाईका, मित्रकेपुत्रका, पुत्रके सुसरका, पुत्रक मित्रका, शत्रुकेभाईका, स्त्रीकेधन वामृत्युका, गुप्तेंद्रीका, दादाके धनका, दादिकीमृत्युका, विचारभी इसीअष्टमभावमे करना।

इति अष्टम विवेकस्य टीका समाप्ताः।

अथ नवम विवेकः।

पुण्यवान् योग।

सुखे व्राच्छो पुण्यवान् १

सौम्यान्तरे सुखे पुण्यवान् २

गोपुरांशे सिते पुण्यवान् ३

मृदूंशे जीवे पुण्यवान् ४

---

* नोट—एकर शीमें गयेहुवे ग्रहोंके अंशोका अंतर ५ पांच अंशसे न्यूनहोतो योग समझा जाता है।

भोजनेर्के पुण्ये पुण्यवान् ५
धर्मेनये निद्रिते राहौ पुण्यक्षेत्रवासी पुण्यवांश्च ६
धर्मेशुभदृष्ट्याधिक्ये पुण्यवान् ७

टीका-बुध शुक्र सुख भाव में गये होतो पुण्यवान् होवे १
सुख भाव शुभग्रहों के बीचमे होतो पुण्यवान् होवे २
शुक्रगोपुरादि शुभ अंशोमे गया होतो पुण्यवान् होवे ३
गुरु मृदु संज्ञक शुभषष्ठ्यंशमे गयाहोतो पुण्यवान् होवे ४
भोजनावस्था मे गया हुवा रवि नवमें भाव में गया होतो पुण्यवान् होवे ५
निद्रावस्था मे गया हुवा राहु नवमे अथवा सातमे भाव मे गयाहो तो उत्तम तीर्थोंने रहनेवाला किंवा पुण्यवान् होवे ६
नवमें भावपर शुभग्रहोकि अधिक दृष्टी होतो पुण्यवान् होवे ७

पातकी योग ।

चंद्रारावङ्के शनौयूनेपातकी ८
लग्नेशे सभौमे सपापेन्दौ षष्ठे पातकी ९
एकांशगौ पुण्यवन्तौ सपापौ महापातकी १०
अष्टमेशाङ्के पातकी ११
भौमार्कौ वेकत्र पातकी १२
पापान्तरे पापदृष्ट युते तुर्यवा तदीशे पातकी १३
सुखगैः पापैः सुखेशे बले गुलिक युते पातकी १४
धर्मे पापे पातकी १५
धर्मपे पापयुते वा क्रूरषष्ठ्यंशे वा पापांतरे पातकी १६
मन्दलमस्ती धर्मे गुलिक दृष्टेऽतिपापी १७
सराहुचंद्रे सपापगुरुदृष्टेवि पातकी १८

द्यूने चंद्रार्कौ मन्ददृष्टौ पातकी १९
क्रूरांशे द्वार योगे पातकी २०
सपापौ गुलिक धनेशौ पातकी २१
जीवेङ्क मदेमन्दे पातकी २२
षष्ठेचंद्रे सपापे भौमे पातकी २३
व्यये मंदे गुप्तदोषी व्यसनीच २४

टीका—लग्नमें चंद्र मंगल और सातमे भावमे शनि गयाहोतो पातकी (हत्या वा पाप करने वाला) होताहै ८

लग्नेश मंगलसे युतहो और पापग्रह सें युतहो वा चंद्रमा छठे भावमे गया होतो पात की होताहै ९

सूर्य चंद्रमा एक राशी मे एकही अंशमें (समान अंशमे) गये हो और पाप ग्रह से युक्त होतो महा पापी होताहै १०

अष्टमेश नवमें भावमे गयहो तो पापी होताहै ११

मंगल और सूर्य दोनो एक राशी मे युक्त होतो पापी होताहै १२

चतुर्थ भाव किंवा चतुर्थेश पापग्रहों के बीचमें होवे और पापग्रह से युतदृष्ट होतो पातकी होताहै १३

सुखस्थानमे पापग्रह गयेहो और सुखेश निर्बली होकर गुलिकसे युत होतो पातकी होताहै १४

नवमे भावमे पापग्रह गये होतो पातकी होताहै १५

नवमेश पापग्रहसे युतहो १ अथवा क्रूरषष्ठ्यंशमेगयाहो २ अथवा नवमेश पापग्रहोंके बीचमे गयाहो ३ तो पातकी होताहै (इससूत्रमे ३ योग कहेहै) १६

गुलिक से देखेहुवे शनिराहु नवमे भावमेगयेहो तो महापापीहोताहै १७

राहुसयुत चंद्रमा पापग्रहसे और गुरुसेदृष्ट होतो महापापीहोताहै १८

सप्तमाव में गये हुवे चंद्रसूर्यको शनि देखता हो तो पापी होता है १९

क्षीणचद्र और मंगळ इन दोनोका योग किसीभी स्थानमे हो तो पातकी होता है २०

गुलिक और धनेश ये दोनों एक राशी मे पापग्रह से युक्त हो तो पातकी होता है २१

लग्नमे गुरु और सातमे भाव मे शनि गया हो तो पातकी होताहै२२

छठेभाव में चन्द्रमा गया हो और पापग्रहसे युत मंगल हो तो पातकी होता है २३

बारवें भाव में शनि गया हो तो गुप्तपाप करनेवाला और कामजनित तथा कोपजनित दोष वाला होता है २४

शंकर भक्तियोग।

केत्वर्कांशे शिवभक्तः २५

अंशेकेतुजीज्यौ शिवभक्तः २६

सुते सूर्य युतदृष्टे सूर्य शङ्करभक्तः २७

टीका-कारकांश लग्न में केतु और सूर्य गये हो तो शिवकी भक्ति करने वाला होवे २५

कारकांश लग्नमें केतु और गुरुगये हो तो शिवकी भक्ति करने वाला होवे २६

पंचम भाव सूर्य से युत वा दृष्ट हो तो सूर्य तथा शंकरकी भक्ति करने वाला होवे २७

गौरी तथा लक्ष्मी आदि देवीभक्ति योग।

अंशेकेतु चन्द्रौ गौरीभक्तः २८

अंशे शिखिशुक्रौ लक्ष्मी भक्तः २९

सुते गुरु सम्बन्धे शारदाभक्तः ३०

सुते शुक्र संबंधे चामुंडाभक्तः

पंचमे भृगुचंदसंबंधे स्त्री देवभक्तः ३२

टीका-कारकांश लग्न मे केतु और चंद्रमा गये हो तो गौरी (पार्वति) वा पार्वतीके देहसे उत्पन्न हुई महाकाली महासरस्वति आदि शक्तियोंकी भक्तिकरने वाला देवीभक्त होवे २८

कारकाश लग्न में केतु और शुक गये हो तो महालक्ष्मी तथा महा

लक्ष्मी संबंधी दशमहाविद्याओंकी भक्तिकरने वाला होवे २९
पंचमभाव गुरुसे युत दृष्ट हो तो शारदा (सरस्वती) की भक्ति करने वाला होवे ३०
पंचमभाव शुक्रसे युत दृष्ट हो तो चामुंडा देवीकी भक्ति करने वाला होवे ३१
पंचमभाव में शुक्र चंद्रका संबंध (शुक्र तथा चंद्रसे युत दृष्ट पंच भाव) हो तो स्त्री देवता (शक्तियों) कि भक्ति करने वाला होवे ३२
विष्णु तथा सात्विकदेव तथा स्कंद भैरवादि पुरुषदेव भक्ति योग।

अंशेज्ञार्कजौ विष्णु भक्तः ३३
तुर्येशे सुते विष्णु भक्तः ३४
व्ययेशे धनाष्टमे सुतेश संबंधे सात्विक देवभक्तः ३५
अंशे केत्वारौ स्कंद भक्तः ३६
पुत्रे भौम संबंधे स्कंद भैरवभक्तः ३७
सुतेज्ञ संबंधे सर्वदेवभक्तः ३८
पुत्रे पुंग्रह सम्बन्धे पुन्देव भक्तः ३९

टीका—कारकांश लग्नमे बुध शनि गये हो तो विष्णु कि भक्ति करने वाला होवे ३३
चतुर्थेश पंचम भाव मे गया हो तो विष्णु तथा विष्णु के दशावतारके देवताकी भक्ति करने वाला होवे ३४
व्ययेश धन तथा अष्टमभाव मे गया हो और पंचमेश से सम्बंध करता हो तो सात्विक देवताकि भक्ति करने वाला होवे ३५
कारकांश लग्नमे केतु और मंगल गये हो तो कार्तिक स्वामिका भक्त होवे ३६
पंचमभाव मे मंगलका संबंध हो (मंगल युत दृष्ट हो) तो कार्तिक स्वामिका तथा भैरवका भक्त होवे ३७
पंचमभावमें बुधका संबंध (बुधसे पंचमभावयुतदृष्ट) हो तो सर्व देवताओं कि भक्ति करने वाला होवे ३८

पंचम भावमे पुरुष ग्रह या संबंधहो तो पुरुष देवताओं कि भक्ति करने वाला होवे ३९

गुरु भक्ति योग.

जीवेशस्यांशेशे गुरुशुक्रदृष्टे गुरुभक्तः ४०

नन्देशुभे गुरुयुतदृष्टे गुरु भक्तः ४१

धर्मपे मृद्वंशादौ गुरुभक्तः ४२

टीका-जिसराशिमे गुरु गयाहो उसके स्वामिके नवांशका स्वामि गुरुऔर शुक्र से दृष्ट होतो गुरुकी भक्ती करनेवाला होवे ४०

नवमें शुभग्रह गयाहो और वह गुरुसे युतवा दृष्टहोतो गुरुकी भक्ती करनेवाला होवे ४१

नवमेश मृदु संज्ञक शुभषष्ठ्यंशमे गयाहोतो गुरु कि भक्तिकरनेवाला होवे ४२

यक्षिणी तथा प्रेताशन्यादि भक्ति योग.

नन्दने चंद्र संबंधे याक्षिणी भक्तः ४३

सुते मन्द सम्बंधे प्रेताशन्यादिभक्तः ४४

टीका-पंचम भावमे चंद्रका संबधहो (चंद्रसे युतदृष्ट पंचम भावहो) तो याक्षिणी की भक्ति करनेवाला होताहै ४३

पंचम भावमे शनिका संबंधहोतो प्रेत शाकिनी आदि क्षुद्रदेवियो किभक्ति करने वालाहोवे ४४

परपीडक देवभक्तियोग।

तमःसंबंधेपुत्रे परपीडक देवताभक्तः ४५

टीका-पंचमभाव मे राहुका संबंध (राहुसे युतदृष्ट पंचम भाव) होते दूसरेको पीडा देनेवाले देवताओ कि भक्ति करने वाला होताहै४५

धर्माध्यक्ष योग।

गुरौ वा भृगौ स्वोच्चशुभवर्गे धर्मेशे सबले धर्माध्यक्षः४६

ईज्याच्छौ व्यांशे धर्माध्यक्षः ४७

धर्मपेशुभयुतदृष्टे धर्माध्यक्षः ४८

टीका-गुरु अथवा शुक्र अपनि उच्चराशी मे और शुभग्रहोंके वर्गमे गया हो और नवमेश बलवान् हो तो धर्माध्यक्ष (धर्माचार्य वा अधिक धर्म करनेकराने वाला) होता है ४६

गुरु शुक्र ये दोनो बुधके नवांशमें गये हो तो धर्माचार्य वा अधिक धम करने कराने वाला होता है ४७

नवमेश शुभग्रहसे युत और दृष्ट हो तो धर्माचार्य वा धर्म करने कराने वाला होता है ४८

कूप तड़ाग तथा जीर्णोद्धार तथा सुस्थानादि कर्ता योग ।

खेशे गोपुरे कूपादिकर्ता ४९

भाग्पे मृद्वंशे-शुभदृष्टे कूपादिकर्ता ५०

कुंभांशे तड़ागादिकर्ता ५१

ख सुखेशे जीर्णोद्धारादि कर्ता ५२

सजीवेज्ञे गोपुरे वा सभौमे सुस्थानकर्ता ५३

टीका-दशमेश गोपुरांश मे गया होतो कुवा, बावडी आदि जलाशय करने वाला होवे ४९

नवमेश मृदु संज्ञक शुभ षष्ठ्यंश मे गयाहो और शुभ ग्रहसे दृष्ट होतो कुवा बावड़ी आदि जलाशय करने वाला होवे ५०

कारकांश लग्नमे कुंभराशी होतो तलाव बावड़ी कुवा आदि करने वाला होताहै ५१

सुखेश दशमे भावमे गया होतो देवालय तथा जलाशयो का जीर्णोद्धार करने वाला होताहै ५२

गुरुसे युक्त बुध गोपुरांश मे गयाहो अथवा मंगलसे युक्त बुध गोपुरांश मे होतो उत्तम(सार्वजनिक लाभार्थ) स्थान करनेवाला होताहै ५३

यज्ञ कर्ता योग ।

ज्ञेज्यकर्मपाः सबला यज्ञकर्ता ५४

खेशे खपेङ्के शुभांशे शुभ दृष्टे यज्ञकर्ता ५५

धर्मे ज्ञे स्वोच्चे पापदृग्घीने यज्ञकर्ता ५६

ज्ञेज्यखेशाः सबलाः शुभदृष्टा विशेषेण यज्ञकर्ता ५७

टीका—बुध गुरु और दशमेश येतीनो ग्रह बलवान् होतो यज्ञ करने वाला होवे ५४

दशमे भावमें बुध गयाहो और शुभग्रह के नवांश मे गयाहुवा शुभग्रह से दृष्ट दशमेश नवमे भावमें स्थित होवो यज्ञकरने वाला होवे ५५

अपनी उच्च राशी मे (कन्या राशी के १५ अंशमे) गयाहुवा बुध नवमे भावमे गयाहो और पाप ग्रह से दृष्ट नहो तो यज्ञ करने वाला होवे ५६

बुध गुरु और दशमेश ये तीनो ग्रह बलवान् होकर शुभग्रहसे दृष्ट हो तो अवश्य यज्ञादि शुभधर्म कार्य करने वाला होवे ५७

यज्ञे विघ्नयोग–

खपे स्वोच्चे सपापे नीचांशगे दुस्थे यज्ञारंभोत्तर विघ्नः५८

टीका–अपनी उच्चराशी मे गयाहुवा दशमेश पापग्रहसे युत होकर नीचराशीके नवांशमें और ६।८।१२ भावमे गयाहो तो यज्ञका आरंभ होनेके पश्चात् यज्ञमें विघ्न उपस्थित होवेगा ५८

अयश योग।

चन्द्राद्वा शुक्राद्धने मन्देऽयशः ५९

चन्द्राच्छौ लग्ने मन्ददृष्टेऽयशः ६०

टीका–चंद्रसे अथवा शुक्रसे धनभाव मे शनि गयाहो तो यशहीन (अपयश वाला) होता है ५९

चंद्र और शुक्र लग्नमे गये हो और उनको शनि देखता हो तो यश हीन (अपयशवाला) होता है ६०

भाग्यहीन योग।

तुर्येशेष्टमे भाग्यहीनः ६१

लग्नार्थदारपादुस्थाविवाहात्परतोऽभाग्यम् ६२

धर्मपेषष्ठे शत्रुनीचदृष्टेऽभाग्यम् ६३

भाग्येशे क्रूरांशे नीचभांशेऽभाग्यम् ६४

भाग्येपेऽबले धर्मे पापा अभाग्यं ६५
लग्नपेऽबलेऽभाग्यम् ६६
केन्द्रेशनौ जीवचन्द्रान्यतरादृष्टेऽभाग्यं ६७

टीका–सुखेश आठमें भावमे गया हो तो भाग्यहीन होवे ६१
लग्न धन और सप्तमभावका स्वामि ये तीनो ग्रह छठे आठ मे किंवा बारमे भावमे गये हो तो विवाह होनेके पश्चात् भाग्यहीन होवे ६२
नवमेश छठे भाव मे गया हो और अपने शत्रुग्रहसे किंवा नीचराशिमें गये हुये ग्रह से दृष्ट हो तो भाग्यहीन होवे ६३
नवमेश क्रूरग्रहकेनवांशमें वा नीचराशिअंशमे गया हो तो भाग्यहीन होवे ६४
नवमेश बलराहितहो और धर्मभावमे पापग्रहगयेहोतो भाग्यहीनहोवे६५
लग्नेश निर्बली हो तो भाग्यहीन होवे ६६
केंद्र में गयाहुवाशनि, गुरु किंवा चंद्रमा से दृष्टनहोतो भाग्यहीनहोवे६७

भाग्यवान् योग।

धनेशे लाभे कर्मपयुतदृष्टे भाग्यवान् ६८
लाभेशेङ्के कर्मपयुतदृष्टेभाग्यवान् ६९
धर्मपेर्थेकर्मपयुतदृष्टे भाग्यवान् ७०
लाभपेङ्के धनपेलाभे धर्मेशेर्थे सपयुतदृष्टे महाभाग्यवान्७१
भाग्येइज्याच्छयुतदृष्टे भाग्यवान् ७२
धर्मपेशुक्रेज्ययुतदृष्टे भाग्यवान् ७३
लग्नार्थेशौ पुत्रे भाग्यवान् ७४
लग्नेशेङ्केङ्केशेङ्के भाग्यवान् ७५
भाग्येशे लाभे भाग्यवान् ७६
भाग्यापपयोगे भाग्यवान् ७७

भाग्येशेर्थे भाग्यवान् ७८

सोत्थपुत्राङ्क सबलग्रहे भाग्यवान् ७९

टीका–धनेश लाभ भावमे गया हो और दशमेश से युत वा दृष्ट हों तो भाग्यवान् होवे ६८

लाभेश नवम भावमे गया हो और दशमेश से यत वा दृष्ट हो तो भाग्यवान् होवे ६९

नवमेश धनभाव मे गयाहो और दशमेश से युत वा दृष्ट हो तो भाग्यवान् होवे ७०

लाभेश नवमे भाव मे, धनेश लाभभावमें, नवमेश धनभावमें गया हो और दशमेश से युत वा दृष्ट हो तो महाभाग्यवान् होवे ७१

नवम भाव गुरुशुक्र से युत वा दृष्ट हो तो भाग्यवान् होवे ७२

भाग्येश गुरुशुक्र से युत वा दृष्ट हो तो भाग्यवान् होवे ७३

लग्नेश और धनेश ये दोनो पंचम भावमें गयेहोतोभाग्यवान् होवे ७४

लग्नेश नवमें भावमे और नवमेश लग्नमें गयाहोतोभाग्यवान् होवे ७५

भाग्येश लाभ भाव में गया हो तो भाग्यवान् होवे ७६

भाग्येश और लाभेश इन दोनोंका एकराशी में योग हो तो भाग्यवान होवे ७७

भाग्येश धन भाव में गयाहो तो भाग्यवान् होवे ७८

तीसरे पांचमें और लग्नमें बलवान् शुभग्रह गयेहोतोभाग्यवान्होवे७९

भाग्योदय योग।

चरेङ्के तदीशे चतथा चरखेट दृष्टे विदेशे भाग्योदयः ८०

स्थिरे लग्नाङ्केशौस्थिरखेटदृष्टौ स्वदेशे भाग्योदयः ८१

अन्यथा सर्वत्र भाग्योदयः ८२

धर्मे शुभदृष्टचाधिक्ये सर्वदेशे भाग्योदयः ८३

शुक्रे उपचये सतेमवाविवाहोत्तरंभाग्योदयः ८४

जायेशे सप्तमोपचये विवाहोत्तरं भाग्योदयः ८५

सोत्थाङ्केशौशुभयुतदृष्टौवाशुभांशगौभ्रातृधनतो भाग्योदयः८६

पुत्राङ्केशयोगे शुभयुतदृष्टे सुततो भाग्योदयः ८७

त्रिकोणे भाग्यपयुतदृष्टे सुततो भग्योदयः ८८

टीका–चरराशिका लग्न और लग्नेश हो और चरग्रह (चंद्र) से दृष्टहो तो विदेशमे भाग्योदयहोवेगा ८०

स्थिर राशि का लग्न और लग्नेश हो और स्थिरग्रह (सूर्य) से दृष्टहो तो स्वदशमे ही भाग्योदय होवेगा ८१

द्विस्वभाव राशिका लग्न और लग्नेशहो और शुभग्रहसे युत दृष्टहो तो सर्वदशमे भाग्यो दयहोवेगा ८२

नवमभावपर शुभग्रहोकि अधिकदृष्टिहोतो सर्वदेश मे भाग्योदय होवेगा ८३

शुक्र उपचयस्थान [३।६।१०।११] मे अथवा सप्तम भावमें गया होतो विवाह होनेके पश्चात् भाग्योदय होवेगा ८४

सप्तमेश सात मेभावमे अथवा उपचय स्थान (३।६।१०।११) मे गयाहोतो विवाह होनेके पश्चात् भाग्यो दय होवेगा ८५

तृतीयेश और नवमेश का योगहो और शुभग्रहसे युत वा दृष्टहो अथवा तृतीयेश नवमेश शुभग्रहों के नवांश मे गये हो और दोनो युतहो तो भाई के धनसे भाग्योदय होवेगा ८६

पंचमेश नवमेश का योगहोऔर वह शुभग्रह से युत व दृष्ट होतोपुत्र से भाग्योदय होवेगा ८७

नवम पंचम भाव भाग्येश से युत और दृष्टहोतो पुत्रसे भाग्योदय होवेगा ८८

भाग्योदयके वर्षको विचार बृहत्पाराशरीमे लिखा है कि भाग्यस्थान में गुरुगयाहो और भाग्येश केंद्र मे हो तो २० वर्षके बाद भाग्यादय होवेगा १

बुधपरमोच्चांशमें गयाहो और भाग्येश भाग्यमेही हो तो ३६ मे वर्षके बाद भाग्योदय होवेगा २

भाग्येश धनभाव मे गयाहो और धनेश भाग्य मे गय हो तो ३२ वर्षके पश्चात् भाग्योदय होवेगा ३

यदि अधिक बलवान् और षड्वर्ग शुद्ध होकर अपनी स्वराशी किंवा

उच्चराशि में गयाहुवा भाग्येश रवि होतो २२ मेंवर्ष चंद्रहोतो २४ मेंवर्ष मंगल हो तो २८ मे, बुध हो तो ३२ में, गुरु होतो १६ में, शुक्रहो तो २५ में शनि हो तो ३६ मे राहु होतो ४२ में वर्ष मे भाग्यो दय होवेगा। इसी प्रकार अन्य भावोंके स्वामीभी जो अधिक बलवान होकर अपनी स्व वा उच्चराशी में गयेहो उनकेवर्षमें भाग्योदय और उसभावके फलकी वृद्धि होवेगा।

गंगास्नान योग।

खेराहौ वा सूर्ये गंगास्नानम् ८९

खे पूर्णेन्द्वीज्यौ गंगास्नानम् ९०

खे जीवे गंगास्नानम् ९१

शुक्रेज्यौ केंद्रे युक्तौ गंगास्नानं ९२

धनेश शुक्रेज्यास्तुंगे गंगास्नानम् ९३

ज्ञे वा तदीशेन्त्ये गंगास्नानम् ९४

चंद्रे सोत्थे शुभदृष्टे जलर्क्षे गंगास्नानम् ९५

धर्मेशे जलर्क्षे केन्द्रे शुभदृष्टे गंगास्नानम् ९६

धर्मे जीवदृष्टे गंगास्नानम् ९७

रन्ध्रगेशे शुभदृष्टेऽनेकतीर्थ दर्शनम् ९८

टीका-दशमे भाव में राहु अथवा सूर्य गया हो तो गंगास्नान होवेगा ८९ (गंगाजीमें स्नान करनेको अनेक तीर्थ यात्राका योग बनेगा)

दशमें भाव में पूर्णचंद्रमा और गुरु गये हो तो गंगास्नान होवेगा ९०

दशमे भाव मे गुरु गया होतो गगास्नान होवेगा ९१

केंद्रस्थान में गुरु शुक्रका योग होतो गंगास्थान होवेगा ९२

धनेश शुक्र और गुरु ये तीनों अपनी उच्चराशी में गये हो तो गंगास्नान होवेगा ९३

बुध अथवा बुध जिस राशीमे गयाहो उसराशीका स्वामी बारवें भावमें गयाहोतो गंगास्नान होवेगा ९४

जलराशी का चंद्रमा तीसरे भावमे गयाहो और शुभग्रह से दृष्टहो तो गंगास्नान होवेगा ९५

जलराशी मे गयाहुवा नवमेश केंद्रस्थान मे गयाहो और शुभग्रहसे दृष्टहोतो गंगास्नानहोवेगा ९६

नवम भाव को गुरुदेखता होतो गंगास्नान होवेगा ९७

आठमें भाव में गया हुवा बुध शुभग्रह से दृष्टहोतो अनेक तीर्थस्थानों के दर्शन होवेगा ९८

महायात्रा योग ।

धर्मे कर्मप योगे महायात्रा ९९

धर्मे शुभदृष्टयाधिक्ये धर्मपे केंद्रायकोणे महायात्रा १००

चंद्राद्धर्मेशे केन्द्रे महायात्रा १०१

चंद्राद्धर्मे शुभदृष्टयाधिक्ये वा शुभयुते महायात्रा १०२

टीका—नवमेश दशमेश का एक राशीमेयोगहोतो महायात्रा होवेगा९९

नवम भावपर शुभग्रहों कि आधिक दृष्टि हो और नवमेश १।४।७।१०।११।९।५ भावमे गयाहो तो महायात्रा होवेगा १००

चंद्रमासे नवमेभावका स्वामि केन्द्रमे गया होतो महा यात्रा होवेग१०१

चंद्रमा से नवमे भावपर शुभग्रहों कि अधिकदृष्टि हो अथवा अधिक शुभग्रहो से नवम भावयुत होतो महायात्रा होवेगा १०२

प्रव्रज्या योग ।

ग्रहचतुष्टयादि एकर्क्षगंप्रव्रज्या करम् १०३

यावन्तो बलिनस्तावन्तः स्व स्व प्रव्रज्या कराः १०४

तापसः कापालिकोरक्तपट आजीवी त्रिदंडी चक्रधरो नग्नः सूर्योदितः १०५

अस्तगास्तु तद्भक्तिमात्रम् १०६

मन्द त्र्यंशे वा मंदारांशे चंद्रेमन्दमात्र दृष्टे संन्यासी १०७

लग्नपमंदौ बलहीनो संन्यासी १०८

चंद्रज्याङ्गेष्वार्किदृष्टेष्वधर्मजीवेराजयोगजोब्रह्मगुप्त काणादा दिसपः १०९

टीका—एक राशी मे चार पांच छ सात ग्रहो का योग होने से ग्रह स्थ धर्म को त्याग करके सन्यासी होताहै १०३

एक राशी मे गये हुवे चार से अधिक प्रव्रज्या योग करने वाले ग्रहो मे जितने अधिक बलवान् ग्रह होवे उतने हि ग्रह अपने अपने आधि पत्य की प्रव्रज्या करते है १०४

यदि प्रव्रज्या करने वाले ग्रहो मे रवि अधिक बळवान हो तो तपस्वी (अग्नि होत्र, वा गायत्री का उपासक किंवा सूर्य की भक्ति करने वा ला वा नैष्ठिक ब्रह्मचारी) होताहै ।

चंद्र बलवानहो तो कापालिक (कपालको धारण करनेवाला वा नग्न व्रत के धारणेवाला वा शिवकी दीक्षावाले व्रतोपवासादि करनेवाला तपस्वी) होताहै ।

मंगळ बलवान होतो लालवस्त्र धारणकरनेवाला वा बुद्धिके आश्रयवसहो देवोपासना करनेवाला जितेंद्रिशिखासूत्ररहित काषा यावरधारीहोताहै।

बुध बलवान् होतो आजीवी अर्थात् कपट करके जीविका करने वा ला वा गारुड मंत्रोसे दीक्षित होताहै ।

गुरुबलवान् हो तो त्रिदंड धारण करनेवाला काषायांवरधारी संन्यासी होताहै ।

शुक्र बलवान् हो तो चक्रको धारण करनेवाला अथवा बहुत सा- धुसन्यासियों कि जमातकामालिक ठाटपाटसे साधुओंकी मंडली रखनेवाला और पशुपतिदीक्षामे स्थित होता है ।

शनि बलवान हो तो नग्नरहनेवाला बड़िकठिनतपस्याके व्रतको धारणकरनेवाला दिगंवर तपस्वी होता है १०५

यदि प्रव्रज्या योग करने वालेग्रह अस्तंगत हो तो केवल संन्यासि योकी भक्ति करने वाला होवेगा (प्रव्रज्या नहीं होवेगा) १०६

चंद्रमा शनिके द्रेष्काणमे गया हो किंवा शनि मंगलके नवांशमें गयाहुवा चंद्रमा केवलशनीसेहीदृष्ट हो तो संन्यासी होता है १०७

लग्नेश और शनि बलहीन होवे तो संन्यासी होता है १०८

चंद्र, गुरु, और लग्न इन तीनोंको शनि देखता होवे और नवम भाव में गुरुगयाहो तो राजयोगका भोगानुभव करनेवाला ब्रह्मगुप्त काणादादि मुनियोंके समान प्रतिष्ठावाला अथवा आचार्य पदधारी तपस्वी होवेगा १०९

प्रव्रज्याभ्रष्ट योग।

प्रव्रज्याकरे पराजिते प्रव्रज्याभ्रष्टः ११०

जन्मेशे मन्दमात्र दृष्टे प्रव्रज्या भ्रष्टः १११

चंद्रराहुयोगे क्रूरांशे सगुलिके संन्यासभ्रष्टः ११२

अंशेकेतौमन्दमात्रदृष्टे सन्यसाभासः ११३

जीवेरिगेर्केम्बुगे तपोहीनसंन्यासी ११४

इति नवम विवेकः।

टीका-संन्यासयोग करने वालाग्रह पराजित (ग्रहयुद्धमें हाराहुआ) होतो प्रव्रज्या भ्रष्टहोवेगा ११०

जन्मराशी के स्वामी को केवलशनीही देखताहो और अन्य कोइ भीग्रहदेखतेनहीं तो प्रव्रज्या भ्रष्टहोवेगा १११

क्रूरग्रहोंकेनवांशमे गयेहुवे चंद्र और राहुका एकराशीमेयोगहो और वह गुलिकसे युतहो तो संन्यास सेभ्रष्ट [संन्यासग्रहण करके त्यागदेगा वा संन्या सके नियम पालननहीं करनेवाला नाममात्रका संन्यासी] होवेगा। ११२

कारकांशलग्नमे गयाहुवा केतू केवलशनीसेदृष्ट हो तो संन्यासिका केवल वेषधारण करनेवाला होवे अर्थात् खरासंन्यासी नहीहोवे ११३

छठे भावमे गुरु और सुखभावमे रविगयाहो तो तपरहित (यम नियम रहित वा तपस्याहीन) संन्यासी होवेगा ११४

इत्यादिविचारोके सिवाय गुरु, भाईकीस्त्री, भाईकेपुत्र केशालेकीस्त्री, मामा कीमाता, माताकामामा, मित्रका मामा, मित्रकीकाकी, पुत्रका पुत्र, पुत्रकीविद्या, शत्रुकिमाता, शालक, नोकरकीस्त्री, गुरुस्थान, दादाका भाई, आदिबातोंकाविचारभी इसनवम भावसेही करना।

इति नवमविवेकस्य टीकासमाप्तः। ९

धर्मेशेलाभे राजवन्यः १३

धर्मेपेपारावतादौ राजवन्यः १४

लग्नेशे शुभवर्गे वा गोपुरादौ राजवन्यः १५

टीका-दशमेश शुभग्रहसे सम्बंध करता हो तो मानवाला होवेगा ७
दशमेश शुभग्रहके वर्गमें गयाहो अथवा अपनी उच्चराशी में गया हो तो दृढव्रत और मानवाला होता है ८
दशमभाव शुभग्रहोंके मध्यमे गया हो तो मानवाला होता है ९
दशमेश वैशेषिकांश में गयाहो तो मान (प्रतिष्ठा) वाला होताहै १०
लग्नमें गयाहुवा नवमेश गुरुसेदृष्टहोतो राजमेंमानवाला होताहै ११
बुध गुरुका योग एकराशीमे हो तो राजमे मानप्रतिष्ठा वालाहोवे १२
नवमेश लाभ भावमे गयाहो तो राजवंद्य (राजालोग जिसको झुके) वैसा मान वाला होवे १३
नववेंमे भावका स्वामि पारावतादि अंशमें गयाहो तो राजवन्द्य होवे १४
लग्नेश शुभग्रहों के वर्गमें किंवा गोपुरादिशुभांशो में गया हो तो राजवंद्य होवेगा १५

मानहीन योग।

खपे पापसंबंधे मानहीनः १६

खपे पापवर्गे क्रूरषष्ठ्यंशे वा मानहीनः १७

टीका-दशमेश पापग्रहोसे संबंध (संज्ञातत्वम संबंध ४ प्रकारका कहा है तदनुसार) करता हो तो मानहीन होवेगा १६
दशमेश पापग्रहके दशवर्गमे गया हो अथवा पापषष्ठ्यंशमे गया हो तो मानप्रतिष्ठा हीन होवेगा १७

कर्मादि वैकल्य योग।

खेशेऽबलेसपापे कर्मादिवैकल्यम् १८

झेज्यशुक्रादुस्थाः पापदृष्टाःकर्मादिवैकल्यं १९

खेपापदृष्ट्याधिक्ये कर्मादिवैकल्यं २०

कर्मपेदुस्थे कर्मादिवैकल्यं २१

टीका-पापग्रहसे युत दशमेश बलहीन हो तो जोकोई व्यापार धंधा या काम करेगा उसमें सफलता नहीगी और विकलता वा व्यग्रता होवेगा१८

बुध गुरु और शुक्र ये तीनों ६।८।१२ में भाव में गये हो और पापग्रहसे दृष्टहोतो प्रत्येक काम मे सफलतानहोगी और उसमे विकलता विघ्न व्यग्रतादि होवेगा १९

दशमभावपर पापग्रहों कि अधिक दृष्टि हो तो प्रत्येक काम करनेमें विकलता होवेगा २०

दशमेश ६।८।१२ में भावमे गया होतो जो काम करेगा उसी मे विफलता व्यग्रता वा हानि होगा और सफलता प्राप्तन होवेगा २१

सत्कीर्तियोग।

कर्के चंद्रे पारावतांशे शुक्रेज्येक्षिते सत्कीर्तिः २२

खेशेपारावतादौ सत्कीर्तिः २३

शुभयुते खेशे सत्कीर्तिः २४

शुभांतरेखेशे शुभदृष्टे सत्कीर्तिः २५

खपेशुभांशे सत्कीर्तिः २६

लग्नपे बलाढ्ये खपेदेवलोके धर्मपे सिंहासने सत्कीर्तिः२७

टीका-कर्कराशीमे गयाहुवा चंद्रमा पारावतांशमे हो और वह गुरु शुक्रसे दृष्ट हो तो सत्कीर्ति (उत्तमकीर्ति वाला) होवेगा २२

दशमेश पारावतादि शुभवर्ग मे गयाहोतो सत्कीर्ति वाला होवे २३

दशमेश शुभग्रह से युत होतो सत्कीर्ति वाला होवे २४

दशमेश शुभग्रहोके मध्यमे गयाहो और शुभग्रहोसे दृष्टहोतो सत्कीर्ति वाला होवे २५

दशमेश शुभग्रहोंकी राशी के नवांश में गयाहोतो सत्कीर्तिवालाहोवे२६

लग्नेश बलवान् हो दशमेश देवलोकांश मे गयाहो और नवमेश सिंहासनांश मे गयाहोतो सत्कीर्ति वाला होवे २७

असत्कीर्ति योग।

खपेपापसंबंधे ऽसत्कीर्तिः २८

खपे पापवर्गे ऽसत्कीर्तिः २९

खेमंदार्कौ असत्कीर्तिः ३०

पातांतरे कर्मणी असत्कीर्तिः ३०

टीका–दशमेश पापग्रह से संबंध करताहो तो असत्कीर्ति वालाहोवे२८ दशमेश पापग्रहो के दशवर्गमे गयाहो तो असत्कीर्ति वाला होवे २९ शनि और रविका योग दशमें भावमे हो तो असत्कीर्ति वाला होवे३० दशम भावपापग्रहोके बीचमे गयाहो तो असत्कीर्ति वालाहोवे ३१

आज्ञाकर्ता तथा क्रूर सौम्याज्ञा कर्तायोगाः।

खेशे शुभे शुभदृष्टयुते आज्ञाकर्ता ३२

खेशे मृदंशे वा शुभांशे वा केन्द्रे बलाढ्ये आज्ञाकर्ता३३

खेर्के वा भौमे आज्ञाकर्ता ३४

खेशे केन्द्रे शुभयुतदृष्टे क्रूरषष्ठ्यंशे सौम्याज्ञाकर्ता ३५

समन्देकर्मपे रन्ध्रपयुते क्रूरांशे केन्द्रेक्रूराज्ञाकर्ता ३६

राहु गुलिकौभाने क्रूराज्ञाकर्ता ३७

धने राहु केतु क्रूराज्ञाकर्ता ३८

धर्मपेनीचे क्रूराज्ञाकर्ता ३९

टीका–दशमेश शुभग्रह हो और शुभग्रहसे युत और दृष्ट हो तो आज्ञा (हुकुम) करने वाला होवे ३२

दशमेश मृदु संज्ञकशुभषष्ठ्यंशमे गयाहो १ अथवा दशमेश शुभग्रह की राशिके नवांशमे गयाहो २ किंवा दशमेश बलवान होकर केंद्र (१।४।७।१०) स्थान मे गया हो तो आज्ञाकरने वालाहोवे ३३ (इस सूत्र में ३ योग है)

दशमे भावमे रवि अथवा मंगल गयाहोतो आज्ञाकरने वालाहोवे ३४

दशमेश शुभग्रह से युतदृष्ट होकर केंद्रमे गयाहो और क्रूर षष्ठ्यंश मे गयाहोतो सौम्य [शांतीकेसाथ] आज्ञा करने वाला होवे ३५

शनि और अष्टमेश से युतहोकर दशमेश पापग्रहकी राशी के नवांश मे हो और केंद्रस्थान (१।४।७।१०) में गयाहो तो क्रूराज्ञा करनेवालाहोवे ३६

दशमे भावमे राहु और गुलिक गयेहोतो क्रूरआज्ञा करनेवालाहोवे ३७

धनभावमें राहु किंवा केतुगयाहोतो क्रूर आज्ञा करनेवाला होवे ३८

नवमेश नीचराशी में गया होतो क्रूर(कठोर)आज्ञा करनेवालाहोवे ३९

राज कार्य कर्तायोग।

साकेंशे राजकार्य कर्ता ४०

केन्द्रेर्के राजकार्य कर्ता ४१

केन्द्रे कोणे चंद्रे राजकार्य कर्ता ४२

राज्येशे लाभे केन्द्रे वा राजकार्य कर्ता ४३

लग्नांबुगे जीवे राजकार्य कर्ता ४४

टीका-कारकांश लग्नमें रवि गयाहोतो राजकार्य करनेवालाहोवे४० केंद्रस्थान (१।४।७।१०) में रवि गयाहोतो राज्यकार्य करने वाला होवे ४१

चंद्रमा केंद्र या त्रिकोण स्थानमें (१।४।७।१०।९।५) गयाहोतो राज में काम करने वाला होवे ४२

राज्येश लाभ भावमें गयाहो अथवा दशमेश केंद्र में गयाहोतो राजकार्य करने वाला होवे ४३

लग्न किंवा चतुर्थ भावमें गुरुगयाहोतो राजकार्य करनेवालाहोवे४४

कुल मुख्य कुल तुल्यादि योग।

अंशे ग्रहद्वये कुल मुख्यः ४५

एकःस्वर्क्षे कुलतुल्यः ४६

द्वोस्वर्क्षे स्वकुला धिकः ४७

सोत्येगुरौ लाभेचंद्रे कुलदीपकः ४८

भोमेन्द्वेसिंहे सुनेचंद्रे न्वपेपाहो कुलदीपकः ४९

टीका—कारकांश लग्नमें शुभ किंवा पाप कोईभी दोग्रह गयेहोतो अपने कुलमें मुख्य मनुष्यहोवेगा ४५

कोईभी एकग्रह अपनी स्वराशी मे गयाहेतो अपने कुलके बराबर प्रतिष्ठा,वालाहोवेगा ४६

दोग्रह अपनी स्वराशी मे गयेहोतो अपने कुलसे अधिकप्रतिष्ठावाला होवे ४७

तीसरेभावमे गुरु और लाभ भावमें चंद्रमा गयाहोतो कुल दीपक होवे ४८

लग्नमेसिंह राशी वा मंगल, पांचमे चंद्रमा और बारवे भावमे राहु गयाहोतो कुलदीपक होवे ४९

(प्रतापीयोग)

रन्ध्रारीशा वन्योन्यस्थानगौ वा केन्द्रगौ प्रतापी ५०

षष्ठेगुरौ लाभेचन्द्रे प्रतापी ५१

लाभपे शुभभांशे प्रतापी ५२

टीका-अष्टमेश छठे भाव में और षष्ठेश आठमें भाव में गया हो अथवा अष्टमेश और षष्ठेश ये दोनों केंद्रस्थान (१।४।७।१०) में गये हो तो प्रतापी होवे ५०

छठे भावमे गुरु और लाभ भावमें चंद्रमा गयाहो तो प्रतापी होवे५१

लाभेश शुभग्रहकी राशी और शुभग्रहके ही नवांशमें हो तो प्रतापी होवे ५२

श्रीमान् योग ।

लाभेबलाढयेशुभग्रहे शुभदृष्टे वा श्रीमान् ५३

धनगाश्चन्द्रेज्यार्च्छाः श्रीमान् ५४

टीका-बलवान् शुभग्रह लाभभाव में गयाहो अथवा शुभग्रह लाभ भावको देखता हो तो श्रीमान् होवे ५३

धनभाव में चंद्र गुरु और शुक्र गये हो तो श्रीमान् होवे ५४

पितृसुख योग ।

खेशे शुभे शुभयुतदृष्टे पितृसुखम् ५५

खेशे पारावतादौ पितृसुखम् ५६
खेशे शुभांतो गुरु शुक्र युते वा पितृसुखम् ५७
गोपुरादौ पितृकारके पितृसुखम् ५८

टीका–दशमेश शुभग्रहहो और वह शुभग्रहसे युत और दृष्ट हो तो पिताका सुख उत्तम रहेगा (पिताकी दीर्घायु होगा) ५५
दशमेश पारावतादि शुभवर्गमें गया हो तो पिताका सुख उत्तमरहेगा५६
दशमेश शुभग्रहोंके मध्य में (बीचमें) गया हो अथवा दशमेश गुरु शुक्रसे युत हो तो पिताका सुख उत्तम रहेगा ५७
पितृकारक ग्रह (रवि) गोपुरादि शुभांशमे गयाहो तो पिताका सुख अच्छा रहेगा ५८ बृहत्पाराशरी में लिखा है कि भाग्येश परमोच्चांशमें गया हो भाग्यस्थानगतराशीके नवांशमे गुरुगयाहो और जन्मलग्न से केंद्रस्थानमे शुक्रगया होतो पिताकी दीर्घायु होवे १

पिता परस्त्रीगामी योग।

खारिपौ खगौ पितापरस्त्री गामी ५९
लग्नेशे सपापे धने वा धनारियुनेशाः सपापाः कोशगाः पितासज्जन स्त्री गामी ६०

टीका–दशमेश और षष्ठेश ये दोनों दशम भाव में गये हो तो पिता परस्त्री गामी होवे ५९
पापग्रहसे युत होकर लग्नेश धन भाव में गयाहो १ अथवा धनेश षष्ठेश और सप्तमेश ये तीनो पापग्रहसे युक्त होकर धनभाव में गये होतो पिता सज्जन परस्त्री से गमन करनेवाला होवे ६०

पिता, धूर्त योग।

सुखारीशावङ्के जनको विटः ६१
भाग्याम्बुपौ सुखे जनको विटः ६२

टीका–सुखेश और षष्ठेश ये दोनो नवमें भाव में गये हो तो पिता धूर्त किंवा ठगाईका काम करने वाला होवे ६१
नवमेश और सुखेश ये दोनो सुखभाव में गये हो तो पिता धूर्त वा ठगाई करने वाला होवे ६२

पितृ दुःख योग ।

खेशे पापसंबंधे पापान्तरे पितृ दुःखम् ६३

अर्कादशमेशे पापयुतदृष्टे पितादुःखी ६४

टीका–दशमेश पाप ग्रहसे संबंध करता हो पापग्रहोंके बीचमें गया होतो पिताका दुःख होगा वा पिता दुःखी रहेगा ६३

रवि से दशम भावका स्वामि पापग्रहसे युत और दृष्टहोतो पिता दुःखी रहेगा ६४

पितृसुखादि अल्प योग ।

सुखेशे त्रिके पितृसुखमल्पम् ६५

सूर्यारौखे धर्मे वा शीघ्रं पितृमृतिः ६६

सपापसूर्ये द्यूने शीघ्रं पितृमृतिः ६७

सार्कारेखेशे शीघ्रं पितृमृतिः ६८

द्यूनेर्के खेभौमेन्त्येराहौ पितानजीवति ६९

खे शत्रुभे भौमे पितानजीवति ७०

लग्नेजीवे धने ज्ञारयमा विवाहे पितृमृतिः ७१

चन्द्रार्कावष्टे पितुर्जलेमृतिः ७२

चन्द्रार्कौझषे पापदृष्टौ पितुर्जलेमृतिः ७३

शुक्रार्कौ चरे भौमदृष्टयुतौ पितुरन्यदेशे मृतिः ७४

टीका–सुखेश ६।८।१२ में भाव मे गया हो तो पिताका सुख अल्प रहेगा ६५

सूर्य और मंगल दशमभाव में अथवा नवमे भावमे गयेहोतो शीघ्र (अपनी छोटी उमरमेही) पिताकि मृत्यु होवेगा ६६

पापग्रहसे युक्त सूर्य सातमे भाव मे गया हो तो पिताकी शीघ्र मृत्यु होवेगा ६७

दशमेश रवि और मंगल से युक्त हो तो पिताकी शीघ्र मृत्यु होवेगा ६८

सात मे सूर्य दशमे मंगल और बारवे भावमें राहुगया होतो पिता जीवे नहीं ६९ (शीघ्र पिता कि मृत्यु होवेगा)

दशम भावमे शत्रुराशी मे गयाहुवा मंगल होवे तो पिता जीवेनही (शीघ्रपिता का मृत्युहोवेगा) ७०

लग्नमेगुरु धनभावमें बुध, मंगल और शनि ये तीनो ग्रह गयेहो तो विवाह के समय पिताकि मृत्यु होवेगा ७१

चंद्र और रवि येदोनो नवमे भावमे गयेहोतो पिताकी जलमे डूबने से मृत्युहोवेगा ७२

चंद्र और रवि मीनराशी मे गये हो और पापग्रह से दृष्ट होतो पिता कि जलमे डूबने से मृत्यु होवेगा ७३

चरराशी मे गयेहुवे शुक्र और रवि, मंगलसे युक्त किंवा दृष्ट होतो पिताकि अन्य देशमे मृत्यु होवेगा ७४

पितुर्दहनयोग।

चरेर्के केन्द्रे वा चन्द्रे पितरौ नदहेत् ७५

टीका--चरराशी का रवि केंद्रमे गयाहोतो पिताका और चरराशी का चंद्रमा केंद्रमे गयाहोतो माता का अग्नि संस्कार अपनेहातसे नही करने पावेगा ७५

जन्मतः प्राक्पितृ मरणयोग.

भौमार्काविजे खे जन्मतः प्राक् पितृमरणम् ७६

मन्दारौ खे जन्मतः प्राक् पितृमरणम् ७७

टीका-मेष राशी में गयेहुवे मंगल और रवि दशम भावमे गये होतो जन्महोनेके पहिले हि पिता का मरण कहना ७६

शनि मंगल दशम भावमें गयेहोतो जन्महोनेके पूर्व ही पिता का मरण कहना ७७

वृहत्पाराशरी मे लिखाहै कि छठे आठमे किंवा बारवे भावमें रवि नवमभावमे अष्टमेश लग्नमे व्ययेश और छठेस्थानमे जिसराशी का नवांशहो वहराशी पंचमभावमें गई होतो जन्महोने के पहिले ही पिता कि मृत्यु होवेऐसाजानना १

आठमे रवि और अष्टमेश नवम भावमें गयाहोतो पहिले वर्ष मे पिता कि मृत्यु होवेगा २

व्ययेशनवनेभावमें और नवमेश नीचराशयंश में गयाहोतो ३ तीसरे किंवा १६ मे वर्ष मे पिता कि मृत्यु होवेगा ३
लग्नेश आठमेभावमें और अष्टमेश रविसे युक्त होतो २ दूसरे अथवा बारवे वर्ष मे पिताकि मृत्यु होवेगा ४
जन्म लग्नसे चतुर्थ भावमे राहु और पंचम भावमे रवि गयाहोतो सोलहमे अथवा अठारह मे (१८) वर्ष मे पिता कि मृत्यु कहना ५
राहुसे युत सूर्य होवे और चंद्रमासे नवमे भावमे शनि गया हो तो सातमे अथवा उन्नईस (१९) मे वर्षमे पिताका मरण होवेगा ६
भाग्येश व्ययभावमे और व्ययेश भाग्यभाव मे गया हो तो ४४ चुम्मालीस मे वर्ष मे पिताका मरण होवेगा ७
सूर्यके नवांशमे चंद्रमा गया हो और लग्नेश अष्टम भावमे हो तो ३१ मे तथा ४१ मे वर्ष मे पिताका मरण होवेगा ८
दशमस्थानका स्वामि सूर्य, चंद्र और मंगलसे युक्त हो तो ५० मे वर्ष पिताकी मृत्य होवेगा ९
तीसर भावमें रवि और तीसरे तथा सातमे भाव मे राहु गयाहोतो ६ छठे वर्ष में अथवा पचीस मे वर्ष मे पिताका मरण जानना १०
धनभाव म शनि और आठमे भाव मे रवि गयाहोतो ३० मे तथा २१ में किंवा २६ मे वर्ष पिताका मरण होवेगा. ११
भाग्येश नीचराशी मे गयाहो और उसनीचराशिका स्वामी नवमे भाव में गयाहोतो २६ मे तथा ३३ मे वर्ष पिताका मरण होवेगा १२

सिंहासनप्राप्तियोग ।

सुखार्थाङ्गेश्वराः स्वर्क्षे धर्मेशेङ्गे सिंहासनाप्तिः ७८
धर्माङ्गसुखेशाः कर्मगाः बालिखेशयुताः सिंहा० ७९
धर्मेश्वपे शुक्रेज्यौ तुर्ये धर्मेशो केंद्रकोणे सिंहासनाप्तिः८०
वित्तपे केन्द्रे स्वोच्चे शुभदृष्टे सिंहासनाप्तिः ८१
शुभाःकेन्द्रे व्ययेशगाः पापाः सिंहासनाप्तिः ८२

टीका-सुखेश धनेश और लग्नेश अपनि स्वराशीये गयेहो और नवमेश लग्नमे स्थितहोतो सिंहासनकी प्राप्ती होवेगा अर्थात् किसीबडे राजाकी गद्दीपर बैठनेका सौभाग्य प्राप्त होवेगा ७८

नवमेश लग्नेश और सुखेश ये तीनो दशम भावमे गयेहो और बलवान् दशमेश से युक्त होतो सिंहासन की प्राप्तिहोवेगा ७९

सुखेश नवमे, गुरु शुक्र चतुर्थ भावमे और नवमेश केंद्रकोंवा त्रिकोण स्थानमे गयाहोतो सिंहासन की प्राप्ति होवेगा ८०

अपनि उच्चराशि मे गयाहुवा धनेश केंद्रमे गयाहो और शुभग्रह से दृष्टहोतो सिंहासन की प्राप्तिहोवेगा ८१

संपूर्ण शुभग्रह केंद्रमे गयेहो और संपूर्ण पापग्रह तीसरे छठे ग्यारमे भावमें स्थित होतो सिंहासन की प्राप्ति होवेगा ८२

इन योगोंमें जन्माहुवा किसी राजाके यहां दत्तक जायगा या अपनी धीरतासे राज्य संपादन करेगा।

नृपतुल्य योग।

षट्स्वर्क्षगाः वा शुभषष्ठचंशेर्के नृपतुल्यः ८३

चंद्रेज्यौसुते वोत्तमांशे नृपतुल्यः ८४

चन्द्रेङ्के गुरौसुखे सेशुके मन्देस्वर्क्षोच्चे नृपतुल्यः८५

दशपादात्सोत्थगाः सौम्यानृपतुल्यः ८६

सौम्याःकेंद्रकोणेपापाव्ययारिगालग्नेशेसबलेनृपतुल्यः८७

नीचगभेशोच्चेशः केन्द्रेनृपतुल्यः ८८

बलिनिचंद्रे लग्नेतर केन्द्रकोणे शुक्रजीवान्यतरदृष्टे नृपतुल्यः ८९

नीचगाः स्वोच्चांशगाः नृपतुल्यः ९०

देहेजीवे ज्ञकेन्द्रे भाग्यपदृष्टे नृपतुल्यः ९१

सेशेस्वोच्चमित्रांशे पारावतादौ नृपतुल्यः ९२

नीचे जीवेङ्के धर्मपेरन्ध्रे शुभांशे नृपतुल्यः ९३

जीवेन्त्ये लाभेमंदे सोत्थपेर्के नृपतुल्यः ९४

टीका-छग्रह अपनी स्वराशी मे गये हो १ अथवा रवि शुभषष्ठयंश

मे गयाहो तो राजाके समान होवे ८३

चंद्र और गुरु ये दोनो पंचम भावमें गये हो अथवा सप्तमांश में गये होतो राजाके समान होवेगा ८४

लग्नमे चंद्रमा सुखमेगुरु दशमेशुक्र गयाहो और शनि अपनि स्व· तथा उच्चराशामे स्थितहो तो राजाके समान होवेगा ८५

दशम भावसे तीसरे भावपर्यंत (१०।११।१२।१।२।३) के छ भावों मे संपूर्ण शुभग्रह गयेहोतो राजाके समान होवे ८६

संपूर्ण शुभग्रह केंद्र वा त्रिकोणस्थान में और संपूर्ण पापग्रह ३।६।११ भावमें गये हो लग्नेश बलवान् होतो राजाके समान होवेगा ८७

नीचराशीमे जो ग्रहगयाहो उसराशी के स्वामीकी जो उच्चराशी हो उसका स्वामी यदि केंद्र (१।४।७।१०) मे गया हो तो राजाके समान होवेगा ८८

बलवान् चंद्रमा लग्नकेविना अन्य केंद्रकोणस्थानमें (४।७।१०।९।५) गयाहो और शुक्र किंवा गुरुसे दृष्ट हो तो राजाके समान होवे ८९

नीचराशीमे गये हुवे ग्रह अपनि उच्चराशीके नवांशमें गये हो तो राजाके समान होवेगा ९०

लग्नमे गुरु और केंद्रमे गयाहुवा बुध भाग्येश से दृष्टहो तो राजाके समान होवेगा ९१

दशमेश अपनी स्व, उच्च तथा मित्रराशीके नवांशमे और पारावतादि शुभांशमें गया होतो राजाके समान होवेगा ९२

नीचराशीका गुरुलग्नमे और भाग्येश अष्टमभाव मे शुभग्रहकी राशीके नवांशमे गया हो तो राजाके समान होवेगा ९३

बारवे भावमे गुरु व ग्यारमेभावमेशनि गयेहो और तीसरे भावका स्वामि सूर्यहो तो राजाके समान होवेगा ९४

राजाधिराज योग ।

षट्ग्रहाः स्वोच्चगाराजाधिराजः ९५

खेशेसुतेसुखेशेखे कोणपदृष्टे राजाधिराजः ९६

धर्मापत्यपोयूनोन केन्द्रे लग्नपयुतौ राजाधिराजः ९७

चंद्रास्तोत्ये मंदार्कौ तुर्येज्ञाच्छौ लाभेजीवे राजाधिराजः ९८

गुरावङ्गे युनाम्बुगेसूर्ये वक्रगेशुकेसुते राजाधिराजः९९
जीवार्कावजे खेकुजे धर्मगाज्ञेन्द्वच्छाराजाधिराजः१००
कन्याङ्गेज्ञे झषेजीवे लाभेमंदे हयेशुक्रेवक्रार्कावलो राजा
धिराजः १०१
धर्ममन्दे उच्चे कुजे ज्ञेज्याच्छाः सुते राजाधिराजः १०२
सकलाश्चरेषु राजाधिराजः १०३
सोत्थेशनौ पष्ठभौमे खे शुक्रे धर्मेस्वोच्चेर्के राजाधिराजः१०४
सुवेशे सबले खाङ्गेशयोगे केन्द्रे राजाधिराजः १०५
खेशेदेवलोके स्वाङ्गेशौपारावते लाभपेगोपुरे राजाधिराजः १०६
गो मीनालिकन्यासु सर्वे राजाधिराजः १०७
घट सिंह युग्म धनुःषु सर्वे राजाधिराजः १०८
तुलाङ्गना हय मृग हरिषु सर्वे राजाधिराजः १०९
ज्ञार्केज्यर्क्षेषु सघटेषु सर्वे राजाधिराजः ११०
ज्ञेन्दु जीवभेषु सर्वे राजाधिराजः १११

टीका–छग्रह अपनी उच्चराशी में गयेहो तो राजाधिराज होताहै ९५
दशमेश पंचममें सुखेश दशम भावमें गया हो और नवम पंचम
भावके स्वामियो से दृष्ट होतो राजाधिराज होवे ९६
नवम और पंचमभावके स्वामी लग्नेशसे युत होकर सप्तम स्थानके
विना अन्यकेंद्रस्थान (१।४।१०) में गये होतो राजाधिराज होवेगा९७
चंद्रमासे तीसरे भावमें शनि रवि, चतुर्थभावमें बुधशुक्र और लाभ
भाव मे गुरु गया हो तो राजाधिराज (बडाराजा) होवेगा ९८
लग्नमेगुरु सप्तम किंवा चतुर्थभावमे रवि और वक्रगती का शुक्र
पंचमभाव मे गयाहो तो राजाधिराज होवे ९९
मेषराशी मेगुरुऔर रवि, दशमेमंगल और नवम भावमें बुध चंद्र
व शुक्र ये तीनोंग्रहगयेहो तो राजाधिराज होवे १००

कन्याराशी के लग्न मे बुध, मीनराशी में गुरु, लाभ भावमे शनी, धन राशी में शुक्र, गयेहो और मंगल व रवि वृश्चिक राशि मे होतो राजाधिराज होवेगा १०१

नवमे भावमे शनि हो अपनि उच्चराशीमे मंगल हो औरबुध गुरु शुक्र ये तीनो पंचम भावमे गये होतो राजाधिराज होवे । येयोग यदि वृषभ वा वृश्चिक लग्नमे होतो अधिक बलवान होवेगा १०२

शुभ और पाप संपूर्ण ग्रह यदि चरराशि १।४।७।१० मे गये होतो राजाधिराज होवे १०३

तीसरे भावमे शनि छठे मंगल दशमे गुरु और नवमे भावमे अपनि उच्चराशी मे गया हुवारवि गयाहोतो राजा धिराज होवेगा । येयोग सिंह लग्नमे जन्म होने वालेकी कुंडली मे होना संभवहै १०४

केंद्रस्थान १।४।७।१० मे नवमेश और दशमेश का योग हो और पंचमेश बलवान होवेतो राजाधिराज होवे १०५

दशमेश देवलोकांशमे धनेश व नवमेश ये दोनो पारावतांशमे और लाभेश गोपुरांश मे गयाहोतो राजाधिराज होवे १०६

वृषभ मीन वृश्चिक और कन्या इनचार राशियोंमे यदि शुभपापसबै ग्रह गयेहोतो राजाधिराज होवेगा १०७

कुंभ, सिंह, मिथुन और धन इनचारराशीयो मे यदि संपूर्ण शुभपापग्रह गयेहोतो राजाधिराज होवेगा १०८

तुल, कन्या, धन मकर और सिंह इनपांचराशियोंमे सकल शुभ पापग्रह यदि गये होतो राजाधिराज होवेगा १०९

बुधमंगलसूर्य औरगुरु इनचारो ग्रहो की राशिमे तथा कुंभ राशिमे (३।६।१।८।५।९।१२।११) सर्व शुभ पाप ग्रह यदि गये हो तो राजाधिराज होवेगा ११०

बुध चंद्र और गुरु की राशि (३।६।४।९।१२) में सर्व शुभपापग्रहयदि गयेहोतो राजाधिराज होवेगा । १११

भूपति योग ।

लग्नाद्वाचंद्राद्धर्मकर्मपावन्योन्यगौ भूपतिः ११२

स्वर्क्षगाः सप्त भूपतिः ११३

सप्तसुहृद्गा भूपतिः ११४
त्र्यादिग्रहास्वोच्चगा भूपवंशजो भूपतिः ११५
क्रूरेषु स्वोच्चेषु क्रूरो भूपतिः ११६
स्वोचेषु शुभेषु शुभपतिर्मिश्रेषु मिश्रमतिः भूपतिः ११७
पञ्चादयो ग्रहाउच्चगा अन्यकुलजो भूपतिः ११८
चरेङ्गे मन्दार्कारेज्याः स्वोच्चगाभूपतिः ११९
मृगोनचरेङ्गे मन्दार्केज्याः स्वोच्चगा भूपतिः १२०
तुलोनचरेङ्गे मौमेज्यार्काः स्वोच्चगाभूपतिः १२१
कर्कोनचरेङ्गे मन्दारार्काः स्वोच्चगा भूपतिः १२२
मेषोनचरेङ्गे मन्दारेज्याः स्वोच्चगा भूपतिः १२३

टीका-लग्न से अथवा चंद्रमासे नवम और दशम भावके स्वामि परस्पर अन्योन्यस्थानमे [नवमेश दशमे भावमे और दशनेश नवमे भावमे] गये होतो राजा होवे ११२

सातग्रह अपनि स्वराशिमे यदि गये हो तो राजाहोवे ११३

यदि सातग्रह अपने मित्रग्रहकी राशिमे गयेहोतो राजाहोवे११४

तीन से अधिक ग्रह अपनी उच्चराशी मे गयेहो तो राजाके वंशमे उत्पन्न हुवे होगातो राजाहोवेगा ११५ अर्थात् अन्य वंशमे उत्पन्नहो तो राजाके समान या प्रधान आदि होवेगा ।

क्रूर ग्रह अपनि उच्चराशिमे गये हो तो क्रूरस्वभावका राजा होवेगा ११६

शुभग्रह अपनि उच्चराशिमे गयेहो तो शुभ (शांत) स्वभावका तथा शुभ और पाप दोनो ग्रह (मिश्र ग्रह) अपनि उच्चराशि मे गये हो तो मिश्र स्वभावका राजा होवेगा ११७

पांचसे अधिक ग्रह (पांच छ सात) यदि अपनि उच्चराशि मे हो तो अन्यके कुलमे उत्पन्न हुवा मनुष्यभी राजा होवेगा ११८

चरराशी १।४।७।१० का लग्नहो और शनि रवि मंगल गुरु ये चारो ग्रह अपनि उच्चराशिमे गये हो तो राजा होवे ११९

मकरराशिके विना अन्य चर राशि (१।४।७) का लग्न हो और शनि रवि गुरु य तीनो ग्रह अपनी उच्चराशी मे गये हो तो राजा हे वगा १२०

तुलराशिके विना अन्य चरराशि [१।४।१०] का लग्नहो और मंगल गरु रवि ये तीनो ग्रह अपनि उच्चराशी मे गये हो तो राजा होवे १२१

कर्कराशिके विना अन्य चरराशी [१।७।१०] का लग्नहो और शनि मगल रवि ये तीनो ग्रह अपनि उच्चराशी मे गये हो तो राजा होवे १२२

मेषराशी के विना अन्य चरराशी (४।७।१०) का लग्न हो और शनि मंगल गुरु ये तीनो ग्रह अपनि उच्चराशि में गये होतो राजाहोवे १२३

कर्कचंद्रे स्वोच्चग जीवार्कयोरन्यतरेङ्गे भूपतिः १२४

स्वर्क्षेचंद्रेस्वोच्चग यमार्कयोरन्यतरेङ्गे भूपतिः १२५

कर्कचंद्रे स्वोच्चग सूर्यारयोरन्यतरेङ्गे भूपतिः १२६

कर्के चंद्रे स्वोच्चगयो र्यमेज्ययो रन्यतरेङ्गे भूपतिः १२७

कर्कचंद्रे स्वोच्चग जीवारयोरन्यतरेङ्गे भूपतिः १२८

कर्कचंद्रे स्वोच्चग यमारयोरन्यतरेङ्गे भूपतिः १२९

मेषेङ्गेर्के कर्कचन्द्रे भूपतिः १३०

चन्द्रेज्यौ कर्कंङ्गे भूपतिः १३१

तुलेङ्गेर्कजे कर्कचन्द्रे भूपतिः १३२

भौमेमृगेङ्गे, कर्कचन्द्रे भूपतिः १३३

टीका–कर्क राशिका चंद्रहो और अपनि उच्चराशी मे गयाहुवा गुरु तथा सूर्य लग्नमे गयाहो अर्थात् मेषकिंवा कर्कराशी का लग्नहो और रवि गुरु ये दोनो उच्चराशी के होचद्र कर्क राशी का होतो राजा होवेगा १२४

कर्कराशी का चंद्रमा हो और अपनी उच्चराशी मे गयाहुवा शनि तथा रवि लग्न मे गयाहोतो राजा होवे अर्थात् तुल किंवा मेषलग्न हो शनि रवि उच्चके और चन्द्रमा कर्कका होतो राजा होवे १२५

कर्क राशि का चंद्रमाहो और अपनि उच्चराशि मे गयाहुवा रवि मंगल लग्नमे गयाहो अर्थात् मेष किंवा मकर राशी का लग्नहो रवि मंगल उच्च के हो और कर्कका चंद्रमाहो तो राजा होवेगा १२६

कर्क राशीका चंद्रमा हो और अपनि उच्चराशि मे गया हुआ शनि तथा गुरु लग्नमें गयाहो अर्थात् तुल किंवा कर्क राशी का लग्न होशनि व गुरु उच्चराशी के और चंद्रमा कर्कराशी का होतो राजाहोवेगा १२७

कर्कराशी का चंद्रमाहो और अपनि उच्चराशीमे गया हुवा गुरु तथा मंगल लग्नमे गयाहो अर्थात् कर्क किंवा मकरराशी के लग्नहो गुरु मंगल उच्चके और चंद्रमा कर्कका होतो राजा होवेगा १२८

कर्क राशिका चंद्रमा हो और अपनि उच्चराशीमे गया हुवा शनि तथा मंगल लग्नमे गयाहो अर्थात् तुल किंवा मकर लग्नहो शनि मंगल उच्चके और कर्क क चन्द्रमा होतो राजा होवेगा १२९

मेषराशी के लग्नमे रवि गयाहो और कर्क राशी मे चंद्रमा होतो राजा होवेगा १३०

कर्क राशी के लग्न मे चंद्र गुरु गयेहोतो राजा होवे १३१

तुललग्न मे शनि गयाहो और कर्कका चन्द्र होतो राजा होवे १३२

मकर राशी के लग्नमे मंगल हो तो राजा होवे १३३

लग्नेवर्गोत्तमे चन्द्रेऽग्रह चतुष्टयादिदृष्टे भूपतिः १३४

वर्गोत्तमेचन्द्रे ग्रहचतुष्टयादिदृष्टे भूपतिः १३५

कुंभेर्कजे मेषेर्के वृषचंद्रे न्यतमेङ्के युग्मसिंहालिगेषु चेज्यारेषु भूपतिः १३६

शार्कोपष्ठे यमेन्द्वन्यतरे उच्चगे लग्नेऽजेकुजे तुलेशुक्रे कर्केजीवे भूपतिः १३७

लग्नेर्कजे मीनेमृगे चापे चन्द्रार्कौ भूपतिः १३८

21362

चन्द्रारौ मृगेङ्के चापेर्के भूपतिः १३९

चन्द्रार्की यूने सूर्येङ्के चापेजीवे भूपतिः १४०

तुङ्गेचंद्रे सिंहेर्के खेयमे चूनेजीवे भूपतिः १४१

मृगङ्गेमन्देसोत्थेचन्द्रे युग्मेभौमेधर्मेज्ञव्ययेजीवे पृथुयशो गुणी भूपतिः १४२

चापेचन्द्रेज्यौ मृगमुखेभौमे तुङ्गगज्ञाच्छान्यतरेङ्गे भूपतिः १४३

ह्नेतुङ्गेयमारौसुते चन्द्रेज्य सितास्तुर्ये गुणी भूपतिः १४४

कुंभे[illegible]ः तुङ्गेभौमे स्वर्क्षेर्के मीनेङ्के चंद्रे भूपतिः १४५

टीका--वर्गोत्तमांशमे (जिसराशी का लग्नहो उसीराशी के नवांश मे) गया हुवा लग्न, चंद्र के बिना अन्य चार पांचग्रहो से दृष्ट हो तो भूपति होवे १३४

वर्गोत्तमांशमे गयाहुवा चंद्रमा चार पांच ग्रहो से दृष्ट हो तो राजा होवे १३५

कुंभराशीका शनि मेषकारवि वृषभका चंद्रमा इन तीनों मे से को-इभीएकलग्न मे गया हो और मिथुनमे बुध, सिंहमेगुरु और वृश्चिक राशि मे मंगल हो तो राजा होवे १३६

छठे भावमे बुध सूर्य और-अपनि उच्चराशीमे गयाहुवा शनि किंवा चंद्रमा लग्नमे हो मेषराशी मे मंगल तुल मे शुक्र व कर्कराशी मे गुरु गयाहो तो राजा होवे १३७

लग्नमे शनि मकरराशीमे मंगल और धन राशी मे चंद्र व रवि गयेहो तो राजा होवे १३८

मकर राशी के लग्न मे चंद्रमगल गये हो और धन राशीका रवि हो तो राजा होवे १३९

सातमे भावमे चंद्र शनि लग्नमे सूर्य और धनराशीमे गुरु गयाहो तो राजा होवे १४०

उच्चराशी (२) मे गयाहुवा चंद्रमा लग्नमे गया हो और सिंहराशी मेसूर्य, दशमे शनि, सातमे भावमे गुरु, गया होतो राजा होवे १४१

मकरराशीके लग्नमे शनि, तीसरे भावमे चंद्रमा मिथुनराशीमे मंगल नवमे बुध और बारमे भावमे गुरु गयाहो तो बडीकीर्तिवाला गुणवान् राजा होवे १४२

धन राशीमे चंद्र गुरु व मकरराशी के पुर्वार्द्ध मे मंगल गया हो और अपनी उच्च राशीमे गया हुवा बुध किंवा शुक्र लग्नमे गया हो तो राजाहोवे १४३

उच्चराशी (६) मे गयाहुवाबुध लग्नमेंगयाहो शनिमंगल पंचम भावमें (मकर राशी मे) और चंद्र गुरुव शुक्रये तीनो चतुर्थ भावमे गयेहोतो गुणवान् राजाहोवे १४४

कुंभराशी का शनि मकरराशी १० का मंगल सिंहराशी ५ कारवि हो और मीनराशी के लग्नमे चंद्रमा गयाहोतो राजा होवे १४५

तुङ्गेजीवे मषेभौमे तदन्यतरेङ्गे भूपतिः १४६

मपेर्के चन्द्राच्छङ्गेषु लाभगेषु तुङ्गङ्गे जीवे भूपतिः १४७

मृगेर्कजेङ्गे चंद्रार्कौस्वर्क्षे भौमेजे ज्ञेयुग्मे तुलेशुक्रे पृथुयशो भूपतिः १४८

होतुङ्गङ्गे खेशुक्रे चन्द्रेज्यौयूने मन्दारौसुते भूपतिः १४९

आत्मकारकाद्धने तुर्ये सुते शुभे भूपतिः १५०

आत्मकारकाद्रिपु सोत्यगौ पापौ भूपतिः १५१

कर्केङ्गे तुर्येर्कजारौ खे ज्ञेज्यार्कशुक्रा भूपतिः १५२

कुंभेङ्गेशुक्रे चतुर्षु स्वोचगेषु भूपतिः १५३

बलाढ्याः स्वोच्चगाः पूर्वपूर्वदलेनृपो न्यथापरदले १५४

पूर्णेन्दु युक्तौ मन्दारौ भाग्ये भूपतिः १५५

टीका--उच्चराशीमे गुरुऔर मेषराशिमे मंगल गयाहो और इनदोनो मे से अेक लग्नमे गयाहोतो राजाहोवेगा १४६

मेष राशी का रवि दशमे चंद्र शुक्र बुध ये तीनो लाभ भावमें और अपनी उच्चराशी ४ मे गया हुवा गुरु लग्नमे गयाहोतोराजा होवेगा १४७

मकर राशीके लग्नमे शनि, चन्द्र और रवि ये दोनो अपनी अपनी स्वराशी म (४ म चन्द्र ५ मे रवि) मेषराशि मे मंगल मिथुनराशीमे बुध और तुलराशी मे शुक्र गया हो तो बडे यश और कीर्ति वाला राजा होवेगा १४८

लग्नमे अपनी उच्चराशि (६) मे गया हुआ बुध, दशम भावमे शुक्र, सप्तमभावमे चन्द्र व गुरु और पंचमभावमे शनि मंगल गये होतो राजा होवेगा १४९

आत्मकारक ग्रहसे दूसरे चौथे और पांच मे भावमे शुभग्रह गये हो तो राजा होवेगा १५०

आत्मकारक ग्रहसे छठे और तीसरे भावमे पापग्रह गये होतो राजा होवे १५१

कर्कराशीका लग्नहो चतुर्थभावमे शनि मंगल हो और दशमे भावमें बुध गुरु सूर्य व शुक्र ये चारो ग्रह गये होतो राजा होवे १५२

कुंभराशिके लग्नमे शुक्र गये हो और कोईभी चार ग्रह अपनि स्वराशिमे गये हो तो राजा होवे १५३

लग्न से छठे भाव पर्यंत के पूर्वषटक मे अपनि उच्चराशि मे गयेहुवे बलवान् ग्रह ये होतो आयु के पूर्व दलमे राजा होवेगा और सप्तम भावसे १२ पर्यंत के उत्तरषटक मे यदि उच्चराशी म गये हुवे बलवानग्रह गये होतो आयु के उत्तरार्द्धमे राजा होवेगा १५४

शनि और मंगल ये दोनो पूर्णचन्द्रसे युक्त होकर भाग्यभाव (नवम) मे गये हो तो राजा होवेगा १५५

लग्नपसौम्या उपचये राजा १५६

राज्हारचंद्राः पञ्चमे राजा १५७

उदयेचरे भाग्येपसिंहासने केंद्रे राजा १५८

खेस्थिराङ्गेशेकेंद्रजीवे राजा १५९

भाग्येशात्रौ सुखे पुत्रे राजा १६०

टीका– लग्नेश और शुभग्रह उपचय ३।६।१०।११ स्थानमे गये होतो राजा होवे १५६

राहु मंगल और चंद्रमा ये तीनो पंचम भावमे गये होतो राजाहोवे १५७

चरराशि १।४।७।१० का लग्न हो और सिंहासनांश मे गया हुवा भाग्येश केंद्रस्थानमें गयाहोतो राजा होवे १५८

स्थिरराशी २।५।८।११ के लग्नका स्वामि दशम भावमे गयाहो और गुरु केंद्रमे होतो राजा होवे १५९

भाग्येश के नवांश का स्वामि सुख मे वा पंचम भावमे गयाहोतो राजा होवे १६०

भूपति तथा मंत्रीयोग।

जीवर्क्षे तुलेङ्गेर्कजे भूपजोभूपान्यजो मंत्री १६१

खेज्ञार्कौ राव्हारौषष्ठे भूपजोभूपान्यजो मंत्री १६२

सोत्थेजीवेरन्ध्रेशुक्रे भूपजोभू० १६३

सिंहेकुजे युग्मे राहौ भूपजोभू० १६४

चंद्रारावङ्गे वा दशमे भूपजोभू० १६५

शुभपष्ठचंद्रेर्के केंद्रायकोणे भूपजो भूपान्यजो मंत्री १६६

सुतेशेङ्गे धर्मेसुते भूपजोभू० १६७

कोणाम्बु राज्याङ्गेशा युक्ता भूपजोभू० १६८

चंद्राद्दशमेशे सबले केन्द्रनवमार्थे भूपजोभू० १६९

एकोप्युच्चगो मित्रदृष्टो भूपजोभू० १७०

धर्मेशे जीवर्क्षे खशुक्रे पुत्रशदृष्टे भूपजोभू० १७१

शुक्रेज्यौतुर्ये भूपजोभू० १७२

टीका–तुलराशी का जन्म लग्न हो और गुरुकी राशी ९।१२ मे शनि गयाहोतो राजा के यहां जन्मपायाहोतो राजा और अन्यके यहाजन्म पायाहोतो मंत्री होताहै १६१

दशमे भावमे बुध रवि, और छठे भावमे राहु मंगल गये होतो राजाके यहां जन्म पायाहोतो राजा और अन्यके घरजन्म पाया हुवा प्रधान वामंत्री होताहै १६२

तीसरे भाव मे गुरु और आठमे भाव मे शुक्र गयाहो तो राजाके यहा जन्म पाया होतो राजा और अन्य के यहाजन्म पाया हो वहमन्त्री होताहै १६३

सिंहराशीमे मंगल और मिथुन राशी में राहुगयाहोतो राजाके यहा जन्म पायाहो तो राजा और अन्यके यहां जन्म पाया हो तो मन्त्री होताहै १६४

यहयोग कर्क वा सिंह राशी के लग्नमे जन्म होनेवाले के बलवानहोताहै

चंद्रऔर मंगल ये दोनो लग्न मे अथवा दशमे भावमे गयेहोतो राजा के यहा जन्मपायाहो वहराजा और अन्यके यहा जन्म पायाहो तो मंत्री होता है १६५

शुभषष्ठचंशमें गयाहुवा रवि १।४।७।१०।११।५ भाव में से किसी भावमे गया होतो राजाके यहा जन्मपायाहो तो राजा और अन्यके यहा जन्म पाया हो तो मंत्री होता है १६६

पंचमेश नवमभावमे और नवमेश पंचम भावमे गयाहोतो राजा के यहां जन्मपायाहुवा राजा और अन्यकेयहाजन्मपाया होतो मंत्री होताहै १६७

नवम पंचम चतुर्थ दशम और लग्न इनपाचो भावोके स्वामि एक राशिमे युक्त होतो राजा केयहा जन्म हुवाहोतो राजा और अन्य केयहा जन्मपाया होतो मंत्री होवेगा १६८

चंद्रमासे दशम भावमे जो राशी हो उस का स्वामि बलवान होकर १।४।७।१०।९।२भावमें गयाहो तो राजाके यहाजन्मपायाहोतो राजा और अन्य के यहाजन्मपायाहो तो मंत्री होताहै १६९

उच्चराशीमे गयाहुवा एकभीग्रह अपने मित्रग्रहसे दृष्टहोतो राजाके यहाजन्मपायाहोतो राजा व अन्यके यहाजन्मपायाहो तो मंत्रीहोताहै १७०

नवमेशगुरु कीराशी ९।१२ मे गयाहो और दशमभावमे गयाहुवा शुक्र पंचमेश से दृष्टहोतो राजाके यहांजन्मपायाहो तो राजा व अन्यके यहाजन्मपायाहो तो मंत्रीहोताहै १७१

शुक्र और गुरु येदोनो चतुर्थ भावमेगयेहोतो राजा के यहा जन्म पाया होतो राजा और अन्यकेयहा जन्मपाया होतो मंत्रीहोताहै १७२

चंद्रेज्यौ कर्के भूपजोभूपान्यजो मंत्री १७३

कन्यायां चंद्रज्ञौ भूपजोभूपान्यजो मंत्री १७४

तुङ्गेर्के सबलमन्दयुते भूपजो भूपान्यजो मंत्री १७५
शुक्रज्यौ तुङ्गौ केन्द्र कोणे भूपजो भूपान्यजो मंत्री १७६
नगार्थाङ्कान्त्येषु सर्वेषु भूपजोभूपान्यजो मंत्री १७७
यूनोन केंद्रकोणे सुखेशे भूपजोभूपान्यजो मंत्री १७८
गुरावुच्चगे केन्द्रे खे शुक्रे भूपजो भूपान्यजो मंत्री १७९
केन्द्रकोणार्थे खेशे शुभदृष्टे भूपजोभूपान्यजो मंत्री १८०
सशुभे खेशे सुते पुत्रपेचापे भूपजोभूपान्यजो मंत्री १८१
धर्मेशे पारावते शुभदृष्टे चन्द्रात्पुण्यपे देवलोके भूप० १८२
लग्नेशेके खेशेङ्के भूपजो भूपान्यजोमंत्री १८३
पुण्यवन्ताङ्के खेभौमे पबेआये धर्मेवाप्गे जीवे भू० १८४
स्वर्क्षेशुक्रे तुर्ये धर्मेचंद्रे भूपजोभूपान्यजो मंत्री १८५
पमेङ्के तुर्ये जीवे पुण्यवन्तो दशमे लाभेज्ञाराच्छाभूप० १८६
दशायोदयगाश्चंद्रार्किजीवा ज्ञारौधने शुक्रार्कौ तुर्ये भूप-
जोभूपान्यजो मंत्री १८७
गुरौगोपुरादौबलिनि सुतेश युते भूपजोभूपान्यजोमंत्री १८८

टी.का–कर्कराशी में चंद्र और गुरुगये होतो राजाके यहा जन्मपायाहो वह राजा और अन्यके यहा जन्मपायाहो वह मंत्री होता है १७३

कन्याराशी में चंद्र बुधगये होतो राजाके यहा जन्मपायाहो वह राजा व अन्य के यहा जन्मपायाहो वह मंत्री होता है १७४

उच्चराशी में गयाहुवा रवि बलवान् शनिसे युतहो तो राजाके यहां जन्मपायाहो वह राजा व अन्य के यहा जन्मपायाहो वह मंत्री होता है १७५

अपनी उच्चराशी मे गये हुवे शुक्र गुरु [मीनमेंशुक्र कर्कमें गुरु गया हो और ये दोनों] केन्द्र वा त्रिकोण स्थान मे गये हो तो राजा के यहा जन्म पायाहो वह राजा व अन्यके यहा जन्मपायाहो वह मंत्री होताहै १७६

सप्तम धन लग्न और व्यय ७।२।१।१२ इन चारो भावो मे सर्वशुभ पाप ग्रह गये हो तो राजाके यहां जन्मपायाहो वह राजा व अन्य के यहा जन्मपायाहो वह मंत्री होताहै १७७

सप्तमस्थान के विना अन्य केंद्रत्रिकोणस्थान (१।४।१०।९।५) में सुक्षेश गया होतो राजा के यहा जन्मपायाहो वह राजा और अन्यके यहा जन्मपायाहो वह मंत्री होता है १७८

उच्चराशी में गयाहुवा गुरु केंद्रमें और शुक्र दशमेभावमें गयाहो तो राजा के यहा जन्मपायाहो वह राजा और अन्यके यहा जन्मपायाहो वह मंत्री होता है १७९

शुभग्रहसे देखाहुआ दशमेश केंद्रत्रिकोण में तथा धनभाव में गया हो तो राजाके यहा जन्मपायाहो वह राजा और अन्यके यहा जन्मपायाहो वह मंत्री होता है १८०

शुभग्रह से युत दशमेश पंचमभाव में गयाहो और पंचमेश धनराशी में होतो राजाके यहां जन्मपायाहो वह राजा और अन्यके यहा जन्मपायाहो वह मंत्री होतो है १८१

पारावतांशमें गयाहुवा धनेश शुभग्रहसे दृष्ट हो और चंद्रमा से नवमे स्थानका स्वामि देवलोकांश मे गयाहो तो राजाके यहा जन्मपायाहो वह राजा और अन्यके यहा जन्मपायाहो वह मंत्री होतो है १८२

लग्नेश नवमे भावमें हो और दशमेश लग्नमें गया होतो राजाके यहा जन्मपायाहो वह राजा और अन्यके यहा जन्मपायाहो वह मंत्री होतो है १८३

रवि चंद्र लग्नमे हो, दशमें मंगल, ग्यारमे भावमे शनि, नवमे भावमें धनराशीमे गयाहुवा गुरु गयाहो तो राजाके यहा जन्मपायाहो वह राजा और अन्यके यहा जन्मपायाहो वह मंत्री होताहै १८४ ये योग मेष राशीके लग्न में होवेगा ।

अपनी स्वराशी ७।२ मे गयाहुवा शुक्र चतुर्थभावमे और चंद्रमा नवमे भावमे गयाहो तो राजाके यहा जन्मपायाहो वहराजा और अन्यके यहा जन्मपायाहो वह मंत्री होवाहै १८५ यह योग कर्क वा कुंभ लग्नमे होवेगा ।

लग्नमे शनि, चतुर्थभावमे गुरु, दशम भावमे सूर्य व चंद्रमा और लाभ (११)भावमे बुध मंगल शुक्र ये तीनोग्रह गये हो तो राजाके यहा

जन्मपायाहो वह राजा और अन्यके यहां जन्मपायाहो वह मंत्री होताहै १८६

दशमे चंद्रमा ग्यारमेशनि लग्नमेगुरु धनमेबुधमंगल और चतुर्थभावमे रवि शुक्र गये हो तो राजाके यहां मपायाहो वह राजा और अन्यके यहां जन्मपायाहो वह मंत्री होताहै १८७

गोपुरादि शुभांश में गुरु गयाहो और बलवान् होकर पंचमेशसे युत हो तो राजाके यहां जन्मपाया हो तो राजाहोताहै और अन्यके यहां जन्महुवाहो वह मंत्री होता है १८८

राजयोगभंग योगाः।

नवांशेखेशानीचगा व्यर्थाराजयोगाः १८९

मन्दायांऽपवीपाते क्रांतिपाते जन्मनिव्यर्था राजयोगाः १९०

परमनीचांशे चंद्रे व्यर्थाराजयोगाः १९१

उच्चगाः खेटानीचांशगाव्यर्थाराजयोगाः १९२

उच्चेर्के नीचांशे राजपुत्रोपि नीचतांगच्छति १९३

परमनीचगेर्के व्यर्थाराजयोगाः १९४

नीचगेशुक्रे सिंहांशे वा स्वांशे व्यर्थाराजयोगाः १९५

राज्यदानीचारात्परतगाव्यर्थाराजयोगाः १९६

उत्पातादिने जन्मनि व्यर्थाराजयोगाः १९७

दशमेनीचखगे व्यर्थाराजयोगाः १९८

चतुर्षु खगेषु शत्रुभगेषु वा नीचांशभगेषु व्यर्थाराजयोगाः १९९

ग्रहमात्रादृष्टश्चंद्रो वा लग्नो व्यर्थाराजयोगाः २००

सिंहांशेर्के पापयुते क्षीणेन्दौ सौम्यादृष्टे व्यर्थाराजयोगाः २०१

परमनीचांशे जीवे वा शुक्रे व्यर्थाराजयोगाः २०२

पापानीचगास्सर्वे कण्टकगाः सौम्याविकगाव्यर्थाराजयोगाः २०३

सौम्याअस्तगा केन्द्रहीना लग्नेराहौचन्द्रदृष्टे पापाःषट्

ईयायगाव्यर्थाराजयोगाः २०४

इति दशम विवेकः ।

टीका-नवमेश दशमेश और लाभेश ये तीनो अपनी नीचराशी मे गये होतो उपरोक्त राजयोग व्यर्थ होवेगा अर्थात यद्यपि राजयोग उत्तम बनाहोगा तथापि राजयोगका भगयोग बलवान् आजायगा तो वह उपरोक्त सर्व राजयोग निष्फल होजावेगा । अतएव उभययोगो के बलाबलका विचार करके राजयोगका फलाफल कहना १८९

मद्यामें करतीपातयोगमें क्रान्तिपात (महापात) दोष मे जन्म हो— तैसे राज योग व्यर्थ होवेगा १९०

परमनीचाश में (वृश्चिकराशीके ३ अंशका) चंद्रमा होवो राजयोग व्यर्थ होवेगा १९१

उच्चराशीमे गये हुवे ग्रह यदि नीचराशीके नवांशमें गयेहोतो राज योग व्यर्थ होवेगा १९२

उच्चराशीमे गयाहुवासूर्य नीचराशीके नवांशमे गयाहोतो राजा काभीपुत्रहोतो नीचताको प्राप्त होवेगा अर्थात् वह राज्यच्युत होजावेगा १९३

परमनीच राशी में (तुलराशीके१०अंशमें) रवि गयाहो तो राजयोगव्यर्थ होवेगा १९४

नीचराशीमें (६ राशी में) गयाहुवा शुक्र सिंहराशीके अथवा स्वराशी ७।२ के नवांशमे गया होतो राजयोग व्यर्थ होवेगा १९५

राजयोग करनेवाले ग्रह यदि नीच, शत्रु राशी मे गयेहो किंवा अस्तंगतहो तो राजयोग व्यर्थ होवेगा १९६

उत्पातके दिन अर्थात् जिसदिन भूकंप विद्युत्पात गंधर्वनगरदर्शन दिग्दाह परिवेषादिदिव्यभौमआंतरिक्षके उत्पातहो उसदिन यदि जन्म होतो राजयोग व्यर्थ होवेगा १९७

दशमभावमे नीचराशीका ग्रहगयाहोतो राजयोग व्यर्थ होवेगा १९८

कोईभी चारग्रह अपने शत्रु ग्रहकी राशीमे गये हो अथवा चारग्रह नीचराशी के नवांशमें गये हो तो राजयोग व्यर्थ होजावेगा १९९

चंद्रमा अथवा लग्न किसीभी ग्रहसे दृष्ट न हो तो राजयोग व्यर्थ होवेगा,२००

सिंहराशीके नवांशमें गयाहुवारवि पापग्रहसे युत हो और क्षीण चंद्रमा किसी शुभग्रहसे दृष्ट नहो तो राजयोग व्यर्थ होवेगा २०१

गुरु अथवा शुक्र अपने परमनीचराशीके अंशमें (गुरु मकरके ५ अंशमें किंवा शुक्र कन्याके २७ अंश मे) गयाहोतो राजयोग व्यर्थ होवेगा २०२

नीचराशीमें गये हुवे सर्व पापग्रह केंद्रमें गये हो और सर्व शुभग्रह त्रिकस्थान ६।८।१२ में गये होतो राजयोग व्यर्थ होवेगा २०३

शुभग्रह अस्तंगत होवे और केंद्रमें नहीं गयेहो चंद्रसेदृष्टराहु लग्नमें हो सर्वपापग्रह ६।३।११ मे भावमें स्थितहोतो सर्व राजयोग व्यर्थहोवेगा २०४

इत्यादि विचारों के सिवाय भाईकीमृत्यु, स्त्रीकीमाता (सासु) मालिक, जानुस्थान [घुटने] पुत्रकारोग शत्रु, दादाके मित्र, ग्रह, चतुष्पदादि विषयोका विचारभी इसी दशमभावमें करना—

इति दशम विवेकस्य टीका समाप्ताः



अथैकादशविवेकः

बहु लाभयोग।

लाभेशुभान्न्यायतोलाभोन्यथा न्यायतो मिश्राउभयथा १

लाभेशुभदृष्टयाधिक्ये बहुलाभः २

लाभपेकेंद्रकोणे बहुलाभः ३

लाभपे शुभ संबंधे बहुलाभः ४

टीका-लाभ (ग्यारवें) भावमे शुभग्रहगये हो तो न्यायमार्ग से धनका लाभ होवेगा। और पापग्रह लाभ भावमें गये होतो अन्यायमार्गसे धनका लाभ होवेगा। तथा शुभ व पापदोनो (मिश्रग्रह) लाभ भावमें गये होतो न्याय और अन्याय दोनो से अर्थात् मिश्रमार्ग से धनका लाभ होवेगा १

लाभभावपर शुभग्रहो कि अधिक दृष्टि होतो धनकालाभ बहुत होवेगा २

लाभेश केंद्रकिंवा त्रिकोणस्थान (१।४।७।१०।९।५) में गया हो तो धनका बहुत लाभ होवेगा ३

लाभेश शुभग्रहसे संबंध (संबधचारप्रकारका संज्ञातत्वकेसूत्र ६४ में कहा है) करता होतो धनका लाभ बहुत होवेगा ४

वाहनवान्योग

चंद्राद्द्यूने शुक्रेयानवान् ५

चंद्रात्सिते सोत्थायेयानवान् ६

सुखेशेलाभे गुरुदृष्टे बहुयानवान् ७

गुरुदृष्टसुखेशेन सुखेदृष्टे यानवान् ८

जीवाच्छौ सुखेश युतौ केंद्रकोणायगौ यानव्यूनाथः ९

इज्याच्छौ धर्मपयुतौ भाग्ये वा तुर्ये यानव्यूहनाथः १०

धनपयुतेन्त्येशे तुङ्गे भाग्यदृष्टे यानव्यूहनाथः ११

टीका—चंद्रमासे सप्तमस्थान में शुक्र गयाहो तो गाड़ी घोडा मोटर साइकल आदि वाहनवाला होवे ५

चंद्रमासे शुक्र तीसर किंवा ग्यार में भावमे गयाहो तो वाहनका मालिक होवे अर्थात वाहन अपने घरू रखने वाला होवे ६

गुरुसे देखाहुआ सुख भावेश लाभभावमें गयाहो तो बहुत वाहनो वाला होवे ७

गुरुसे देखे हुवे सुखेशसे सुखभाव संदृष्ट होतो वाहनवाला होवे ८

गुरु व शुक्र से युक्त होकर सुखेश केंद्रत्रिकोण अथवा लाभ भाव में गयाहो तो वाहनोंके समूह [झुंड] का मालिक होवे अर्थात् बहुत वाहनों वाला होवे ९

गुरु व शुक्र नवमेशसे युक्त होकर भाग्य (नवम) भाव मे किंवा सुख भावमे गयेहो तो अनेक वाहनोंका मालिक होवे १०

अपनी उच्चराशी में गयाहुआ व्ययेश धनेशसे युतहोकर नवम भावको देखता होतो बहुत वाहनोंके झुंडका मालिक होवे ११

जिनके वाहनव्यूहनाथ योग होता है उनके घरमे बहुत वाहन हाथि

घोडागाडी मोटर आदि होवेगे किंवा इन वाहनोका धंधा करने वाला होवेगा ट्रामवे अथवा रेलवे कंपनीके भागीदार वा निजके वाहनके धंधेका व्यापार करनेवाले लोगोकेभी येही योग बळवान् हुवे नजर आवेगे।

वाहन सुखयोग ।

धर्मायखेशास्तुर्ये वाहनसुखम् १२
खेउच्चगखेटे धर्मांगेशदृष्टे वाहनसुखम् १३
सिंहासनेऽसुकर्मशौ लग्नेशदृष्टौ वाहनसुखम् १४
सुखेशे सबले शुभदृष्टयुते वाहनसुखम् १५
सुखेशेऽङ्के सशुक्रे वाहनसुखम् १६
सुखेशेऽङ्के जीवयुते वाहनसुखम् १७
चंद्रेज्यशुक्रास्तुर्यपयुता अङ्के वाहनसुखम् १८
धर्मायुतेऽम्बुपे सबले जीवदृष्टयुते वाहनसुखम् १९
भाग्येशाल्लाभेऽङ्केशे सुखेशेधर्मे वाहनसुखम् २०
सुखपे केंद्रे तदीशेऽङ्के वाहनसुखम् २१
खे लग्नेशे खेशेऽङ्के वाहनसुखम् २२
धनेशेऽङ्के कर्मेशेर्थे तुंगगे कस्मिंश्चिद्ग्रहे वाहनसुखं २३
सुखेशे ऐरावते गजवाहनसुखं २४
सुखेशे केन्द्रेवैशेषिकेशा लाभपेगोपुरे गजवाहनसुखं २५

इत्येकादशमविवेकः ११

टीका–नवमेश लाभेश और दशमेश ये तीनोग्रह चतुर्थ भावमे गये-हो तो वाहनका सुख होवेगा १२

उच्चराशिमे गयाहुवा ग्रह दशमभावमे गयाहो और वह भाग्येश व लग्नेश इन दोनोसे दृष्टहोतो वाहनका सुख होवेगा १३

सुखेश और दशमेश ये दोनो सिंहासनांशमेंगयेहो और लग्नेश से दृष्टहोतो वाहनका सुख होवे १४

सुखेशबलवान्होकर शुभग्रहसेयुत और दृष्टहोतो वाहनकासुखहोवे१५
शुक्रसें युतहोकर सुखेश लग्नमे गयाहो तो वाहनका सुखहोवेगा १६
गुरुसे युत होकर सुखेश लग्नमे गयाहोतो वाहनका सुखहोवेगा १७
चंद्र गुरु शुक्र और चतुर्थभावका स्वामी ये चारोंग्रह लग्नमें गयेहो तो वाहनका सुखहोगा १८
बलवान् सुखेश भाग्येश से युतहोकर गुरुसे युतदृष्ट होतो वाहन का सुखहोवेगा १९
भाग्येशसे लाभभावमे लग्नेश गयाहो और सुखेश भाग्यभावमे गया हो तो वाहनका सुखहोवेगा २०
सुखेश केंद्रस्थानमें जिसराशिमे गयाहो उसराशी का स्वामी लग्नमें गयाहोतो वाहनका सुखहोवेगा २१
लग्नेशदशमे औ० दशमेश लग्नमे गयाहोतो वाहनका सुखहोवेगा२२
लग्नमे धनेश व धनमे दशमेश गयाहो और कोईभी एक ग्रह उच्च राशीमे होतो वाहनका सुखहोवेगा २३
सुखेश ऐरावतांश मे गयाहोतो गजवाहन का सुखहोवेगा २४
सुखेश केंद्रमेहो वैशेषिकांशमें गयाहो और लाभेश गोपुरांशमे गयाहो तो गज (हाथी) की सवारी का सुखमिलेगा २५ जिनके निजके घर की सवारी नहोतेभी गाड़ी घोड़ा मोटर बग्घी हाथी आदि सवारियोंमे बेठके फिरनेका वा उनपर अधिकार रखनेका अवसर मिलतारहता है उनकी जन्मकुंडलीमे वाहनसुख का योग बलवान देखनेमे आवेगा।

इत्यादि विचारोंके सिवाय भाईकेभाईकीस्त्री, भाईके शाला शाली, भाईका भाग्य, माताकी मृत्यु, मित्रकी मृत्यु, पुत्रकीस्त्री, पुत्रके पुत्रकी शालेकी स्त्री, स्त्री कि विद्या, पींडिये (घुटनेके नीचेकी पींडलियो का स्थान) और दादाकी विद्या बुद्धि आदि बातोंका विचार भी लाभभावसे करना।

इत्येकादशम विवेकस्यटीका समाप्ता ।



अथ द्वादशभावविवेकः ।

हानि योग ।

षष्ठेष्टमेचंद्रेद्यूनेमन्दे सर्वहानिः १

व्ययेपापदृष्ट्याधिक्ये धनहानिः पदेपदे २

टीका-छटे किंवा आठमे भावमे चंद्रमागया हो और सप्तम भावमें शनिहो तो सर्वस्वकी हानि होवेगा १

बारमे भावपरपापग्रहोंकि अधिक दृष्टिहो तो पदपद पर धनकी हानी होती रहेगा अर्थात कोईभी काम लाभके लिये करेगा उसमें वारंवार हानि होती जावेगा २

त्यागी योग ।

मीनांशे त्यागी ३

टीका-कारकांश लग्नमे मीनराशी हो तो त्यागी पुरुष होवेगा ३

दंभाद्धर्म परिग्रह योग ।

शुभेंद्रे धर्मेपेपापांशे वा पापषष्ठ्यंशे दम्भाद्धर्मपरिग्रहः ४

टीका-नवमभावमे शुभग्रह गया हो और धर्मेशपापग्रहके नवांश मे हो अथवा नवमे शुभग्रह गयाहो और नवमेश पापषष्ठ्यंशमे होतो कपट से धर्माचरण करने वाला होवेगा ५४

दानशीलयोग ।

धर्मपे स्वोच्चे शुभदृष्टे दानशीलः ५

धर्मे शुभदृष्टयुते दानशीलः ६

धर्मपे पारावतादौगुरुदृष्टे लग्नपेभृगुदृष्टे दानशीलः ७

लग्नेधर्मपदृष्टे लग्नपे केंद्रे महादानशीलः ८

दानेशे सिंहासने साङ्कप दृष्टे माहादानशीलः ९

दानपेभृगुगे खपेकेन्द्रे व्ययेशे गुरुदृष्टे महादानशीलः १०

स्वोच्चगेज्ञे धर्मपदृष्टे लाभे केंद्रे महादान शीलः ११

टीका-नवमेश अपनी उच्चराशी मे गया हो और वह शुभग्रह सेइड

हो तो दानकरने वाला (दानशील) होवे ५
नवम भाव शुभग्रहसे युत और दृष्टहो तो दानशीलहोवे ६
पारावतादि शुभांशमे गयाहुवा नवमेश गुरुसे दृष्टहो और लग्नेश शुक्र से दृष्ट होतो दानशील होवे ७
धनेशसे लग्नदृष्टहो और लग्नेश केंद्र स्थान मे गयाहोतो महादान शील (बडादान देनेवाला) होवे ८
नवमेश सिंहासनांश मे गयाहो और वह लग्नेश व दशमेश से दृष्ट हो तो बडादानशील होवे ९
नवमेश सुखमे व दशमेश केंद्र मे गया हो और व्ययेशको गुरु देखताहो तो महादानशील होवे १०
अपनी उच्चराशी मे गयाहुवा बुध नवमेश से दृष्ट होकर लाभमे वा केंद्रमे गयाहोतो महादान शीलहोवे ११

दानप्राप्ति योग ।

सबलेद्धपेलाभे धर्म कर्मपदृष्टे दानप्राप्तिः १२

सुतपेङ्के धर्मकर्मपयुते लग्नपदृष्टे दानप्राप्तिः १३

धर्मपेस्तपदृष्टे केंद्रकोणे परमोच्चांशेवा दानप्राप्तिः १४

टीका–बलवान् लग्नेश लाभभावमेगयाहो और नवमेश व दशमेश इनदोनों से दृष्टहोतो दानकी प्राप्ति होवेगा १२
नवमेश व दशमेशसे युतहो कर पंचमेश नवमे भावमे गयाहो और लग्नेश सेदृष्ट होतो दानकीप्राप्ति होवेगा १३
दशमेश से दृष्टहोकर नवमेश केंद्र किंवा त्रिकोण मे गयाहो अथवा नवमेश अपने परमोच्चांश मे गयाहोतो दानकीप्राप्ति होवेगा १४

धर्मदृढबुद्धि योग ।

धर्मेशे सशुभे शुभांशे धर्मे दृढबुद्धिः १५

धर्मपे वैशेषिके धर्मे दृढबुद्धिः १६

धर्मपे शुभपप्रयंशे धर्मे दृढबुद्धिः १७

टीका–नवमेश शुभ ग्रहसेयुत होकर शुभग्रह के नवांशमें गयाहो तो धर्म मे दृढबुद्धि वालाहोवे १५

धर्मेश वैशेषिकांशमे गयाहोतो धर्ममे दृढ़बुद्धि वाला होवे १६
नवमेश शुभषष्ठ्यंश मे गयाहोतो धर्म मे दृढ विश्वास वाला होवे १७

अन्नदाता योग ।

शुक्रेज्योधने धनेशे वैशेषिकेऽन्नदाता १८

सबलेधनपे केंद्रोपचये बलिशुभेदृष्टेऽन्नदाता १९

टीका–शुक्रव गुरु धनभावमे गयेहो और धनेश वैशेषिकांशमे होतो अन्नदान करनेवाला होताहै १८

बलवान् धनेश केंद्रअथवा उपचय ३।६।१०।११ स्थानमे गयाहो और बलादान शुभग्रहो से दृष्टहोतो अन्नदाता होताहै १९

सदऽसव्ययोग ।

व्ययेशुभेसव्ययोऽशुभेऽसव्ययो मिश्रेमिश्रः २०

व्यये रवि राहुशुक्र योगे राजमूलोव्ययः २१

जीवेन्त्ये करव्याजेन व्ययः २२

क्षीणेन्दु सूर्यौ व्यये राजद्राव्यं हरेत् २३

अन्त्ये मंदारौ भ्रातृद्वारा व्ययः २४

टीका–बारमे भावमेशुभग्रह गयेहोतो सन्मार्गमे धनका खर्चहोवेगा पाप ग्रह गये होतो असन्मार्ग मे और शुभपाप दोनो [मिश्र] ग्रह गयेहोतो मिश्र मार्ग [अच्छे और बुरे दोनो मार्ग] मे धनका खर्च होवेगा २०

रवि राहु और शुक्र इन तीनोका योग बारमे भावमे होतो राज्यके कार्य संबंधमे धनका खर्च होवेगा २१

बारमे भावमे गुरुगयाहोतो कर [महसूल] के बाहने से धनका खर्च होवेगा २२

क्षिण चंद्र और रविपेदोनोबारमे भावमे गयेहोतो राजा धनछीनलेगा २३

बारमे भावमें शनि और मंगल ये दोनो गये होतो भाइके द्वारा धनका खर्चहोवेगा २४

धन संचय कर्तायोग ।

व्यये शुभे धनसंचय संस्था २५

टीका-बारमे भावमे शुभग्रह गयेहोतो धनका संचय होता रहेगा २५

ऋण ग्रस्त योग।

धनेपापे व्ययेङ्गेशे खेशेलाभपयुत दृष्टे ऋणग्रस्तः २६

सपापे धनेशे मूढे धनरंध्रे ऋणग्रस्तः २७

नीचेर्थेशे क्रूरषष्ठचशे तथा लाभेशे ऋणग्रस्तः २८

सपाप लग्नपात्रिकेश युतदृष्ट ऋणग्रस्तः २९

पुत्रपेङ्गे शुभादृष्टे ऋणग्रस्तः ३०

लाभेशांशेशे शुभयुते क्रूरषष्ठचंशे ऋणग्रस्तः ३१

लग्नपे मूढारिनीचत्रिके मारकेशयुते भाग्यपे शुभैरदृष्टे नरेशोपि ऋणग्रस्तः ३२

टीका-पापग्रह धन भावमें व लग्नेश बारमेभावमे गयाहो और दशमेश लाभेशसे युत दृष्टहो तो ऋणग्रस्त होवेगा २६

पापग्रहसे युत धनेश अस्तगत होकर धनभावमे किंवा आठमें भावमे गयाहो तो ऋणग्रस्त [कर्ज से पीडित] होवेगा २७

नीचराशीमे गयाहुवा धनेश क्रूरषष्ठचशमे गयाहो और लाभेशभी नीचराशीमे स्थितहोकर क्रूरषष्ठचशमे स्थितहो तो ऋणग्रस्त होवेगा२८

पापग्रहसे युतलग्नेश छठे आठमे किंवा बारमें भावके स्वामि से युत अथवा दृष्ट हो तो ऋणग्रस्त होवेगा २९

पंचमेश लग्नमे गयाहो और वह शुभग्रहो से दृष्टनहो तो ऋणग्रस्त होवेगा ३०

लाभेशके नवांशका स्वामि शुभग्रहसे युतहो और क्रूरषष्ठचंशमे गयाहो तो ऋणग्रस्त होवे ३१

लग्नेश अस्तका वा अपनी शत्रु किंवा नीचराशीमे स्थितहोकर६।८।१२ मे भावमे गयाहो और भाग्यश [नवमेश] मारकेशसे (धनेश वा सप्तमेशसे) युतहोवे और वह शुभग्रहोंसे दृष्ट नहो तो यदि राजा वा राजा के समान मनुष्य हो तथापि ऋणग्रस्त होवेगा अर्थात् ये योग राजाके होतो वहभी अवश्य ऋणग्रस्त हुये विना रहता नहीं तो साधारण मनुष्य की क्या कथा है।

ऋणदाता योग ।

धनायेशयोर्द्व्यंशेशस्यांशेशौवैशेषिकांशे केंद्रकोणे ऋणदाता ३३

लग्नेशांशेशो मृदुंशादौ जीवदृष्ट ऋणदाता ३४

टीका–धन और लाभ इन दोनों भावोंके स्वामियोंके द्रेष्काणके स्वामिके नवांशके स्वामि यदि वैशेषिकांश में स्थितहोकर केंद्र किंवा त्रिकोणस्थानमें गये हो तो लोगोंको उधारऋणमें व्याजपर देने वाला (करजा देने वाला) होता है ३३

लग्नेशके नवांशका स्वामि मृदुसंज्ञकादि शुभ षष्ठ्यंशमें गयाहो और गुरु उसको देखता होतो ऋणदेनेवाला (करजा देनेवाला) होताहै ३४

बंधन योग ।

व्ययत्रिकोणार्थगेषु पापेषु बन्धनम् ३५

स्वान्त्ययोः सुताङ्कयोः षष्ठान्त्ययोः सोत्थाययोश्चतुर्थदशमयोर्वाग्रहसाम्ये बंधनम् ३६

वृषाजहयो दये पापाव्यन्त्याङ्कसुतगारज्जुबंधनं ३७

वृश्चिकोदये द्व्यन्त्याङ्क सुतगाः पापाः भूग्रहे बंधनं ३८

युग्मतुलाजकन्योदये द्व्यंत्याङ्कपुत्रगाः पापानिगड़बंधनं ३९

झषकर्कमृगोदये द्व्यन्त्याङ्क सुतगाःपापा दुर्गप्रवेशो निगड़रहितः ४०

लग्नारिशौ समन्दौ केन्द्रकोणे बंधनं ४१

टीका–बारमें दूसरे नवमें और पांचमे इनचारो भावोमे पापग्रह गये होतो बंधन होवेगा ३५

धन में और बारमें, वा नवमें व पांच में, किंवा छठे व बारमे, अथवा तीसरे व ग्यारमे, वा चोथे व दशमे, भावमे समान ग्रह अर्थात् अेक धनमें गयाहो तो एक व्ययमेभी वा दो ग्रहधन मे गये हो तो दोही व्यय मे गये हो ऐसे जितने एक भाव मे उतनेही दूसरे भावमे ग्रहगये होतो बंधनहोवेगा ।

इससूत्रमे बंधनके पांच योग कहे है इनमें से एकभी योग बनने से बंधन योग होताहै किंतु जितने अधिकयोग होंगे उतनाहि योग अधिक बलवान समझा जावेगा ३६

वृषभ मेष वा धनराशीका लग्नहो और उसमे दूसरे बारमें और नवमे पांच मे इनचारोही भावमें पापग्रह गये होतो रस्सी से बंधन होगा ३७

वृश्चिकराशिका लग्नहो और २-१२-९-५ इन चारो स्थान मे पाप- ग्रहगये होतो गुफा वा जमीन के नीचे के तलघरमे बंधनमे रहेगा ३८

मिथुन तुल मेष किंवा कन्याराशी का जन्म लग्नहो और २-१२-९-५ इनचारोभावोमे पाप ग्रहगयेहोतो जंजीर से बंधनहोगा (पांवमे बेडीपडेगा) ३९

मीन कर्क किंवा मकर राशी का लग्नहो और दूसरे बारमे नवमे पांचमे इनचारो भावोमे पापग्रह गयेहो तो किलेमे सादि (साधारण) कैदहोगा ४०

लग्नेश और षष्ठेश ये दोनो शनि से युक्त होकर केंद्र किंवा त्रिकोण स्थानमे गयेहोतो बंधन (कैद) होवेगा ४१

योगानांफलपरिपाकसमयः ।

योगकर्तृषु योधिकबलस्तदीयदशांतर्दशायां परिपाकः४१

इतिद्वादशमविवेकः ।

टीका-जितने योग कहेगये है उनयोगोंके योगकर्तामहोमेसे जो अधिकबलवान् ग्रहहोताहै उसग्रहकी दशा अंतर्दशामे उस योगके फलकी प्राप्ति होवेगा ४२

इसप्रकार योगोंकेफल परिपाक का समयजानना ।

व्यय भावमे उपरोक्त फलविचारोंके सिवाय भाईकीसासु भाईको राजपसुख मामी माताकाभाग्य मित्रकेभाईकीस्त्री काका (पिताका भाई) मित्रकाभाग्य पुत्रकामृत्यु स्त्रीकामामा स्त्री की कार्की मालिकका भाई, दूरकीमुसाफरी, पांव व नेत्रस्थान सुसराका भाग्य, दादाकारोग शत्रुआदि, सर्व बातोंका विशेषविचारभी इसी भावमें धरना ।

इतिद्वादशमविवेकस्यटीका समाप्ता: । १२

अथमिश्रविवेकः

वन्हिजीवियोग ।

अंशेभौमे धातुवादिकौन्तिको वन्हिजीवीच १

टीका-कारकांश लग्नमे मंगलगयाहो तो धातुउपधातुका कामकरनेवालावा रसायनशास्त्रज्ञ भालारखनेवाला अथवा शस्त्रबनानेवाला किंवा अग्निके संबंधसे कामकरनेवाले लुहार सुनार आदिके कामकरके उपजीविकाकरनेवाला होता है १

वाग्विद्याहीन योग ।

सुतपस्त्रिके वाग्घीनो विद्याहीनश्च २

सुतेशो ज्ञेज्ययुतास्त्रिके वाग्विद्या प्रबंधहीनः ३

टीका-पंचमेशत्रिकस्थान ६।८।१२ में गयाहोतो वाक् और विद्याहीन पुरुषहोताहै २

पंचमेश, बुध और गुरुसंयुतहोकर त्रिकस्थान ६।८।१२ में गयाहोतो वाक्विद्या और प्रबंधहीन मनुष्यहोता है ३

विरक्तयोग ।

द्यूनेश्लेशे भार्यानजीवति वाविरक्तः ४

लग्नेपापे शुभादृष्टयुते संन्यासीस्त्रीनाशोवा ५

टीका-सप्तमेशलग्नमे गयाहोतो भार्या (स्त्री) जीवेनही किंवाविरक्त (संन्यासी) होता है ४

लग्नमें गयाहुवा पापग्रह शुभग्रहसे युत किंवादृष्ट नहोतो संन्यासी होवे अथवा स्त्रीकानाशहोवे अर्थात् स्त्री जीवित नहींरहेगा ५

लग्नेशभावेशयोः संबंधफलं ।

लग्नेशेङ्के भाग्यवान् वैष्णवःपटुश्च ६

धनेशेङ्केङ्केशेधने धनीमानीगुणीदानीच ७

सोत्थेशेङ्केङ्केशे सोत्थेऽल्पधर्यैः कुलसुखदः ८

सुखेशेङ्केङ्केशे सुखेक्षमावान् सद्बुद्धिधनस्त्रीपितृभक्तिमांश्च९

सुतपेङ्केङ्केशे सुते मनस्वी विद्वान् मानीच १०
लग्नेशःषष्ठेषष्ठेशेङ्के व्याधिहीनः शूरोबलवांश्च ११
सप्तमेङ्केशे सप्तमेशे लग्ने तातसेवी शालकसेवीच १२
रन्ध्रेलग्नेशेलग्नेशे रन्ध्रे द्यूतकारीशूरश्चौर्यादिरतश्चः १३
धर्मेशेङ्केङ्केशेधर्मेविदेशी धर्मशीलो राजमान्यश्च १४
कर्मेशेङ्केङ्केशे कर्मे भूपतिः प्रख्यातगुणरूपकीर्तिमांश्च १५
लग्नेशेलाभे लाभपेङ्के सुकर्मादीर्घायुभूपतिःकोविदश्च १६
लग्नेशेन्त्येन्त्येशे लग्नेसर्वशत्रुर्बुद्धिहीनः कृपणश्च १७

टीका–लग्नेश नवमें भावमे गयाहोतो भाग्यवान् वैष्णवधर्मानुयायी और चतुरपुरुष होता है ६

धनेशलग्नमें और लग्नेश धनमे गयाहोतो धनीमानी गुणी और दानी होता है ७

तृतीयेश लग्नमे और लग्नेश तृतीयभावमे गयाहोतो अल्पवीर्य [अशक्त] बन्धुसौख्ययुत राजपूज्य कुलके मनुष्यो को सुखदेनेवाला माताके पक्षके लोगोका सुखपानेवाला होताहै ८

चतुर्थेश लग्नमे और लग्नेश चतुर्थ मे गयाहोतो क्षमावान् पितृभक्ति व राजभक्तिकरनेवाला उत्तम बुद्धिवान् अच्छागुरु व अपने मतपर चलनेवाला होताहै ९

पंचमेश लग्नमे और लग्नेश पंचममे गयाहोतो मनस्वी विद्वान् और मानीहोताहै १०

लग्नेशछठे और षष्ठेशलग्नमे गयाहोतो व्याधिहीन शूरवीर और बलवान् होताहै ११

लग्नेश सप्तम मे और सप्तमेशलग्नमे गयाहोतो पिताकी सेवाकरने वाला और शालककी सेवाकरनेवाला होताहै १२

लग्नेश अष्टम मे और अष्टमेश लग्नमे गयाहोतो जूंआखेलनेवाला शूरवीर और चोरी वगेरा बुरेकाम करनेवाला होताहै १३

नवमेश लग्नमे और लग्नेशनवमे गयाहोतो विदेशमेफिरनेवाला धर्मशील और राजमान्ययुत होताहै १४

दशमेशलग्नमें और लग्नेश दशम में गयाहोतो राजा, प्रख्यात गुण-वाला, सुंदररूप और सत्कीर्तिवाला होताहै १५

लग्नेशलाभमें और लाभेश लग्नमें गयाहोतो सत्कर्म करनेवाला दीर्घायु राजा और विद्वान होताहै १६

लग्नेश बारमें और व्ययेश लग्नमें गयाहोतो सबका शत्रु बुद्धिहीन और कृपण मनुष्य होताहै १७

लग्नेशे सोत्थेपष्ठे विक्रमी मानीदयावांश्च १८

खाम्बुगे शे कामीसुखीच १९

अन्त्येर्थेशे मानीधनहीनश्च २०

सजीवेसोत्थेपधीरः शास्त्रविशारदश्च २१

सारेसोत्थपे जडःप्रचण्डःकोपीच २२

सगुलिके सोत्थपेदृढो जडोधीरश्च २३

अंशेपूर्णेन्दुशुक्रौ भोगीविद्याजीवीच २४

अंशेजीवे कर्मज्ञानी वेदविद्वावाच २५

भाग्यपेकेंद्रकोणे शुभयुतदृष्टे धनविद्याभाग्ययुतः २६

नीचेकेंपष्ठेऽष्टमे क्रूरदृष्टे नृपकोपात्पितृमरणंवित्तनाशश्च२७

सव ऽभाग्यपे पारावतादौ मानीगुणी धर्मशीलो धनीच २८

टीका–लग्नेश तीसरे किंवा छठे भावमें गयाहो तो पराक्रमी मानी और दयावान होताहै १८

लग्नेशदशमे किंवा चतुर्थभावमे गयाहोतो कामी और सुखी होताहै १९

धनेश बारमे भावमे गयाहोतो मानी और धनहीन होता है २०

तृतीयेश गुरुसे युतहोतो धीर[धैर्यवान]और शास्त्र विशारदहोताहै २१

तृतीयेश मंगलसेयुतहोतो जड बडाप्रचंड और क्रोधी मनुष्यहोताहै २२

तृतीयेश गुलिकसे युतहोतो दृढ, जडबुद्धि वा मजबूत और धीर पुरुष होताहै २३

कारकांश लग्नमें पूर्ण चन्द्रमा और शुक्र गयेहोतो ऐश्वर्यसुख भोग

भोगनेवाला और विद्याके संबंध से (पढ़ने पढ़ाने से) जीविका करने वाला होताहै २४

कारकाश लग्नमे गुरुगयाहोतो मीमांसा शास्त्र जाननेवाला कर्मज्ञानी वेदविद्या जाननेवाला और दातापुरुष होताहै २५

नवमेश शुभग्रहसेयुत और दृष्टहोकर केंद्र किंवा त्रिकोण ९।५ स्थान मे गयाहोतो धन विद्या और भाग्य से युतहोताहै २६

नीचराशीमे गयाहुवारवि क्रूर ग्रहसेदृष्टहोकर छठे तथा आठमे भाव मे गयाहोतो राजाके कोपसे पिताका मरण और धनकानाश होताहै २७

बलवान नवमेश पारावतादिशुभांशमे गयाहोतो मानी गुणी धर्मशील और धनवान पुरुषहोताहै २८

जपध्यान समाधिमान् तथा धर्मनिरत योग ।

खेशेङ्केशेसबले शुक्रेज्ययुतदृष्टे जपध्यान समाधिमान् २९

खेशस्यांशेशांशेशेसबले खेशेङ्के जपध्यान समाधिमान् ३०

अंशाद्धर्मे शुभदृष्टयुते धर्मनिरतः सत्यवादी गुरुभक्तश्चान्य थातुपापदृष्टयुते ३१

व्ययेशेङ्के यात्रावान्धार्मिकोधनी ३२

टीका-दशमेश नवमे हो और नवमेश बलवानहोकर शुक्र और गुरु से युत किंवा दृष्टहोतो जपध्यान वा समाधि साधन करनेवाबाला होताहै २९

दशमेश के नवांशका स्वामि जिसराशीके नवांशमे गयाहो उसका स्वामि बलवानहो और दशमेश नवमे भावमगयाहो वो जपध्यान स- माधिवालाहोताहै ३०

कारकांशलग्नसे नवम स्थान शुभग्रहसेयुत और दृष्टहोतो धर्मनिरत सत्यवादी और गुरुभक्त होताहै पापग्रहसेयुत दृष्टहोतो उलटा फल- होवेगा अर्थात् यदि कारकांशलग्नसे नवमभाव पापग्रहसे युत और दृष्टहोतो पापरत असत्यवादी और गुरुद्वेषी होताहै ३१

व्ययेश नवमे भावमेगयाहोतो यात्रा (तीर्थयात्रा वादेशां तरगमन) करनेवाला धर्म करनेवाला (धार्मिक) और धनवान् मनुष्यहोताहै ३२

धनी कृपण तथा प्रतापी योग ।

स्वर्क्षेन्त्येशे धनी कृपणो बहुपशुमांश्च ३३

कर्माङ्गेशावन्योन्यभगौ ख्यातःप्रतापीच ३४

टीका-बारेमभावका स्वामी अपनी स्वराशिमें गयाहोतो धनवान् कृपण (कजूस) और बहुत गाय भेंस आदि पशुओवाला होताहै ३३ दशमेश और लग्नेश परस्पर अन्योन्यराशी मे अर्थात् दशमेशकी राशी मे लग्नेश और लग्नेशकी राशिमे दशमेश गयाहोतो प्रख्याति-वाला और प्रतापी मनुष्य होताहै ३४

कुलघ्न बहुस्त्रीरत योग ।

दारे कुजे बहुस्त्रीरतः कुलघ्नश्च ३५

अंशाद्दारेऽर्के पतिव्रता विकलाङ्गी स्त्री ३६

पापालग्नान्त्यास्तगा सुत स्त्री नाशकाः ३७

मदेऽर्के कुटुम्बी बहुस्त्रीरतः ३८

धर्मेशेन्त्येन्त्येशेर्थे सोत्थे पापेकुभोजीदुष्कर्मान्यगामी ३९

नीचभांशे जीवेजीवांशेर्केऽतिदुःखी सुतदारहीनः ४०

टीका-सप्तमभावमें मंगलगयाहो तो बहुतस्त्रियो से सहवास करने वाला और कुलघ्न मनुष्य होता है ३५ कारकांशलग्न से सप्तमभावमे सूर्य गयाहो तो पतिव्रतास्त्रीहोवेगा किंतु वह विकलदेह वाली होवे ३६ लग्न में बारवे और सातवे भावमें पापग्रहगये होतो पुत्रका और स्त्रीका नाश करते है ३७ सप्तमभावमें सूर्य गयाहोतो बडे कुटुम्ब वाला और बहुतस्त्रीयोसे सहवास करनेवाला होता है ३८ नवमेश बारमें व्ययेशधनभावमें और पापग्रह तीसरे भावमे गये होतो दुष्टान्न भोजनकरनेव ला दुष्टकर्म करनेवाला परस्त्रीगामी नर होता है ३९ नीचराशी तथा नीचराशीके नवांशमें गुरुगयाहो और गुरुकी राशी

के नवांशये रवि होतो महादुःखी पुत्र तथा स्त्री हीनमनुष्य होता है ४०
द्विग्रह योग।
चन्द्रार्कयोगे यन्त्राश्मकर्ता ४१
ज्ञार्कयोगे क्रियापटुर्धीकीर्तिसौख्यान्वितः ४२
जीवार्कयोगे क्रूरोन्यकार्य निरतः ४३
शुक्रार्कयोगेऽङ्गायुधैर्लब्धस्वः ४४
मंदार्कयोगे धातुनैपुण्यं ४५
चन्द्रारयोगे लुब्धकश्चलचितः ४६
चंद्रज्ञयोगे प्रियवागर्थपटुः सौभाग्यकीर्त्यन्वितः ४७
चन्द्रेज्ययोगे शत्रुजेता कुलमुख्यश्चपलो धनी ४८
चंद्राच्छयोगे वस्त्रादिक्रियापटुः ४९
चन्द्रमंदयोगे परुषवाक्कपटी ५०
समन्देर्ज्ञे परवञ्चनदक्षो गुरुवचनातिक्रामीच ५१
शुक्रेज्ययोगे सद्विद्या धनदारगुणयुक्तः ५२
ज्ञाच्छयोगे वाग्मी विद्वान्भूपगणपः ५३
ज्ञेज्ययोगे गीतप्रियो नृत्यविन्मल्लः ५४
मन्दारयोगे दुःख्यनृतभाषी निन्दितश्च ५५
यमाच्छयोगेल्पदृष्टिर्लिपिपुस्तचित्रवेत्ता ५६
शुक्रारयोगे गोपालकर्ममल्लदक्षपराङ्गना गामी ५७
आरेज्ययोग पुराध्यक्षो नृपमानवियोद्विजः ५८
टीका–रविचंद्रका एकराशी में योगहोतो यन्त्र (कलाकौशल) काकाम और पत्थरका कामकरने वालाहोता है ४१

बुध रविका योगहोतो काम करने में कुशलबुद्धिवान् सत्कीर्ति और सुखसे युतहोता है ४२

गुरुरविका योगहो तो क्रूरस्वभावका और दूसरेका कामकरने वाला होता है ४३

शुक्ररविका योगहोतो अपने शरीरके बलसे और शस्त्रादिकसेधन प्राप्त होता है ४४

शनिरविका योग होतो रसायनशास्त्रके काममे निपुणता अथवाधातु उपधातुओसे बननेवाले कार्योंको करनेमे निपुण होता है ४५

—चंद्र मंगलका योगहोतो लोभी और चलचित्तवाला होता है (स्थिर चित्तरहतानहीं) ४६

चंद्रबुधका योगहोतो प्रियवचन,बोलनेवाला द्रव्योपार्जनके काममें चतुर भाग्यवान् और सत्कीर्तिवालाहोता है ४७

चंद्रगुरुका योगहोतो शत्रुको जीतनेवाला अपने कुलमें मुख्यपुरुष चपलबुद्धिवाला और बहाधनवान होताहै ४८

चंद्रशुक्रका योगहोतो वस्त्रसीबनाबुनना बनावनाना इत्यादि वस्त्रनि-र्माणके काममें कुशलहोता है ४९

चंद्रशनिका योग होतो कठोरवचन बोलने वाला और कपटी स्वभा-वका पुरुष होता है ५०

शनिबुधका एक राशीमे योग होतो दूसरे को ठगनेमे चतुर और गुरुके वचन को उल्लंघन करनेवाला होताहै ५१

शुक्रगुरु का एकराशीमे योगहोतो सद्विद्यान्वित धन,स्त्री, और गुण युक्तमनुष्य होताहै ५२

बुधशुक्र का योगहोतो अच्छा बोलनेवाला (वक्ता) विद्वान् और राजाओंके समूहका अधिपति होताहै ५३

बुधगुरुका योगहोतो गायनमे प्रीतिरखनेवाला नृत्यकलाको जानने-वाला और मल्ल [कुस्तीकरनेवाला] होताहै ५४

शनिमंगलका योगहोतो दुःखी झूठबोलनेवाला और निन्दित मनुष्य होताहै ५५

शनिशुक्रका योगहोतो अल्पदृष्टि अर्थात् मंदरदृष्टि या अंग्रेजीमें जिस्को शोर्टसाईट कहतेहै ऐसीदृष्टीवाला होताहै लिखनेके कामको

वा लीपनेपोतने रंगाईकरनेके कामको और चित्र कलाको जाननेवाला होताहै ५६

शुक्रमंगल का योगहोतो गोभोपालनेवाला, मल्ल, चतुर और परांगनागामी मनुष्य होताहै ५६

गुरुमंगलका योगहोतो किसी गाम वा शहरका मालिक वा बडेस्व अधिकारवाला राजा और विद्वान् ब्राह्मणहोताहै ५८

परग्रहवासी, मातृपितृघाती, निर्धनी, लोभीयोग ।

राह्वर्कान्यतर युतेषष्ठेशेन्त्ये परग्रहवासी नीचवृत्तिश्च ५९

लग्नेन्त्येर्के चन्द्रेषष्ठेभौमेस्ते मातापितृघाती ६०

मेषेचन्द्रेमन्ददृष्टे निर्धनोलोभी ६१

टीका–षष्ठेशराहु.तथा रविसे युतहोकर बारमेभावमे गयाहोतो पराये घरमेरहनेवाला और नीचवृत्तिका मनुष्यहोताहै ५९

लग्नमे तथा बारमे भावमे रविगयाहो और चंद्रमा छठे व मंगल सातमे भावमे गयाहोतो मातापिताका घात [नाश] करनेवालाहोवे६०

मेषराशीमे गयाहुवाचंद्रमा शनिसे दृष्टहोतोनिर्धन और लोभीहोताहै६१

जन्मावसरे पितुर्मातुर्वा मरणयोग ।

कर्माम्बुपौत्रिकेऽबलौसबलेऽल्पेजन्मावसरेपितुर्मातु र्वामरणम् ६२

टीका–दशमेश और सुखेश ये दोनो निर्बलीहोकर त्रिकस्थान ६।८।१२ मे गयेहो और लग्नेशबलवान होतो जन्मके समय पिताका वा माताका मरणहोदेगा ६२

यहयोगहोवे इसके जन्मकालमे मातृपितृ के सद्योमरणयोग भी हुवे होतो अवश्य इस योगका फलमिलेगा ।

भ्रातृधनक्षेत्रादिलाभ तथा भाग्यवान् तथा मानीयोग ।

सुखेशांशपेकेन्द्रेमित्रदृष्टेवाभौमदृष्टयुतेभ्रातृधनंक्षेत्रंचप्राप्नोति ६३

धर्माम्बुपौ कर्मगौ सर्वार्थवाहनयुतो भाग्यवान् ६४

खेजीवे दृष्टितश्चोमानीच ६५

टीका– सुखेश के नवांशका स्वामि केंद्रमे गयाहो और वह अपने

मित्रग्रहसे दृष्टहो अथवा मंगलसे युत तथा दृष्टहोतो भाईका धन और जमीन आदि संपत्तिका लाभहोताहै ६३

नवमेश और सुखेश ये दोनों दशमभावमे गयेहोतो सर्व संपत्ति और वाहन सेयुत भाग्यवान् मनुष्यहोताहै ६४

दशमभावमे गुरु गयाहोतो इसारेपरसे मनकी बात जाननेवाला और मानी (अहंकारी) मनुष्यहोताहै ६५

कपटेन विषभक्षण कर्तायोग।

धनेशे पापदृष्टे कपटादिनाविष भोजनम् ६६

टीका–धनेश पापग्रहसे दृष्टहोतो कपटादिक से विषखावेगा (कोई जहरखिलादेवेगा) ६६

धैर्यान्वित युद्धपटु सत्यवादी कटुप्रियादियोग।

शुभर्क्षेभ्रातृकारके शौर्यधैर्यान्वितः ६७

सोत्थेशांशेश्वरांशेशेस्वर्क्षादिवर्गे मानीयुद्ध पटुःकलहप्रियः ६८

लग्नेर्थेजीवे मधुरप्रिय मधुरवाक् सत्यवादी ६९

लग्नेशेङ्के कुजार्कदृष्टे क्रोधीव्यसनी कटुप्रियः ७०

कोशगौज्ञार्की सेवारतो स्थिरधनी ७१

सोत्थेराहुमन्दौ कुनखीदक्षकरेघाती वायुरोगी ७२

सोत्थेर्क वा भौमेस्थिभंगो विषभयं वन्हिजं चिन्हम् ७३

खलाम्भृतिगा सव्रणचिन्हंगुल्यं भगंदरादिरोगीच ७४

खेचंद्रे सुतांगेजीवे दानीतपस्वी जितेंद्रियश्च ७५

ज्ञेन्दर्कजाः केन्द्रव्ययधर्मगा ऐश्वर्यज्ञानहीनः ७६

सर्वग्रहानीचारीभागगा उच्चस्थाअपि सत्कर्महीनो भिक्षाशी ७७

टीका–भ्रातृकारकग्रह [मंगल]शुभग्रहकी राशीमे गयाहोतो शुरता युत और धैर्यान्वित होताहै ६७

तृतीयेशके नवांशका स्वामि जिसराशी के नवांशमे गयाहो उसका

स्वामि स्वउच्च मित्र राशीके शुभवर्गमे गयाहोतो मानी युद्धकलाप्रवीण और कलहप्रिय मनुष्यहोताहै ६८

लग्नमे तथा धनभावमे गुरुगयाहोतो मीठीवस्तुखानेपर प्रेमरखनेवाला मधुरवाणीसे भाषणकरनेवाला और सत्यवादी मनुष्यहोताहै ६९

लग्नेश लग्नमे गयाहो और रवि तथा मंगलसे दृष्टहोतो क्रोधी विपत्ती भोगनेवाला और कटुरस [चरपराखारापदार्थ] परप्रेमरखनेवालाहोताहै ७०

बुध और रवि धनभावमें गयेहो तो सेवाकरनेमे तत्पर रहनेवाला और स्थिरधनवाला होता है ७१

तीसरेभाव में राहु और शनिगयेहोतो खराब नखवाला दक्षिणहाथमे घात (चोट वा शस्त्रसे घावहोनेका भय) वाला और वायुकेरोगसे युत होता है ७२

तीसरे भाव में रवि अथवा मंगलगया होतो किसी अंगकी हड्डी टुटेगी तथा विषकाभय वा अग्निसे जलजानेका शरीरपर चिन्ह होवेगा७३

पापग्रह अष्टमभाव में गयेहोतो गुप्तस्थानमें किसी जखमका चिन्ह होवे और भगंदरबवासीर आदिरोग वाला होता है ७४

दशमें भावमें चंद्रमा और पंचमभावमें अथवा लग्नमें गुरुगयाहोतो दानी तपस्वी और जितेन्द्री होता है ७५

बुधकेंद्रमें, चंद्रमाचारमें भावमे और शनि नवमेंभावमें, गयेहोतो ऐश्वर्य और ज्ञानहीन मनुष्य होताहै ७६

उच्चराशिमे गये हुवेभीसर्वग्रह यदि नीच किंवा शत्रुराशीके नवांशमे गयहोतो सत्कर्महीन और भिक्षामांगके पेटभरनेवालाहोताहै ७७

दद्रु कंडुपीडा, मंदाग्नि भ्रातृहीन कलहशीलादि योग।

लग्नेशरन्ध्रे क्रूरयुतदृष्टेग्निमान्द्यदद्रुकण्डुपीडाश्वित्री७८

भौमेङ्के नेत्रपाणौ भुजङ्गदन्तक्षतपावकाम्बु भयम् ७९

चंद्राच्छौपष्ठेऽष्टमे वा मन्दाग्न्युदररोगी ८०

केचिद्दूर्गोऽर्थे भ्रातृहीनो धनीच ८१

क्रूरात्पञ्चादित्रयगाभौमाद्युमन्दा भार्यानजीवतिभ्रातृहीनश्च८२

राहिंदुसपापौरिःफे उन्मादीकलहशीलः ८३
अंशेराहौ धानुष्कश्चौरोवा ८४
अंशेशुक्रे राजसेवीकामीच ८५
भ्रातृपेसशुक्रे कामीकलही ८६
खलयुतदृष्टे कुजेस्वे मूत्रकृच्छ्री क्लीपः ८७
शुभांशहीनौज्ञचंद्रौकेन्द्रे विस्मयालुभ्रमयुक्तः ८८
लाभांकेर्थेशे उद्यमी धनी गुणी ८९
लग्नेशेन्त्ये सपापे भौमयुतचंद्रे परदेशी भिक्षाशीदुःखी९०
जीवार्थेशौ षष्ठान्त्यगौ क्लेशभाग्द्रव्यहीनः ९१

टीका–लग्नेश अष्टमभावमें गयाहो और क्रूरग्रहोसे युत व दृष्टहो तो मंदाग्निरोग, दद्रु [दादकी] पीडा खुजलकी पीडा औरसफेद दाग के कुष्टरोगका भय होता है ७८

नेत्रपाणि अवस्थामे गयाहुआ मंगल लग्नमे गयाहोतो सर्पकेदांतका जखम (सांपकेकाटनेकादुःख) और अग्निका तथा जलकाभयहोवेगा७९

चंद्र और शुक्र येदोनो छठे अथवा आठमें भावमे गयेहोतो मंदाग्नी रोगवाला तथा उदरके रोगवालाहोताहै ८०

केतु और चंद्रमा का योग तीसरे भावमे होतो भ्रातृहीन और धनवान् होताहै ८१

छठेमंगल सातमेभावमेराहु आठमेशनि क्रमसेगयेहोतो स्त्री जीवित नहीरहे और भ्रातृहीनहोवेगा ८२

राहु और चंद्रमापापग्रहसे युतहोकर बारमे भावमें गयेहोतो उन्माद (पागलपनके) रोगवाला और कलहशील [झगडालू] होताहै ८३

कारकांशलग्नमेराहुगयाहोतो धनुष्यरखनेवाला अथवा चोरहोताहै८४

कारकांशलग्नमे शुक्रगयाहोतो राजसेवी (राजमेनोकरी करनेवाला) और कामीहोताहै ८५

तृतीयेश शुक्रसे युतहोतो कामी और कलहकरनेवाला होताहै ८६

सप्तमभावमे गयाहुवा मंगल पापग्रहसे युतदृष्टहोतो मूत्रकृच्छ्ररोग- वाला तथा नपुंसकहोताहै ८७

पापग्रहोके नवांशमे गयेहुवे बुधचंद्र केंद्रमें गयेहोतो विस्मयशील, दयालु, और भ्रमयुक्त होताहै ८८

धनेश लाभमे अथवा नवमभावमे गयाहोतो उद्योगी धनवान् और गुणी होताहै ८९

लग्नेश बारमेभावमे पापग्रह दशमेभावमे और चंद्रमा मंगलसे युतहोकर कोईभीभावमे गयाहोतो परदेशमे रहनेवाला भीखमागके- खानेवाला दुखी मनुष्यहोताहै ९०

गुरु और धनेश ये दोनो छठे तथा बारमे भावमे गयेहोतो क्लेश भोगनेवाला और द्रव्यहीन मनुष्यहोताहै ९१

अधियोग।

चंद्रात्सौम्याः षष्ठादिव्ययगाश्चमूपसचिवभूपोबलतारतम्यात् ९२

टीका–चंद्रमासे छठे सातमे आठमे भावमे शुभग्रहगयेहोतो ग्रहोके बलकेतारतम्यभेदसे सेनापति, मंत्री और राजाहोताहै अर्थात् चंद्रमासे छठेस्थानमे सर्वशुभग्रह गयेहोतो सेनापति और सप्तमस्थानमे सर्व शुभ ग्रहगयेहोतो मंत्री तथैव अष्टमभावमे सर्वशुभग्रह गये होतो राजा होताहै। इनग्रहोके अधिक बलवान् होनेसे बलवान् और हीनबली होनेसे निर्बल योगसमझना ९२

जैसे चंद्रसे यह अधियोग कहाहै वैसेहि जन्मलग्नसेभी छठे सातमे आठमे भावमेसर्व-शुभग्रहोके जाननेसे अधियोगहोताहै और उसका फलभी उपरोक्त फलके अनुसारही होताहै।

अनफा सुनफा दुर्धरा तथा केमद्रुम योगलक्षण।

चन्द्राद्व्यन्यो व्ययेऽनुफा धनेसनुफा उभयत्र दुरुधरा- न्यथा केमद्रुमः ९३

टीका–चंद्रमासे रविके विना अन्य कोईग्रह व्ययभाव मे गयेहोतो अनुफा धनभावमे गयेहोतो सनुफा और बारमे और दूसरे दोनों भा- वोमें गयेहोतो दुरुधरा और बारमे तथा दूसरेदोनो भावोंमे कोईभी ग्रह नहींगयाहो तो केमद्रुम योगहोताहै ९३

सनुफा योग फल ।

सनुफायांराजातत्समो वा धीधनख्यातिमांश्च ९४

टीका-सनुफा योगमेंजन्महोतो राजा वा राजाके समान भाग्यशाली बुद्धिवान धनवान और सत्कीर्तिवाला प्रसिद्धपुरुष होता है ९४

अनुफा योग फलं ।

अनुफायां प्रभुः शीलवान् ख्यातो निरोगी ९५

टीका-अनुफायोगमे जन्महोतो राजा वा राजाके समान भाग्यवान् शीलगुणसम्पन्न प्रसिद्ध और निरोगी पुरुष होता है ९५

दुरुधरायोग फलं ।

दुरुधरायां धन वाहनाढ्योत्पन्नभोगसुखभुक् ९६

टीका-दुरुधरायोगमे जन्महोतो धन और वाहनके सुखसे युत और धनादिककी प्राप्तिसे अनेक सुखभोग भोगनेवाला होता है ९६

केमद्रुमयोग फलं ।

केमद्रुमे मलिन दुःखितनीचनिःस्वो नृपजोपि ९७

टीका-केमद्रुमयोगमे जन्महोतो राजाके यहां जन्मपायाहुवा मनुष्य भी मलिनस्वभावका वा मैलारहने वाला दुखी नीचप्रकृतिवाला नीचे दर्जेका और निर्धन मनुष्य होता है अर्थात् साधारण मनुष्य के भंग रहित यह योग होतो वह दरिद्रीहुये विना रहतानहीं ७७

केमद्रुमभंग योग-जातकपारिजातमेंलिखा है ।

निशाकरेकेंद्रगते भगोवा जीवेक्षिते नैवदरिद्रयोगः शुभान्वितेवाशुभ मध्यगेंदो जीवेक्षिते नैवदरिद्रयोग ३६

चंद्रेतिमित्र निजतुंगगृहांशवस्थे जीवेक्षिते यदि दरिद्रतयाविहीनः पूर्णेतनौशुभयुते विदितुंगजाते जीवेक्षिते हिमकरेनभवेदरिद्रः ३७

वृदरराशरे=प्रालेयांशुःसूतिकालेयदावासर्वैःखेटैर्वीक्ष्यमाणः करोति दीर्घायुष्यं राजयोगं मनुष्यं सत्कोशाढ्यं हंति केमद्रुमं च ५७

अर्थात् जिसके जन्म समय मे

(१) चंद्रमा अथवा शुक्र केंद्रस्थानमे स्थितहो और गुरुसेदृष्ट हो तो केमद्रुमयोग का भंग (दरिद्रयोगनहीं) करताहै ।

(२) चंद्रमा शुभग्रहसेयुतहो अथवा शुभग्रहोंके मध्यमे

और गुरुसे दृष्टहोतो केमद्रुम योग नही होताहै ।

(३) चंद्रमा अधिमित्रराशी का किंवा अपनी उच्चराशीका हो अथवा अधिमित्र तथा अपनी उच्चराशीके नवांशमे गया हो और गुरुसे दृष्टहोतो केमद्रुम योग नही होताहै ।

(४) पूर्णचंद्रमा शुभग्रहसे युतहोकर बुधकी उच्चराशीमे गयाहो और गुरुसे दृष्टहोतो केमद्रुम योग नही होताहै ।

(५) चद्रमा सर्वग्रहोसे दृष्टहोतो केमद्रुम योग का भंग कर-ता है ।

इन पांच योगोमे से अेक भी योग जिसके जन्मसमेय मे नही हो उसके केमद्रुम योग का फल अवश्यहोवेगा ।

एकस्मिन्नप्युच्चगे समित्रे प्रचुरधनः सिद्धः ९८

सबलेखेशेकेन्द्रकोणेयज्ञकूपापतनकर्तादेवतातिथिपूजकः ९९

शुभावक्रगाराज्यार्थदाः पापाव्यसनधनहानिदाः १००

सर्वेसौम्यास्त्र्यायारिगा बाल्येसुखी तत्रैवपापावयसोन्त्ये १०१

इति महादेवकृत जातकतत्वे प्रकीर्णतत्वं तृतीयम् ३ ।

टीका-यदि अेकभी ग्रह अपनि उच्चराशीमे गयाहो और अपने मित्र ग्रहसे युत होतो बहुतधनवाला तथा सिद्धपुरुष होता है ९८

बलवान् दशमेश केंद्रत्रिकोणस्थान [१।४।७।१०।९।५] मे गयाहो तो यज्ञ तथा कुआ बावडी आदि जलाशय करनेवाला तथा देवालयादि करनेवाला और देवता तथा अतिथिको पूजनेवाला होताहै ९९

शुभग्रह वक्रगती मे गयेहोतो राज्य और धनका लाभदेतेहै और पापग्रह वक्रगती मे गयेहोतो दुःख आपत्ति तथा धनकी हानीको देतेहै १००

सर्वशुभग्रह तीसरे ग्यारमे किंवा छठेभावमे गयेहोतो बाल्यावस्थामे सुखी पुरुषहोताहै और इनही भावोमे पापग्रहगयेहोतो आयुके उत्तरार्द्धमे (बुढापेमे) सुखीहोताहै १०१

इतिश्री गणकवर्य श्रीमन्महादेवकृत जातकतत्वाख्य जातकग्रंथे तत्सूनुश्रीनिवासरचित तत्त्वप्रदर्शिनिभाषाटीकायां प्रकीर्णतत्वं तृतीयम्

अथ स्त्री जातकतत्वम् ।

यत्पुंजातकोक्तं तत्सर्वं स्त्रीणामपि १

स्त्रीणामसंभवंपतिषु २

लग्नचन्द्रतः शरीरं तत्सप्तमाष्टमतः सौभाग्यवैधव्ये ३

लग्नेन्द्वोः समभे स्त्री स्त्री स्वभावाशुभदृष्टेसच्छीलभूषणगुणा४

विषमर्क्षेतयोः पुरुषाकृति शीलयुक्तापापयुतदृष्टे पापिनी गुणरूपहीना ५

तयोर्यो बली तत्रिंशांशे फलम् ६

टीका-जो फल पुरुष जातक में पुरुषोंके लिये कहागयाहै वही सर्व फलस्त्रियोंकेभी जानना १

पुरुष जातकमें कहे हुये फलोंमेसे जो फल स्त्रियोंके होना असंभव जानपड़े वहफल उसके पतिको होवेगा ऐसाजानना २

लग्न और चंद्रमासे स्त्रीके शरीर (शरीर और उसका वर्णाकृति सुखदुःख आदि) का विचारकरना और उनही (लग्न और चंद्रमा से सप्तमभावमे सौभाग्यका और अष्टमभाव में वैधव्यका विचारकरना३

लग्न और चंद्रमा यदि समराशी २।४।६।८।१०।१२ के हो और शुभ ग्रहसे दृष्टहो तो स्त्रियोंका जैसा स्वभावहोता है वैसेहि स्त्रीके स्वभावकी शील भूषणगुण रूपवाली स्त्री होती है ४

यदि लग्न और चंद्रमा विषमराशी १।३।५।७।९।११ में गयेहोतो पुरुषकी आकृतिवाली [पुरुषके स्वभाव आपण गुणवाली] पतिव्रतादि शीलधर्मयुतास्त्री होती है और यदि पुरुषराशिमें गयेहुये लग्न व चंद्र पापग्रहसे युत और दृष्टहो तो पापिनी गुणरूपहीना स्त्री होती है ५

लग्न और चंद्रमा इन दोनोमेसे जो बलवान् होता है उसके त्रिशांशके फलानुसार उसस्त्रीका स्वभावरूपादि जानना ६

त्रिंशांशफल ।

भौमभे भौमस्यत्रिंशांशे कन्यैवदुष्टाज्ञस्यमायाविनी गुरोः साध्विकिवेकुवृत्तामन्दस्यदासी ७

शुक्रभेशुक्रस्य त्रिशांशे गुणख्याता ज्ञस्यकलाज्ञा गुरोर्गु-
णमयी मन्दस्यपुनर्भूः कुजस्यदुष्टा ८
ज्ञभेकुजस्य त्रिशांशे कपटिनी ज्ञस्यगुणिनी जीवस्य
सती शुक्रस्य कामुकी मन्दस्य क्लैब्यवती ९
कर्के वक्रस्यत्रिशांशेवेश्या ज्ञस्यशिल्पज्ञा जीवस्यगुणा-
ढ्याशुक्रस्यकुलटामन्दस्यपतिघ्नी १०
सिंहेकुजस्य त्रिशांशेनराचारा ज्ञस्यपुंश्चेष्टिता गुरोराज्ञी
शुक्रस्यपुत्रगामिनी मन्दस्यकुलच्युताः ११
जीवर्क्षे कुजस्यत्रिशांशेबहुगुणा ज्ञस्यविज्ञा जीवस्यगुणतत्व
विज्ञा शुक्रस्यसती मन्दस्यजारिणी १२
मंदभे वक्रस्यत्रिशांशेदासी ज्ञस्यदुष्टागुरोःसाध्वी शुक्रस्यव
न्ध्या शनेर्जारिणी १३

टीका-लग्न और चंद्रमा इनदोनोंमेसे जो बलवान होवे वह यदि मंगल की राशी (१।८) मे स्थिर होकर मंगलके त्रिंशांशमे गयाहोतो कन्यावस्थामेही दुष्टकार्यकरनेवाली। बुधके त्रिशांशमे होतो मायाविनी (बडीजालप्रपंच करनेवाली) गुरुके त्रिशांशमेहोतो साध्वी, शुक्रके त्रिशांशमे होतो दुराचरणवाली, शनिके त्रिंशांशमेहोतो दासीकेसमान कन्याहोतीहै ७

लग्न अथवा चंद्रमा [इनदोनोंमेसे जो बलवानहो वह] यदि शुक्रकी राशी (२।७) मे स्थित होकर शुक्रके त्रिशांशमे गयाहोतो अपनेगुणसे प्रशंशापाईहुई, बुधके त्रिंशांशमे होतो कलाका कामजाननेवाली, गुरुकेत्रिशांशमेहोतो गुणवती, शनिके त्रिशांशमे होतो पुनर्विवाह करनेवाली, मंगलकेत्रिशांशमेहोतो दुष्टस्वभाववाली होतीहै ८

यदिलग्न अथवा चंद्रमा बुधकी राशी [३।६] मे स्थित होकर मंगलके त्रिंशांशमे गयाहोतो कपटकरनेवाला, बुधके त्रिशांशमे होतो गुणवती, गुरुके त्रिंशांशमेहोतो सती (पतिव्रत धर्मपालन करनेवाली)

शुक्रके त्रिंशांशमे होतो अधिक कामयुता और शनिके त्रिंशांशमे होतो
नपुंसकता (पंढत्व) वालीहोतीहै ९

लग्न अथवा चंद्रमा (इनदोनोमेसे अधिक बलवान्हो यह) यदि
कर्कराशीमे स्थितहोकर मंगलके त्रिंशांशमे गयाहोतो वेश्या (रण्डी)
बुधके त्रिंशांशमे गयाहोतो शिल्पकार्य [सीवना पोना तथा कलाका-
काम] जाननेवाली गुरुके त्रिंशांशमे होतो गुणवती, शुक्रके त्रिंशांशमे
होतो कुलटा (व्यभिचारिणी) शनिके त्रिंशांशमे होतो पतिको मार-
के नाशकरनेवाली होतीहै १०

लग्न अथवा चंद्रमा सिंहराशीमे स्थितहोकर मंगलके त्रिंशांशमे
गयाहोतो पुरुषके आचरणके समान आचरणकरनेवालि बुधके त्रिंशां-
शमेहोतो पुरुषके समानचेष्टाकरनेवाली गुरुके त्रिंशांश मे होतो राजा
कीस्त्री वा राजाकी स्त्रीकेसमान भाग्यवती शुक्रके त्रिंशांशमेहोतो
पुरुषसे गमनकरनेवाली शनिके त्रिंशांशमेहोतो अपनेकुलसे निकालि-
हुईहोतीहै ११

लग्न अथवा चंद्रमा गुरुकी राशी (९।१२) मे स्थितहोकर मंगलके
त्रिंशांशमे गयाहोतो बहुतगुणवति बुधके त्रिंशांशमे गयाहोतो विशेष-
जाननेवाली बुद्धिवती गुरुके त्रिंशांशमे गयाहोतो गुण तथा तत्वज्ञानको
विशेषरीतिसे जाननेवालि शुक्रके त्रिंशांशमे गयाहोतो सती (पतिव्रता)
शनिके त्रिंशांशमे गयाहोतो व्यभिचारिणीहोतीहै १२

लग्न अथवाचंद्रमा शनिकी राशी (१०।११) मे स्थित होकर मं-
गलके त्रिंशांश में गयाहो तो दासीके समान बुधके त्रिंशांशमें गयाहो
तो दुष्टस्वभाववाली गुरुकेत्रिंशांश मे गयाहो तो साध्वि (सदाचरण
युता] शुक्रके त्रिंशांश में गया हो तो वन्ध्या (बाझ) शनिके त्रिंशां
शमें गयाहो तो व्यभिचारिणी होति है १३

स्त्रीतःस्वकामशमनकर्त्री योग ।

मन्दाच्छावन्योन्यांशगा वन्योन्यदृष्टौ वा शुक्रभेङ्ग घटां
शे पुरुषायिताभिस्त्रीभिः स्वकामं शमयति १४

टीका-शनि और शुक्र परस्पर [शनिको शुक्र और शुक्रको शनि]
देखतेहो और परस्परराशी के नवांशमें [शनिके नवांशमें शुक्र और
शुक्रके नवांशमें शनि] गये हो अथवा शुक्रकीराशी [२।७] का लग्न

कुंभराशीके नवांशमें गयाहो तो पुरुषका वेश धारणकी हुई स्त्री से अपना काम शमन करने वालीहोती है १४ [इसमें दो योगहैं]

कुभर्तृका तथा क्लीबभर्तान्विता योग।

सप्तमे ग्रहाभावेऽबले सौम्यादृष्टे कुभर्तृका १५

ज्ञार्कजावस्ते भर्ताक्लीबः १६

टीका-सप्तम भावमे कोईभी ग्रहनहींगयाहो सप्तमभाव निर्बली हो और शुभग्रह उसको देखते नहो तो दुष्टपति युता होतिहै १५

बुध और शनिका योग सप्तमभावमें होतो पति नपुंसक होता है१६

प्रवासी पतियोग।

चरेङ्गे भर्ताप्रवासी १७

टीका-चरराशीका जन्मलग्नहोतो पतिप्रवासी [देशदेशान्तरो में अधिक फिरनेवाला] होता है १७

भर्तात्यज्यते योग।

मदेसूर्ये भर्त्रात्यज्यते १८

पापेऽबलेस्ते शुभदृष्टेभर्त्रात्यज्यते १९

टीका-सप्तभावमे सूर्यगयाहो तो पतित्यागकरदेवेगा १८

निर्बली पापग्रहसप्तमभावमें गयेहो और शुभग्रहसे दृष्टहो तो पति छोडदेवेगा १९

अविवाहयोग।

मदेमन्दे पापैर्दृष्टेअविवाहः २०

टीका-सप्तमभावमेंगयाहुवाशनिपापग्रहोंसेदृष्टहोतोविवाहनहींहोवेगा [कुवांरीही रहेगा] २० सप्तमशे पापयुत दृष्टहो सप्तममे पापयुत होतो ये योग बलवान समझना।

पुनर्भू योग।

मिश्राः सप्तमे पुनर्भूः २१

टीका-सप्तमभावमें मिश्र [शुभ और पाप दोनो] ग्रह गयेहोंतो पुन विवाहकरने वाली तथा नातेजानेवाली होति है २१

अन्यसक्ता योग।

शुक्रच्छायान्योन्यांशगावन्यसक्ता २२

चन्द्राराच्छारसप्तमे वा पुष्पवन्तौ पत्याज्ञयान्यसक्ता २३
लग्नेसितेन्दू मन्दारभगौ पापदृष्टौ जनन्यासहान्यरता २४
कर्केस्ते भौमार्कौपरासक्ता जारिणी २५
लग्नतुर्याष्टमान्त्यमदान्यतमे सपापारे पतित्यागात्परासक्ता २६

टीका–मंगल और शुक्रपरस्परनवांशमे [मंगलके नवांशमें शुक्र और शुक्रके नवांशमें मंगल] गयेहोतो परपुरुषसे संबंधरखने वाली होतीहै २२
चंद्र मंगल और शुक्र ये तीनो सप्तमभावमें गये हो १ अथवा सूर्य चंद्रका योगसप्तमभावमें होतो पतिकी आज्ञासे परपुरुषसे रमणकरने वालीहोती है २३

शनिकी किंवा मंगलकी राशी [१०।११।१।८] के लग्नमें शुक्र और चंद्रमा गयेहो और वे पापग्रहों से दृष्टहो तो माताके सहित अन्यपुरुषसे गमनकरने वाली होतीहै अर्थात माता और स्वयं दोनो परपुरुषरता होतीहै २४

कर्कराशीमे गयेहुवे मंगल और रवि दोनो सप्तम भावमे गयेहोतो परपुरुषमे आसक्त और व्यभिचारिणी होतीहै २५

लग्न चतुर्थ अष्टम व्यय और सप्तम इनपांचोभावोमे से किसीभी भावमे पापग्रहसे युक्त मंगल गयाहोवो पतिके छोड़देनेकेकारण से परपुरुषरता होतीहै २६

सरोगभगा वा सद्भगा योग ।

कुजर्क्षांशेस्ते मन्ददृष्टे सरोगभगा २७
सद्ग्रहांशेस्ते सद्भगापतिप्रिया २८

टीका–सप्तमभाव में मंगलकी राशी और मंगलका नवांशगयाहो शनिदेखताहो तो रोगयुक्तभगवाली होतीहै अर्थात् योनीमें रोगहोता है २७
सप्तमभाव में शुभग्रहका नवांशगयाहो तो सुंदर योनिवालि और पति प्रिया होती है २८

पति लक्षण ।

सूर्यक्षांशेयूने पतिर्मन्दरतिः २९
चन्द्रक्षांशेस्ते मृदुः कामीपतिः ३०

मंदेयकर्क्षांशे प्रियः क्रोधिपतिः ३१

ज्ञक्षांशेस्ते पतिर्विद्वान् ३२

जीवभांशेस्तेगुणीजितेंद्रियः पतिः ३३

शुक्रभांशेस्ते कान्तो भाग्यवान् ३४

मन्दभांशेस्ते मुर्खो वृद्धश्वपतिः ३५

मन्देष्टमे पती रोगी ३६

टीका–सप्तमभावमे सूर्यकी राशी [सिंह] और सूर्यका नवांशहो तो पति मंदरतिवाला होता है २९

सप्तमभावमें चंद्रकीराशिकर्क और चंद्रका नवांशहो तो पतिनरम [कोमलशरीरका] और कामी होता है ३०

सप्तमभावमे मंगलकीराशी १।८ और मंगलका नवांशहो तो उसका पतिप्यारा और क्रोधयुक्त होता है ३१

सप्तमभावमें बुधकी राशी ३।६ और बुधका नवांशहो तो पति विद्वान् होता है ३२

सप्तमभावमें गुरुकीराशी ९।१२ और गुरुका नवांशहोतो गुणवान् और जितेंद्री पतिहोता है ३३

सप्तमभावमे शुक्रकीराशी २।७ और शुक्रका नवांशहो तो पतिबड़ा-भाग्यवान् होता है ३४

सप्तमभावमे शनिकीराशी १०।११ और शनिका नवांशहोतो मुर्ख तथा वृद्धपति होताहै ३५

शनि आठमे भावमे गयाहोतो पतिरोगीहोताहै ३६

सुखयुतायोग।

लग्नेशुक्रेन्दु मात्सर्यवती सुखिनी ३७

ज्ञेन्दूलग्ने कलाज्ञागुण सुखाढ्या ३८

ज्ञाच्छावङ्गे दर्शनीया।भर्तृप्रियाकलाज्ञा ३९

शुभाऽग्नगा अनेक सुखगुणाढ्या ४०

ज्ञारेज्याच्छाबलिनः स्त्रीलग्नजाख्याता ब्रह्मवित् ४१

एकस्मिन्द्वयोस्त्रिपुसौम्येपु सप्तमे पतिप्रियाप्रवराराज्ञी४२

क्रूरेस्तेधर्मग प्रव्रज्या ४३

टीका-लग्नमे शुक्र और चंद्रमा गयाहोतो मात्सर्यवति और सुखान्विता होतीहै ३७

बुधचंद्रलग्नमे गयेहोतो कलाजाननेवाली गुण और सुखसंपत्ति युता होतीहै ३८

बुधशुक्र लग्नमे गयेहोतो दिखनेटे शरीरवाली (सुंदरांगी) पतिकीप्यारी कलाजाननेवाली होतीहै ३९

शुभग्रह लग्नमेगयेहोतो अनेकसुख और गुणसे युतहोतीहै ४०

बुधमंगल गुरु और शुक्र ये चारो बलवान्हो और स्त्रीराशी २।४।६। ८।१२ के लग्नमे जन्महोतो प्रसिद्ध [कीर्तिवाली] ब्रह्मनिष्ठा होतीहै४१

एक, दो, किंवा तीन शुभग्रह सप्तम भावमे गयेहोतो पतिप्रिया उत्तम रूपगुणयुता राजाकी स्त्री तथा राजाकी स्त्री के समान होतीहै४२

क्रूरग्रह सप्तम भावमेगयेहो और नवमभावमेशुभग्रहगयाहोतो नवम भावमे गयेहुवे ग्रहके धर्म (पृष्ठ २८३ सूत्र १०५ मे) जो लिखेहे तदनुसार प्रव्रज्या [संन्यासधर्म पालनकरनेवाली] होतीहै ४३

अल्पपुत्रा वा अनपत्या वा मृतापत्यायोग ।

गोकन्यालिसिंहेष्विन्दावल्पपुत्रा ४४

पापभेपापदृष्टेस्तेनपत्या ४५

अष्टमेजीवे वा शुक्रेनष्टगर्भा वा मृतापात्या ४६

टीका-वृषभ कन्या वृश्चिक किंवा सिंहराशीमे चंद्रमा गयाहोतो अल्पपुत्रावाली होतीहै ४४

सप्तमभावमे पापग्रहकीराशी पापग्रहसेदृष्टहोतो संतानरहिता होती है ४५

अष्टमभावमे गुरु अथवा शुक्रगयाहोतो नष्टगर्भा, (जिसकागर्भकाद्यमनहीरहसके ऐसी) अथवा मृतापत्या होतीहै ४६

पुंवदूपायोग ।

मन्देमध्यबलेनृग्रहेपुसबलेपुशेपेपुनिर्बले पुंलग्नजापुंवद्रूपा४७

टीका-शनिमध्यमबली, सर्वपुरुषग्रहपूर्णबली, व इतरशेषग्रह (बुध शुक्र चंद्र) निर्बलीहोवे और पुरुषराशी[१।३।५।७।९।११] केलग्नमे जन्महोतो वह स्त्री पुरुषके समान हरेक काममे धीठ (मजबूत) होतीहै ४७

दु खार्ता तथा कुलद्वयघ्नीयोग।

द्यूनेराहौकुलदोषदादुःखार्ता ४८

लग्नेन्दू पापान्तरगौसौम्यादृष्टौ कुलद्वयघ्नी ४९

कुजेष्टमे कुलटा ५०

रंध्रेराहौ कुलधर्मघ्नी ५१

सूर्येष्टमे संतापयुक्ता ५२

टीका-सप्तम भावमे राहुगयाहोतो कुलको दोषलगानेवाली और दुःखसे पीडित होविहै ४८

लग्न और चंद्रमा ये दोनो पापग्रहोके मध्यमे गयेहोऔर शुभग्रहोसे दृष्टनहोतो दोनो कुल (पतिकुल और पितृकुल) का नाश करने वाली होतीहै ४९

मंगल आठमे भावमे गया होतो कुलटा[व्यभीचारिणी]होतीहै ५०

अष्टम भावमे राहु गयाहोतो कुलधर्म का नाशकरनेवाली होतीहै ५१

अष्टम भावमे सूर्य गया होतो संताप करने वालीहोतीहै ५२

बालविधवा तथा विधवा योग।

सप्तमे भौमे पापदृष्टे बालविधवा ५३

लग्नचंद्रान्यतरतःपापाः सप्तमेष्टमे वा विधवा ५४

भौमर्क्षे राहौ सपापेष्टमे व्यये विधवा ५५

द्यूनेङ्गेपापे विवाहोत्तरं सप्तमाब्देरण्डा ५६

षष्ठेऽष्टमे चंद्रेऽष्टमाब्देरण्डा ५७

सप्तमेरन्ध्रेशे रंध्रेसप्तमेशेपापदृष्टे नवोढारण्डा ५८

पष्ठाष्टमेशोपष्ठे वा व्ययेपापयुते नवोढारण्डा ५९
पापेष्टमे ष्टमेशांशेशदशायांविधवा ६०

टीका–सप्तमभावमे गयाहुवा मंगल पापग्रहसे दृष्टहोतो बालविधवाहोतीहै ५३

लग्न अथवा चंद्रमासे सातमे किंवा आठमे भावमे पापग्रह (तीन च्यार पापग्रह) गयेहोतो विधवाहोतीहै ५४

मंगल की राशी १।८ मे गाहुअभा राहूपापग्रहसे युक्तहोकर आठमे भावमे किंवा बारमे भावमे गयाहोतो विधवाहोतीहै ५५

सप्तमभावमें और लग्नमे पापग्रह गयेहो (दोनोंभावोंमे पापग्रहगयेहो) तो विवाह होनेकेपश्चात्सातमे वर्ष विधवाहोतीहै ५६

छठे किंवा आठमेभावमे चंद्रमागयाहोतो आठमे वर्ष विधवाहोतीहै परंतु यदियें चंद्रमा क्षीण तथा नीच शत्रु राशिगतहो और पापग्रहसे युतदृष्टहोतो उक्त फल मिलनासंभवहै केवल चंद्रके छठेआठमे जानेसे ही आठमे वर्ष रंडाहोनेका योग यद्यपिसूत्रमे कहाहै तथापि असंभव जानपड़ताहै ५७

अष्टमेश सातमे भावमें और सप्तमेश आठमेभावमे गयाहो पापग्रहसे दृष्टहोतो नवोढावस्था (युवावस्था) मेही विधवाहोतीहै ५८

छठे और आठमे स्थानके स्वामि छठे किंवा बारमे भावमे गयेहो और पापग्रहसे युतहोतो युवावस्थामे विधवाहोवेगा ५९

पापग्रह अष्टमस्थानमे गयाहोतो अष्टमेशके नवांशका स्वामि जो ग्रहहो उसकी दशांतर्दशामे विधवाहोवेगा ६०

विषकन्यायोग तथा तत्फल ।

मन्दाश्लेषाद्वितीयायांजाताविषाख्या ६१
सूर्यवारुण द्वादश्यांजाताविषाख्या ६२
कुजविशाखा सप्तम्यांजाताविषाख्या ६३
पापेङ्गे सशुभे पापावरिगौजाताविषाख्या ६४
पुत्रेर्के मन्देङ्गे भौमेङ्के विषाख्या ६५

सादुर्भगामृतापत्याधनोना शोकार्ता ६५

टीका-शनिवारअश्लेषानक्षत्र और द्वितीयातिथी येतीनो जिसदिन मिले उसदिन जन्महोतो विषकन्या होती है ६१

रविवार शतभिषानक्षत्र और द्वादशी तिथि येतीनो जिसदिन मिले उसदिन जन्महोता विषकन्या होती है ६२

मंगलवार विशाखानक्षत्र और सप्तमीतिथी येतीनो जिसदिनहो उसदिन जन्महो तो विषकन्या होती है ६३

शुभग्रहसे युतपापग्रह लग्नमेंगयाहो और दो पापग्रहछठे भावमे गये हो ऐसेयोगमें जन्मे वह विषकन्या होती है ६४

पाचमे रवि लग्नमेशनि नवमेमंगलगयाहो ऐसे योगमे जन्म पावे वह विषकन्या होती है ६५

जिसके विषकन्यायोग हो वह विषकन्या भाग्यहीन मृतप्रजा धनरहिता (दरिद्रिणी) और शोकसंतापयुता होतीहै ६६

विषकन्याभंगयोग।

द्यूनपे वा शुभेस्ते विषाख्यान ६७

टीका-सप्तमेश अथवा कोई शुभग्रह सप्तमभावमें गयाहोतो विषकन्यायोग नही समझना अर्थात् जिसके विषकन्या योगहुवाहो उसके जन्मलग्नसे सप्तमभावमें सप्तमेश वा कोई शुभग्रहगयाहो तो विषकन्या योगकाभंग (नाश) होजाता है ६७

काकवन्ध्या तथा वंध्यायोग।

ज्ञेष्टमे काकवन्ध्या ६८

मन्दार्कावष्टमे वन्ध्या ६९

टीका-आठमें भावमे बुधगयाहोतो काकवन्ध्याहोती है अर्थात् अेक बार संतानहोकर फिर संतान नहीहोवे एसी होती है ६८

शनि और रवि ये दोनो आठमें भावमे गये होवे तो वंध्या (वाझ) होती है ६९

इत्थं विवाहकाले प्रच्छायां च चिन्त्यम ७०

इतिस्त्रीजातकं चतुर्थं तत्त्वम्।

टीका-इसीप्रकार फलका विचार विवाहसमयमें और प्रश्नसमयमे भी जानना।

इनके सिवाय पंचांगफल ग्रहोंकाभावफल राजयोगादिकफलका विशेषविचारजानना हो तो श्री जातकमें देखना।

इतिश्री गणकवर्य्य श्रीमन्महादेवकृत जातकतत्त्वाख्य जातकग्रंथे तत्सूनु श्रीनिवास रचिततत्त्वप्रदर्शिनी भाषाटीकायां स्त्रीजाततत्त्वं चतुर्थम ४

अथ दशातत्त्वारम्भः।

दशाविचार।

ग्रहोभावराशिदृग्योगजीविकादिफलं स्वदशांतर्दशायांददाति १

टीका-भावजनित राशिजनित दृष्टिजनित योग तथा सम्बंधजनित तथा जीविकादि जितने शुभाशुभ फल ग्रहो के कहेगये है वे सर्वफल ग्रह अपनि दशा अंतर्दशामे देते है १

संपूर्णा दशाफलं

अतिबलस्यपरमोच्चगस्य वा दशासंपूर्णाभिधाधनारोग्य विवर्धिनी २

टीका-जो ग्रह अतिबलवानहो अथवा परम उच्चराशीमे गयाहो उसकी दशा संपूर्णानामकीहोतीहैयहदशा धन आरोग्यकोबढानेवाली जानना २

पूर्णादशाफल।

किंचिद्बलोपेतस्योच्चगस्य पूर्णाधनदा ३

टीका-जोग्रह किंचिद्बलवान् हो और अपनी उच्चराशीमे गयाहो उसकी दशा पूर्णानाम की होती है यह धनलाभ करने वाली जानना ३

रिक्ता दशाफल।

विबलस्य वा नीचगस्य रिक्ता धनहानिदा ४

टीका-जोग्रह निर्बली हो किंवा अपनी नीचराशीमे गयाहो उसकी दशा रिक्तानाम की होतीहै यह धनहानी देनेवालीजानना ४

अनिष्टादशाफल ।

परमनीचगस्यवानीचांशगस्य वारिपुंशगस्यानिष्टाधनारो-
ग्यनाशिनी ५

टीका-जोग्रह परमनीच राशीमे गयाहो अथवा नीचराशीके नवांश मे गयाहो किंवा शत्रुराशी के नवाश मे गयाहो उसकी दशा अनिष्टा नाम की होतीहै यह दशा धनका और शरीरके आरोग्यका नाशकरने वाली जानना ५

अवरोहिणी दशाफल ।

नीचाभिमुखस्यावरोहिणी कष्टदा सैव मित्रोच्चराश्यात्मां-
शगस्यमध्यमा ६

टीका-जोग्रह अपनी उच्चराशीको छोड़कर नीचराशीके तरफ जाने-वालाहो अर्थात् अपनी उच्चराशी के आगेकी नीचपर्यंतकी छराशी मे हो उस की दशा अवरोहिणी नामकी होतिहै यह कष्टदेनेवाली जानना यदि यही अवरोहिणी दशा अपनेमित्र तथा उच्चराशीके अथवा अपनी स्वराशी के नवांशमें गयेहुवे ग्रहकीहोतो मध्यम फलदेनेवाली जानना६

आरोहिणी दशाफल ।

उच्चाभिमुखस्यारोहिणी शुभदा सैवनीचारिभांशगस्या
धमाल्पशुभदा ७

टीका-जोग्रह अपनी नीचराशी को छोड़कर उच्चराशी की और जानेवालाहो अर्थात् अपनी नीचराशी के आगेकी उच्चराशीपर्यंतकी छराशी में गयाहो उसकी दशा आरोहिणी नाम की होतिहै यहदशा शुभफल देनेवालीजानना यदि यही आरोहिणीदशा अपनी नीच तथा शत्रु राशीके नवांशमे गयेहुवे ग्रहकीहोतो अधमा और अल्पशुभफल देनेवालीहोतीहै ७

पूर्वार्द्धेशुभापरार्द्धे मिश्रादशाफलं ।

तुंगात्ममित्रभगस्य शत्रुनीचांशगत्वे पूर्वार्द्धेशुभापरार्द्धेमिश्रा८

टीका-जोग्रह अपनी उच्चराशी तथा स्वराशी वा मित्रराशिमे गया-हो और यदि वह अपनी शत्रु किंवा नीचराशीके नवांशमे होतो उसकी

दशा पूर्वार्द्धमे [आधी] शुभ और उत्तरार्द्धमे मध्यम फल देनेवाली होवेगा ८

शुभदशा ।

मित्रोच्चात्मस्वत्रिकोण वर्गोत्तम स्ववर्गस्यशुभा ९

टीका-जोग्रह अपने मित्रग्रह की राशी मे तथा उच्चराशीमे,स्वराशी मे या मूलत्रिकोण राशीमे अथवा वर्गोत्तमांसमे (जन्मकालमे जिस• राशीका ग्रहहो उसीराशीका नवांश मे भीहो) अथवा अपनी स्वरा• शीके दशवर्गमे गयाहो उसग्रह की दशा शुभफल देनेवाली जानना ९

कष्टा दशा

अस्तारि नीच भांशगस्य कष्टा १०

टीका-जोग्रह अस्तकाहो अपने शत्रु ग्रह की राशी और नवांश मे गयाहो अथवा नीचराशी और नीचराशीके नवांश में गयाहो उसकी दशा कष्ट देनेवाली अशुभजानना १०

अवरोहिण्यधमाचेत्कष्टा ११

आरोहिणी मध्याचेत्संपूर्णा १२

सद्दृष्टयुतस्याधिकरश्मेः केंद्रकोणगस्य शुभान्यथा कष्टा १३

टीका-जिसग्रहकि अधम संज्ञक अवरोहिणी दशा अर्थात् (जोग्रह अपनी उच्चराशिको उल्लंघन करके नीच राशी के सन्मुख जानेवाली छराशी मे स्थितहोकर (नीचाभी लाषी होकर) अपनी नीच वा शत्रु राशी के नवांश मे गयाहो उसकी दशा नेष्ट [कष्टदेने वाली समझना] जिसग्रहकी आरोहिणी दशा मध्यासंज्ञक अर्थात् जोग्रह अपनी नीच राशिको उलंघन करके उच्चराशीके संमुख जानेवाली छराशीमे स्थितहोकर (उच्चाभीलाषी होकर) अपने मित्र ग्रहकी राशी के वा उच्च राशीके वा अपनी स्वराशीके नवांशमे गयाहो उसकी दशा संपूर्ण उत्तम श्रेष्टफल देनेवाली समझना १२

जोग्रह शुभग्रहसे दृष्ट और युतहो अधिक बलवान् हो जिसकी उच्च रश्मि अधिक आईहो जोकेंद्र वा त्रिकोणस्थान (१।४।७।१०।९।५) मे गयाहो उसकी दशा शुभफल देनेवाली जानना और इससे विपरी

त स्थितिमे गयाहुवा होतो उसकी दशा कष्टदेनेवाली नेष्टजानना। अर्थात् जो ग्रह पापग्रहसे युत और दृष्टहो निर्बली, अस्तंगत, नीच, वा शत्रुराशी गत किंवा राशिसंधिमे अथवा भावसंधीमे गयाहो क्रूर· षष्ठ्यंशमे वा पापांशमें गयाहो २।३।६।८।११।१२ इनछभावोमसे किसी भी भावमे गयाहो उसग्रहकी दशा कष्टदेनेवाली होवेगा १३

लग्नदशाफल.

लग्नदशा चरेभंगे द्रेष्काणक्रमाच्छ्रेष्टामध्याधमा द्विस्वभावेव्यत्ययेन स्थिरेनेष्टेष्टसमा १४

टीका–लग्नकी महादशा यदि चरराशी का लग्नहोतो द्रेष्काणके क्रमसे अर्थात् चरराशीका लग्न प्रथम द्रेष्काणमे होतो उसकीदशा श्रेष्ट दूसरे द्रेष्काणमे होतो मध्यम और तीसरे द्रेष्काणमे होतो अधम फल देनेवाली, एवं द्विस्वभावराशी का लग्न यदि प्रथम द्रेष्काणमे होतो अधम दूसरेमे मध्यम तीसरे द्रेष्काणमे होतो श्रेष्ट फलदेनेवाली और स्थिरराशीका लग्नहोतो यदि वह प्रथम द्रेष्काणमेहोतो नेष्ट दूसरे द्रेष्काणमे होतो श्रेष्ट तीसरे द्रेष्काणमे होतो मध्यमफल देनेवाली दशा जानना १४

वक्रगतिस्थग्रहदशाफलं।

वक्रगस्यपाके स्थानमान सौख्याद्यपचयः १५

टीका–जोग्रह वक्रगतीका हो उसकी दशामे स्थानमान् सुखादिक का ह्रास होवेगा एसाजानना १५

त्रिकेतरगस्यपाके भीष्टसिद्धिः १६

भाङ्गेशरिपुपाके बुद्धिभ्रंशो। राजभयंच १७

राहुयुतस्य दशारिष्टदा १८

रन्ध्रगाङ्गेशस्यपाके तिपीडा १९

इष्टाधिकस्यश्रेष्टा कष्टाधिकस्यनेष्टा समस्यसमा २०

दिग्बलोपेतस्य पाके महाप्रतिष्टास्वदिग्भागे २१

टीका-त्रिकस्थान ६।८।१२ के विना अन्यस्थान मे १।२।३।४।५।७।९।१०।११ गयेहुवे ग्रहकी दशामे अभीष्टकार्य की सिद्धिहोतीहै १६

जन्मराशी और लग्नके स्वामीका जोग्रह शत्रुहो उसकी दशामें बुद्धिभ्रंश और राजभय होताहै १७

जोग्रह राहुसे युतहो उसकी दशा कष्टदेनेवाली होतीहै १८

अष्टम स्थानमे गयेहुवे लग्नेश की दशा शरीरमे अतिपीड़ादायक होतीहै १९

जिसग्रहका इष्ट (केशवीपद्धतीके अनुसार ग्रहो का जो इष्ट कष्ट फल लायाजाता है वह इष्ट) यदि अधिकहोतो उसकी दशा श्रेष्ट और कष्ट फल अधिक होतो उसकी दशा नेष्ट और यदि मध्यम [दोनो इष्टकष्टबलसमान] होतो सामान्य मध्यमफलदेनेवालीहोतीहै २०

जोग्रह दिग्बल से युक्तहोताहै उसकी दशामे महा प्रतिष्ठा और भाग्यकीवृद्धि जिसदिशाका वहग्रह स्वामिहो उसदिशामे होतिहै २१ दिशाके स्वामि बृहज्जातकमेंलिखेहै 'प्रागाद्या रविशुक्र लोहित तमः, शौरिंदु वित्सूरयः अर्थात् पूर्व कास्वामी रवि, अग्नि कोणका शुक्र, दक्षिणका मंगल,नैऋत्यकाराहु, पश्चिमका शनि, वायुकोणका चंद्र, उत्तर का बुध, और ईशान कोणका गुरु, स्वामिहै तदनुसार जानना ।

भावेश दशा फल.

लग्नेश दशाबल धनदा २२
धनेशदशा कष्टार्थदा २३
सोत्थपपाके प्रायेण नेष्टफलम् २४
सुखेश पाके गृहादिसुखं २५
सुतेशदशा विद्यार्थदा २६
षष्ठेशदशा रिपु भयदा २७
जायेशदशाशोकदा २८
मृत्युपदशायां मृत्यु २९
धर्मेश दशायां धर्मक्रिया ३०

खेशदशा नृपाश्रयार्थदा ३१
लभेशदशा लाभदा ३२
व्ययेश दशार्थ हानि कष्टदा ३३

टीका–लग्नेश की दशा बल और धनके देनेवाली श्रेष्ठहोतीहै इस दशामे स्त्री कोपीड़ा भी होतीहै २२

धनेशकी दशा कष्ट (शरीर में पीड़ा तथामरण) और धनलाभ देनेवाली तथा स्त्री को पीड़ा करने वाली होतिहै २३

तृतीयेश की दशा बहुधानेष्टफल देनेवाली ही निकलतीहै तथा भाई की स्त्रीकोभी पीड़ादेतीहै २४

सुखेशकी दशामे घर वाहन चतुष्पद माता मित्रा दिक का तथादेह का सुखहोताहै और प्रायः पिताके शरीरमे कष्टभीहोताहै २५

पंचमेशकी दशामे विद्याप्राप्ती और धनकालाभ तथा सन्मान वृद्धि सुबुद्धिवृद्धि माताका मृत्यु वा माताको पीड़ा होतीहै २६

षष्ठेशकी दशामेशत्रुकाभय औररोगवृद्धि तथा पुत्रकोपीड़ा होतीहै२७

सप्तमेश की दशा शोकदेने वाली तथा शरीरम पीडाकरनेवाली होतीहै २८

अष्टमेश की दशामे मृत्युभयहोताहै तथा स्त्री कीमृत्यु वा विवाहभी होताहै २९

नवमेश की दशामे तीर्थ यात्रा देव दर्शन यज्ञ तथा कन्यादानादि धर्म कार्य और भाग्योदय होताहै ३०

दशमेश की दशामे राज्या श्रय की प्राप्ती और धनकालाभ तथा मान वृद्धि सुखोदय होताहै तथा माता के देहमे पीड़ा भी होतीहै ३१

लाभेशकी दशा धनलाभदेनेवाली और पिताकी मृत्यु कारक होतीहै३२

व्ययेश [बारमे भावके स्वामि] की दशा धनहानी और कष्टदायक होतिहै ३३

अंतरदशाफल ।

पापदशायां पापान्तरे शत्रुतोर्थहानि र्महाभयम् ३४
अन्योन्यषष्ठाष्टमगयो रन्तरे महाभयम् ३५

पाकेशात्त्रिकगस्य भुक्तौ स्थानच्युतिर्हानिश्च ३६
पापपाकेशुभांतरे आदौकष्टंततः सुखम् ३७
शुभपाके शुभांतरे सुखम् ३८
शुभपाके पापांतरे आदौसुखंततोभयम् ३९
रिपुयुक्पापस्य पापदशांतरे विपत् ४०

टीका-पापग्रहकी महादशामे पापग्रहकी अंतर्दशा जबआतीहै तबशत्रु के सबबसे धनकी हानि और महाभय होताहै ३४

पूर्णचन्द्रमा शुभयुत बुध और गुरु शुक्र ये शुभग्रह औरक्षीणचन्द्रमा पापयुतबुध व शनि मंगळ राहु केतु ये पापग्रह यद्यपी माने गयेहै तथापि ग्रहोका शुभाशुभ निर्णय वड्डदायप्रदीपानुसार उक्तपापग्रहभी केंद्रका स्वामिहोतोशुभ और शुभ पाप सर्वग्रह त्रिकोणके (९५के) स्वामिहो तो शुभग्रह मानेजातेहै और तीसरे, छठे, ग्यारमें, तथा आठ मे स्थानके स्वाामे पापग्रह तथा दूसरे बारवे स्थानकेस्वामि शुभहोकर पापसंबंधी होतो पाप और पाप होकर भी शुभका संबंधी होतो शुभफल दाता स्थान तथा संबंध से होता है तदनुसार विचार करनेसे जो शुभ पाप ग्रह हो वह शुभ और पाप जानना।

जो ग्रह परस्पर अकदूसरेसे छठे आठमे स्थानमे गयेहो उसकी अर्थात् जिसग्रहकी महादशाहो उससे छठे किंवा आठमे स्थानमे गयेहुवे ग्रहकी अंतर्दशा मे महाभय कष्टरोग स्थानच्युति आदि नेष्टफल होताहै ३५

जिसग्रहकी महादशाहो उससे त्रिकस्थान ६।८।१२ मे गयेहुवे ग्रह की अंतर्दशा मे स्थानच्युति (स्थान छुटजाना) और धनकी हानि होतिहै ३६

पापग्रहकी महादशामे शुभग्रहकी अंतर्दशा होतो वह अंतर्दशा पहिले आधी कष्टदेनेवाली और उतरती हुई आधी सुखदायक होतिहै ३७

शुभग्रहकी महादशामे शुभग्रहकी अंतर्दशा होतो उसमे सुख वृद्धि धनागम होताहै ३८

शुभग्रहकी महादशामे पापग्रह की अंतर्दशाहोतो वह अंतर्दशा पहिले (पूर्वार्द्ध मे बेठती हुई) आधी सुखादि शुभफल और उतरती हुई [उत्तरार्द्धमे] आधीभय देनेवाली होतीहै ३९

पापग्रह की महादशा मे अपने शत्रुग्रह से युक्त पापग्रहकी अंतर्दशा होतो उसमे विपत्ती प्राप्त होतीहै ४०

दशांतर्दशा प्रवेश समय वशात्शुभाशुभ फल विचार ।

दशान्तर्दशाप्रवेशेसलग्नाः खेटाःस्फुटाःकार्याः ४१

तत्रपाकेशे वा शुभेलग्नोपचयगे दशाश्रेष्टा ४२

अंगेपाकपमित्रवर्गे वा शुभवर्गेदशाशुभा ४३

प्रवेशेस्वर्क्षगेचंद्रे मानार्थसुखं सिंहेऽत्रसुखं भौमभेकलहर्ण ज्ञभेविद्यार्थाप्ति जीवभेऽपिमानार्थसुखं शुक्रभेकुदार मान यशोर्थाप्ति मन्दभेक्षेवा ४४

त्रिकेतरस्थे सबलेचंद्रेदशाश्रेष्टा ४५

मुख्यदशेशोच्च मित्रस्वभस्थः सन्दशेशाधिष्ठित राशि त उपचय त्रिकोणास्तगश्चेच्चन्द्रः शुभफलदोन्यथानेष्टः४६

चंद्राधिष्ठितो राशिर्जन्मनिपक्षाव गस्तद्भावोत्थंशुभमशुभं वाज्ञेयम् ४७

विपत्कर्तृदशारम्भे सर्वाधिकबलः कोपिसद्वर्गगः शुभमित्रदृष्ट श्चेन्नविपत् ४८

टीका–महादशा तथा अंतर्दशाके प्रवेश समयमे अर्थात् दशाअंतर्दशा जिससमय प्रवेश हो उस समयके स्पष्टग्रह लग्न और भाव, चलितादि करना और उसपरसे दशान्तर्दशा का शुभाशुभ फल ज्ञान करना ४१

दशाप्रवेश समयकि लग्नकुंडलीमे दशेश (जिस ग्रहकी दशातर्दशा प्रवेशहो वह) अथवा शुभग्रह लग्नमें तथा उपचय ३।६।१०।११ स्थान मे गयाहो तो वहदशा श्रेष्टफल देनेवाली होतीहै ४२

दशाप्रवेश समयके लग्नमे यदि जिसग्रहकी दशाप्रवेशहुई हो उस ग्रहका और उसके मित्रग्रह का वर्गहो अथवा शुभग्रहकावर्ग होतो वह प्रवेशहुईदशा शुभफल देनेवाली समझना ४३

जिसदिन जिससमय दशाप्रवेश हो उस समयका चंद्रमा यदि स्वराशी (४) का होतो मान धन और सुखका लाभ होवेगा, यदि सिंह राशीका होतो भत्रका सुख होगा, मंगल की राशी १।८ का होतो कलह [लड़ाई] और ऋण [कर्जा] बढ़ेगा, बुधकी राशीका ३।६ का होतो विद्या की और धनकी प्राप्ती होगा, गुरुकी राशी ९।१२ का होतो कृषि [खेती] मान, धन, और सुख, की वृद्धि होगा। शुक्रकी राशी २।७ का होतो कुदारा [खरावस्त्री] से संग और मान यश धना ।दकको प्राप्तीहोगा। शनि की राशी १०।११ का होतो सेवाका सुख होगा [सेवाकरने करानेका सुख मिलेगा] ४४

दशाप्रवेश समयका चंद्रमा बलवानहोकर यदि प्रवेशसमय की लग्न कुंडलीमे त्रिकस्थान ६।८।१२ के विना अन्यस्थान १।२।३।४।५-७।९।१०।११ मे गयाहोतो वह दशा श्रेष्ठफल देनेवाली जानना ४५

जिसग्रह की दशा प्रवेशहो वह मुख्यदशाका स्वामी यदि दशाप्रवेश समयमे अपनी उच्चराशी मित्र तथा स्वराशी मे स्थित होकर दशाप्रवेश लग्न कुंडलीमे जिसभावमे गयाहो उसभावस्थित राशीसे उपचय ३।६।१०।११ तथा त्रिकोण ९।५ स्थानमे तथा सप्तम भावमे चंद्रमा गयाहो तो वह चंद्रमा दशाका फल [जिस ग्रहीदशातदेशा प्रवेशहो उसका फल] शुभदेवेगा और इससे विपरीत [१।२।४।५ ८।९।१२ स्थानमे गया] हो तो नेष्टफल होवेगा ४६

दशाप्रवेश समयका चंद्रमा जिसराशीमे गयाहो वहराशी जन्म कुंडलीमे जिसभावमे गईहो उसभावजनित जो शुभ अथवा अशुभफल चंद्रकादे उसीकेसमान शुभाशुभफल जानना। उदाहरणार्थ कल्पनाकरो वह चंद्रमा धनभावमे गयाहै और धनभावमे चंद्रमा शुभफलदाताहै तो दशाप्रवेशसमय मे भी वह चंद्रमा शुभफलदाता होवेगा। एवं वह चंद्रमा अशुभफलदाताहै तो दशाप्रवेशमेभी अशुभफलदेगा।

विपत्ति करनेवाली [अशुभफलदेनेवाली] दशाप्रवेशहो उससमय यदि कोई ग्रह सर्वग्रहोसे अधिक बलवान होकर शुभग्रहोके वर्गमे गयाहो और शुभ तथा अपने मित्रग्रहसे दृष्ट हो तो विपत्ति नहीहोगा (अशुभफलनहीहोगा) एवं उपरोक्तप्रकारका सर्वाधिकबलीग्रह अशुभफलदायक दशाके स्वामिको देखताहोतो अवश्य अशुभफल-नहीहोगा ४८

मह्नारवशेन अष्टवर्गज शुभाशुभफलविचार।

जन्माङ्गचन्द्रान्यतरतश्चारवशेनोपचयगोग्रहश्चे न्मित्रोच्च मूलत्रिकोणाभिगो ष्टवर्गजंशुभंपूर्णमशुभंस्वल्प दिशतिअन्य थानेष्टं पूर्णशुभंस्वल्प तत्रापितारतम्यात्कथनीयम् ४९

टीका-जन्मलग्नसे अथवा जन्मके चंद्रमासे जोग्रहराशीके भ्रमण वशात् उपचयस्थान ३।६।१०।११ मेगयाहो और अपने मित्रग्रहकी राशीमे तथा उच्च अथवा मूलत्रिकोण राशीमेगयाहो वह ग्रह यदि अष्ट वर्गमेभी शुभफल देनेवाला (अधिकरेखैक्ययुत) होतो शुभफलपूर्णदेवेगा और अशुभफल स्वल्पदेवेगा और विपरीतहोतो अर्थात् जन्मलग्नसे अथ॰ वा चंद्रमासे अनुपचयस्थान १।२।४।५।७।८।९।१२ मेगयाहो औरशत्रु तथा नीच राशीमे गयाहो अथवा अस्तकाहो पापयुतदृष्टहो और अष्टवर्गमे अशुभफल देनेवाला (स्वल्परेखैक्ययुत) होतो नेष्टफलपूर्ण और शुभफलस्वल्पदेवेगा इनमे शुभाशुभफलके तारतम्यभेदसें विचार करके शुभाशुभफलग्रहोका गोचर विचारसे कहना ४९

इसपद्धतीसेही ग्रहोका राशीभ्रमणद्वारागोचर से शुभाशुभफल विचा॰ र जन्मलग्न और जन्मस्थचंद्रसे पाश्चात्य विद्वान गण भी वर्ष मास दिन घटीपर्यंत का करतेहै और वास्तव मे इसप्रकार विचार करना दशाफलविचाकी अपेक्षा अधिकसुगमऔर सरल व युक्तियुक्त प्रतीत॰ होताहै मैने स्वयंअनुभवकरकेदेखाहै कि उपरोक्त सूत्रानुसार ग्रहोका॰ फल विचारकरनेसे बराबरशुभाशुभफल मिलतेजातेहै।

अनुभूतिप्रदन्नाम ज्योतिषंशास्त्रमुत्तमम्।
निगमान्निर्गतं लोकवंद्यं विजयतेतराम् १
जैमिन्याद्युक्तितः सारंनवनीत मिवोद्धृतं ॥
महादेवेनविदुषा स्वादयन्तुसुबुद्धयः २

टीका-वेदसेनिकलाहुवा (वेदाग या वेदकाचक्षुरूपशास्त्र) और सर्वलोकोसे वंदित (सम्मानित) प्रत्यक्ष अनुभवको प्रदर्शितकरनेवाला

ज्योतिषनामका जो उत्तम शास्त्रहै यह विजय (विशेषजय) को प्राप्त होतारहो १

ग्रंथकर्ता महादेवजी विद्वद्वर्य्य लिखतेहैं कि जैमिनी आदि मुनिवर्य्यों नेजोफलविचारकेलिये अनेकग्रंथलिखेहैं उनकासार ग्रहण करके जैसेदहीमेसे मक्खन निकालतेहैं वैसेही अनेकग्रंथोमेसे नवनीत रूपयह ग्रंथनिकालाहै इसकास्वाद सुबुद्धिवाले विद्वानगण लेतेरहें॥ २

इतिमहादेवकृतजातकतत्वे दशातत्वं पञ्चमम् ५

इतिश्री गणकवर्य्य श्रीमन्महादेवकृत जातकतत्वाख्य जातकग्रंथे तत्सूनु श्रीनिवासरचित तत्वप्रदर्शिनि भाषाटीकायां दशातत्व पञ्चमं ५ समाप्तः ।

ग्रंथकर्ताकानिवास स्थान और ग्रंथसमाप्ति का समय वर्णन ।

गद्यम् ।

ल्या जनितदीपोत्सवसुखं चन्द्रचुम्बिना प्रसादिना प्रसादेन जनितजननयनानन्द प्रतिकूलभद्रपूलेन निरस्तप्रावृषिज वृजिनौघं वर्वर्त्यत्र वसता पराशरवंशपाठक रेवाशङ्करसुनुनो दुम्बरेण महादेवेन विष्णुसहायेनाष्टाविंशदधिकैकोनविंशतिश-ततमेविक्रमवत्सरे (१९२८) फाल्गुनशुक्लपञ्चम्यां जातकतत्वं नाम ग्रन्थोनीतः पूर्णताम् ।

तात्पर्य-अवंतिकापुरी जिसको उज्जैन कहतेहै उससे पश्चिममे छयोजन [२४ कोश] पर राठोडकुलभूषण श्रीमद्दलवंतसिंहजी महाराजाके पुत्र भैरवसिंहजीके पुत्र श्रीमद्रणजीतसिंहजी माहारानासाहबकी राजधानी का रतलाम शहरहे जिसका शासन उक्त माहाराजाकीसुकुमारावस्था होनेकेकारण उनकी औरसे सहायकरूपसे अतीधीर गंभीरस्वभावके सुदूरदर्शीविचारवान । मी० सहामतअलीजी [सुप्रिन्टेन्डेन्ट] साहब बड़ीचतुरतासे सुंदरबगीचा तथा उत्तमपाठशाला (संट्रलकालेज) अतिविशाल राजभवन (महल) और बड़ी बडी अनेक सड़के पुले तथा उत्तम रोशनीका प्रबंधादि अनेक दर्शनीय शहरको शोभादेनेवाले मनो रंजक कार्यकी योजनाकरकेन्यायानुसारकार्यचलारहेहै ऐसे सुन्दर नगर मे निवासकरनेवाले उदुंबर ज्ञातिय पाराशर गोत्रमे उत्पन्न पाठकोपनाम वाले रेवाशंकरजी के पुत्र महादेव शर्माने विष्णुशास्त्रीजी की सहा यतासे विक्रम सम्वत १९२८ के फाल्गुन शुक्ल पंचमीके दिन यह-जातक तत्त्व नाम ग्रंथ संपूर्ण किया ।

श्लोक-आसीद्रत्नपुरे पराशर कुलोत्पन्नो द्विजोदुम्बरः। ख्यातःपाठक नामतो गुणनिधिः श्रीनन्दरामाभिधः ॥ तत्सूनुर्गणितागमज्ञतिलकः श्रीमोतीरामाह्वयो । रेवाशङ्कर आगमेषुनिपुणस्तस्मादभूद्धार्मिकः १ तदात्मजउदारधी र्गणकमौलि चूडामणि । रभूद्धरणिमंडले गुणनिधि-र्महादेववित् ॥ तदङ्गजनुषा मधौ नगगुणाष्टचंद्रैर्मिते शकेविनिरमादिदं विवरणं सतांप्रीतये २

21362 भाषाटीकासहित श्चायंग्रंथस्समाप्तः ।

———

अशुद्धशुद्धपत्रम्।

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्धं	शुद्धं
१	१७	कीट	कटि
२	१०	राव	रवि
२	१४	चरस्थि	चरास्थि
२	१९	तल ,	तुल
३	९	᳚दावाः	द्रावाः
३	१९	चंर	चर
४	२	हारा	होरा
४	१४	ढोइ ;	अढ़ाई
५	३	द्विस्व	द्विस्न
५	१४	टीक	टीका
५	२५	रह	रहे
६	१७	ष्ठ्यंशे	पष्ठ्यंशे
६	१९	ष्तात	स्पात
७	२	पष्ठ्यंशेष क्रमसेधोर	पष्ठ्यं-शेशघोर
७	५	गिननेस	गिननेसे
७	५	पष्ठ्यंहोवे	पष्ठ्यंशेश होवेगा
७	६	पष्ठ्यं शेष	पष्ठ्यंशेश
७	१९	दष्ट्रा	दंष्ट्रा
८	१८	कहतहै	कहतेहै
८	२०	२९ अंश	२९ मा अंश
८	२२	तल	तुल
८	२३	व्रश्चिक	वृश्चिक
९	१६	यपापग्रह	येपापग्रह
९	१९	बुध गुरु	बुधऔरगुरु
९	२१	सज्ञक	संज्ञक

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्धं	शुद्धं
१०	१	चंद्राकेज्या	चंद्रार्केज्या
११	७	सूर्य हैं	सूर्यहै
१२	१२	दर्शनीवपु	दर्शनीयवपु
१२	२३	४७	४८
१३	४	सुहद	सुहृदः
१३	१७	भौमशत्रु	भौम]शत्रु
१४	३	मै त्रिसाधन	मैत्रिसाधन
१५	१६	योजनपं लयुतो	योजनै पंलैयुतो
१७	११	२ रा०जान	२ राजान
१८	१८	७२	७१
१९	१२	इसकरण	इसकारण
१९	१५	अवस्याने	अवस्यामे
१९	१७	स्वोच्च-गोद्दिप्त	स्वोच्चगो दिप्तः
१९	२५	पिडित सज्ञक	पीड़ित संज्ञक
२०	२३	वेष्ठितो	वेष्टितो
२१	३	प्रसंगसे	प्रसंगानुसार
२१	८	होवे	होवे
२१	१०	सह	सिंह
२१	१०	होता	होतो
२१	१६	मकर-पूर्वार्द्ध	मकरका पूर्वार्द्ध
२२	२	हाताहै	होताहै
२२	४	ऽ६ ो पूर्गे	ऽस्तपूर्गे
२२	४	जन्न	जन्नः
२२	६	ह्यम्बुस्थेनलग्नकेगन्नः	

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२२	२१	रेताकी	रेतीकी	३१	२७	अर्था २९	अर्थात् २९
२२	२३	जन्म	जन्मः	३१	३०	बलफ	बालक
२२	२६	देखता हावता	देखता होवेतो	३२	४	शींव	शीघ्र
२३	४	गोकला	गोकुला	३२	१३	से होवे	सेदृष्टहोवे
२३	५	शि पालये	शिल्पालये	३२	१९	तुल्य	तुल्प
२३	८	हावता	होवेतो	३२	२१	सौम्पा	सौम्या
२३	२२	हेपे	होवे	३३	५	आर	और
२४	१	ग्रहमस	ग्रहमेसे	३४	८	लग्न- द्रेष्का	लग्नके द्रेष्का
२४	७	सर्पपिता	सूर्यपिता	३४	२६	९०	९१
२४	१४	यागः	योगः	,,	२७	९१	९२
२४	१५	सर्वे	सर्वे	३५	५	शराशि	राशी
२४	२०	दृष्ट	दृष्टे	३५	१७	गुरुस	गुरुसे
२४	२२	मार्गेम जान	मार्गमे जन्मजान	३८	८	सवले	सबले
२५	१६	शीर्षा	शीर्षो	३८	२३	हपापग्र हसेदृष्ट	पापग्रह सेदृष्ट
२५	२४	चंमासे	चन्द्रमासे	३९	१४	शुक्र	शुक्र
२६	१०	नाग्रह	नोग्रह	३९	२८	हावे	होवे
२६	२७	सिर	शिर	३९	३०	सर्वारिष्ट	सर्वारिष्ट
२८	१७	प्रसहुवा	प्रसवहुवा	४१	११	स्वमि	स्वामि
२८	१७	सप्तम- ७म स्था	सप्तम ७स्था	४१	१६	आर	और
२९	१	छटे	छठे	४४	६	यक्त	युक्त
३०	१३	यक्त	युक्त	४४	९	नन्दाशप	नन्दाशप
३१	८	होवेता	होवतो	४४	१७	पृकृती	प्रकृती
३१	९	पापग्रहे	पापग्रह	४४	२३	श्रमन्म	श्रीमन्म
				४७	१०	नवाशम	नवाशमे
				४८	६	ता(दुर्वला)	तोदुर्बल
				,,	,,	देहमनष्य	देहमनुष्य

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्धं	शुद्धं
५०	१८	सूप	सूर्य
५०	२२	हस्वे	हस्व
५१	१	तुय	तुर्ये
५१	१६	वेंशि	वेशि
५३	२४	होताहै	होताहै
५४	१६	इन्द्रको	इन्द्रकों
५६	४	कारकांसश	कारकांश
५६	११	स्यवीर्ये	स्ववीर्ये
५६	१९	होवेना	होवेतो
५८	१८	होवेते	होवेतो
५९	२१	सः संबंध	सेसंबंध
६०	२२	होनोह	होताहै
६३	१९	लग्नेशेना	लग्नेशनो
६३	२७	चंद्राको	चंद्राकों
६४	१५	सर्य	सूर्य
६४	२३	विन्हल	विन्हल
६४	२६	शीघ्रं	शीघ्र
६४	२७	शीघ्र	शीघ्र
६५	१	गुरू	गुरु
६५	६	होताहै	दृश्नेवालाहोताहै
६५	१५	विशष	विशेष
६५	२२	वामि	स्वामि
६६	२८	चर	चरराशि
६७	८	दखते	देखवे
,,	२५	होव	होवे
,,	२७	शभप्रह	शुभग्रह
६८	१	घी होताहै	र्धरहोताहै
,,	६	गुनयोग	विगुनयोग
६८	९	पापदृष्टच	पापदृष्टय
६९	१७	छटे	छठे
७०	१०	म्लेच्छो	म्लेच्छों
७२	८	लग्नेसे	लग्नसे
७३	७	बारव॰ स्थानम	बारवे- स्थानमे
७४	१६	लग्नश	लग्नेश
७५	३	सर्य	सूर्य
७५	१७	कुजॅग	भुजंगे
७६	१४	सेक नेसे	सेकनेसे
७७	९	शीन	शनि
,,	११	बा में	बारमें
,,	१४	स्थानम	स्थानमें
७८	८	मगक	मंगल
,,	२२	उखाडे जावे	उखाडे जावेगे
७९	७	दखते	देखते
,,	२४	यनेत्र	येनेत्र
,,	२८	गंधकार ननत्र	अंधकारने नेत्र
८०	१	हाताहे	होताहै
	१	अतएवएस)	अतएवरसे
,,	५	पत्र	पुत्र
,,	६	पुत्रस्पुत्र	पुत्रकापुत्र
,,	१८	पुर्गेंदु	पूर्णेंदु
,,	२७	वाधेर	बधिर
८१	९	ताप	तथा
८२	२०	द्वितय	द्वितीय
८३	१२	दुर्बल	दुर्बल

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्धं	शुद्धं
८६	४	पाप ह	पापग्रह
”	१८	विवल	विवले
८७	१७	जाव	जावे
”	१८	दात	दात
८८	२६	जण्ड	जाण्ड
८९	३	होवेता वायसे	होवेतो वायुसे
८९	५	होव	होवे
”	६	वृद्धि	वृद्धि
”	१४	होतीह	होताहै
९०	१६	ग्रहासे	ग्रहोसे
”	१७	पढ़ा	पीड़ा
९०	१९	शिवाय	सिवाय
”	२०	यागोंके शिवाय	योगोंके सिवाय
”	२२	सालका	सालेका
९२	७	क्राध	क्रोध
”	८	कछपीले	कुछपीले
”	८	मख	मुख.
”	१०	निग्रही	निग्रही
”	१३	राशीक	राशीके
”	१६	राव	रवि
”	२९	मातसे	मातामे
९३	१६	पटिक	स्फाटिक
”	२४	त्रिय	त्रिया
९४	८	रा ि	राशी
९५	३	तावेमें	तावेमें
”	५	सनापति	सेनापति
९६	२४	वाजत्रीकी	वाजत्रीकी
९९	१	चर्वी व	चर्वीव
१००	४	स्वच	स्वच्छ
”	२५	शुक्र	शुक्र
”	२८	अथवा	अथवा
१०१	१४	गुरू	गुरु
”	१५	गुरू	गुरु
१०२	२४	हानेका	होनेका
१०३	१३	चतुप्पद	चतुष्पद
”	२७	वनाव	वनाव
१०४	५	च थे	चतुर्थ
१०५	१	लोग अगवे	जोलोग. अगवे
”	६	मिले	मिलताहो
”	१७	कारणः	कारण
”	२४	होत.नही	होतीनही
१०७	५	युतो	युतौ
”	१३	ग्रहोवे	ग्रहहोवे.
१०९	२६	महाधनी	महाधनी होताहै
११०	१	गरु	गुरु
”	१०	स्वराशी	स्वराशी
”	१२	कावध	कावुध
”	२४	हाताहै	होताहै
१११	४	स्वामि	स्वामि
११३	१४	स्वमी	स्वामी.
११४	१८	शतयुत	शयुत
११९	१९	पष्चंशे	पष्ठचंशे
११९	२२	पष्चंश	पष्ठचंश
१२०	१	नीचेक	नीचेकै
१२३	९	निर्धन	निधर्न

अशुद्धशुद्धपत्रम्।

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्धं	शुद्धं
१२४	९	दगरिद्री	दरिद्री
”	११	हावेतो	होवेतो
”	१३	हावे	होवे
”	१६	सपत्तमान	संपत्तिमान
१२५	९	यतहोवे	युतहोवे
”	१७	चतर्थ	चतुर्थ
१२६	२३	पनेवाला	पानेवाला
१२९	१४	मभी	मेभी
१२९	२८	बदलाता	बदलातो
१२९	३१	तरेसे	तरहसे
पृष्ठांक		२२९-२३०	१२९-१३०
		२३१-२३२	१३१-१३२
१३१	७	विवेक टीका	विवेकस्य टीका
१३२	१	दृष्ट	दृष्टे
”	२	लाभे	लाभो
”	२९	आर	और
पृष्ठांक		२३३	१३३
१३४	४	पशुचशे	पशुचंशे
पृष्ठांक		२३६	१३६
१३६	२२	दर्जके	दर्जेकेतया
१३७	४	स्थनमें	स्थानमें
१३८	१९	मेषचंद्र	मेषचंद्रे
”	२५	हावेतो	होवेतो
१४०	११	वृति	वृत्ति
”	१४	द्वर्ति	द्वार्त्तिं
१४१	४	वृतिः	वृत्तिः
”	६	घृतिः	घृत्तिः

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१४२	२२	घमकाडा	घर्मकांडा
१४४	८	बचनेवाला	बेचनेवाला
”	१७	हरके	हरेक
”	२८	राशाका	राशीका
”	२९	करक	करके
१४५	१४	राशिम	राशिमें
”	२४	विवेक	विवेकस्य
१४७	१९	होवोतो	होवेतो
१४८	१९	वधगो	वधयोग
१४९	३	होवतो	होवेतो
”	१४	शुभेक्षित	शुभेक्षित
”	२२	मतायोग	मातायोग
”	२६	चतु प्पद	चतुष्पद
१५०	२५	त्रिशद्वर्षे	त्रिंशद्वर्षे
१५१	९	जन्मलसे	जन्मलग्नसे
”	१२	कद्र	केंद्र
१५२	४	केद्र	केंद्र
”	९	वयसोः	वयसी
”	१५	आर	और
१५३	१९	सुखश	सुखेश
”	२२	गरु	गुरु
१५४	२	स्तर्थे	स्तुर्ये
”	१७	गुरू	गुरु
१५५	५	स्थानम	स्थानमें
१५५	११	भ्रावदयो	भ्रादयो
”	१३	कुंडलीम	कुंडलीमें
”	२७	लग्नस	लग्नेस
१५६	१९	शानिस	शानेसे

पृष्ट	पंक्ति	अशुद्धं	शुद्धं
१५८	२०	अनभवार्यं	अनुभवार्यं
१५९	१८	लग्नय	लग्नये
,,	२३	इनतीभाव	इनतीनोभाव
१६०	२१	हावतो	होवेतो
१६१	८	चतूर्थेश	चतुर्थेश
१६२	१६	जावेता	जावतो
१६४	३	स्वराशिम	स्वराशिमे
,,	१२	काशम	काशमे
१६५	४	चतुथ	चतुर्थे
१६५	८	टीका चतुर्थे	टीका–चतुर्थ
१६६	६	पनका	पुनको
१६६	८	व्यपार	व्यापार
१६६	२३	गुरू	गुरु
१६७	७	पोड्रित	पोड्रित
,,	१८	दृष्टो	दृष्टो
१६८	२३	सदृष्ट हाेयेबुध्दि	सेदृष्टहोवे-तोबुद्धि
१६८	२४	पचमेश	पचमेश
१६८	,,	बुध्दि	बुद्धि
१६९	८	बुध्दि	बुद्धि
१७०	२	दाने।	दोनो
१७०	२०	गयहाव	गयेहोवे
नोटमे–पं		१मेंह-१८-३	६-१८-३०
१७१	१	कारकाश	कारकाश
१७३	१७	हाेय	होवे
१७६	२	धनस्था	धनस्थ
१७६	१२	त्रिकाण	त्रिकोण
१८०	१०	मन्दाशे	मन्दाँशे

पृष्ट	पंक्ति	अशुद्धं	शुद्धं
,,	११	पुत्रसे	पुत्रेशे
,,	१२	सुर्य	सूर्ये
,,	१७	सूर्य	सूर्यं
,,	२८	नीचंगे	नीचगे
१८१	९	चतर्थे	चतुर्थे
,,	११	भावम	भावमे
,,	२३	शानि	शनि
१८२	४	छटे	छठे
१८२	१८	यें सुये	यें सूर्यें
१८२	२३	कुजक्षे	कुजर्क्षे
१८३	२९	राशा	राशी
१८६	१२	आर	और
,,	२१	सुखहोये	सुखहोविगा
,,	२८	पत्र	पुत्र
१८९	१४	सुखर्क	सुखकी
,,	१६	पंचमे	पंचम
नोटमे–पं०	१	में प्राप्ति	प्राप्ति
१९०	२४	गय	गया
१९१	१२	पत्राप्ति	पुत्राप्ति
,,	२०	शुभग्रह	शुभग्रह
१९२	६	हुया	हुवा
,,	८	सभावस्ता	सभावस्था
,,	२९	नीदका	नीचका
१९३	१८	ग्नह	ग्रह
१९४	१	केतगया	केतुगया
,,	२२	शुक्र	शुक्र
१९५	२८	और स	औरसे
१९७	१६	आईकेप्ता	आईकेसा

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्धं	शुद्धं
२००	९	पिठिका	पीठिका
२०१	५	फेडा	फोडा
,,	६	फेतु	केतु
	१६	जन्न	जन्नम
	१७	गल	मंगळ
,,	२७	वष्ठेश	षष्ठेश
२०२	२४	लग्नेश	लग्नेश
२०५	१६	छटे	छठे
,,	१३	नाभिगेगी	नाभिरोगी
२०७	७	भठमे	आठमें
२०८	६	पाग्युत	पापयुत
,,	९	भैर	और
,,	२०	सेत्थे	सोत्थे
२०९	५	न्त्यपापे	न्त्येपापे
,,	२२	राशिमें	राशिमेंतथा
,,	२३	राशीफ	राशीके
२१४	२१	केन्द	केंद्र
२१६	७	दुद्र	दद्रु
२२१	२०	षष्ठ्चंशे	षष्ठ्यंशमे
२२२	२१	हावे	होवे
,,	२४	व्यरि-चारी	व्यभिचारी
२२४	६	व्यमि-चारी	व्यभिचारी
२२८	२२	शुक्रमे	शुक्रसे
२३१	२	दाराशा	दारेशा
२३१	२७	स्वामी	स्वामी
२३१	२१	स्वामीमे	स्वामीसे

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्धं	शुद्धं
२३५	२३	सन्धो	सन्धौ
२३६	११	व्ययेकजे	व्ययेकुजे
२३७	६	ि वाह	विवाह
२३७	११	सर्य	सूर्य
२३८	१३	स्थल	स्थूल
२४१	२६	मद	मदे
२४३	१४	व्यापर	व्यापार
२४४	९	केन्द्रेवा	केन्द्रेया
२४५	१३	दीर्घाप	दीर्घायु
२४५	२५	जीवेकेंद्र	जीवेकेंद्र
२४८	२१	गरुसे	गुरुसे
२४९	१३	गलिक	गुलिक
२५१	१	केंद्रम	केंद्रमे
२५१	४	भाप	आयु
२५१	६	षष	षर्प
२५१	८	१२भावमें	१२मेंभावमें
२५१	२६	मृत्य	मृत्यु
२५१	२१	राव्हछो	राव्हच्छो
२५४	२४	विभुति	विभूति
२५४	२६	ोग	योग
२५५	५	मृत्य	मृत्यु
२५५	६	न्मृ यु:	न्मृत्यु:
२५५	२७	चौर न्मृत्यु:	चौरान्मृत्यु:
२६०	९	दक्ष	वृक्ष
२६०	११	शनिका	शनिकी
२६४	२२	मथ	प्रथम

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
,,	२३	मेध्यद्रे०	मध्यद्रे०
,,	२३	जलादर	जलोदर
२६५	२६	भग्रमश	भग्रमेश
२६६	१५	मदे वा	मदे वा
२७४	२६	यनदृष्ट	युतदृष्ट
२७५	१	परुष	पुरुष
२७९	३	धनश	धनेश
२८०	१७	गयहोतो	गया होतो
२८४	२८	स प्त	समाप्त
२८८	१०	शुभांशेवा	शुभांशे वा
२८९	२४	द्वोस्त्रक्षें	द्वौस्त्रक्षौ
२९९	९	चोरेडे	चोरेङ्के
३००	१३	तेरङ्के	तरेङ्के
३०२	४	मृगङ्के	मृगेङ्के
३०३	१२	तरेङ्क	तरेङ्के
३०३	२१	पूर्वेषक्के	पूर्वषट्के
३०४	१८	पटक	पट्टक
३०५	१६	राज्या डेशा	राज्याङ्केशा
३०७	९	शुकज्यौ	शुक्रेज्यौ
३०७	३	नगार्याडा	नगार्याङ्का
३१२	१४	तदीशेडे	तदीशेङ्के
३१३	१६	धनेशेडे	धनेशेङ्क
३१५	७	वारमेः	वारमे
३१७	१३	व्याजन	व्याजेन
३१८	२	याग	योग
३१९	१५	द्वयन्त्याड	द्वयन्ताङ्क

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
३२०	१	पात्र	पात्र
३२३	८	साम्बुगेशे	साम्बुगेङ्के
३२५	२४	वला	वाला
३२६	२०	आरेज्य योग	भोग्य योगे
३२८	१७	सवलेडपे	सबलेङ्कपे
,,	२३	इडिन	इङ्गित
३३०	४	भार	भौर
३३२	१	यत	युत
,,	९	मनष्य	मनुष्य
३३५	५	स्त्री स्त्री	स्त्री स्त्री
,,	६	दृष्ठे	दृष्टे
,,	२७	साध्वाकि	साध्वीक्वे
३३७	१०	बधके	बुधके
३३८	२२	कुवारी	कुँवारी
,,	,,	सप्तमशे	सप्तमेश
३३९	२१	सद्	सद्
,,	२८	चन्दर्क्षी	चन्द्रर्क्षौ
३४०	१९	नवश	नवाश
३४२	१६	भाववे	भावेश
३४५	६	जाततरं	जातकतरं
३४८	२	निर्वेली	निर्येली
जहाजहा		दृष्ठ	दृष्ट
जहाजहा		भष्ठ	भ्रष्ट
जहाजहा		षष्ट	षष्ठ
जहाजहा		षष्ठ्चंश	षष्ठ्यंश
जहाजहा		निष्ट	निष्ठ

इतिशुद्धिपत्रम्।

छपने योग्य नवीन तय्यार हो।
और छपना शुरुहोगया.

चौघडिया विचार

चौघडिया जिसको मारवाडी लोग दुघडिया कहतेहै वास्तव में यह चौघडियांहहै या दुघडिये है वा पोनेच्यारघडियेहै अथवा कोई औरहो है- इनका शास्त्रीय पद्धतीसे कैसे विचार करना और किस काम में येदेखना इसका विवेचन इस पुस्तकमे भलीभांति हिन्दी भाषामें वर्णन किया गयाहै कीमत -) मात्र

शनिविचार.

इसपुस्तक मे किसराशी मे शनी किसको कैसा कब शुभा शुभ फल अपनी साढसाती (पनोती) कादेता है वगेरा २ विषयोका शास्त्रीय पद्धती के अनुसार सोपपत्तिक विवेचन हिन्दी भाषामे कियागया है कीमत ।-) मात्र है।

संतति समयविचार.

संतान किस समयमे होगा इस प्रश्नका उत्तर शास्त्रानुसार जानके गर्भ रहनेका समय निश्चय बनाना चाहते हो तो इस पुस्तकको देखिये विचार सरल हिन्दीभाषामे लिखागया है कीमत =।।) मात्र

द्वात्रिंशद्योगावली जातिक.

यह खान खाना नव्वाब की बनाई हुई वर्षफल देखने की उत्तम पुस्तक है इसमे उक्त नव्वाबसाहबने अपने अनुभव कियेहुवे चमत्कारीक ३२ योग वर्षफल विचारके लिखेहै यही भाषा टीकासहित प्रकाशित कियेहै मूल्य सिर्फ ।) आने मात्रहै.

उड्डीस तंत्रशास्त्र.

बहुत उड्डीस छपचुके है परऐसा उड्डीस अभीतक कहींभि छपानहीं है इसमे जितने तंत्रमंत्र लिखेहै वे सद्यचमत्कार बतानेवाले है पुस्तक देखने योग है मूल्य ।=) मात्र

होगा और किस २ दशामे उपरोक्तवातोंकी हानिहोगी उसका उपरहीविस्तार पूर्वक फल विचार औरभी अन्यान्य विशेष चार तथा दशाप्रवेश लग्नसेदशाफलका सूक्ष्मविचारदशावाहन था जागृतादिबालादिदीप्तादि गर्वितादि शयनादि अवस्थागत विशेष रूपसे दशाफल विचारवर्णित है।

—दूसरे विभागमे सूर्यादि नव ग्रहोंकी विंशोतरी महादशा का २ एक २ ग्रह की दशाके फलका विचार कमसेकम १०० सौ से निश्चय करसके.

—तीसरे विभागमे अंतर्दशा संबंधी विचार का समस्त सामा र सूक्ष्मफल विचार विस्तार पूर्वक पृथक२ ग्रहोका ऐसा लि के समस्त अंतर्दशा का सूक्ष्मफल का विस्तृतरूपसे विचार ।

–६ चौथे पांचमे छटे विभागमे क्रमसे उपदशा सूक्ष्मदशा प्राण का विस्तार पूर्वक निःशेष फल विचार वर्णित कियागयाहै।

७ सातमे विभाग में अष्टोतरीदशाके पाचोंहि प्रकारकी दशाका र पूर्वक फलविचार कियागया है।

८ आठमे विभागमे योगिनी दशाके दशांतर्दशादिक का समस्त चार वर्णित है॥

९–नवमे विभागमे चरस्थिर रुद्र शूल वर्णदादि जैमिन्युक्त सम शा अंतर्दशाओका फलविचार है।

१०–दशमविभागमे उक्तदशा ओके अतिरिक्त शेष समस्त दशा फलविचार और उपसंहार है। इसप्रकार यह ग्रंथ सुंदर तयार या है इसकी कीमत २॥) मात्र है टपाल खर्च अलग।

❀ आशुबोध जोतिष ❀